सौजन्य

लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र
भारतीय दूतावास
5 बुज़ बोजोर सेंट 2 लेन,
ताशकंद, उज्बेकिस्तान

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

संपादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा

ताशकंद 2024

स्मिता पंत
Smita Pant

भारत के राजदूत
AMBASSADOR OF INDIA
ताशकन्द
TASHKENT

सत्यमेव जयते

संदेश

यह जानकर मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है कि लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र, ताशकंद, उज़्बेकिस्तान द्वारा इस वर्ष **उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा** विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के माध्यम से उज़्बेकिस्तान के हिंदी प्रेमियों को एक साझा मंच मिलेगा।

उज़्बेकिस्तान में हिंदी भाषा को अपार प्रेम व सम्मान मिला है। यहाँ के शिक्षकों और विद्यार्थियों के निरंतर प्रयासों से आज हिंदी कई केंद्रों में सिखाई जा रही है।

भारतीय दूतावास की ओर से हम आप सभी के प्रयासों की अत्यंत सराहना करते हैं और आपके सहयोग के लिए आपका अभिनन्दन करते हैं।

मुझे विश्वास है कि इस परिसंवाद के द्वारा हम विद्यार्थियों और अन्य लोगों को हिंदी भाषा सीखने के लिए और प्रोत्साहित कर पाएंगे।

शुभकामनाओं व प्रेम सहित,

स्मिता
(स्मिता पंत)
5/9/2024

16 Kara-Bulak Street, Mirzo Ulugbek District, Tashkent 100052, Uzbekistan
Tel: +998-55-5010381 E-mail: amb.tashkent@mea.gov.in
Website: www.eoi.gov.in/tashkent

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

संपादकीय

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उज्बेकिस्तान की पहचान नई है । यह एक समृद्ध इस्लामी विरासत वाला मुस्लिम बहुल देश है।ताशकंद, समरकंद, बुखारा और खीवा जैसे उज्बेकिस्तान के प्राचीन शहर अपनी सांस्कृतिक विरासत और व्यापार से जुड़ी गतिविधियों के लिए हमेशा से ही मशहूर रहे । यहां अनेकों जातियों- जनजातियों के बीच सह अस्तित्व की परंपरा ने इस देश में साझी संस्कृति को बढ़ा दिया । सह अस्तित्व और साझी विरासत भारत की भी पहचान है । ईरानी, तुर्की, मुस्लिम, यहूदी और ईसाई समाज ने मिलकर उज़्बेकिस्तान को एक राष्ट्र के रूप में नया गौरव प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

हिन्दी प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उज़्बेकिस्तान मध्य एशिया में उम्मीदों के प्रकाश का ऐसा अन्तः केंद्र बनकर उभरा है जो हिन्दी जगत की आखों में नाच उठे । भारत और उज़्बेकिस्तान दोनों ही उस सपने से परिचित हैं जो आपसदारी एवं विश्वास के कंधों पर खड़ा हुआ है । अपनी भाषा और संस्कृति के वैश्विक विस्तार में ये दोनों राष्ट्र एकसाथ हैं । अपनी भाषा और संस्कृति के माध्यम से मानवीय करुणा,विश्वास और संवेदना का सौंदर्य पूरे विश्व में बिखेरने के लिए ऐसी साझेदारी दोनों राष्ट्रों के हित में है । भाषायी मेलजोल दरअसल ख़ुशबू से भरे वे रंग हैं जो फ़ासलों के गुबार को दरकिनार कर छनकर आती हुई उम्मीद को अपनी कोह में बसा सजाते और सँवारते हैं । इस तरह की भाषायी साझेदारी भविष्य के भारत और उज़्बेकिस्तान के लिए निश्चित ही प्रगति के नए आयाम गढ़ेगी ।

भारतीय साहित्य पर पहली पाठ्य पुस्तक उज़्बेकिस्तान में सन 1991 में प्रोफेसर तमारा खोजाएवा द्वारा तैयार की गई जिसमें रविंद्रनाथ ठाकुर, प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, कृष्ण चंद्र, यशपाल, जैनेंद्र कुमार, अमृता प्रीतम, रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह जैसे साहित्यकारों एवं आलोचकों को शामिल किया गया । कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन, केदारनाथ सिंह इत्यादि को शामिल किया गया ।उज़्बेकी-हिन्दी शब्दकोश का निर्माण भी यहां की शिक्षकों द्वारा हाल ही में किया गया है ।भारत के संदर्भ में साहित्य रचनेवाले उज़्बेकी साहित्यकारों में गफ़ूर गुलाम, हमीद गुलाम, अस्काद मुहतार, हमीद अलीमजान, मिरतेमीर, सईदा जुनुनोवा, एरकीन वहीदोवा और तमारा खोदजाएवा का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है । 7 जुलाई 2015 को देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा इस पहले उज़्बेकी-हिन्दी शब्दकोश का लोकार्पण किया गया । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान भारतीय फिल्म और संगीत की उज्बेकिस्तान में लोकप्रियता के साथ-साथ यह भी याद दिलाया कि सन 2012 में उज़्बेक रेडियो ने हिंदी ब्रॉडकास्टिंग के 50 वर्ष पूर्ण किए ।

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य में इसके व्यापक प्रचार-प्रसार एवं अध्ययन-अध्यापन की स्थितियों कों समझना एवं उसका दस्तावेजीकरण करने के उद्देश्य से हम ने

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के आयोजन की योजना बनाई। इस आयोजन को लेकर लाल बहादुर शास्त्रीय भारतीय संस्कृति केंद्र (LBSCIC), ताशकंद के निदेशक **श्री सीतेश कुमार जी** ने बड़ी सकारात्मक भूमिका ली और इस संगोष्ठी में पढे जानेवाले शोधालेखों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने का सुझाव दिया । उज्बेकिस्तान, ताशकंद में भारत की वर्तमान राजदूत आदरणीय **स्मिता पंत जी** ने भी संगोष्ठी और पुस्तक प्रकाशन योजना को अपनी सहज स्वीकृति प्रदान करते हुए ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों के लिए हर संभव सहयोग का भरोसा भी दिया । परिणाम स्वरूप यह पुस्तक आज पाठकों के बीच है ।

इस पुस्तक प्रकाशन के लिए जिन विद्वानों ने अपने शोधालेख भेजे, उनके प्रति हम अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं । मुझे पूरा विश्वास है कि विद्वान साथी भविष्य में भी अपना रचनात्मक सहयोग हमें देते रहेंगे ।

धन्यवाद !

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा
डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनुक्रमणिका

1.	संपादकीय - डॉ.मनीष कुमार मिश्रा,डॉ.नीलूफ़र खोजाएवा	**5-6**
2.	उज़्बेकिस्तान में हिन्दी -डॉ .गुरमीत सिंह..	**9-11**
3.	उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों की लोकप्रियता - डॉ .इन्द्रजीत सिंह	**12-15**
4.	उज्बेकिस्तान में भारतीय संस्कृति और हिंदी की गूंज-डॉ .जवाहर कर्नावट	**16-19**
5.	भारत उज़्बेकिस्तान के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंध -नेहा राठी......................	**20-27**
6.	संस्कृत-फ़ारसी का परस्पर भाषायी एवं साहित्यिक संबंध तथा हिन्दी-उज़्बेक पर फ़ारसी का प्रभाव - राजेश सरकार..	**28-41**
7.	उज्बेकिस्तान में भारत विद्या के विकास का इतिहास- प्रो. उल्फत मुखीबोवा	**42-44**
8.	उज़्बेकी उपन्यासकार अस्कद मुख़्तार -डॉ.मनीषकुमार मिश्रा,डॉ.नीलूफ़र खोजाएवा ...	**45-51**
9.	मध्य-एशिया में प्राचीन भारतीय संस्कृति- डॉ .शिल्पा सिंह	**52-62**
10.	उज़्बेकिस्तान में हिंदी दशा और दिशा - डॉ .विजय पाटिल	**63-67**
11.	भारत और उज्बेकिस्तान का संबंध -डॉ.उषा आलोक दुबे	**64-67**
12.	भारत और उज़्बेकिस्तान की भविष्य की मित्रता - सृष्टि प्रिया	**68-75**
13.	उज़्बेकिस्तान भारत के बीच मीडिया क्षेत्र में सहयोग - शाहनाजा ताशतेमीरोवा	**76- 77**
14.	हिन्दी भाषा में वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द (साधारण वाक्यों (simple sentence) के उदाहरण में) - सादिकोवा मौजूदा काबिलोवना	**78-82**
15.	हिन्दी के निपुण विशेषज्ञ : बयात रखमतोव - कमोला अखमेदोवा	**83-86**
16.	विदेशी भाषा सीखने सिखाने में मातृभाषा का प्रभाव –डा.कमोला रहमतजनोवा	**87-90**
17.	उज्बेकिस्तान व भारत की सामाजिक परंपराएँ :समानता की भावना -आस्था शर्मा ...	**91-98**
18.	उज़्बेकी साहित्यिक यात्रा :भारतीय नज़रिया - डॉ .अनुराधा शुक्ला	**99-104**
19.	कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में विविध आयोजनों की भूमिका -निकिता	**105-111**
20.	उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्में - अखमदजान कासीमोव...	**112-114**
21.	उज़्बेकिस्तान में हिन्दी अध्ययन अध्यापन की समस्याएँ - डॉ.सिराजूद्दीन नुर्मातोव......	**115-117**
22.	हिन्दी पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन -युनूसोवा आदोलत	**118-117**
23.	उज़बेकिस्तान के इतिहास में भारतीय मूल निवासी – बयोत रहमतोव................................	**118-126**
24.	"देवियों के व्युत्पत्ति संबंधी विश्लेषण की समस्या पर – सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा - जियाज़ोवा बेरनोरा मंसूरोवना	**127-130**

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

25.	अनुवाद में समतुल्यता की समस्याएं - इरोडा फतखुतदीनोवा	**131 -133**
26.	मध्य एशिया की संस्कृत विद्वान : खंज़ारीफा बेगीज़ोवा -नेमातोव मुरातील्लो	**134-135**
27.	हिंदी पत्रकारिता का इतिहास - हिदायेव मिरवाहीद	**136-139**
28.	विदेशी छात्रों के हिंदी अध्ययन का केंद्र :केंद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा -हुररामोव शुक्रुल्लो	**140-141**
29.	21वीं सदी में महात्मा गांधी के दर्शन का महत्व - शेरदार पुलातोव....................................	**142-143**
30.	मध्य एशिया में पञ्चतन्त्र का प्रसा .डॉ - ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य	**144-148**
31.	पत्थर पर नक्काशी - श्रीमती मकतूबा मुर्तजाखोदजाएवा..	**149-151**

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान में हिंदी

https://doi.org/10.5281/zenodo.13764927

डॉ गुरमीत सिंह
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
पूर्व विजिटिंग प्रोफेसर, ताशकंद स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ ओरियंटल स्टडीज

ताशकंद स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ ओरियंटल स्टडीज(TSUOS) में वर्ष 2021 में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में काम करने का अवसर समय की दृष्टि से छोटा अवश्य था लेकिन अनुभव और स्मृतियों की दृष्टि से देखूं तो बहुत कुछ सीखने-जानने को मिला।

सबसे पहले तो उज्बेकिस्तान और ताशकंद के लोगों में हिंदुस्तान और हिंदी के प्रति असीम प्रेम देखकर किसी भी भारतवासी के लिए बहुत सुखद अनुभव होता ही है। हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों से लेकर टैक्सी ड्राइवर तक हर कहीं भारत के प्रति एक निच्छल उत्साह, ललक और प्रेम देखने को मिलता है। वैसे भी भारत और उज्बेकिस्तान के बीच संबंधों का इतिहास बहुत पुराना है।

अब बात करते हैं हिंदी भाषा और उज्बेकी भाषा की समानता की। हिंदी में इस्तेमाल होने वाले सैकड़ों शब्द ज़रा से अंतर के साथ उज्बे़की भाषा में भी चलते हैं। लेकिन, चूंकि जैसे शब्दों में तो वह अंतर भी नहीं है और अर्थ भी समान है। सलामत, बहार, राहत, इरादा, सवाल जैसे शब्दों की तो बहुत लंबी सूची है जहां केवल आ की जगह ओ की ध्वनि का अंतर है लेकिन अर्थ में कोई अंतर नहीं है। जैसे सलोमत, बहोर,राहोत, इरोदा,सवोल। असल में जैसे बहुत सारे शब्द अरबी-फारसी से हमने लिए हैं वैसे ही उज्बेकी ने भी लिए हैं। इन शब्दों की सूची में अक्सर, आबाद, आदमी,कतार, इमारत, कागज, किस्म, आराम, आखिर, आइना, अलग, कमर, बाजार, वजन, जमाना, मजा, गरदन, खबर, कीमत, बगीचा, बस, मकान, सवाल, हवा, होशियार, हसाब, हाकिम,बीमार, टोपी, तरफ, दरवाजा, दर्जा, दिन, जानवर, जहाज, चेहरा, गरीब, विदा,साहब, यानी,मौसम,रूमाल, रास्ता, रवाना, वक्त, मक्का, तवा, शक्ल, बेचारा, तारीख, तैयार, चम्मच, शहर आदि कितने ही शब्दों को शामिल किया जा सकता है। कई शब्दों में अर्थ परिवर्तन भी हुए हैं। जिनमें सबसे रोचक उदाहरण तकलीफ शब्द का है। हमारे यहां तकलीफ समस्या या परेशानी के अर्थ में इस्तेमाल होता है लेकिन उज्बेकी भाषा में इसका अर्थ न्यौता या निमंत्रण से है। वैसे गहराई में जाएं तो हमारे यहां भी एक ढंग से किसी को निमंत्रण देने में यह अर्थ भी पा सकते हैं। जैसे हम किसी को अपने यहां भी कभी कभी ऐसा कहते हैं कि आपको तकलीफ दे रहा हूं पर आइएगा जरूर। ऐसे ही सबसे अधिक प्रयुक्त होने वाले रहमत शब्द(जिसका प्रयोग धन्यवाद के लिए होता है) को भी गौर से देखें तो उसमें कृपा वाला अर्थ भी है ही। इन उदाहरणों से केवल इतना भाव है कि उज्बेकिस्तान में भाषाओं के बीच की यह समानता एक कारण अवश्य है जो विदेश में भी अजनबी होने का अहसास नहीं होने देती है।

जैसे शब्द थोड़े से अंतर के साथ मौजूद हैं। वैसे ही हमारे यहां का लोकप्रिय समोसा भी थोड़े अंतर के साथ सोमसा के रूप में पूरे उज्बे़किस्तान में नजर आता है। भारत से जाते वक्त बहुत मित्रों ने कहा कि मांसाहारी न होने आपको उज्बेकिस्तान में बहुत दिक्कत होगी। लेकिन सोमसा ने यह दिक्कत भी हल कर दी। विश्वविद्यालय के बिल्कुल नजदीक ही ग्रांड सोमसा की प्रसिद्ध दुकान थी। जहां मीट और चिकन के साथ आलू,मशरूम और कद्दू के सोमसा भी आसानी से मिल जाते थे। उल्टा भारतीय समोसे की तुलना में

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान का सोमसा स्वास्थ की दृष्टि से बेहतर होता है क्योंकि उसे तेल में फ्राई न करके तंदूर में बनाया जाता है। इसके अलावा उज्बेकी नॉन के तो कहने ही क्या। हर शहर के अपने अलग नॉन तो हैं ही, उनके ऊपर की डिजाइन भी कम आकर्षक नहीं।

लेकिन आखिर में कोई भी जगह और वहां की वस्तुएं कितनी ही सुंदर और आकर्षक क्यों न हो पर सबसे महत्वपूर्ण होता है वहां के बाशिंदों का व्यवहार। यह जानकारी तो पहले से थी कि मध्य एशिया के देशों के लोग भारत के प्रति बहुत स्नेह और सद्भाव रखते हैं लेकिन इसे स्वयं अनुभव करने का अवसर ताशकंद में ही मिला। जितना सुना था उससे ज्यादा सद्भावना लोगों में भारतीयों के प्रति देखने को मिली। केवल ताशकंद ही नहीं समरकंद, बुखारा और जिजाख जैसे शहरों की यात्रा में भी यही अनुभव हुआ। जिजाख शहर तो विशेष है क्योंकि वहां की कवि जुल्फिया के साथ पंजाबी की कवि अमृता प्रीतम की गहरी दोस्ती रही और अमृता प्रीतम उनके घर भी रही थीं।

हिंदी फिल्मों से तो लोगों का जुड़ाव जगजाहिर है लेकिन भारतीय खानपान, पोशाक और त्यौहारों को लेकर भी सब जगह एक ललक देखने को मिलती है। मेरे ताशकंद आने से कुछ दिन पहले ही ताशकंद फिल्म उत्सव में मिथुन चक्रवर्ती का आगमन भी हुआ था। जिसकी चर्चा हर कहीं हो रही थी। बहुत से टैक्सी ड्राइवर उन्हें डिस्को डांसर के रूप में न सिर्फ जानते हैं बल्कि उनके गाने भी सुना देते हैं। नई पीढ़ी के पसंदीदा शाहरूख खान के पुत्र के साथ उन दिनों में चल रही समस्या से भी सभी चिंतित दिखाई देते थे। हमारे विद्यार्थी भी आशिकी-2 के गानों के प्रिंट आउट लेकर उनके माध्यम से हिंदी सीखते हुए दिखे।

ताशकंद की बात हो और हमारे दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जिक्र न हो, यह तो मुमकिन ही नहीं। भारत-पाकिस्तान के 1965 के युद्ध के बाद शास्त्री जी ताशकंद में ही 10 जनवरी 1966 को एक समझौते पर दस्तखत करते हैं और मध्य एशिया के इसी ऐतिहासिक शहर में अगले ही दिन उनका निधन हुआ था। उनके नाम पर ताशकंद में एक स्कूल है जहां छोटी कक्षाओं से ही बच्चे हिंदी सीख रहे हैं। इसी स्कूल में 3 नवंबर 2021 को हिंदी माह उत्सव में शामिल होने का अवसर मिला और हर आयुवर्ग में हिंदी के प्रति उत्साह से निकली शानदार प्रस्तुतियां देखते ही बनती थी। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के लाल बहादुर शास्त्री सांस्कृतिक केंद्र ने भी भारतीय नृत्यों, हिंदी और योग की नियमित कक्षाओं के साथ उज्बेकिस्तान के अन्य प्रमुख नगरों में भी अपनी गतिविधियों को नई गति दी है।ताशकंद के अलावा भी अन्य शहरों के विश्वविद्यालयों में केंद्र ने भारतीय दूतावास के सहयोग से इंडिया रूम स्थापित किए हैं ,जहां भारत से संबंधित पुस्तकें और अन्य अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने का सराहनीय प्रयास किया गया है।

अपने विश्वविद्यालय में भी अनुवाद अध्ययन और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारिता विभाग(जहां मुझे निमंत्रित किया गया था) के साथ साथ दक्षिण एशियाई भाषाओं के विभाग में हिंदी और उर्दू सीख रहे अनेक विद्यार्थियों के साथ संवाद में हिंदी के प्रति उनकी ललक दिल को छूने वाली थी। बहुभाषिकता एक ऐसा विशेषता है जो ताशकंद में आपको प्रभावित करती है। रूसी और उज्बेकी भाषा तो लगभग सभी जानते हैं लेकिन उनके साथ साथ ऐसे बहुत परिवार मिलेंगे जहां बहन हिंदी सीख रही है तो भाई कोरियन। इस अगर परिवार को ईकाई मान लें तो पांच-पांच भाषाओं से वे परिचित हैं। तुर्की, अरबी, जापानी,चीनी, दारी, हिंदी,उर्दू, पश्तो,फारसी जैसी कई भाषाएं सीखने-सिखाने वाले तो हमारे विश्वविद्यालय में ही थे। मेरी ही तरह मिश्र से अरबी और पाकिस्तान से उर्दू के विजिटिंग प्रोफेसर भी इन्हीं दिनों में आए हुए थे।

ताशकंद में स्थित भारतीय दूतावास की भी कई गतिविधियों में शामिल होने का अवसर मिला। तब के भारत के राजदूत श्री मनीष प्रभात से बहुत स्नेह मिला। उन्हीं के माध्यम से ही ताशकंद में भारतीय समुदाय द्वारा बनाए गए इंडिया क्लब से जुड़ने का अवसर मिला। इंडिया क्लब के अध्यक्ष अशोक तिवारी, सुनील वर्मा, अभिजीत आदि की पूरी टीम ताशकंद में भारत की संस्कृति की मशाल को जलाए रखने के लिए निरंतर

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

प्रयासरत हैं। क्लब के दीवाली कार्यक्रम के अलावा आजादी के अमृत महोत्सव के जश्न में दूतावास की तरफ से किए गए अनके कार्यक्रमों में भी शामिल होने का अवसर मिला। इनमें साड़ी उत्सव, सरदार पटेल जयंती के साथ साथ भारत के तत्कालीन मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री सुशील चंद्रा के साथ संवाद भी था, जो उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति चुनाव में पर्यवेक्षक के तौर पर ताशकंद आए थे।

अपने विश्वविद्यालय में भारतीय त्यौहारों पर कार्यक्रम पहले भी किए जाते रहे लेकिन विश्वविद्यालय के छात्रावास में पहली बार दीवाली की रात ही रंगारंग कार्यक्रम करने की पहल पहली बार हुई जिसमें विश्वविद्यालय के कई उच्चाधिकारियों के साथ ताशकंद इंडिया क्लब के अध्यक्ष श्री अशोक तिवारी भी सपरिवार शामिल हुए। दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को जोड़ने के एक छोटे से प्रयास में पंजाब विश्वविद्यालय के जनसंचार स्कूल की सहायक प्रोफेसर डॉ भवनीत भट्टी के सहयोग से हमने दीवाली शुभकामनाओं की एक वीडियो क्लिप भी तैयार की जिसे दोनों विश्वविद्यालयों से साथ साथ भारतीय दूतावास ने भी अपने अधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट से शेयर किया। इसी तरह विश्वविद्यालय में हर गुरूवार को दोपहर हमने हिंदी क्लब की शुरूआत करके प्रेमचंद और पंचतंत्र की कहानियों पर बनी लघु फिल्मों की स्क्रीनिंग और उन पर चर्चा की नई पहल भी की। जहां केवल हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थी ही नहीं अन्य विभागों से भी विद्यार्थियों में रूचि देखने को मिली। ऐसे अनुभवों की एक लंबी सूची है। इनके आधार पर हम निश्चित ही भारत और उज्बेकिस्तान के बीच मजबूत व मैत्रीपूर्ण संबंधों को लेकर आश्वस्त हो सकते हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों की लोकप्रियता

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13764935

डॉ. इन्द्रजीत सिंह
केन्द्रीय विद्यालय संगठन से प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त।
सम्पर्क - 92 साईं लोक कॉलोनी, फ़ेस -2, जी एम एस रोड, देहरादून

सिनेमा जीवन का अभिन्न अंग है | भारत हो या उज़्बेकिस्तान या दुनिया का कोई भी देश सिनेमा के जादू से बच नहीं सका है । हिंदुस्तान में सिनेमा के प्रति दीवानगी और प्रेम के कारण ही प्रसिद्ध जर्मन विद्वान, भारतविद ,हिन्दी सेवी लोठार लुत्से ने "सिनेमा को पंचम वेद कहा है"| प्रसिद्ध कवि और सिने आलोचक विष्णु खरे के अनुसार -"अब तो सिनेमा को कला का दर्जा देकर उसे सभी कलाओं का सिरमौर कहा जाने लगा है"[1]

भारत और उज़्बेकिस्तान सहित दुनिया के अधिकांश देशों में सिनेमा का फलक साहित्य से बहुत बड़ा है। निरक्षरता और गरीबी के कारण भी करोड़ों लोग साहित्य से कोसो दूर हैं। किसी भी देश की जनता के लिए सिनेमा अलादीन के चिराग से कम नहीं है जो उन्हें छोटी आंखों में बड़े हसीन ख्वाब देखने का मौका देता है। उनसे हमदर्दी जताता है।उन्हें आग और राग का पाठ पढ़ाता है और दुख में भी मल्हार गाने की ताकत देता है।

उज़्बेक जनता की भारतीय फिल्मों के प्रति दीवानगी के बारे में ताशकंद स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में कार्यरत हिंदी भाषा के प्रोफेसर सिरोजिद्दिन सुल्तानमुरातोविच नुर्मातोव (जिन्होंने 30 हिंदी फिल्मो का उज्बेक भाषा में अनुवाद किया है)के अनुसार उज़्बेक जनता भारतीय फिल्मों को देखने में " काफ़ी रुचि लेती है। वर्तमान काल में प्रतिदिन उज़्बेकिस्तान के प्रत्येक प्रांत, शहर और गांव में भारतीय फिल्में टेलीविजन पर चलती है । उन फिल्मों का अनुवाद अनुभवी भारतविद अनुवादकों द्वारा किया जाता है और निस्संदेह अनुवाद की गई सारी फिल्मों की डबिंग भी होती है । उज़्बेक जनता को विशेष तौर पर भारत के प्रसिद्ध जानेमाने राज कपूर -, नरगिस , अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान आदि अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की सारी हिंदी फिल्में बहुत पसंद है ।[2] (संदर्भ-विश्व हिंदी पत्रिका -2017, पृष्ठ 130)

यह बात सोलह आने सच है कि सिनेमा न होता तो अनेक कथाकारों की कालजयी कृतियाँ केवल हज़ारों-लाखों पाठकों तक ही सीमित रह जाती। कथा-सम्राट प्रेमचंद जी की कहानियों - 'शतरंज के खिलाड़ी 'और 'सद्गति' को पढ़ने वालों की संख्या केवल लाखों तक थी लेकिन जब सत्यजित राय ने इन दोनों कहानियों पर फिल्में बनाई तो देश -दुनिया के करोड़ों लोगों ने बड़े या छोटे पर्दे पर देखा । भीष्म साहनी के उपन्यास "तमस" को उजाले में लाने का काम छोटे पर्दे ने किया । अधिकांश एशियाई देशों में किताबों के पढ़ने की गति कछुए की तरह होती है और फिल्मों को देखने की आदत खरगोश की छलांगों की तरह ।

रूस के प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तारकोवस्की ने सिनेमा के महत्व पर लिखा है –" यह बखूबी जान लो कला की किसी अन्य विधा की बनिस्पत आपने सिनेमा ही को क्यों चुना ।" [3]

सितंबर 1954 में पहली बार भारत से 15 लोकप्रिय फिल्म कलाकारों का शिष्टमंडल पाँच फिल्मों –"दो बीघा जमीन", "आवारा", "आँधियाँ","राही" और "बैजू बावरा" को लेकर मॉस्को पहुंचा । ख्वाज़ा अहमद अब्बास इस शिष्टमण्डल के अध्यक्ष थे और राजकपूर, देवानंद, बलराज साहनी, नर्गिस, निरुपाराय, चेतन आनंद, बिमल राय, अनिल विश्वास, सलिल चौधरी और ऋषिकेश मुखर्जी आदि कलाकार इसके सदस्य । इन सभी फिल्मों की रूसी भाषा में डबिंग की गई । पहले दिन "दो बीघा जमीन" का प्रदर्शन हुआ। विमल राय द्वारा

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

निर्देशित इस फिल्म में बलराज साहनी तथा निरुपा राय ने अभिनय किया था। फिल्म की कहानी, अभिनय, गीत-संगीत और निर्देशन की बड़ी तारीफ हुई ।[4] इस फिल्म के सभी लोकप्रिय कलात्मक गीतों –"धरती कहे पुकार के बीज बिछा ले प्यार के" और "हरियाला सावन ढोल बजाता आया" आदि को कवि शैलेन्द्र ने लिखा था। अगले दिन राजकपूर की फिल्म "आवारा" को प्रदर्शित किया गया । इस फिल्म ने सभी दर्शकों पर ऐसा जादू किया कि फिल्म के समापन पर लगातार तीन-चार मिनट थियेटर तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजता रहा । राजकपूर और नर्गिस के जादुई अभिनय ने सभी दर्शकों का दिल जीत लिया । आयोजकों के आग्रह पर राज कपूर मंच पर आए और रूसी भाषा में बोले –" आप मुझे प्यार करते हैं और मैं आपको । दसविदानिया ।" राज कपूर के इस एक वाक्य ने सभी रूसी दर्शकों का दिल जीत लिया । लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने अपनी आत्मकथा "आई एम नाट एन आइलैंड" मे इस रोचक और यादगार प्रसंग का दिलचस्प वर्णन किया है । उन्होंने राज कपूर और उनकी फिल्म "आवारा" की लोकप्रियता के बारे में अपनी आत्मकथा के 37 वें अध्याय " लाल सितारे की धरती पर" लिखा है -" गर्म दक्षिण बुखारा की धूल भरी गलियों में जहां उज़्बेक लड़के "आवारा" फिल्म के मूल हिंदुस्तानी गीत (आवारा हूं) झूमते गाते घूमते थे उस की गूंज उसी तरह फ़ैल रही थी जैसे घास के सघन मैदानों में देखते देखते आग फैल जाती है । सोवियत सिनेमा के इतिहास में अब तक किसी भी फिल्म को और किसी फिल्म स्टार को ऐसी लोकप्रियता नसीब नहीं हुई। पंडित नेहरू अगले वर्ष (1955) सोवियत यूनियन गए और उन्होंने लौटकर बताया कि वहां उनके अलावा केवल एक व्यक्ति लोकप्रिय है और वह है "राज कपूर" |[5] बलराज साहनी ने "मेरी फ़िल्मी आत्मकथा" में आवारा फ़िल्म और इसके शीर्षक गीत की असाधारण सफलता के बारे में लिखा है -"रूस में "दो बीघा ज़मीन" के पल्ले केवल प्रशंसा आई, जबकि सारी लोकप्रियता राजकपूर की फ़िल्म "आवारा" ले गई . घर,खेतों और कारख़ानों में करोड़ों मज़दूर और किसान उसका गीत "आवारा हूँ" गाते फिरते थे । समाजवाद के तीर्थ- स्थान से हमें कहीं ऊँचे स्तर के सौंदर्यबोध की आशा थी। पर ध्यान से देखा जाए, तो इसमें रूसियों का कोई दोष नहीं था। "आवारा"में सशक्त हिंदुस्तानियत की झलक थी ।" कवि शैलेन्द्र का लिखा गीत "आवारा हूँ,आवारा हूँ, गर्दिश में हूँ आसमान का तारा हूँ" कुछ दिनों के अंदर तत्कालीन सोवियत संघ के सभी राज्यों में लोकप्रिय हो गया। तीन हफ्तों तक ये शिष्टमंडल सोवियत संघ के अधिकांश राज्यों और बड़े शहरों जैसे सेंट पीटर्सबर्ग (उस जमाने में इसे लेनिन ग्राड के नाम से जाना जाता था),जारजिया ,कीव, ताशकंद, अजर बेजान आदि शहरों में गए , जहां, "आवारा" फ़िल्म को रूसी भाषा में डब करके दिखाया गया । ताशकंद में राजकपूर का भव्य स्वागत हुआ ।

"आवारा" फ़िल्म के बाद पूरे सोवियत संघ में राजकपूर की अगली फ़िल्म "श्री 420" रिलीज हुई । इस फ़िल्म पर भी रूस ,जारजिया , उज़्बेकिस्तान ,आर्मिनिया ,जारजिया और यूक्रेन आदि की जनता ने बेशुमार प्यार लुटाया । इस फ़िल्म के गीत –

"मेरा जूता है जापानी ,ये पतलून इंग्लिशतानी,
सर पे लाल टोपी रूसी ,फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी ।"

को भी तत्कालीन सोवियत संघ के अधिकांश प्रदेशों में बहुत पसंद किया गया ।

उज्बेकिस्तान के लोगों की बेपनाह मुहब्बत के कारण राजकपूर ताशकंद कई बार गए । 1974 में राजकपूर अपने बेटे ऋषि कपूर के साथ फिल्म "बॉबी " के प्रदर्शन पर आये । "बॉबी" ने न केवल हिन्दुस्तान में गोल्डन जुबली मनाई बल्कि तत्कालीन सोवियत संघ में इस फिल्म ने "आवारा" फिल्म की बराबरी की । छह करोड़ से अधिक सोवियत वासियों ने इस फिल्म को देखकर राज कपूर के लिए अपनी दीवानगी को ज़ाहिर किया । यह कहा जाता है कि फ़िल्म "आवारा" सोवियत संघ के अधिकांश राज्यों में डेढ़ से दो वर्ष चली । लगभग छह करोड़ पचास लाख लोगों ने "आवारा" को देखा । राजकपूर तत्कालीन सोवियत संघ के सर्वाधिक चहेते फ़िल्म स्टार थे । जितना प्यार राज कपूर को रुसी लोग करते थे उतना ही सम्मान और प्रेम

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तानवासी भी करते थे। राज कपूर ने 1968 में ताशकंद में कहा था –“आप लोग मुझे और मेरी फिल्मों को बहुत प्यार करते हैं और मैं भी आपसे बहुत प्यार करता हूँ।”

सीता और गीता का अद्भुत कामयाबी - हिन्दुस्तान में 1972 में रमेश सिप्पी द्वारा निर्देशित फिल्म" सीता और गीता" को भारत में अद्भुत कामयाबी मिली।इस फिल्म ने भारत के अनेक शहरों में गोल्डेन जुबली मनाई। 1973 में तत्कालीन सोवियत संघ के सभी राज्यों में इस फिल्म को रूसी भाषा में डब करके दिखाया गया। उज़्बेकिस्तान में इस फिल्म ने कामयाबी का नया इतिहास रचा। हेमा मालिनी उज़्बेकिस्तान के घर- घर लोकप्रिय हो गई। टीवी पर इसका प्रसारण अनेक बार हुआ है। मुझे मॉस्को में अपने प्रवास के दौरान इस फिल्म को टी वी पर देखने का सौ भाग्य अनेक बार मिला। हेमा मालिनी के अप्रतिम अभिनय और अदाओं के कारण यह फिल्म आज भी पुरानी पीढ़ी की यादों का हिस्सा बनी हुई है।

मिथुन चक्रवर्ती की अद्भुत लोकप्रियता - राज कपूर के बाद जिस फिल्म अभिनेता को उज़्बेकिस्तान में पसंद किया गया वह थे - मिथुन चक्रवर्ती। मिथुन चक्रवर्ती को ‘मृगया’ फिल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल हुआ। लेकिन उनकी तकदीर बदली फिल्म "डिस्को डांसर "से। इस फिल्म ने भारत सहित विश्व के अनेक देशों में लोकप्रियता हासिल की। रूस और उज़्बेकिस्तान सहित अनेक देशों में इस फिल्म के नृत्य, गीत और संगीत ने तहलका मचाया।"आया मैं डिस्को डांसर" तथा " जिमी, जिमी , जिमी , आजा, आजा , आजा” ने अपार लोकप्रियता हासिल की। रूस में हिंदी का अध्यापन करने वाली प्रोफेसर और मेरी मित्र डॉ इंदिरा गजायवा के अनुसार - " मेरे अनेक रिश्तेदार ताशकंद में रहते हैं। मैं साल में दो बार ताशकंद जाती हूं। मैंने राजकपूर की फिल्मों की लोकप्रियता के बारे में सुना था लेकिन मिथुन चक्रवर्ती की अपार लोकप्रियता को मैंने देखा। रूस में भी युवा पीढ़ी मिथुन चक्रवर्ती के गीतों की दीवानी है और उज़्बेकिस्तान की भी। अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और हेमा मालिनी की फिल्में उज़्बेकिस्तान में खूब चलती है। दो देशों की दोस्ती को मजबूत करने में फिल्मों और गीत संगीत की अहम भूमिका होती है। रूस और उज़्बेकिस्तान में राज कपूर , मिथुन चक्रवर्ती , हेमा मालिनी और अमिताभ बच्चन की फिल्मों की अद्भुत लोकप्रियता इसका जीवंत प्रमाण है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की उज़्बेकिस्तान यात्रा - भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जुलाई 2015 में दो दिवसीय यात्रा पर उज़्बेकिस्तान पहुंचे। उन्होंने ट्वीट में लिखा -" उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्में, भाषा और संगीत बेहद लोकप्रिय हैं। 2012 में उज़्बेक रेडियो ने हिंदी प्रसारण के 50 साल पूरे किए।"

भारत का 53 वां अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव - 20 से 28 नवंबर को भारत के 53 वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया। इस फिल्म महोत्सव में निर्देशक खिलाल नसीमोव ने कहा कि हम भारतीय संगीत सुनते और भारतीय फिल्में देखते हुए बड़े हुए हैं, इनमें राज कपूर, हेमा मालिनी और शाहरुख खान सहित कई कलाकारों की फिल्में शामिल हैं। हम उन सभी से प्यार करते हैं, वे हमारे जीवन का एक अतिभावनात्मक हिस्सा हैं।[6] फिल्म निर्माता अताबेक खोदजीव ने भारतीय फिल्म निर्माताओं को उज़्बेकिस्तान के फिल्म संस्थान का दौरा करने और अपने देशमें फिल्म शूटिंग में सहयोग करने केलिए आमंत्रित किया। उन्होंने कहाकि हम चाहते हैं कि भारतऔर- उज्बेकिस्तान ह दोस्ती कीमेशा बनी मज़बूत तरह की रहे .

डॉ बरनो उनगबोएवा ने कहा कि ताशकंद इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 5 दिवसीय फिल्म निर्माण प्रतियोगिता में भाग लेने केलिए पश्चिम बंगाल के छात्रों को आमंत्रित किया गया है।

उज्बेकिस्तान में ताशकंद अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सूचना प्रसारण राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन द्वारा भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व –

सितम्बर 2023 को 15वें ताशकंद अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में सूचना प्रसारण राज्य मंत्री डॉ. एल मुरुगन ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस प्रतिनिधि मंडल में भारत के फिल्म निर्माता और

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

निर्देशक उमेश मेहरा तथा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के अधिकारी शामिल थे। उज्बेकिस्तान के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री ओजोडबेक नजरबेकोव ने दोनों देशो की पारंपरिक मित्रता और सहयोग की चर्चा की और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने की जरूरत पर बल दिया और फिल्म सह निर्माण, शूटिंग, और पोस्ट प्रोडक्शन के क्षेत्र में सहयोग की पेशकश की।

सोवियत संघ और भारत का संयुक्त प्रयास - फिल्म" परदेसी"- 1954 में भारतीय फिल्म कलाकारों के शिष्टमंडल की कामयाब यात्रा के बाद ख्वाजा अहमद अब्बास को छोड़कर शिष्टमंडल के सभी सदस्य भारत लौट आए लेखक और फिल्म निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास वहीं रुक गए। मॉस्को में अब्बास और वहां के फिल्म निर्देशकों की यह राय बनी कि भारत और रूस को मिलकर एक फिल्म बनानी चाहिए जिससे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध और मजबूत हो सके। इस तरह मोस फिल्म स्टूडियो मॉस्को और नया संसार (भारत) के संयुक्त बैनर तले फिल्म"परदेसी" बनाने का फैसला हुआ। यह भी तय हुआ कि फिल्म का निर्माण दो निर्देशक - ख्वाजा अहमद अब्बास और प्रोनिन मिलकर करेंगे। संगीतकार भी दो होंगे। फिल्म को रूसी और हिंदी में बनाया जाएगा। यह फिल्म त्वेर (रूस) के व्यापारी अफ़ानासी निकितिन के जीवन पर आधारित है जिसने 1466 से 1469 तीन साल तीन समुद्र पार करके भारत की यात्रा की। इस फिल्म में नायक की भूमिका ओलेग ने निभाई थी। नर्गिस , पृथ्वीराज कपूर, बलराज साहनी , डेविड और पद्मिनी आदि कलाकारों ने काम किया। हिंदी फिल्म में संगीत अनिल विश्वास का था और गीत अली सरदार जाफरी और प्रेम धवन ने लिखे थे। इसका एक गीत " फिर मिलेंगे जाने वाले यार दस्विदानिया" लोकप्रिय हुआ था। हिन्दुस्तान के लोगों ने दस्विदानिया (गुड बाय फिर मिलेंगे) का अर्थ जाना। लेकिन फिल्म भारत में कामयाब नहीं हुई थी। लेकिन रूस में यह फिल्म चली थी।

अलीबाबा और 40 चोर- भारत और सोवियत संघ के सहयोग से अलीबाबा और 40 चोर का निर्माण किया गया। उमेश मेहरा और फैजीमेव ने इस फिल्म का निर्देशन किया। हिंदी और रूसी भाषा में यह फिल्म 1980 में रिलीज़ हुई थी। अलीबाबा की भूमिका धर्मेन्द्र ने निभाई थी। मरजीना का किरदार हेमा मालिनी ने निभाया था। फ्रूंजे मार्कटविन , प्रेम चोपड़ा आदि कलाकारों ने दिलचस्प अभिनय किया था। इस फिल्म का गीत " जादूगर जादूगर जाएगा "गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था। 2023 में भारत में आयोजित " शंघाई सहयोग संगठन फिल्म महोत्सव " (एस सी ओ) के उद्घाटन समारोह में हेमामलिनी ने इस फिल्म के पुनः निर्माण की इच्छा ज़ाहिर की। उम्मीद है कि भारत और उज़्बेकिस्तान के सहयोग से इस फिल्म का पुनः निर्माण किया जाएगा। 1980 में बनने वाली इस फिल्म के भारतीय निर्देशक ने भी पुनर्निर्माण के लिए दिलचस्पी दिखाई है। निष्कर्ष - उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों की लोकप्रियता का एक स्वर्णिम इतिहास रहा है। राज कपूर, मिथुन चक्रवर्ती के बाद अमिताभ बच्चन और शाहरुख खान की फिल्में लगातार लोकप्रिय रही है। भारत के महान धारावाहिक " रामायण" और " महाभारत" सीरियल भी वहां बड़े चाव से देखे जाते हैं। उज़्बेकिस्तान के हवास म्यूजिकल ग्रुप ने (जिसकी स्थापना एर्मतोव रुस्तम और एर्मतोवा मतलुबा ने की थी)भारत और उज़्बेकिस्तान की सांस्कृतिक संबंधो को और मजबूत बनाने के लिए अप्रतिम कार्य किया| भारत और उज़्बेकिस्तान के सांस्कृतिक संबंधो की मजबूती के लिए दोनों देशों को संयुक्त रूप से फिल्म निर्माण की कोशिश करनी चाहिए जिससे दोनों देशों की दोस्ती और मजबूत हो सके। फ़िल्में केवल मनोरंजन ही नहीं करती बल्कि दो देशों के दिलों को भी जोडती हैं .

सन्दर्भ –

1. सिनेमा पढ़ने के तरीके (लेखक – विष्णु खरे), प्रवीण प्रकाशन, नयी दिल्ली (पृष्ठ 11)
2. विश्व हिंदी पत्रिका-2017, प्रोफेसर सिरोजिद्दिन सुल्तानमुरातोविच नुर्मातोव (पृष्ठ 130)
3. विश्व सिनेमा का सौन्दर्यबोध (संपादक – श्री राम तिवारी, प्रभुनाथ सिंह) , भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली (पृष्ठ 155)
4. भारत के पूश्किन – शैलेन्द्र (लेखक – इंद्रजीत सिंह) वी. के. ग्लोबल, फरीदाबाद (पृष्ठ 10)
5. I Am Not An Island (K A Abbas) Vikas Publishing House, New Delhi(Pg. 372)
6. पंजाब केसरी, 30 सितम्बर 2023

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान मे भारतीय संस्कृति और हिंदी की गूँज

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13764953

डॉ. जवाहर कर्नावट ,सलाहकार
प्रवासी भारतीय साहित्य एवं संस्कृति शोध केंद्र,
निदेशक,अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र, रबींद्रनाथ टैगोर
विश्वविद्यालय,भोपाल,भारत

प्राचीन काल से ही भारत और उज़्बेकिस्तान के व्यापारिक संबंध रहे हैं। सिल्क रोड़ पर व्यापार के माध्यम से विचारो और तकनीक का आदान प्रदान भी हुआ । भारत मध्य एशिया के रूप में बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म को पेश करने वाले पहले देशों में से एक था और गणित, खगोल विज्ञान और चिकित्सा क्षेत्र के अपने ज्ञान को साझा किया । अनेक प्रकार के मसालो का व्यापार भी किया सांस्कृतिक समानताएं साझा की और मैत्रीपूर्ण संबंध भी बनाए रखे। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद उज़्बेकिस्तान और भारत के नए संबंधो का सूत्रपात हुआ। उज़्बे लोगो ने भारत में स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया और कुछ उज़्बेले नेताओ ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई में मदद की ।

भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच सांस्कृतिक संबंध भी काफी समृद्ध रहे हैं। दोनो देशो के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान, लोगों के आपसी सम्पर्क के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधो को मजबूती मिली है। उज़्बेकिस्तान में भारतीय साहित्य से परिचित होने और अध्ययन का कार्य 1925-26 के दौरान ही प्रारंभ हो गया था। इसकी शुरूआत रवींद्रनाथ टैगोर की कहानियों और कविताओ का उज़्बेकी और रूसी भाषाओं में अनुवाद हुआ। इसके पश्चात 1940 से 1960 के मध्य प्रेमचंद,कृष्ण चन्दर, मोहम्मद इकबाल,मिर्जागालिब अली सरदार जाफरी, फैज अहमद फैज, अमृता प्रीतमा और यशपाल की रचनाएं भी प्रकाशित हुई ।

भारत और उज़्बेकिस्तान के वैज्ञानिक संबंधो, में महान प्राच्यविद अबू रेहान बेरूनी की उपलब्धिया अलग स्थान रखती है। भारत की आजादी के बाद भारत और उज़्बेकिस्तान के संबंध नये स्तर पर पहुँचे। 1955-1961 के दौरान स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू ने दो बार उज़्बेकिस्तान की यात्रा की थी। वे ताशकंद के आलावा समरकंद और बुखारा भी गए थे।

दोनो देशो के संबंध केवल संस्थाओं के स्तर पर ही नही बल्कि जन- कूटनीति की संभावनाओं के विस्तार के तौर पर लाभ उठाने में भी विकसित हो रहे है। सन् 1992 का 18 मार्च उज़्बेकिस्तान और भारत की जनता की मित्रता और सहयोग के लिए ऐतिहासिक तिथि मानी जाती है। इसी दिन भारत और उज़्बेकिस्तान में राजदूतावासों के उदघाटन के बारे में प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किये गए थे। इस प्रोटोकोल के अनुसार 1992 के सितम्बर में दिल्ली में उज़्बेक जनतंत्र के

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कार्यालय का उद्घाटन किया गया था। सन 1994 के जनवरी माह में कौंसलावास राजदूतावास में परिवर्तित किया गया था । 7 अगस्त 1988 को ताशकंद में भारत का प्रधान कौसलावास कार्यरत हो गया था और सन 1992 में वह राजदूतावास में परिवर्तित हो गया ।

सन 1995 में ताशकंद में भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र का उद्घाटन भारत-उज़्बेकिस्तान के सांस्कृतिक संबंधो के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना साबित हुई थी। सन 2004 में इस केन्द्र को लालबहादुर शास्त्री की 100 वी वर्षगांठ के अवसर पर उन्हीं का नाम दिया गया। यह केन्द्र आजकल दोनो देशो की सांस्कृतिक तथा कला के बीच में एक सेतु का कार्य कर रहा है। हिंदी भाषा के शिक्षण के साथ ही यहां योग तथा कत्थक का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति उज़्बेकिस्तान की संस्कृति से काफी मिलती जुलती है। उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मे अत्यन्त लोकप्रिय है। हर दो साल में ताककंद में होने वाले "एशियाई, अफ्रीकी और लातिन अमरीकी देशो के फिल्मोत्सव में भी भारतीय फिल्मो की भारत विद्या का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।श्री अहमद जान ने 1980 से 2006 तक भारतीय श्रोताओं के लिए हिंदी और उर्दू भाषाओ में उज़्बेकिस्तान के बारे में रेडियो का कार्यक्रम तैयार करने के साथ-साथ 5 सितम्बर 1994 से दूरदर्शन पर 'नमस्ते' नामक एक घंटे का कार्यक्रम भी तैयार किया। इस कार्यक्रम का माध्यम से उज़्बेकिस्तान के दर्शको को भारत के इतिहास संस्कृति, कला और रीति-रिवाज से अवगत कराया गया । सन 1998 से YOSHALARरेडियो चैनल पर नमस्ते हिन्दुस्तान नामक कार्यक्रम की प्रस्तुति हो रही है। धारावाहिक 'बहादुर शाह जफर' और दिशाएं का भी श्री अहमद अनुवाद कर चुके है। नमस्ते हिन्दुस्तान कार्यक्रम का उद्देश्य उज़्बेकिस्तान भारत मित्रता को बढ़ाना है। श्रोताओं के अनुरोध पर 25 साल से हिन्दी भाषा भी सिखाते हैं और प्रतियोगिताओ का आयोजन करते हैं। इन कार्यक्रमों के बारे में सिर्फ उज़्बेकिस्तान के नगरो व गांवो से ही नही बल्कि तुर्किस्तान एवं ताजिकिस्तान से भी पत्र प्राप्त होते है।

अपनी उज़्बेकिस्तान यात्रा के दौरान मुझे ताशकंद, समरकंद और बुखारा भी जाने का अवसर मिला। किताबी जानकारी से हटकर प्रत्यक्षरूप से हिंदी शिक्षण, साहित्यऔर अनुवाद के क्षेत्र में हुए वृहत् कार्य को जानने समझने का अवसर प्राप्त हुआ। उज़्बेकिस्तान में 1947 से हिंदी भाषा और साहित्य का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। उज़्बेक के अनेक विद्वानों ने अत्यन्त समर्पित भाव से हिंदी को समृद्ध किया है। ऐसे अनेक विद्वानों से प्रत्यक्ष रूप से चर्चा का अवसर भी प्राप्त हुआ ।

उज़्बेकिस्तान अन्य देशो से हिंदी शिक्षण के मामले में इसलिए भी भिन्न है क्योकि यहां के हिंदी विद्यालय के इस क्षेत्र में विशिष्ट भूमिका का निर्वाह कर रहे है। यूरोपीय तथा अन्य देशों में हिंदी पढ़ाई की शुरूआत विश्वविद्यालय स्तर से प्रारंभ होती है जबकि उज़्बेकिस्तान में विद्यालय में प्रारंभिक शिक्षा के आधार पर हिंदी की समृद्ध पीढ़ी तैयार हो रही है। उज़्बेकिस्तान में हिंदी विद्यालयों के इतिहास के बारे पता चला कि यहां के चार विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती थी। इन पाठशालाओं की शुरूआत 1955 के आसपास हुई । पाठशाला क्रमांक 24प्रसिद्ध लेखक दिमित्रोव

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

के नाम से ताशकंद में प्रारंभ हुई थी। 1972 में इसका नाम बदलकर लालबहादुर शास्त्री विद्यालय किया गया। सन 1974 में इस विद्यालय के परिसर में शास्त्री जी की प्रतिमा स्थापित की गई जिसका उद्‌घाटन प्रसिद्ध अभिनेता श्री राजकपूर ने किया। अपनी ताशकंद यात्रा में लालबहांदुर शास्त्री हिंदी विद्यालय जाने का अवसर उज़्बेकिस्तान की हिंदी विद्वान सुश्री उल्फत मुखिबोवा के माध्यम से प्राप्त हुआ जो स्वयं इस विद्यालय की छात्रा रही है। इस विद्यालय की प्रधान दिलदोरा नसीखा ने बताया कि इस विद्यालय में कक्षा 5 से 11 तक के लगभग 700 विद्यार्थी अन्य विषयो के साथ हिंदी का भी अनिवार्य रूप से अध्ययन करते हैं। 7 हिंदी अध्यापिकाएं प्रत्येक सप्ताह में 3 दिन 3 घंटे हिन्दी अध्यापन का कार्य भी संभालती है। इन विद्यार्थियों को हिंदी पढ़ाने हेतु पाठ्य समाग्री को निरन्तर अद्यतन भी किया जाता है । सन 2021 में कक्षा 5 से 11 तक की सात पुस्तकों को संशोधित करने का कार्य पाठ्शाला के अध्यापको तथा ताशकंद राजकीय प्राच्य अध्याय विश्वविद्यालय के हिंदी अध्यापको की गठित पाठ्य पुस्तक समिति द्वारा किया गया। ये पुस्तके भारतीय राजदूतावास तथा लाल बहांदुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली के वित्तीय अनुदान से प्रकाशित हुई है। इन पुस्तको की विषय वस्तु की संरचना इस तरह की गई है कि विद्यार्थी भाषा अध्ययन के साथ-साथ भारत की संस्कृति, इतिहास और महापुरूषो के जीवन से भी भलीभांति परिचित हो जाते हैं। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव ने अपनी उज़्बेकिस्तान यात्रा में इस विद्यालय के विस्तार हेतु 25 हजार यूएसए डालर की सहायता प्रदान की थी। इस सहायता से ही विद्यालय के भवन का विस्तार हुआ। इस विद्यालय के अलावा उज़्बेकिस्तान में हिंदी की पढ़ाई हेतु तीन अन्य विद्यालय भी संचालित थे। ताशकंद राजकीय प्राच्य अध्ययन विश्वविद्यालय में दक्षिण एशियाई भाषा संकाय में हिंदी के एसासिएट प्रोफेसर डॉ. सिरोजिद्दीन नुर्मातोव ने अपनी हिंदी की पढ़ाई 1957 में प्रारंभ मायनाखा सानोवा नामक हिंदी पाठशाला में पूर्ण की । किन्तु यह पाठशाला सन 2000 में बंद हो गई । इसके अलावा अंदीजान में भी हिन्दी पाठशाला का संचालन बंद हो चुका है किन्तु इसके विद्यार्थी श्री अहमदजान कासिमोव रेडियो पर नमस्ते कार्यक्रम का संचालन हिंदी में कर रहे है।

उज़्बेकिस्तान की पाठशालाओं ने हिन्दी विद्याथियों की एक ऐसी टीम तैयार की जिन्होंने उच्च शिक्षा में भी हिन्दी को स्थापित करने का महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया । पाठशालाओं के ये विद्यार्थी ही ताशकंद की ओरिएंटल यूनिवर्सिटी के भारत विद्या विभाग के छात्र बने। अब तक भारत विद्या विभाग में 1000 से अधिक विशेषज्ञ तैयार किए है। इनमें प्रमुख राजनेता, राजदूत मंत्री शिक्षा विद्, प्रोफेसर, अनुवादक और विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले भी शामिल हैं। इनमें प्रमुख रहे है श्री फतीख तेशा बायेव, सूरत मिरका सियोव,ताश मिरज़ा खोल मिरआयेव। प्रसिद्ध भारतविद प्रो. रानो गुल्यामोवा,प्रो. आजाद शामातोवा, तमारा खोदजायेवा,शीरीन जलिलोवा, प्रो. उल्फत मुहीबोवा, रखमोन बर्डी मुहम्मद जोनोव, नबी मुहामेदोव प्रो. चन्द्रशेखर,डॉ. सिराजुद्दीन नूरमा तोवे आदि ने अपने अकादमिक कार्यो से उज्बेक-भारत के साहित्यिक एवं साहित्यिक पक्ष को दृढ़ता प्रदान की है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टीज के दक्षिण एशियाई भाषाओं के विभाग में हिंदी भाषा और साहित्य बी.ए. तथा पी.एच.डी. स्तर तक पढ़ाया जाता है। हर साल विद्यार्थीगण भाषा शास्त्र और साहित्यशास्त्र के विभिन्न विषयों पर शोध लिखते रहते है। प्रो. उल्फत मुहीबोवा के मांर्गदर्शन में बी.ए और एम.ए. के विद्यार्थीगण प्राचीन भारतीय साहित्य से रामायण, महाभारत हितोपदेश, पंचतंत्र जैसी रचनाओं तथा 20वीं सदी के भिन्न लेखकों और कवियो की रचनाओं से संबंधित शोध कार्य भी सम्पन्न कर चुके है । विश्वविद्यालय के दक्षिण भाषाओं के विभाग में सत्रह अध्यापक हिंदी,उर्दू और भारतीय भाषाओं के साहित्य से संबंधित कई विषयो को विद्या र्थियों को अध्ययन करवाते है। विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित हिंदी की विभागाध्यक्ष सुश्री निलोफर की भी सक्रिय भूमिका रहती है। उज़्बेकिस्तान में उच्च शिक्षा के अलावा आम उज़्बेक लोगो के लिए एक साल का हिंदी भाषा पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस केन्द्र में योग और कथक की कक्षाओं को भी देखने का अवसर मिला। उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों, गीतो और नृत्यों के माध्यम से भी भारत और हिंदी भाषा के प्रति रूचि पैदा हुई है। उज़्बेक टी.वी.चैनलो पर उज़्बेकी में महाभारत और रामायण धारावाहिक का प्रसारण हुआ था। प्रसिद्ध अनुवादक अमीर फायजुलायेब ने इन धारावाहिको का अनुवाद किया जिन्हें बहुत पसंद किया गया।

उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शवकत मिर्जियोयेव ने 2019 में अपनी भारत यात्रा के दौरान उज्बेकिस्तान और भारत के विश्वविद्यालयों के बीच संयुक्त शैक्षिक कार्यक्रमों के संचालन सम्बंधी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे । इसी आधार पर सन 2020 में गुजरात विश्वविद्यालय और ताशकंद यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज के बीच भाषा विज्ञान में मास्टर डिग्री के लिए सन्युक्त शैक्षिक कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए गए । इसी कार्यक्रम के अंतर्गत उज्बेकिस्तान के 5 छात्रों ने सफलतापूर्वक अपनी पढाई पूर्ण कर मास्टर डिग्री प्राप्त की ।

इस प्रकार उज्बेकिस्तान और भारत के सांस्कृतिक,साहित्यिक एवं भाषाई संबंधों को दोनों देशों के विद्वानों ने अपने अध्ययन और शोध से एक नई दिशा प्रदान की है

संदर्भ

1. Indian Council of World affairs की पत्रिका में प्रकाशित लेख-- भारत और उज़्बेकिस्तान द्विपक्षीय संबंध :एक नई पहल - चित्रा राजेश

2. विश्व में हिंदी रिपोर्ट में प्रो. उल्फत मुहिबोवा का लेख "हिंदी भाषा और साहित्य उज़्बेकिस्तान में ।

3. विश्व हिंदी सचिवालय की विश्व हिंदी पत्रिका में प्रो. तमरा खोद जायेबा का लेख - “भारत और उज़्बेकिस्तान के साहित्यिक संबंधों के विकास की समस्याएं ।“

4. उज्बेकिस्तान यात्रा के दौरान प्राप्त विविध संन्दर्भ ।

5. इंडिया क्लब, ताशकंद की पत्रिका वार्षिक दपर्ण 2023 ।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

भारत उज़्बेकिस्तान के बीच ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंध (प्राचीन काल से मध्य काल तक)

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13764965

नेहा राठी
उप निदेशक
राज्यसभा सचिवालय
संसद भवन

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और विशाल ऊर्जा भंडार के कारण मध्य एशिया विश्व की महाशक्तियों के बीच आकर्षण का केन्द्र बन कर उभरा है। मध्य ऐशिया के जिस वर्तमान स्वरूप से हम परिचित हैं वह पश्चिम में कैस्पियन सागर से लेकर पूर्व में पश्चिमी चीन की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में रूस और दक्षिण में ईरान,अफ़गानिस्तान और चीन से घिरा हुआ है व इस क्षेत्र में कज़ाकिस्तान,उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, किर्गिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के पूर्व सोवियत गणराज्य शामिल हैं ।[1]मध्य ऐशिया और भारत के बीच परस्पर ऐतिहासिक प्रभावों पर अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने गहन प्रकाश डाला है और इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि साझी सीमा,समान भौगोलिक विशिष्टताओं और भू-सांस्कृतिक सादृश्यताओं के कारण भारत और मध्य ऐशिया के बीच प्राचीन काल से ही सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक संबंध रहे हैं।[2] एक सामान्य ऐतिहासिक धारणा यहभी है कि आर्य मध्य एशिया से ही भारत आए थे।

यूँ तो प्रचुर ऐतिहासिक प्रमाणों और विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोध कार्यों से यह स्पष्ट है कि भारत और सम्पूर्ण मध्य एशिया के बीच गहन सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक संबंध थे किंतु विशिष्ट रूप से इस क्षेत्र में अवस्थित फ़रगना, समरकंद, बुखारा व ताशकंद जैसे प्रसिद्ध महत्वपूर्ण नगरों वाले उज़्बेकिस्तान के साथ भारत के संबंधप्राचीन काल से ही घनिष्ठ रहे।गौरतलब है कि वर्तमान उज़्बेकिस्तान गणतंत्र केवल 1991 में ही अपने अस्तित्व में आया पता है और जब हम भारत और उज्बेकिस्तान के मध्य ऐतिहासिक संबंधों की चर्चा करते हैं तो मुख्य तौर पर हम भारत और तत्कालीन मध्य एशिया के ऐसे कुछ हिस्से की बात करते हैं जिसमें ताशकंद, अमु दरिया, सीर दरिया, फ़रगना घाटी, समरकंद, बुखारा आदि आता है।इस प्रकार जब हम भारत उज्बेकिस्तान के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों की बात करते हैं तो हम मोटे तौर पर दक्षिण और मध्य एशिया के साथ प्राचीन और मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक संबंधों की बात करते हैं।राष्ट्र

[1]मध्य एशियाक्षेत्र, एशिया, https://www.britannica.com/place/Central-Asia

[2]जे. एन. रॉय एंड बी. बी. कुमार, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया: क्लासिकल टू कंटेम्परेरी पीरियड्स, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 2004, पृष्ठ सं. 3

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अथवा राज्य की अवधारणा (अर्थात् एक औपनिवेशिक और पश्चिमी अवधारणा) से पहले मध्य एशिया में स्थित फ़रगना, समरकंद, बुखारा व ताशकंद जैसे सांस्कृतिक क्षेत्र का बड़ा हिस्सा अब समकालीन उज़्बेकिस्तान या इसके पड़ोस में अवस्थित है। अतः इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत और उज़्बेकिस्तान ऐसे देश या क्षेत्र हैं, जिनके बीच ऐतिहासिक रूप से बहुत घनिष्ठ संबंध रहे हैं और इसी कारणवश दोनों राष्ट्र इतिहास में होने वाली कई सामाजिक-सांस्कृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं को साझा करते हैं।[3]

प्राचीन संबंध भारत और उज़्बेकिस्तान प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में परस्पर जुड़े रहे हैं। मध्यकाल में तो इस संबंध के प्रचुर प्रमाण मिलते ही हैं किंतु इस बात के प्रमाणों का भी आभाव नहीं है कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही किसी न किसी रूप में एक दूसरे से संबंधित रहे हैं। इन दोनों देशों में अनेक प्रागैतिहासिक स्थलों की उपस्थिति इस बात का प्रमाण है कि सामाजिक श्रेत्र से लेकर सांस्कृतिक क्षेत्र तक यह दोनों देश प्राचीनकाल से ही एक दूसरे को न केवल प्रभावित करते आए हैं अपितु यह परस्पर ऋणी भी हैं। दक्षिणी उज़्बेकिस्तान की अमू दरिया घाटी और उज़्बेकिस्तान में समरकंद के उत्तर पूर्वी हिस्से भारत और उज़्बेकिस्तान के प्रागैतिहासिक संपर्कों के पुख्ता प्रमाण देते हैं।[4] दक्षिणी उज़्बेकिस्तान की अमू दरिया घाटी, समरकंद के उत्तर-पूर्वी छोर में स्थित अफरासियाब और उज़्बेकिस्तान के अन्य हिस्सों में हुई खुदाई से यह पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं कि भारत और मध्य एशिया में प्राचीन काल से ही गहन संबंध रहा है।[5]भारत में हडप्पा संस्कृति में मध्य एशियाई तत्व मिलते हैं। सोहन संस्कृति के अनेक स्थलों का प्रसार मध्य एशिया तक था। महाभारत में ऐसी अनेक मध्य एशियाई जातियों का उल्लेख मिलता है जिन्हें कौरवों और पांडवों की ओर से युद्ध में शामिल होने का आमंत्रण दिया गया था। ऐसा ही उल्लेख रामायण में भी मिलता है।[6] उज़्बेकिस्तान में पाए गए पुरातात्विक साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि भारत और मध्य एशिया के बीच प्राचीन काल से ही संबंध रहे हैं।पियॉन्जिकंदमें मिले भित्तिचित्र अजंता के भित्तीचित्रों की याद दिलाते हैं। सोवियत विद्वान ए. बेलेनित्सकी को इन भित्तीचित्रों में नीले रंग के एक ऐसे नृतक का चित्र मिला जिसने बाघचर्म लपेटा हुआ है और जिसके हाथ में त्रिशूल है। उनके अनुसार यह चित्र शिव के नीलकंठ बनने की कथा से संबंधित है। वराख्शामें मिले एक अन्य अद्‌भुत चित्र में राजा को हाथी की पीठ पर बैठकर शिकार करता हुआ दिखाया गया है। यह स्पष्टतः भारतीय परम्परा के प्रभाव को दर्शाता है क्योंकि इस प्रकार शिकार करना मध्य एशिया में सामान्य नहीं था।[7]

---

[3] इंडिया-उज़्बेकिस्तान कल्चरल रिलेशन:हिस्ट्री, हेरिटेज एंड पॉसिबिलीटीज़, https://cyberleninka.ru/article/n/india-uzbekistan-cultural-relation-history-heritage-and-possibilities#:~:text=In%20today's%20context%20there%20are,traditions%20and%20faiths%20like%20Mitraism.

[4] अमित कुमार सिंह, भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन(2016), http://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v4i7/sbd-v4-i7-sn16.pdf

[5]जे. एन. रॉय एंड बी. बी. कुमार, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया: क्लासिकल टू कंटेम्परेरी पीरियड्स, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 2004, पृष्ठ सं. 3

[6] अमित कुमार सिंह, भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन(2016), http://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v4i7/sbd-v4-i7-sn16.pdf

[7]देवेन्द्र कौशिक, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया इन मॉड्रन टाईम्स, सातवाहन पब्लिकेशन्स, दिल्ली (1985), पृष्ठ सं.15

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

भाषा जनसामान्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है और भारत व उज़्बेकिस्तान की भाषाएँ भी इसका अपवाद नहीं रहीं। चूँकि राष्ट्र के तौर पर उज़्बेकिस्तान एक नई अवधारणा है अतः यदि भू-क्षेत्र के संदर्भ में देखा जाए तो भारत और मध्य एशिया की भाषाएँ एक दूसरे के साथ घुल मिल गईं हैं। प्राचीन मध्य एशिया पर ईरानी प्रभाव था और उसकी भाषा फ़ारसी से प्रभावित थी। भारत और उज़्बेकिस्तान की भाषाओं में उच्चारणगत समानताओं के प्रमाण मिलते हैं।[8]समरकंद, उज़्बेकिस्तान के सबसे पुराने शहरों में से एक है जिसका भारत के साथ एक गहरा संबंध प्रतीत होता है। 329 ईसा पूर्व में जब यह मेसिडोनिया के शासक सिकंदर के कब्जे में आया तो इस शहर को ***मारकंडा*** के नाम से जाना जाता था।[9]यह सोग्डियाना की राजधानी थी और 329 ईसा पूर्व में सिकंदर महान ने इस पर कब्ज़ा कर लिया था।[10]मारकंडा भारतीय शब्द मार्कंडेय के समान लगता है। भारत में एक मार्कंडेय ऋषि हुए औरसाथ ही इस नाम से एक पुराण भी है। हिंदू देवता शिव का भी एक नाम मार्कंडेय है। ध्यान देने योग्य एक मुख्य बात यह है कि उज़्बेकिस्तान के इस आधुनिक शहर के पुराने और नए नाम में एक अनोखी समानता देखने को मिलती है। दोनों ही शब्दों के अंत में कंड शब्द मिलता है जैसे कि मारकंडा शब्द भी **मार + कंड** से मिलकर बना है और समरकंद भी **समर+कंद** से मिलकर बना है जिसमें कंड अथवा कंद एक आम बात है।सोग्डियन भाषा, जो कि मध्य एशिया के एक बहुत बड़े भूभाग में बोली जाती थी,में समर का अर्थ पत्थर या शिला होता है और कंद अथवा कंड का दोनों ही स्थितियों में अर्थ क्षेत्र विशेष या भौगोलिक क्षेत्र से है। इस प्रकार समरकंद का अर्थ हुआ पत्थरों शिलाओंका स्थान।यह कंद अथवा कंड खंड शब्द का ही बिगड़ा हुआ स्वरूप प्रतीत होता है और यहाँ भी यह भौगोलिक क्षेत्र का ही परिचायक है। इसी तर्क पर अगर देखा जाए तो भारतीय संदर्भ में मारकंद का अर्थ है एक ऐसा स्थान जहां का वातावरण प्रतिकूल हो।[11] एक मत के अनुसार मारकंद, समरकंद का संस्कृत नाम ही है। एक किवदंती यह भी है कि समरक़न्दी (समरक़न्द के निवासी) सम्बरखण्डी का ही अपभ्रंश रूप है। मान्यता है कि महारानी उषा के पिता सम्बासुर के उत्तराधिकारी थे। इसीलिए समरक़न्द के नजदीक खीवा और बुखारा के बीच रहने वाले लोग उषबेक कहलाते हैं। उषबेक उज़्बेक का अपभ्रंश हैऔर जिस स्थान पर श्रीकृष्ण का सम्बरासुर से युद्ध हुआ था वह समरकन्द कहलाया।वहीं उज़्बेकिस्तान के एक अन्य प्रसिद्ध शहर बुखारा का नाम भी विहार शब्द से बना है। महाभारत में शक, दारादा, पहलव, यवन, किरात जैसी मध्य एशियाई जातियों का भी उल्लेख मिलता है। मत्स्य पुराण व वायु पुराण में चक्षु नदी का उल्लेख है जिसे वर्तमान में अमु दरिया के नाम से जाना जाता है। गौतमबुद्ध के व्यक्तिग चिकित्सक जीवक ने अपने लेखों में उत्तरी असलनदा और ताशकंद का वर्णन किया है।[12]पाली और संस्कृत साहित्य में

[8] अमित कुमार सिंह, भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन(2016), http://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v4i7/sbd-v4-i7-sn16.pdf

[9]अथर ज़फर, इंडिया-सेन्ट्रल एशिया रिलेशन्स :द रोड अहेड, अनामिका पब्लिशर्स (2013), पृष्ठ सं. 108

[10]समरक़ंद,उज़्बेकिस्तान, https://www.britannica.com/place/Samarkand-Uzbekistan

[11]अथर ज़फर, इंडिया-सेन्ट्रल एशिया रिलेशन्स : द रोड अहेड, अनामिका पब्लिशर्स (2013), पृष्ठ सं. 108

[12] अमित कुमार सिंह, भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन(2016), http://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v4i7/sbd-v4-i7-sn16.pdf

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कंबोज के नाम से वर्तमान उज्बेकिस्तान के कुछ हिस्सों का अक्सर उल्लेख मिलता है। गौरतलब है कि कंबोज प्राचीन भारतीय इतिहास में उल्लिखत सोलह महाजनपदों में से एक था।

मध्य काल में संबंध भारत और मध्य एशिया में प्राचीन काल से चले आ रहे राजनीतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध मध्य युग में और अधिक प्रगाढ़ हो गए।मध्य एशिया से आए अनेक शासक वंशों ने भारत में अपने शासन के दौरान यहाँ की सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण व विकास किया। उन्होंने क्षत्रप और महाक्षत्रप की उपाधियाँ ग्रहण कीं। शकों ने भागवत धर्म, वैष्णव धर्म अपनाया और सूर्य पूजा को शक्द्वीपी ब्राह्मणों के माध्यम से संरक्षण दिया।[13]कुषाण साम्राज्य मध्य एशिया (जिसमें वर्तमान उज़्बेकिस्तान भी शामिल है) से लेकर उत्तरी भारत के अधिकांश हिस्सों में फैला हुआ था। उल्लेखनीय है कि भारत का राष्ट्रीय संवत शक संवत है जिसे कनिष्क ने 78 ईसवी में प्रारंभ किया था।कल्हन की राजतरंगिनी से भी यह पता चलता है कि कश्मीर के राजा ललितादित्य के दरबार में भी मध्य एशिया मूल का एक मंत्री था।

बौद्ध धर्म मध्यकालीन युग के पूर्वार्ध में भारत के सामान्य तौर पर मध्य एशिया और विशिष्ट तौर पर उज़्बेकिस्तान के साथ संबंध का आधार भारत से उक्त भू-क्षेत्र में बौद्ध धर्म का विस्तार रहा। मध्य एशिया में बौद्ध धर्म का विस्तार इतिहास के सबसे बड़े सांस्कृतिक आदान प्रदान में से एक है। इस आदान प्रदान में बौद्ध विचारधारा और इस मत से जुड़े दार्शनिक विचारों का एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता के बीच आदान प्रदान हुआ। विद्वानों का मानना है कि मध्य एशिया बौद्ध मत की विभिन्न विचारधाराओं से अवगत था। धर्म ने दोनों भू-क्षेत्रों के परस्पर संबंधों के निर्वहन में अहम भूमिका निभाई। वैसे तो इस संबंध के साक्ष्य प्रागैतिहासिक काल से ही मिलने लगते हैं किंतु कुषाण काल आते आते इसमें उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिलती है।*कुषाण काल में ही बौद्ध धर्म ने भारत से मध्य एशिया में प्रवेश किया औरकालांतर में यह मत मध्य एशिया में इतना प्रचलित हो गया कि इसने अपने पूर्ववर्ती मत को प्रतिस्थापित कर दिया।* बौद्ध धर्म का जन्म भारत में हुआ था और यह भारत के रास्ते ही उज्बेकिस्तान और मध्य एशिया से होते हुए चीन पहुँचा।कुषाण काल के अनेक बौद्ध मठ आज भी मध्य एशिया में पाए जाते हैं। अदीना तेपे में बुद्ध की एक 12 मीटर लंबी मूर्ति पाई गई है जिसमें बुद्धनिर्वाण की अवस्था में हैं।[14]उज़्बेकिस्तान के निकट ज़ाँग टेपे में बौद्ध मत की संस्कृत में लिखी कई पांडुलिपियाँ मिलीं हैं।

राजनीतिक प्रभाव इस बात के प्रचुर प्रमाण है की दोनों ही क्षेत्रों में प्राचीन समय से ही विदेशी आक्रमण आम बात रही है और इन्हीं विदेशी आक्रमणों का इन क्षेत्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर गहरा प्रभाव पड़ा है। भारतीय इतिहास में सल्तनत काल और मुगल काल(13वीं शताब्दी की शुरूआत से लेकर 18वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में) ने भारत और मध्य एशिया के बीच कारवाँ की आवाजाही में तेजी का दौर देखा है। दिल्ली सल्तनत और मुगल दरबार में मध्य एशिया से आए

---

[13] अमित कुमार सिंह, भारत और मध्य एशिया : परस्पर संबंधों का ऐतिहासिक विवेचन(2016),http://shabdbraham.com/ShabdB/archive/v4i7/sbd-v4-i7-sn16.pdf

[14]जे. एन. रॉय एंड बी. बी. कुमार, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया: क्लासिकल टू कंटेम्परेरी पीरियड्स, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 2004, पृष्ठ सं. 6

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

विभिन्न विद्वानों, कलाकारों, सैनिकों और सूफी संतों को रखा गया। मध्य एशिया में खराब राजनैतिक और आर्थिक स्थितियों के कारण समय समय पर वहाँ से भारत की ओर पलायन किए जाने के बहुतेरे प्रमाण मिलते हैं।13वीं शताब्दी में मंगोल आक्रमण के कारण मध्य एशिया से विज्ञान और साहित्य से जुड़े कई विद्वान भारत आ गए थे। इन्हीं में से एक **अमीर खुसरो देहलवी** के पिता भी थे जो केश, उज़्बेकिस्तान से भारत आए थे। बुखारा, समरकंदआदि जगहों से करीब 274 शायरों के भारत की ओर प्रवास करने की बात कही गई है। भारत में फारसी, हिंदी और उर्दू के कुछ विख्यात कवि या शायर जैसे कि अमीर खुसरो, रहीम, मिर्जा बेदिल और मिर्जा गालिब के पूर्वज मध्य एशिया के उन क्षेत्रों से आकर भारत में बस गए थे जो आज उज़्बेकिस्तान के भू-क्षेत्र में आते हैं। मिर्जा गालिब और अमीर खुसरो उज़्बेक वंश के उल्लेखनीय भारतीय हैं।जहाँ मिर्जा गालिब को किसी परिचय की दरकार नहीं वहीं अमीर खुसरो का भी भारतीय साहित्य व संगीत में अप्रतिम योगदान रहा है। अमीर खुसरो ऐसे प्रथम मुस्लिम कवि थे जिन्होंने हिंदी शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है । वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी, हिन्दवी और फारसी में एक साथ लिखा । उन्हे खड़ी बोली के आविष्कार का श्रेय दिया जाता है ।भारतीय गायन में क़व्वाली, सितार और तबला इन्हीं की देन माना जाता है। इस दौर में तुर्रानियों को सैनिक के रूप में वरीयता मिलती थी और उन्हें भारतीय सैनिक की तुलना में दोगुना वेतन दिये जाने की बात भी कही गई है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी बड़े पैमाने पर मध्य एशिया से भारत की ओर लोगों का पलायन होता था। विद्वानों और सूफी संतों का मध्य एशिया से भारत आना विरली बात नहीं थी। **अल-बेरूनी** और **अबदुर्रज्जाक समरकंदी** ख्वारिज्म से भारत आए थे। कालांतर मेंउज़्बेकिस्तान से भारत आए सुप्रसिद्ध विद्वान और लेखक अल-बेरूनी दोनों देशों के बीच मित्रता और परस्पर सम्मान का प्रतीक बन गए।[15]अल-बेरूनी विद्वान लेखक, वैज्ञानिक, धर्मज्ञ तथा विचारक थे। उनकी पुस्तक किताब – उल - हिन्द में धर्म, दर्शन, त्योहार, खगोल-विज्ञान, रीति-रिवाज़, प्रथाओं, सामाजिक-जीवन, कानून आदि विषयों पर चर्चा की गई है।अल-बेरुनी को भारतीय इतिहास का पहला जानकार कहा जाता था। वहीं दूसरी ओर अबदुर्रज्जाक समरकंदी ने विजयनगर साम्राज्य सहित दक्षिण भारत के एक बड़े भू- क्षेत्र की यात्रा की। मध्य एशियाई विद्वानों जैसे कि **अल-ख्वारिज्म** और **इब्ने सिना** द्वारा आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत जैसे भारतीय विद्वानों के कार्यें के अरबी अनुवाद किए जाने के परिणामस्वरूप मध्य एशिया के लोगों को उक्त भारतीय विद्वानों के बारे में जानकारी थी।इसके अतिरिक्त कई मुस्लिम संत भी बुखारा और समरकंद से भारत आए। बुखारा से आए शायर अकबर के दरबार में रहे।[16] भारत में ***सूफीवाद***का प्रादुर्भाव मुख्य रूप से उज्बेकिस्तान से ही हुआ। उज्बेकिस्तान के शहर बुखारा व समरकंद सूफीवाद के महान केन्द्र थे। इतिहास में गहरी जड़ें जमाए हुए तमाम महान शासक जैसे कि नसीम, मसफी,

[15]अथर ज़फर, इंडिया-सेन्ट्रल एशिया रिलेशन्स : द रोड अहेड, अनामिका पब्लिशर्स (2013), पृष्ठ सं. 119

[16]जे. एन. रॉय एंड बी. बी. कुमार, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया: क्लासिकल टू कंटेम्परेरी पीरियड्स, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 2004, पृष्ठ सं. 18

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

महरम, मुशाबिर और शौकत ने भारतीय काव्य शैली को मध्य एशिया में प्रचलित किया। अपने मध्य एशियाई मूल के प्रति सजग मुगल शासकों ने मध्य एशिया के कई लोगों, खासकर *नक्शबंदी सिलसिले* के सूफी संतों के साथ व्यक्तिगत संबंध रखे।नक्शबंदी सिलसिला भारत में ***ख्वाजा बाकी बिल्लाह*** द्वारा शुरू किया गया था। इस नक्शबंदी सिलसिले का प्रादुर्भाव बुखारा, उज़्बेकिस्तान से ही माना जाता है।

भारत में मुगल शासन और मध्य एशिया के उज़्बेकों की राजनीतिक और सामाजिक प्रणाली में समानता देखने को मिलती हैं। दोनों का उद्गम खानाबदोश तुर्क-मंगोल परम्परा से हुआ है। यद्धपि 16वीं शताब्दी के मध्य तक दोनों की ही अलग अलग ढ़ंग से विशेषताएं विकसित हो गईं।[17]भारत में मुगल शासन की नींव रखने वाले शासक ***बाबर*** का जन्म उज़्बेकिस्तान की फ़रगना घाटी में ही हुआ था और वह तैमूर और चंगेज़ खान का वंशज था।उसने अपनी पुस्तक बाबरनामा में अपनी मातृभूमि फ़रगना और वहाँ उसके द्वारा लड़े गए युद्धों के बारे में विस्तार से चर्चा की है।बाबर का बेटा हुँमायु भी अपने पिता की भाँति स्वयं को मध्य एशियाई ही मानता रहा।मुगल मध्य एशिया से आए थे और भारत में बसने व राज करने के बावजूद मुगल बादशाह समरकंद को ही अपना घर मानते रहे।

मुगल भारत में अपने साथ मध्य एशिया का केवल प्रशासनिक, राजनीतिक और सैन्य प्रभाव ही नहीं लाए बल्कि वे अपने साथ मध्य एशिया की चित्रकला, वास्तुकला और शायरी भी लाए।इस अवधि में इंडो – इस्लामिक कला और वास्तुशिल्प का प्रचुर विकास हुआ। मध्यकाल में भारत में सल्तनत काल की शुरूआत के साथ ही भारत की कला और वास्तुकला पर मध्य एशिया के पश्चिमी भाग में प्रचलित कला और वास्तुकला का गहरा प्रभाव पड़ा। भारत में सल्तनत शासन की शुरूआत के साथ ही दिल्ली के तुर्क सुल्तानों द्वारा बनाए गए भवनों का वास्तुशिल्प उज़्बेक वास्तुकला के पैटर्न पर आधारित रहा।[18] कुरान में मस्जिद, मकबरे, गुम्बद, महराब, मीनार इत्यादि के निर्माण के लिए कुछ भी विहित नहीं है। पश्चिमी मध्य एशिया या विशिष्ट तौर पर उज़्बेकिस्तान में निर्मित मीनारों, गुम्बदों, मेहराबों केनिर्माण में जिस वस्तुकला का प्रयोग किया जाता था उसी को आधार बना यहाँ भारतीय भवनों का भी निर्माण किया गया। खासकर समरकंद, बुखारा, फ़रगना, ताशकंद इत्यादि स्थलों में निर्मित भवनों की दीवारों पर फूल पत्तों को उकेरना आदि जैसी वस्तुकला का प्रभाव इस काल में निर्मित हुए भारतीय भवनों में भीस्पष्ट देखने को मिलता है।सल्तनत काल में कुशल कारीगर और चित्रकार थे। वास्तुकला के क्षेत्र में नए विचार और नया ज्ञान उज़्बेकिस्तान के रास्ते भारत आया। भारत में कुतुब मीनार की अवधारणा बुखारा में बनी कलान मस्जिद की मीनार पर आधारित थी। दिल्ली का अलाई दरवाजा भी इंडो-उज़्बेक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना है जो कि बुखारा में बने मकबरों की याद दिलाता है। दिल्ली में स्थित कुतुब मीनार, आगरा का ताज महल और मुगल चित्रकला और राजस्थानी चित्रकारी इस सांस्कृतिक बदलाव की

[17]रिचर्ड सी. फोल्ट्स, मुगल इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1998, पृष्ठ सं. 12

[18]अतीक अनवर सिद्दिकी, इंडो उज़्बेक आर्किटेक्चर ऑफ मिडिवल पीरियड इन इंडिया: ए कम्पेरेटिव स्टडी, हिस्टॉरीकल एंड कल्चरल लिंक्स बिटवीन इंडिया एंड उज़्बेकिस्तान, खुदाबक्श इंटरनेश्नल सेमिनार, दिसम्बर 1993, पृष्ठ सं. 20

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

गवाही देते प्रतीत होते हैं।[19] विश्व के सात अचम्भों की सूची में शामिल आगरा के ताजमहल और समरकंद स्थित तैमूर के मकबरे में प्रत्यक्ष तौर पर समानता देखने को मिलती है।[20]बाबर ने अपने संस्मरण में लिखा है कि हिंदुस्तान, अज़रबैजान और कई अन्य देशों के करीब 200 राजमिस्त्रियों ने समरकंद में तैमूर बेग की मस्जिद के निर्माण में भाग लिया था। जब बाबर भारत आया तो वह अपने साथ कई राजमिस्त्रियों को लेकर आया था जिनमें समरकंद और बुखारा में काम कर चुके भारतीय भी शामिल थे।*लघु चित्रकारी* करने में सिद्धहस्त **मोहम्मद नादिर समरकंदी** के पूर्वज समरकंद से आए थे। उक्त कलाकार द्वारा स्याही कलाम तकनीक से बनाए गए चित्र बहुत लोकप्रिय हैं। इन लघु चित्रकारी में जहाँगीर, शाहजहाँ और कुछ अन्य दरबारियों की छवि उकेरी गई हैं। इसके विपरीत भारतीय लघु चित्रकारी ने भी उज़्बेकी लघु चित्रकारी को प्रभावित किया है।आपसी सहयोग केइस प्रभाव की झलक बुखारा की कुछ चित्रकारी में देखने को मिलती है।[21]

व्यापार राजनीति व धर्म के अतिरिक्त व्यापार एक ऐसा महत्वपूर्ण कारक रहा जिसने दोनों क्षेत्रों के बीच सांस्कृतिक आदान – प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।चीन, यूरोप और भारत को आपस में जोड़ने वाला **रेशम मार्ग** मध्य एशिया से होकर ही गुजरताथा। उज्बेकिस्तान के कई शहर इसी रेशम मार्ग पर स्थित थे। इन शहरों में भारतीय बस गए थे तथा वे अपना जीवन यहीं यापन कर रहे थे। उनका स्वयं अपना एक सामाजिक और राजनीति संगठन था, स्वयं अपनी भाषा व लिपि थी तथा स्वयं अपना साहित्य था।वहाँ सैकड़ों बौद्ध मठ और स्तूप थे जिनका वास्तुशिल्प भारत से प्रेरित था। इस मार्ग पर स्थित इन शहरों से संस्कृत, प्राकृत और स्थानीय भाषाओं में लिखा हुआ ऐसा बौद्ध साहित्य मिला है जिनकी लिपि मुख्य रूप से भारतीय (ब्राह्मी और खरोष्ठी) है। संस्कृत, प्राकृत और भारतीय लिपि के अवलंब से स्थानीय भाषाओं में लिखे गए विभिन्न प्रशासनिक, वाणिज्यिक, कानूनी और अन्य विविध प्रकार के दस्तावेज इन नगरों से प्राप्त हुए हैं।[22]प्राचीन व्यापार मार्ग ***उत्तरपथ*** उज्बेकिस्तान से होकर गुजरता था, जिसमें उज्बेकिस्तान के फ़रगना, समरकंद, बुखारा जैसे शहर शामिल थे। इन व्यापारिक संबंधों के कारण भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच लोगों की आवाजाही भी मध्यकाल में बढ़ गई और लोगों की इस लगातार आवाजाही ने ही परस्पर सांस्कृतिक संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आवाजाही मुगल काल में सबसे अधिक देखने को मिलती है। भारत से उज़्बेकिस्तान व मध्य एशिया जाने वाले भारतीय न केवल भारत के विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखते थे बल्कि वे विभिन्न धर्मों का पालन भी करते थे। 18वीं शताब्दी में प्राप्त दस्तावेजों से पता चलता है कि इन व्यापारियों में हिंदू, जैन, सिख और मुस्लिम धर्म के लोग शामिल थे। गैर मुस्लिम भारतीय व्यापारी अपने अपने धर्म का पालन करते थे और यथासंभव अपनी सामाजिक परिपाटियों को जीवित रखते थे। उज़्बेक क्षेत्र में उनकी विशिष्ट पहचान को मान्यता दी गई थी।

---

[19]सुरंजन दास, इंडो-उज़्बेक रिलेशन्स: पास्ट, प्रैसेन्ट एंड फ्यूचर, के. डब्ल्यू. पब्लिशर्स, 2011, पृष्ठ सं. 2

[20]रिचर्ड सी. फोल्ट्स, मुगल इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1998, पृष्ठ सं. xviii

[21]जे. एन. रॉय एंड बी. बी. कुमार, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया: क्लासिकल टू कंटेम्परेरी पीरियड्स, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, दिल्ली, 2004, पृष्ठ सं. 54

[22]अथर ज़फर, इंडिया-सेन्ट्रल एशिया रिलेशन्स : द रोड अहेड, अनामिका पब्लिशर्स (2013), पृष्ठ सं. 126

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

17वीं शताब्दी के प्रसिद्ध इतिहासकारों द्वारा दर्ज रिकार्ड से पता चलता है कि बुखारा में वे एक विशेष सराय में रहते थे। वे अपने माथे पर चंदन का लेप लगाते थे व अपने धर्म का पालन करने के लिए अपनी मातृभूमि से अपने साथ पुजारी भी लाते थे।[23]व्यापारी मुख्य तौर पर नील का व्यापार करते थे। कश्मीरी व्यापारियों ने तो बुखारा और समरकंद में अपने घर भी बना लिए थे। विभिन्न किस्म की चीनी का भी व्यापार किया जाता था। इसके अतिरिक्त केसर, खाद्य तेल, शहद व लाल मिर्चों का भी गिल्गित मार्ग से उज़्बेकिस्तान में व्यापार किया जाता था।रिकार्ड्स से पता चलता है कि उज़्बेकिस्तान में कश्मीरी शॉल की भारी माँग थी जिसे केवल स्टेटस सिम्बल की तरह ही उपयोग में नहीं लाया जाता था बल्कि बहूमूल्य निजी सम्पति भी समझा जाता था। यहाँ तक कि नक्शबंदी ख्वाजा को सुपुर्देखाक करते समय उनके मृत शरीर पर कश्मीरी शॉल ही डाली गई थी।[24]आईने अकबरी में मध्य एशिया से नियमित तौर पर घोड़ों का आयात किए जाने की बात कही गई है। बर्नियर के अनुसार अकेले उज़्बेकिस्तान से ही वर्ष भर में करीब 25000 घोड़े भारत भेजे जाते थे।[25] समरकंदी खरबूजे और अंगूर मुगल काल में कुलीन वर्ग के पसंदीदा वयंज्नों में से एक थे। भारतीय व्यापारी जैसे कि कश्मीरी, पेशावरी, शिखरपुरी, और पंजाबी उज़्बेकिस्तान के समरकंद, बुखारा और फरगना जैसी जगहों पर बड़ी संख्या में मौजूद थे। तमाम मध्य एशियाई नगरों में विशिष्ट तौर पर ताशकंद में भारतीय व्यापारियों और अध्यापकों की संख्या बहुत अधिक रही है।[26]

निष्कर्ष हिमालय की अनंत श्रृंख्लाएँ अपने आँचल में स्थित भारत और मध्य एशिया की ऐतिहासिक विरासत में परस्पर भागीदारी की साक्षी रहीं हैं। आज भी इन दोनों श्रेत्रों के इतिहास, संस्कृति, समाज, राजनीति, धर्म और जीवन दर्शन पर एक दूसरे की अमिट छाप देखने को मिलती है। यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि इस परस्पर साझेदारी के अभाव में भारत और मध्य एशिया का वर्तमान स्वरूप निश्चित तौर पर भिन्न होता। भारत का वर्तमान स्वरूप मध्य एशिया से आत्मसात कर लिए गए तत्वों के कारण ऐसा है और यही बात उज़्बेकिस्तान के लिए भी सत्य है। मध्य एशिया और भारत दोनों की संस्कृतियाँ परस्पर आदान प्रदान से उत्तरोत्तर समृद्ध होती चली गईं। दुर्भाग्यवश ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने इस ऐतिहासिक सम्पर्क को कुछ हद तक प्रभावित किया किंतु दोनों ही देशों के बीच सासंकृतिक विरासत के प्रति परस्पर अनुराग की भावना सदा की भाँति आज भी विद्यमान है। और इसी अनुराग का दोनों संस्कृतियों के विभिन्न पहलुओं जैसे कि भाषा व साहित्य, विज्ञान, अध्यात्म, ज्ञान परम्पराओं इत्यादि को प्रस्तुत एवम् लोकप्रिय बनाने में उपयोग किया जाना चाहिए।

[23]सुरेन्द्र गोपाल, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया (कल्चरल, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल लिंक्स), शिप्रा पब्लि.(2001) पृष्ठ सं. 19
[24]सुरेन्द्र गोपाल, इंडिया एंड सेन्ट्रल एशिया (कल्चरल, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल लिंक्स), शिप्रा पब्लिकेशन्स(2001) पृष्ठ सं. 32
[25]अथर ज़फर, इंडिया-सेन्ट्रल एशिया रिलेशन्स : द रोड अहेड, अनामिका पब्लिशर्स (2013), पृष्ठ सं. 114
[26]सुरंजन दास, इंडो-उज़्बेक रिलेशन्स: पास्ट, प्रैसेन्ट एंड फ्यूचर, के. डब्ल्यू. पब्लिशर्स, 2011, पृष्ठ सं. 2

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

संस्कृत-फ़ारसी का परस्पर भाषायी एवं साहित्यिक सम्बन्ध तथा हिन्दी-उज़्बेक पर फ़ारसी का प्रभाव

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13765001

डॉ. राजेश सरकार
संस्कृत विभाग
बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

विश्व के समस्त भाषा-परिवारों में भारोपीय परिवार (Indo-European) का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारोपीय परिवार की भाषायें भारत से लेकर यूरोप तक फैली हुयी है। समस्त भाषा परिवारों में भारोपीय के अन्तर्गत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाषायें आती हैं। भारोपीय परिवार में मुख्यतः समस्त आर्य भाषायें, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, रशियन, इटेलियन, स्पेनिश, पुर्तगीज, फ़ारसी, पश्तो, सिंहली, ग्रीक, लैटिक चेक, आयरिश, डच, पोलिश, डेनिश, आदि उल्लेखनीय है। विश्व के समस्त परिवारों में सर्वाधिक भाषावैज्ञानिक अध्ययन भारोपीय परिवार का ही हुआ है। भारोपीय परिवार का ध्वनि के आधार पर 1870 ई. में इटली के प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक प्रो. ग्राज़ीआदियो इसाइया अस्कोली (Prof. Graziadio Isaia Ascoli) ने केन्टुम एवं सतम् के नाम से दो शाखाओं में विभक्त किया है। जिसमें शतम् (सतम) के अन्तर्गत भारत-ईरानी, बाल्टो स्लाविक, आर्मीनी, अल्बानी शाखायें तथा केन्टुम् के अन्तर्गत ग्रीक, केल्टिक, जर्मनिक (ट्यूटानिक) इटालिक, हिटाइट एव ंतोख़ारी परिवार आते है। प्रस्तुत शोधपत्र में हमारे अध्ययन का विषय भारत-ईरानी परिवार (Indo-Iranian Group) है, जो भारतीय परिवार की ही उपशाखा मानी जाती है। इस क्रम में भारत एवं ईरानी परिवार की सर्वाधिक प्राचीन भाषायें वैदिक संस्कृत एवं प्राचीन फ़ारसी तथा अवस्ता। अमेजंद्ध है। इनसे ही क्रमशः आधुनिक भारतीय भाषायें एवं आधुनिक फ़ारसी (Modern Persian) विकसित हुयी है। वैदिक संस्कृत एवं ईरान की प्राचीन भाषा अवस्ता में आश्चर्यजनक साम्य दृष्टिगत होता है। दोनों की अद्‌भुत समता भाषाविदों के लिये अन्वेषण एवं चर्चा का विषय है। अवस्ता भाषा ईरान के प्राचीन पारसियों के धर्म ग्रन्थ ''जेन्द ए अवस्ता'' की भाषा है। ऋग्वेद की ऋचाओं एवं जेन्द अवस्ता की गाथाओं में इतना साम्य है कि कोई भी संस्कृतज्ञ एक दूसरे में परिवर्तित कर सकता है। ऋग्वेद को अवस्ताएवं अवस्ता को संस्कृत में कतिपय ध्वनि नियमां का पालन कर परिवर्तित किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में जिसे डॉ. मार्टिन हाउग (Dr. Martin Haug) ने अपनी पुस्तक 'Essays on the Sacred Language, Writing and Religion of the Parsis' के पृ. 196 पर अवस्ता के यस्न 31 गाथा 8 को उद्‌धृत करते हुये किया है :- उदाहरण स्वरूप- कुछ मन्त्र एवं गाथाओं की तुलना ध्यातव्य है :-

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अवस्ता	वैदिक संस्कृत	अर्थ
Vispa drukhsh Janaite	विश्वो दुरक्षो जिन्वति	सभी दुरात्मा भागते हैं।
Vispa drukhsh nashaiti	विश्वो दुरक्षो नश्यति	सभी दुरात्मा नष्ट होते हैं।
Yatha hanoti aisham Vacham	यदा श्रृणोति एतां वाचम्,	जब इस बात को सुनते हैं।

वैदिक संस्कृत एवं अवस्ता में शब्दरूप, धातुरूपों की समता है। संस्कृत की भाँति अवस्ता में 8 कारक, तीन वचन, तीन लिंग, तीन पुरुष, दस गुण की व्यवस्था प्राप्त होती है। अवस्ता में वाच्य, काल वृत्ति ¼Mode½] लेट लकार, तुमुन, ल्यप् आदि प्रत्यय संस्कृत के तुल्य है कर्मवाच्य (Passive) णिजन्त (Causatie) सन्नन्त (Desiderative) षड्न्त (Frequentative) नामधातु आदि समान है। अवस्ता में भी संस्कृत के समान विशेषणों के रूप है। अनुमान होता है कि वैदिक संस्कृत और अवस्ता एक ही मूल भाषा के दो पृथक् विकसित रूप हैं। अवस्ता वैदिक संस्कृत के बहुत ही समीप है।

इस प्रकार कालक्रम से भारतीय भाषाओं का विकास निम्न प्रकार से हुआ माना जाता है-

क) प्राचीन वैदिक संस्कृत 2500 ई.पू.-500 ई.पू.

ख) मध्यकालीन भाषा (पालि, प्राकृत, अपभ्रंश)- 500 ई.पू. 1000 ई.

ग) आधुनिक भारतीय भाषायें (हिन्दी, बांग्ला, गुजराती मराठी आदि)- 1000 ई. वर्तमान समय तक।

इसी क्रम में अवस्ता भाषा का विकास निम्न रूप में हुआ माना जाता है-

प्राचीन ईरानी की दो प्रमुख भाषायें थी। एक पूर्वी ईरानी इसको अवस्ता भी कहते है, जो पारसियों के धर्म ग्रन्थ जेन्द ए अवस्ता (अष्टम/षष्ठ शताब्दी ई.पू.) की भाषा है। इसमें विराट् साहित्य कहा जाता है जो सिकन्दर (356ई.पू.-323ई.पू.) अरबों के आक्रमण में नष्ट हो गया।

पश्चिमी ईरानी-इस पश्चिमी ईरानी को प्राचीन फ़ारसी भी कहते है। इसी प्राचीन फारसी में अकीमिनियन साम्राज्य के संस्थापक कुरुष (Kurush. 558-530 इ.पू.) के एवं दारियूस प्रथम (Darius I- 552-486 ई.पू) के बेहिस्तून शिलालेख मिलते है। ये आज भी सुरक्षित है। प्राचीन फारसी प्राचीनता में अवस्ता के आद की है, यह अवस्ता से अधिक साम्य एवं वर्णमाला निकटता में संस्कृत के अधिक है।

प्राचीन फ़ारसी (अखमनी, अकीमिनियमन) से ही मध्ययुगीन फ़ारसी जिसे की पहलवी भाषा भी कहते हैं, का विकास हुआ। पहलवी का प्राचीनतम रूप हमें तृतीय शती ई. पू. के मुद्राओं में दिखायी देता है। पहलवी का प्राचीनतम शिलालेख शती ई. से मिलता है। पहलवी के दो रूप प्राप्त होते है-

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

क) हुज़्वारिश (226 ई. 652 ई.)

ख) पारसी (पाज़न्द)

जिस प्रकार संस्कृत से आधुनिक भाषायें विकसित हुयी उसी प्रकार प्राचीन फ़ारसी (अकमीनियन) मध्ययुगीन फ़ारसी (पहलवी) से होती हुयी आधुनिक फ़ारसी का विकास हुआ। अनेक भाषाविद् पश्तो, बलूची, पामीरी, कुर्दी का विकास भी प्राचीन फ़ारसी एवं पहलवी के माध्यम से मानते है।

आधुनिक फ़ारसी अर्थात् वर्तमान फारसी का मूल नाम पारसी था, किन्तु अरबों के आक्रमण के बाद का नाम फारसी हो गया क्यांकि अरबी की वर्णमाला में 'प' वर्ण नहीं है। फारसी की लिपि भी अरबी हो गयी। एवं फारसी में अरबी के शब्द बहुतायत से प्रविष्ट हो गये।

भारोपीय परिवार

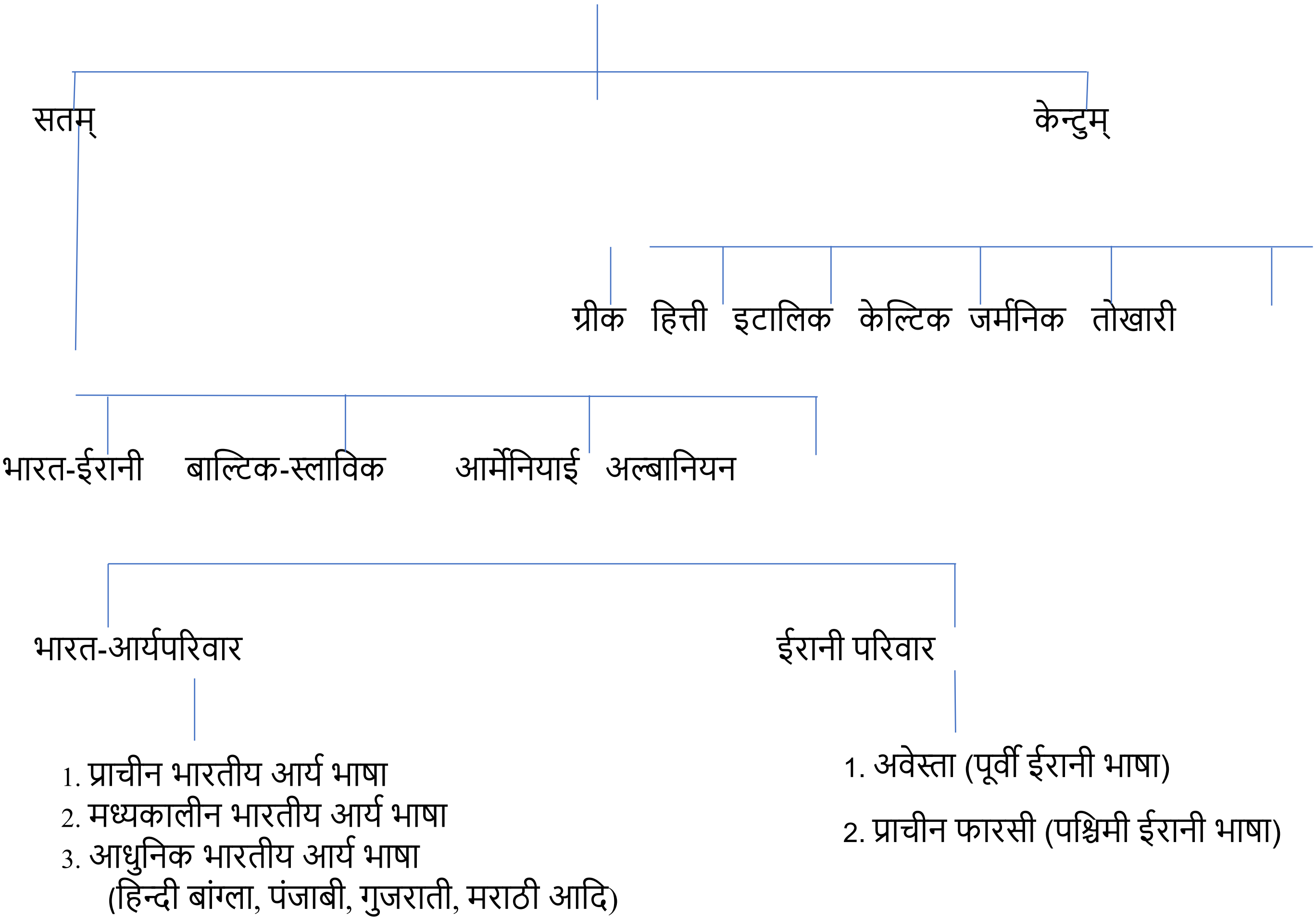

ध्यातव्य है कि महाकवि फ़िरदौसी ने इस सम्बन्ध में अपनी मातृभाषा, फ़ारसी में अरबी भाषा का आधिक्य हो जाने से दुःखी होकर अरबीरहित फ़ारसी में शाहनामा नामक महाकाव्य की रचना की। इस विषय में महाकवि फ़िरदौसी का निम्ननिलिखित शेअर बहुचर्चित है-

बसीरंज बुर्दम बे ईन सालसी।
अजम ज़िन्दा करदम बदीं पारसी।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अर्थात् मैंने जीवन के तीस वर्ष कष्ट में बिता दिये और इस पारसी भाषा के द्वारा अजम (ईरान) का जीवित कर दिया।

आज फारसी संयोगात्मक से वियोगात्मक हो गयी है। इसका व्याकरण भी सरलीकृत हो चुका है। यह ईरान, अफ़गानिस्तान, जहाँ से दरी कहते है एवं ताजिकिस्तान की राष्ट्रभाषा हैं ताजिक इसे सेरेलिक लिपि (रशियन) में लिखते है। इसके अतिरिक्त उज़्बेकिस्तान के विश्वविख्यात नगर समरकन्द एवं बुखारा की भाषा भी यही हैं। फ़ारसी का व्यापक प्रभाव उज़्बेक कज़ाख, किरगिज, हिन्दी, बांग्ला, मराठी, उर्दू आदि भारतीयभाषाओं पर है।

आज फारसी विश्व के 110 मिलियन (11 करोड़) व्यक्तियों की भाषा है, उसी प्रकार इसका साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध रहा है। फारसी में ही फिरदौसी, शेख सादी, हाफिज़ शीराजी, उमर खैयाम, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, अमीर खुसरो, मौलाना जामी, मौलाना निज़ामी गंजवी, सायेब तबरीज़ी बेदिल देहलवी, अत्तार नेशापुरी मिर्ज़ाग़ालिब अल्लामा इक़बाल आदि प्रसिद्ध ईरानी एवं भारतीय साहित्यिक व्यक्तित्व रहे।

संस्कृत एवं फारसी में निकटता होने का यही कारण रहा है। क्योंकि दोनों की मूल भाषा वैदिक संस्कृत एवं अवस्ता एक ही वंशवृक्ष की शाखायें रही होगी ऐसा ही भाषाविज्ञानी अनुमान करते हैं।

संस्कृत एवं फारसी के अनेक शब्द, धातु, क्रिया विशेषण परस्परसंख्यावाचक शब्द इतने मिलते है कि प्रत्येक व्यक्ति प्रथम दृष्ट्याजानने, सुनने या पढ़ने पर आश्चर्यचकित रह जाता है। इस तथ्य को हम निम्न विशेष शब्दावलियों के साम्य से जान सकत है।

वैदिक	अवस्ता	संस्कृत (लौकिक)	फारसी
गोमूत्र	गोमेज़	मातृ (मातर)	मादर
पितृ	पितर	पितृ (पितर)	पिदर
सुरा	हुरा	भ्रातर	बरादर
मधु	मधु	खरः	खर
अस्मि	अहिम	दुहितर्	दुख्तर
बन्ध	बन्द	अश्वः	अश्प
त्वम्	तुम	श्व	सग
भातृ	व्रात्र	चन्दन	सन्दल
भूर	बूर	चाण्डाल	जन्दाल
प्रथम	प्रदम	नर	नर
वृत्रहन्	वेरथ्रहन	आम्र	अंब
विवस्वान्	विवनघत	क्षीर	शीर
यम	यिम	गोधूम	गन्दुम
अश्वः	अस्पो	यव	जौ
नभः	नबो	कृमि	किर्म
अप्	अप्	अभ्र	अब्र
यज्	यज्	भ्रू	अबरो
वृकः	वहको	हस्त	दस्त
सोम	होम	पाद	पा
हस्त	जस्त	बाहु	बाजू

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

विश्व	विस्प	गौ	गाव
मंत्र	मंथ्र	नीलोत्पल	नीलोफर
यजत्	यजत्	स्थान	स्तान
आहुति	आजूइति	अंगुष्ठ	अंगोश्त
यज्ञ	यस्न	काक	जाग़
सोम	होम	आप	आब
अथर्वण	अथ्रवन	तृष्णा	तरश्न

संस्कृत और फ़ारसी शब्द-साम्य

वेद-भाषा और जेन्द ए अवेस्ता में ही साम्य नहीं हैं, वर्तमान फ़ारसी से संस्कृत का भी है, जैसा नीचे के शब्दों के मिलान से स्पष्ट होता-

संस्कृत	फ़ारसी	संस्कृत	फ़ारसी
पितृ, पितर्	पिदर	महत्तर	मिहत्तर
मातृ: मातर्	मादर	अस्ति	अस्त
भ्रातृ, भ्रातर्	बिरादर	गो	गाव
दुहितृ, दुहितर्	दुख्तर	आप	आब
स्वसृ	ख्वाहिर	अभ्र	अब्र
तनु	तन	पुष्ट	पुख्त:
श्वशुर	खुसुर	अश्व	अस्प
पृष्ठ	पुश्त	शर्करा	शकर
नप्तृ	नबीर	जीरक	जीरा
हस्त	दस्त	वर्षा	बारिश
बाहु	बाजू	जामातृ, जामाता	दामाद
पाद	पा, पाव	तृष्णा	तिरश्ने
गोधूम	गन्दुम	द्वार	दर
शाली	साली	शरत्	सर्व
तारा	तारा	उष्ट्र	उश्तुर/शुतुर
पंच	पंच	वात	बाद
चत्वार	चहार	भ्रू	अबरो
षट्, षष्	शश	चर्म	चरम
सप्त	हफ़्त	सायं	शाम
अष्ट	हश्त	वर्षा	बरसात
नव	नौ	मेघ	मेग
दश	दह	मर्दति	मसद
शत	सद	अलक्षित	लेसद
घर्म	गर्म	मृत	मुर्दा
हर्म	हरम	शक्त	सख्त
चक्षु	चश्म	कुक्षि	किश
चक्र	चर्ख	दन्त	दन्द, दन्दौ
क्षपा	शब	सूर, सूर्य	हूर, खूर

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अहिफेन	अफयून	अस्ति	अस्त
सर्षप	सरशुफ	अददम्	दादम
आपत्	आफत	स्तौति	सतायद
कर्पूर	काफूर	वात	बाद
मुष्टि	मुश्त	भवति	बुवद
शृगाल	शगाल	आयाति	आयद
भूत	बूद	जीवति	जीद
पतति	फतद	तपति	तबद
बध्नाति	बन्दद	धावति, दावति	दवद
भवामि	बूदम	क्रीत	खरीद
जायते	जायद	सृजति	सरेशद
पचति	पजद	ददाति	दिह्द
सरति	रसद	अश्ववार	सवार
करोति	कुनद		
गदति	गोयद		
तनोति	तनद		
शृणोति	शिनूद		
दत्त	दिवद		

यह शब्द साम्य आश्चर्यचकित करने वाला है। सर विलियम जोन्स के विचार इस विषय में विचारणीय है- "जब मैंने इस शब्दकोष को पढ़ा तो मैं वर्णन नहीं कर सकता कि मैं इस बात को देखकर कितना हैरान रह गया कि हर दस शब्द में से छः या सात शब्द शुद्ध संस्कृत के है। यहाँ तक कि उनके कुछ रूप भी व्याकरण के नियमों से मिलते हैं।"

''यूरोप में संस्कृत एवं अवस्ता के तुलनात्मक अध्ययन ने ही तुलनात्मक भाषाविज्ञान (Comparative linguislics) जन्म दिया"

इसी क्रम संस्कृत एवं फ़ारसी का साहित्यिक सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ रहा है।

संस्कृत ग्रन्थों के फारसी अनुवाद से एक अद्‌भुत बौद्धिक क्रान्ति हुयीफ़ारसी के एवं किसी सीमा तक अरबी में अनूदित ग्रन्थ यूरोप पहुँचे। उन्हें भारत की अपार प्रज्ञा का बोध हुआ। ने केवल यूरोप वरन् मध्य एशिया ने भी भारत की प्रखर मेधा शक्ति को अनुभूत किया। अल्लामा इकबाल जो कि महान् कवि के साथ-साथ प्रख्खर दार्शनिक भी थे कह उठे-

''यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था,

सरे जहाँ को जिसने इल्मों हुनर दिया था।''

''मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है।''

संस्कृत के इस अपार-अगाध तत्त्व के आकर्षण ने पाश्चात्त्य विद्वानों को संस्कृत सीखने को प्रेरित किया। यह कार्य इन अनूदित ग्रन्थों के माध्यम से हुआ। अनुवाद सदा दो संस्कृतियों के सामंजस्य निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संस्कृत से फारसी में प्रथम अनुवाद ईरान के सुप्रसिद्ध सासानी वंश के राजा खुसरो अनोशेरवां (531-579 ई.) के शासनकाल में उनकी आज्ञा से हकीम बरजोयः 570 ई. ने किया। यह मध्यकालीन फारसी, जिसे पहलवी कहते है, में अनूदित हुआ था। अनूदित होने वाले ग्रन्थ का नाम था पं. विष्णुशर्मा विरचित 'पंचतंत्र' नामक कथाग्रन्थ। सम्प्रति यह अनूदित ग्रन्थ अप्राप्य है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

फिरोज़शाह तुगलक (1351-88) ने नगरकोट पर आक्रमण के पश्चात् 1300 संस्कृत पाण्डुलिपियों को प्राप्त किया। उसके संरक्षण में विद्वानों द्वारा कुछ एक ग्रन्थों के अनुवाद भी हुये। इसद्दीन खालिद खानी ने खगोलविद्या के ग्रन्थों का 'दलाइल ए फिरोजशाही' के शीर्षक से अनुवाद किया।

उसी के राज्यकाल में वराहमिहिर प्रणीत ब्रह्मसंहिता (पंचसिद्धान्तिका) का अनुवाद अब्दुल अज़ीज शम्स बहरूनी द्वारा किया गया। 'संगीतदर्पण' नामक ग्रन्थ का अनुवाद 'गुनयात ए मुन्या' के नाम से तुलगकशाही में किया गया।

दुर्गावासिन प्रणीत शालिहोत्रशास्त्र (अश्वशास्त्र) को दो बार अनूदित किया गया। प्रथम अब्दुल्लाह इब्न सफी के द्वारा 'सुल्तान अहमद वली बहमनी (1422-1435 ई.) के राज्यकाल में एवं गयासुद्दीन शाह मालवा (1469-1500 ई.) के शासन में हुआ। अकबर महान् का शासनकाल संस्कृत से फ़ारसी अनुवादों की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूंनी जो सुप्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थ के 'मुन्तखब उत् तवारीख' के लेखक रहे, ने 'वाल्मीकि-रामायण' को फ़ारसी में 1581 ई. में अनूदित किया।

वाल्मीकि-रामायण के अन्य फ़ारसी अनुवादों में सम्राट् जहाँगीर के शासनकाल में सादुल्लाह मसीह पानीपती द्वारा किये गये मसीही रामायण एवं बादशाह फ़र्रूखसियर के काल में पं. सुमेरचन्द द्वारा किये गये अनुवाद उल्लेखनीय हैं।

महाभारत का अनुवाद सम्राट् अकबर ने द्वारा फतेहपुरसीकरी में गठित एक अनुवाद मण्डली ने किया जिसमें संस्कृत एवं फ़ारसी दोनों भाषाओं के पक्ष से विद्वान् थे।

संस्कृत के पक्ष से पं. देवी मिश्र, पं. मधुसूदन मिश्र शातवाहन, चतुर्भुज तथा भुवन खाँ थे। जबकि फ़ारसी भाषाविद् में मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूंनी, फैज़ी, अबुल फज़्ल, अब्दुल लतीफ़ उल हुसैनी उर्फ नक़ीब ख़ान, मुहम्मद मुल्ला थानेसरी और मुल्ला शींरी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। छः वर्षों के अगाध श्रम से यह महाभारत फ़ारसी में 'रज़्मनामा' के नाम से अनूदित हुआ। अकबर ने इसे कुशल चित्रकारों से चित्रित कराया इस अनूदित ग्रन्थ के अनेक पर्वों की पाण्डुलिपियाँ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के केन्द्रीय ग्रन्थागार में उपलब्ध हैं।

फ़ारसी- संस्कृत शब्दकोष, पारसीक प्रकाश के नाम से बिहारी कृष्णदास द्वारा अकबर के राज्यकाल में ही रचित हुआ। श्रीमद्भगवद्गीता का अनुवाद फैज़ी द्वारा किया गया।

अकबर द्वारा 'कथासरित्सागर' का अनुवाद कराया गया, जो अद्यतन अनुपलब्ध है। इसकी एक प्रति इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी में उपलब्ध है Ethe इसे फ़ैजी द्वारा अनूदित बताते हैं।

पुराण साहित्य में अकबर के द्वारा श्रीमद्भागवतपुराण के चार अनुवाद कराये गये जिनके विवरण इस प्रकार है -

1. अबुलफ़ज़्लकृत भागवत का अनुवाद म्जीमकी सूचना के अनुसार दशम स्कन्ध की एक प्रति इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी में उपलब्ध है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

2. फ़ैज़ीकृत भागवत का अनुवाद- एम. ए. अब्बासी के फ़ारसी पाण्डुलिपि सूचीपत्र Op.cit में 25] 28 संख्या पर फ़ैजी कृत द्वादश स्कन्धात्मक फारसी गद्यानुवाद की एक प्रति सुरक्षित है।

3. मुल्ला ताहिरकृत भागवत का अनुवाद- इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी की फ़ारसी पाण्डुलिपि सूची (सम्पादक Ethe½ के अनुसार पृष्ठ 1955 सं. पर एक प्रति सुरिक्षत है।

5. टोडरमल कृत भागवत का अनुवाद- जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन के ग्रन्थ The Modern Vernacular Literature of Hindustan (pg 35) के अनुसार राजा मनोहरदास (टोडरमल) ने भागवत का फ़ारसी गद्यानुवाद किया।

हरिवंश महाभारत का खिल भाग (परिशिष्ट) है किन्तु हिन्दू जनमानस इसे पुराण मानता है। इसमें 16374 श्लोक हैं। यह ग्रन्थ हरिवंशपर्व, विष्णुपर्व एवं भविष्यपर्व खण्डत्रय में विभक्त है।

अबुल फ़ज़्ल के विवरणों के अनुसार इसका अनुवाद मुल्लाशीरी के द्वारा किया गया।हरिवंशपुराण का एक अन्य अनुवाद महामहोपाध्याय महेश ठक्कुर के शिष्य रघुनन्दन राय ने किया।

आधुनिककाल में भी पुराणों के अनुवाद हुये जिनमें स्कन्दपुराण के 'काशीखण्ड' का 'बहर उल नजात' शीर्षक से आनन्दकन खुश द्वारा मि. जोनाथन के निर्देश में 1794 ई. में किया गया।काशीखण्ड का ही अपर फारसी अनुवाद पत्नी (मितान) लाल द्वारा किया गया।

पद्मपुराण का 1872 ई. में ''जहॉन ए जफर'' शीर्षक से माखन लाल द्वारा किया गया। शिवपुराण का अनुवाद कृष्ण सिंह निशात द्वारा किया गया। स्कन्दपुराण के क्षेत्रमाहात्म्य, वायुपुराण के गयामाहात्म्य, विष्णुपुराण के पराशर-मैत्रेय संवाद, राजा सगर आदि पौराणिक वृत्तान्तोंके फारसी अनुवाद हुये।

'पंचक्रोशी' नामक 'काशीमाहात्म्य' के प्रकरण का जहूर नामक व्यक्ति द्वारा 1737 ई. में अनुवाद किया गया।

'एकादशी-माहात्म्य' का अनुवाद 'माहात्म्य ए एकादशी' के नाम से अज्ञात व्यक्ति द्वारा किया गया। 'जय माँ दुर्गा' नामक ग्रन्थ भी प्राप्त होता है, जो रामदास मिश्र द्वारा फारसी में रचित है। विष्णु के तेइस अवतार पर प्रकाश डालने वाली फारसी पुस्तक सोहन राम फित्ना द्वारा निबद्ध है।

संस्कृत अनुवादों के प्रकरण में यदि संस्कृतानुरागी युवराज दाराशिकोह की चर्चा न की जायें तो विमर्श अपूर्ण रहेगा इस विद्वान् मुगल युवराज द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये।

दाराशिकोह का सर्वाधिक अविस्मरणीय कार्य 50 से अधिक उपनिषदों का 'सिर्र ए अकबर' (महारहस्य) के नाम से फ़ारसी अनुवाद है। इसका हिन्दी अनुवाद डॉ. सलमा महफूज (पूर्वविभागाध्यक्षा संस्कृत विभाग अलीगढ़मुस्लिम विश्वविद्यालय) तथा डॉ. हर्षनारायण (आचार्य, दर्शन एवं धर्मविभाग काशीहिन्दू विश्वविद्यालय) द्वारा किया गया है। इसी क्रम में इसका उर्दू अनुवाद डॉ. अज़रमी दुःख़्त सफ़वी(पूर्व निदेशिका फ़ारसी अनुसन्धान केन्द्र अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय)द्वारा

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

किया गया है। दाराशिकोह ने हिन्दू एवं इस्लाम दोनों धर्मों के मेल को आधार बनाकर ''मज्म उल बहरैन'' नामक पुस्तक लिखी, जो संस्कृत में ''समुद्रसंगमः'' के नाम से है।

अन्य दार्शनिक ग्रन्थों में भगवद्गीता के ही कई आधुनिक फ़ारसी अनुवाद प्राप्त होते है। गीता का नारायण स्वरूप द्वारा 1889 ई. में, गीता (गद्य/पद्य), आद्या प्रसाद मिश्र,तथा बख्शी दीनानाथ द्वारा प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त गीता के अन्य आठ फारसी अनुवाद उपलब्ध होते हैं।

रामायण का खिल भाग माने जाने वाले दार्शनिक ग्रन्थ योगवाशिष्ठ के कई अनुवाद फ़ारसी में हुये है।

जिनमें प्रथम 'वशिष्ठ जोग' के नाम से है। यह अनुपलब्ध है। इसको आधार बनाकर वशिष्ठ जोग के नाम से दूसरा अनुवाद किया गया जिसकी हस्तिलिखित प्रति Ricu, op. cit1ppp619 पर उपलब्ध है। द्वितीय हस्तलिखित प्रति का विवरण M. Asharfulhaq. etalopcit no. 327 पर है।फ़ैज़ी ने शारिकुल मारिफ़त नाम से इसका अनुवाद किया।

आदि शंकराचार्य विरचित 'अपरोक्षानुभूति ' का 'हक़ीकुल मारिफ़त' नाम से लक्ष्मीनारायण ने अनुवाद किया। बादरायण व्यास द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र का 'हक़ीकुल मारिफ़त' नाम से नारायण स्वरूप ने अनुवाद किया। भगवत्पाद शकराचार्य विरचित 'आत्मविलास' का अनुवाद नाजुक ख़यालात के नाम से सम्राट्-शाहजहाँ के मीर मुंशी चन्द्रभान ब्राह्मण द्वारा किया गया।

'ब्रजमाहात्म्य' नामक ग्रन्थ का अनुवाद 'मखजस उल इरफ़ान' नाम से 1705 से 1706 ई. में रूप नारायाण खत्री द्वारा किया गया। कठोपनिषद् के यम-नचिकेता संवाद प्रसंग का अनुवाद भी इन्होंने 'हिकायत ए नाचिकेत' के नाम से किया।

अष्टादश पुराणों में अन्यतम श्रीमद्भागवतपुराण के अनेक आधुनिककालीन अनुवाद फारसी में प्राप्य है। जो गिरिधारीलाल बाक़ी, अमानतराय, महहूब नवाज़ द्वारा किये गये हैं। भागवत के ही दशम स्कन्ध रासपंचाध्यायी का अनुवाद अयोध्याराम ने किया। ब्रजविलासम् का 'मसनवी ए मज़हर उल हुस्न' नाम से अनुवाद प्राप्य है। अन्य अनुवादों में रामायण का मसनवी शैली में अनुवाद गिरधर कायस्थ द्वारा, रामायण (बालकाण्ड) का हरलाल रुसवा द्वारा प्राप्य है। अंहिसाप्रकाश, बुद्धप्रकाश्ज्ञ, रामगीता, गीतासार, ज्ञानमाला आदि ग्रन्थ भी फ़ारसी में हैं।

इस प्रकार संस्कृत से फ़ारसी में अनूदित ग्रन्थों का एक समृद्ध इतिहास है, विस्तारभय से उन सभी पर प्रकाश डालना सम्भव नहीं।

किन्तु इन अनुवादों से संस्कृत एवं फारसी के पारस्परिक सम्बन्धों एवं साहित्यिक आदान-प्रदान पर पर प्रकाश पड़ता है, जो भारतीय इतिहास का महत्त्वपूर्ण अध्याय है।

फ़ारसी का हिन्दी एवं उज़्वेक भाषा पर प्रभाव -

हिन्दी भारोपीय परिवार की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है। इसे भारत में राजभाषा का दर्जा है। यह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। इसका उद्गम संस्कृत भाषा से स्वीकार किया जाता है। इसका इतिहास लगभग एक हजार वर्षों का है। इस भाषा पर फारसी का व्यापक प्रभाव पड़ा। लगभग

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

5000 शब्द हिन्दी में फ़ारसी से आयातित हैं। हिन्दीभाषी व्यवहार में नहीं समझ पाता कि यह फ़ारसी है। फ़ारसी के सम्पर्क में आने से हिन्दी में फ़ारसी शब्द बहुतायत से प्रयुक्त होने लगे। अनेक फ़ारसी शब्द मूलार्थ सहित आये तो कुछ मूलार्थ छोड़कर आये।

अब देखना चाहिये कि हिन्दी ने फारसी से क्या लिया। जो भाषा जितनी ही अधिक दूसरी भाषा के संसर्ग में रहती है, वह उतने ही अधिक उससे शब्द आदि लेती है। इस कारण हिन्दी ने फारसी से वस्त्रालंकारों, भोज्यपदार्थों तथा नित्य के व्यवहार में आने वाली हजारों वस्तुओं के नाम लिये तथा ऐसी बहुत सी चीजों के नाम भी लिये, जिन्हें या तो हम जानते ही न थे और यदि जानते थे, तो उन नामों को छोड़ नवीन नामों का व्यवहार करने लगे। ये शब्द फारसी ने अरब और मध्य एशिया से लाकरहमें दिये। न्यायलयीय शब्द तो सभी अरबी-फारसी के हैं। स्वयं 'अदालत' अरबी का शब्द है, यद्यपि हम लोग आज-कल इसके लिये न्यायालय, विचारालय, आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। धर्माधिकरण, विनिश्चयालय जैसे शब्दों का प्रयोग न होता है और न इसके समझने वाले ही अधिक हैं। 'मुद्दई-मुद्दअलेह' अरबी के शब्द हैं। इनके बदले वादी प्रतिवादी का व्यवहार कहीं-कहीं होता है।

अब देखिये, हमने कैसे-कैसे शब्द फारसी से लिये। वस्त्रों में जामा और नीमा, बग़लबन्दी और मिर्जई। जामा अंगरखे से अधिक लम्बा होता था, जिसके पहनने से सिर और पैर को छोड़ सारा शरीरढक जाता था। इसका घेरा बहुत अधिक होता था और बनाने में एक थान लगता था। शाही दरबार में हिन्दू-मुसलमान दोनों जामा पहनकर जाते थे। पीछे विवाह में नौशे या दूल्हें को जामा पहनाने का रिवाज चला गया और उसके घरवाले बाप-दादे भी जामा पहन-पहनकर बरातों में जाने लगे। अब बरातियों का जामा तो नहीं रहा, पर दूल्हे का बाकी है। जामे के नीचे जो कपड़ा अन्तः वस्त्र पहना जाता था, उसे नीमा कहते थे। नीमा तो अब बिल्कुल उठ हो गया है। बगलबन्दी जिसमें बगलों के नीचे बन्द या तनियाँ लगती हैं, जामे का और इसी प्रकार मिर्जई अंग रखे का संक्षिप्त संस्करण है। ये दोनों कमर से नीचे नहीं रहतीं। मिर्जई "मिर्जा की" अर्थ में जान पड़ता है। मीरजा या मिर्जा तुर्कों कीउपाधि या पदवी है। सम्भव है तुर्क सिपाही जामे ही जगह मिर्जई पहनते हों और वह हिन्दुओं में भी चल गयी हो। वस्त्र सम्बन्धी और नाम हैं- लबादा, कबा, चोगा, आस्तीन, गिरेबान, पायजामा, इजारबन्द, अमामा, रूमाल, शाल दोशाला, बुर्का, तकिया, गावतकिया इत्यादि। अलंकारों वा गहनों में गुलूबन्द, हिमालय (हमेल), बाजूबन्द, जंजीर और पाज़ेब आदि तथा मेवे मिठाईयों में किशमिश, पिस्ता, बादाम, मुनक्का, शहतूत, बेदाना, खूबानी, अंजीर, सेब, बिही, अनार, जलेबी, बालूशाही, हलवा इत्यादि हैं। इनके अतिरिक्त सैकड़ों और शब्द ऐसे चल रहे है मानो हिन्दी के ही रूप हों। किन्तु मूलतया वे फारसी के शब्द है। दस्तरख्वान, चपाती, पुलाव, शोरवा, जर्दा, कलिया, खुर्मा, हरीरा (हरेरा), कबाब, अचार, मुरब्बा, गुलाब, बेदमुश्क, तबक़, रकाबी, तश्तरी, चमचा, आवखोरा (अमखोरा), किश्ती, हम्माम, कीसा, खीसा), साबुन शीशी, कहगिल (काहगिल), शीशा, शमादान, फानूस (लालटेन), तेवर (तन्नूर, तन्दूर), मुश्क (कस्तूरी), नमाज, रोजा, ईद, शबेबरात

(शबरात), काजी, हुक्का, नेचा, चिलम, बन्दूक, तख्ता, गंजीफ़ा, हावनदस्ता (इमामदसता), आफ़ताबा, फ़तीलसोज (पीतलसोज), खोरा, खोरवा इत्यादि।

इस समय हिन्दी में ऐसे अनेक अरबी, फारसी और तुर्की शब्द चल रहे हैं, जिनके बदले हिन्दी शब्द चलाना चाहे तो कठिनतासे ढूँढ़े मिलें। जैसे दलाल (दल्लाल), फरशि, मजूर (मजदूर), वकील, बजाज, (बज्जाज), जल्लाद, सराफ (सर्राफ), मसखरा, नसीहत, लिहाफ, तोशक, चादर, सिफारिश, चापलूस, चापलूसी।

1. इसके अतिरिक्त शक्ल, चेहरा, तबियत, मिजाज, अर्फ़, कबूतर, बुलबुल, पर, दावात, स्याही, जुलाब, ऐनक, चश्मा, सन्दूक, कुर्सी, तख्त, लगाम जीन, तंग, रकाब, पायन्दाज, नाल, कोतल, वफा, जहाज, मस्तूल, तहमत, दर्रा, पर्दा, दालान, तहखाना, तनखाह, दस्तख़त, मल्लाह, ताजा, गज़ल सही, रसद, रसीद, कारीगर इत्यादि शुद्ध फ़ारसी के शब्द है।

हिन्दी ने फारसी से संज्ञा शब्द इतने लिये कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। परन्तु इतना किया कि इनके बहुवचन अपने ढंग से बनाये और विभक्ति प्रत्यय अपने लगाये। "आदमी" "दरख्त", "मेवा", जैसे शब्द लेकर इनमें "ओं" जोड़कर पहले सामान्य रूप बनाया और फिर अपने विभक्ति प्रत्यय लगाकर इनका प्रयोग किया।

हिन्दी व्याकरण पर फारसी का जो प्रभाव पड़ा वह 1. शब्दों की हिज्जे या वर्णन, 2. वचन, 3. लिंग, 4. अव्यय, 5. संज्ञा, 6. विशेषण, 7. किया और, 8. वाक्य रचना में देखा जाता है। इसी क्रम में फ़ारसी ने उज़्बेक भाषा को व्यापकरूप से प्रभावित किया है जिस पर चर्चा अपेक्षित है। भाषाविदों के अनुसार, फ़ारसी संसार की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है, जिसने अपनी विशेषताओं की नहीं खोया है। अलग-अलग समय और ऐतिहासिक परिस्थितियों के बाद, फारसी शब्दों के साथ-साथ अरबी भाषा ने भी अन्य भाषाओं की शब्दावली को प्रभावित किया। इस प्रक्रिया में उज्बेक भाषा की शब्दावली कोई अपवाद नहीं है। उज़्बेक भाषा तुर्की परिवार की भाषा है जो अल्ताई भाषा परिवार के अन्तर्गत आती है। यह भाषा उज़्बेकिस्तान की राजभाषा है। उज़्बेकिस्तान के अतिरिक्त यह पूर्वी तुर्कमेनिस्तान, उत्तर-पश्चिम ताजिकिस्तान, दक्षिणी क़ज़्ज़ाखस्तान, उत्तरी अफ़गानिस्तान और उत्तर-पश्चिम चीन में बोली जाती है। उज़्बेक का सम्बन्ध दक्षिणी पूर्वी (चग़ताई) तुर्क भाषा परिवार से है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग साढ़े तीन करोड़ है। उज़्बेक में फारसी लहजा स्पष्ट दिखता है। जहाँ फारसी शब्द अकरान्त उच्चारण वाले होते हैं वहीं उज़्बेक में ओकारान्त उच्चारण होता है।

यथा-

मा (हमारा)- फारसी, मो (उज़्बेक)

बूद (हुआ)- फारसी, बोद (उज़्बेक)

बाश (होना)- फारसी बोश (उज़्बेक)

आज़ाद (स्वतन्त्र)- फारसी, ओज़ाद (उज़्बेक)

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

मेहरबान (दयालु)- फ़ारसी, -मेहरबोन (मित्र)- उज़्बेक

प्राचीनकाल से फारसी-ताजिक भाषा का उपयोग मध्य एशिया के देशों की भाषाओं के साथ-साथ देखा गया था, विशेष रूप से उज़्बेक भाषा के साथ। परिणामस्वरूप, फारसी और अरबी भाषाओं के कई शब्द उज़्बेक भाषा की शाब्दिक संरचना में एकीकृत हो गए, अर्थात् उन्हें फारसी और उज़्बेक दोनों भाषाओं में सामान्य शब्दों के रूप में उपयोग किया जाता है। यद्यपि सभी सामान्य शब्दों का उपयोग समान अर्थ व्यक्त करने के लिए नहीं किया जाता है। उज़्बेक भाषा में ऐसे मूल फारसी शब्द है, जो अर्थ के दृष्टिकोण से फारसी भाषा से अलग अर्थ रखते हैं, जबकि उज़्बेक भाषा में इनका अलग अर्थ है। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि दोनों भाषाओं में प्रयुक्त यह सामान्य शब्दावली एक सक्रिय भाषा-स्वरूप को सन्दर्भित करती है इसके अतिरिक्त, तुलनीय भाषाओं में उन सामान्य शब्दों के निर्माण के तरीकों को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करना चाहिये। इस प्रकार के अध्ययनों के परिणामस्वरूप फारसी और उज़्बेक भाषाओं में सामान्य शब्दों के व्युत्पत्ति सम्बन्धी आधार और शब्दार्थ सीमा के प्रश्नों में स्पष्टता आती है। उदाहरण के लिए, उज़्बेक भाषा में कई सामान्य शब्द हैं, जैसे- सैन्य शिविर।।

जो फारसी भाषा की तरह अर्थ व्यक्त नहीं करते हैं। आज भी ये शब्द सामान्य शब्द हैं जो उन शब्दों की विशेषताओं को व्यक्त करते है जिन्हें रूसी-अंतर्राष्ट्रीय शब्दों के बजाय प्रस्तावित और पहले ही उपस्थापित किया जा चुका है। ऐसे शब्दों का अर्थपूर्ण और कार्यात्मक अध्ययन उज़्बेक शब्दावली के विकास में योगदान देगा। क्योंकि 1989 ई. में उज़्बेक भाषा को राजभाषा का दर्जा दिये जाने के बाद, इसके अधिकार का ध्यान रखना कार्य बन गया।

जब फारसी और अरबी बोलियाँ, जो पहले उज़्बेक भाषा में इस्तेमाल की जाती थीं, और निष्क्रिय बन गई थीं, भाषा की एक सक्रिय परत में बदल गयीं, शब्द के व्युत्पत्ति सम्बन्धी अर्थ को अनदेखा कर दिया गया और शाब्दिक संरचना को शामिल किया गया। आज, उज़्बेक भाषा के शाब्दिक कोष में कई फारसी अरबी तुर्की शब्द उधार लिये गये हैं, साथ ही सामान्य शब्द भी हैं, जिनमें से कुछ का उनके अर्थ क्षेत्र में कोई आशय नहीं है, और साथ ही, उपयोग की आवृत्ति अधिक है। आज फारसी और उज़्बेक दोनें में कई सामान्य शब्द इस्तेमाल किये जाते हैं, जैसे "ओरोमगोह" "देहकॉन"(किसान), "दस्तक" लीवर, "टक्सुमडन" अंडाशय), "जोनंदा" (गायक), "ओलिगॉह", उच्च संस्थान), "लश्करगॉह", सैन्य शिविर), जिसकी व्युत्पत्ति फारसी या अरबी है, लेकिन सामग्री के संदर्भ में दोनों भाषाओं में उपयोग किये जाने पर उनके अलग-अलग अर्थ होते हैं। नीचे हम ऐसे शब्दों का विश्लेषण करते है। उदाहरण के लिए, फारसी में पहलवी के आराम से लिया गया है। मूल फारसी शब्द "टिंचलानिश", शांत), "टू" एक्सटैश" रोकें) "कोतिश", स्थिर), "हरकतसिज़्लिक" गतिहीन), "ओहिस्ता।। (धीमा)।

अर्ध-प्रत्यय के जुड़ने के परिणामस्वरूप जो स्थान का नाम बनाते हैं, 'आरामगाह" शब्द बने,

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

जिसका अर्थ है "शांतस्थान"। हालाँकि, इस शब्द का प्रयोग फारसी में "मकबरा" के अर्थ में किया जाता है।

"आरामगाह-ए-अबू अली इब्न सीना दर शहर-ए हमदान (ईरान) अस्त,

-अबू अली इब्न सीना का मकबरा हमदान (ईरान) में है।।

उज़्बेक में, वहीं शब्द- ओरोमगॉह।

आराम क्षेत्र का प्रयोग- बांध के अर्थ में किया गया है

ओलाडिगन जॉय (आराम करने की जगह), लैगर (शिविर) और पार्क (बगीचा)।। उज़्बेक भाषा के व्याख्यात्मक शब्दकोश में शब्द ओरोमगॉह (विश्रामक्षेत्र) फारसी भाषा से आया है और फारसी में इसे अर्थ दखमा, मकबरा (मकबरा) हैं, लेकिन इसके निम्नलिखित दो अर्थ हैं 1. एक जगह जहाँ लोग आराम कर सकते हैं, आराम कर सकते हैं, 2. स्कूली बच्चों के लिए गर्मियों को छुट्टियों के दौरान आराम करने के लिए बनाया गया स्थान। यह ध्यान दिया जाना चाहिये कि शब्द- ओरोमगॉह- विश्राम क्षेत्र।। जो दोनों भाषाओं में मौजूद है, लेकिन अर्थगत रूप में भिन्न है, किन्तु फारसी मूल का है।

ऊपर बताया गया कि उज़्बेक भाषा में अरबी और फारसी-ताजिक बोलियों का बहुत अधिक प्रयोग होता है। इनमें से कुछ बोलियों ने सामान्य शब्दावली में अपनी सक्रियता नहीं खोई हैं। विशेष रूप से "चोर्राहा", चौराहा)

"सुमालाक"(सुमालक), "मकतब", विद्यालय)

"सिनफ" (कक्षा), मुवोज़ानत" (संतुलन), "नज"

(वजन), "तिजोरत" (व्यापार), "बोजक्सोना"

(सीमा शुल्क), "विलायत" (क्षेत्र), "फलक" (आकाश),

"हुकूक" (दाहिना), "तरकीब"(सामग्री), "मतन"(पाठ), "मावज़ू" (पाठ), "होकिम।। (अधिकारी)

इस प्रकार के फ़ारसी से आयातित समानार्थों में प्रयुक्त उज़्बेक शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

सलाम (फारसी)	सलोम (उज़्बेक)	-	नमस्कार
जनाब (फारसी)	जानोब (उज़्बेक)	-	महोदय
खुश आमदीद (फारसी)	ख़ुश केलीबसीज़	-	स्वागत
दारूखाना (फारसी)	दोरीख़ोना	-	दवाखाना/औषधालय

और इसी तरह के अन्य फारसी और अरबी शब्द ने केवल विशेषज्ञों द्वारा बल्कि आम जनता द्वारा भी बोलने में किसी भी कठिनाई के बिना सक्रिय रूप से उपयोग किये जाते हैं। उज़्बेक भाषा के ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक नियमों के अनुसार ये उधार लिये गये शब्द नवीन अर्थसामग्री को प्राप्त करते हैं और नयीअवधारणाओं को व्यक्त करने का कार्य करते हैं।

उपसंहार-

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भाषाविज्ञान के निकष पर संस्कृत एवं फ़ारसी का परस्पर सदृढ़ सम्बन्ध रहा है जो इसकी मूल भाषा वैदिक संस्कृत छान्दस् और अवस्ता से विकसित होती हुयी दृष्टिगोचर होती है। इस सम्बन्ध को संस्कृत ग्रन्थों के फ़ारसी अनुवाद की समृद्ध परम्परा ने और भी अधिक दृढ़ किया।

जहाँ संस्कृत ने भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं को प्रभावित किया वहीं फ़ारसी ने मध्य एशियाई भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को भी प्रभावित किया।

सहायक-ग्रन्थसूची

1. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र, लेखक-डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष 2019 ई. (षोडश संस्करण)

2. भाषाविज्ञान की रूपरेखा, लेखक- प्रो. उमाशंकर शर्मा ऋषि, प्रकाशन- चौखम्भा क्लासिका, वाराणसी, वर्ष-2022 ई. (प्रथम संस्करण)

3. तुलनात्मक भाषाविज्ञान, लेखक- डॉ. पाण्डुरंग दामोदर गुणे, अनुवादक- भोलानाथ तिवारी, प्रकाशन- मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना वर्ष 1963 ई. (चतुर्थ संस्करण का प्रथम हिन्दी अनुवाद)

4. भाषाविज्ञानम् (संस्कृत), लेखिका- प्रो. शारदा चतुर्वेदी, प्रकाशक- भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी, वर्ष- 2011 ई. (प्रथम संस्करण)

5. भाषाविज्ञानओ संस्कृत भाषा (बांग्ला), लेखिका- रत्ना वसु, प्रकाशक- संस्कृत पुस्तक भण्डार कोलकाता, वर्ष-1977 ई. (प्रथम संस्करण)

6. संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, लेखक- डॉ. भोलाशंकर व्यास, प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशक, वर्ष 2013 ई.

7. संस्कृत रचना ¼The Student Guide to Sanskrit composition½ लेखक- श्रीवामन शिवराम आप्टे, अनुवादक- डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय, प्रकाशक- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी वर्ष- 2008 ई. (पुनर्मुद्रित संस्करण)

8. विज्ञान (भाषाशास्त्र) लेखक-आचार्य पण्डित श्रीसीताराम चतुर्वेदी, प्रकाशक- चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, वर्ष 1969 ई.

9. फ़ारसी-हिन्दी शब्दकोश, परियोजना निदेशक-सैयद बाकर अब्तही, सम्पादक एवं परियोजना-संयोजक-डॉ. चन्द्रशेखर, प्रकाशक-राजकमल प्रकाशन, दिल्ली वर्ष-2001 ई. (प्रथम संस्करण) 2014 ई. (प्रथम आवृत्ति)

10. हिन्दी-फारसी कोश, सम्पादक- डॉ. राकेश कुमार, सह सम्पादक, श्री चरनजीत सिंह, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

11. संस्कृत-हिन्दी कोश-वामन शिवराम आप्टे, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली, वर्ष 2009 ई.

12. The Sanskrit- Persian Dictionary By Dr. Sayyid Muhammad Rida Jalali Naini, Institute for Humanities and Cultural Studies, Tehan 1996

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान में भारत विद्या के विकास का इतिहास

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13765006

प्रो. उल्फत मुखीबोवा
दक्षिण एशियाई भाषाएं और सहित्य का विभाग
ताश्कन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय

विभाग का अध्ययन क्षेत्र। भारतविद्या केंद्र सन् 1947 में स्थापित किया गया था। पहले यह "उत्तर भारतीय भाषाशास्त्र" (1947), फिर "भारतीय भाषाशास्त्र" और 1993 से "दक्षिण एशिया की भाषाएँ" नाम से संचालित होता था। 2018 से "दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशियाई भाषाऔं का विभाग" और सन् 2024 से दक्षिण एशियाई भाषाएं और साहित्य का विभाग नाम दिया गया।

वर्तमान में इस विभाग में एक प्रोफेसर, तीन डाक्टर, 2 वरिष्ठ अध्यापक, और पांच अध्यापक कार्यरत हैं।

विभाग ने शिक्षा के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। विशेष रूप से, 65 से अधिक पाठ्यपुस्तकें, 50 से अधिक मोनोग्राफ, 15 अनुवादित कार्य और 11 शब्दकोश तैयार किए गए, कई पाठ्यपुस्तकों को पंजीकृत और पेटेंट कराया गया।

खासकर प्रो. आज़ाद शामातोव और बयात रहमतोव द्वारा लिखित "उज़्बेक-हिंदी शब्दकोश" की प्रस्तुति 2015 में भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी की हमारे देश की आधिकारिक यात्रा के दौरान हुई थी।

"हिंदी भाषा का पाठ्यपुस्तक", "उर्दू भाषा का पाठ्यपुस्तक", "उर्दू भाषा शब्दावली", "उर्दू भाषा का व्याकरण", "हिंदी पर व्यावहारिक मार्गदर्शिका", "हिंदी-उज़्बेक नृवंशविज्ञान शब्दकोश", "उर्दू-उज़्बेक शब्दकोश" जैसी पुस्तकों को प्रकाशित किया गया है।

ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, अर्थव्यवस्था और भारतीय लोगों की विदेश नीति के व्यावहारिक और वैज्ञानिक अध्ययन पर शोध कार्य लिखे जाते हैं। आखिरी सालों में विश्वविद्यालय में पर्यटन और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता के नए विभाग खोले गये, जिन में भी हिन्दी पढ़ाई जाती है। ये तरह तरह के विभागों का होना भारत को हर तरफ़ से गहराई से अध्ययन करने में वड़ा महत्व रखता है।

शिक्षा के क्षेत्र में उज्बेकिस्तान और भारत के बीच काफी प्रगति हुई है। विशेष रूप से, हमारे विश्वविद्यालय ने भारत के कई विश्वविद्यालयों के साथ जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, ज. नेहरु विश्वविद्यालय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, गुजरात विश्वविद्यालयों के साथ एक आदान प्रदान की समझौते पर हस्ताक्षर किए गये हैं। इस समझौते के आधार पर सन् 2020 को गुजरात विश्वविद्यालय के साथ एम.ऐ. पर डाबल डिग्री पर शिक्षा लेने के लिये हमारे विश्वविद्यालय के पांच विद्यार्थियों ने दाखिला लिया और एक संयुक्त शिक्षा कार्यक्रम (1+1) के अनुसार पढ़कर सन् 2022 को विद्यार्थियों ने सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई पूरी की और दो विश्वविद्यालय का एम.एय. डिग्री प्राप्त किए।

विभाग का वैज्ञानिक अनुसंधान क्षेत्र। विभाग की संरचना के आधार पर विभाग की वैज्ञानिक क्षमता लगभग 30% है। आनेवाले वर्षों में वैज्ञानिक क्षमता बढ़ाने के लिए विभाग में कई व्यावहारिक कार्य किए गए हैं,

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

विशेष रूप से युवा शिक्षकों के वैज्ञानिक कार्य विषयों को मंजूरी दी गई है और व्यावहारिक कार्य शुरू किया गया है। पिछले 75 वर्षों में विभाग में कार्यरत अध्यापकों द्वारा 60 से अधिक मोनोग्राफ, लगभग 50 पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित किए गए हैं। विभाग में काम करने वाले लगभग हर प्रोफेसर नियमित रूप से राष्ट्रीय और विदेशी पत्रिकाओं में अपने विषय से संबंध वैज्ञानिक लेख प्रकाशित करते रहते हैं और अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में भी भाग लेते हैं। इन में भारत, रूस, अमेरिका, इंग्लैंड, सूरीनाम, मॉरीशस, हॉलैंड, ईरान, दक्षिण कोरिया, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम, कजाकिस्तान, ताजिकिस्तान, अजरबैजान और कई अन्य देशों के नाम शामिल हैं। एक अचछी बात यह भी है कि उज्बेकिस्तान में तमिल साहित्य का भी अध्ययन होता है। इस साल विभाग की अध्यापिका मक्तूबा मुर्तज़ाहोजाएवा 20वीं सदी के प्रसिद्ध तमिल लेखक चिन्नप्पा भारती के उपन्यासों पर अपना शोध कार्य पूरा करने वाली है। यह सराहनीय है कि एम. मुर्तज़ाहोजाएवा ने चिन्नप्पा भारती के "पावली" उपन्यास का उज़्बेक में अनुवाद किया और वह "विश्व साहित्य" पत्रिका में प्रकाशित हुआ। फिर उपन्यास को एक अलग पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया। इस उपन्यास का विमोचन भारत में चिन्नप्पा भारती की उस्थीती में हुआ।

उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा के विकास में योगदान के लिए उज़बेक भारतविदों में से सन् 2014 को प्रो. आज़ाद शोमातोव को भारत सरकार का "जॉर्ज ग्रियर्सन" अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार, सन् 2007 को न्यूयार्क में आयोजित विश्व हिन्दी सम्मेलन में प्रो.उल्फत मुखीबोवा को आईसीसीआर की तरफ से हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान के लिये पुरस्कार से, सन् 2015 को प्रसिद्ध अनुवादक अमीरुल्ल् फैयज़ियेव को भी "जॉर्ज ग्रियर्सन" अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार से तथा सन् 2017 को डा. सिराजुद्दीन नुरमातोव को "आईसीसीआर के विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार 2017" से सम्मानित किया गया।

विभाग में कई वैज्ञानिक परियोजनाओं को लागू किया गया है। प्रो.मुखीबोवा के नेतृत्व में "बाबरी काल का साहित्य (हिंदी, उर्दू, तुर्की और फारसी स्रोतों पर आधारित)" परियोजना पर काम किया गया और इसके परिणामस्वरूप दो खंडोंवला मोनोग्राफ प्रकाशित हुआ।

विभाग के स्नातक। हमारे विभाग से हर साल लगभग पचास विशेषज्ञ स्नातक होते हैं और उनमें से अधिकांश विभिन्न राज्य और निजी संगठनों में काम करते हैं। विशेष रूप से, वे विदेश मंत्रालय, पाठशालाओं, और हिंदी और उर्दू भाषाओं में विशेषज्ञता वाले गीतों, राजदूतावासों, सांस्कृतिक केंद्रों, संयूक्त कारखनों तथा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर काम कर रहे हैं। उन्होंने विदेशी देशों के सहयोग से काम करने वाले विभिन्न संगठनों में अनुवादक के रूप में भी काम करते हैं, जिनमें "अकेला समूह", विभिन्न "पर्यटन" एलएलसी ("इनजॉय ट्रैवल", "एक्सेलेंट पाउग्राफी" निजी पर्यटक कंपनियां) और "दुनिया वा डावर" समाचार पत्र भी शामिल है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि हमारे कई विशेषज्ञ हैं जिन्होंने विदेशों में विभिन्न उच्च पदों पर काम करते आये हैं। इस क्षेत्र में मुख्य हमरे उन गुरुजनों का नाम लेना आवश्यक है – जैसै, उज़्बेकिस्तान का भारत में पहला राजदूत सुरात मिर्कोसिमोव, इंग्लैंड में, अमरीक में उज़्बेकिस्तान का राजदूत, बाद में संयुक्त राज्य संघ में उज़्बेकिस्तान का प्रतिनिधित्व करनेवाला फातीह तेशाबायेव।

सन् 2019 को जब संसार भर में महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ व्यापक रूप से मनाई जा रही थी, तो ताशकंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्विद्यालय भारत के दूतावास के सहयोग से, विदेशी देशों के साथ अंतरराष्ट्रीय संबंध समिति के साथ "महात्मा गांधी की दार्शनिक शिक्षाओं में सार्वजनिक कूटनीति" विषय पर एक विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया जिस में विशेष अतिथि के रुप में भारतीय संसद सदस्य अनिल कुमार शास्त्री और गांधी विद्वान शोभना राधाकृष्ण जी ने भाग लिया।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

जुलाई-सितंबर 2022 में, हमारे विभाग के छ अध्यापक भारत में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी भाषा विश्वविद्यालय में अध्ययन करके लौटे। हमारे विश्वविद्यालय के हिंदी भाषा के कई छात्र हर साल लाल बहादूर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा आगरा के केंद्रीय हिंदी संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजे जाते हैं। वर्तमान में, विभाग के कई स्नातक सफलतापूर्वक अपना पाठ्यक्रम पूरा कर चुके हैं और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं।

भारत के राजदूत सकन्ड टायल जी तथा प्रे. आज़ाद शामातोव की पहलकदमी से विभाग में सन् 2007 को "महात्मा गांधी भारतविद्या केंद्र" खोला गया। इस केंद्र के लिये भारत के राजदूतावास ने फर्नीचर, ऑडियो-वीडियो, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर जैसे तकनीकी उपकरण, दो हजार से अधिक भारतीय भाषाओं में तरह तरह की पुस्तकों को प्रदान किया।

विदेशों के साथ संबंध। विभाग में विदेशों के साथ संबंध अच्छी तरह से स्थापित किया गया है। विभाग द्वारा भारत के "दिल्ली विश्वविद्यालय", "जामिया मिल्लिया इस्लामीया विश्वविद्यालय", ज.नेहरु विश्वविद्यालय", "गुजरात विश्वविद्यालय", "विवेकानंद वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र" के साथ आदान-प्रदान के समझोतों पर हस्ताक्षर किए गए।

भारतीय दूतावास ने विभाग की कई पाठ्यपुस्तकों और मोनोग्राफ के प्रकाशन में मदद की। विशेष रूप से, तमारा खोदजाएवा और उल्फत मुहीबोवा का 465 पृष्ठोंवाले "भारतीय के भाषाओं का साहित्य" नामक मोनोग्राफ, मुहाय्या अब्दुरखमानोवा और प्रो. चंद्र शेखर जी के सहयोग से लिखित "गालिब के चुने ग़ज़ल" पुस्तक, हिन्दी की विशेष 24वीं पाठशाला के छात्रों के लिये कक्षा 5 से 11वीं कक्षा के छात्रों के लिए विभाग के प्रोफेसरों और पाठशाला के हिन्दी की शिक्षकों के सहयोग में लिखी गई कुल 7 पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन में भारतीय राजदूतावास तथा ल.ब. शास्त्री भारतीय सांसकृतिक केंद्र का बड़ा सहयोग रहा। पाठ्यपुस्तकों की प्रस्तुति भारत के दूतावास, ल.ब. शास्त्री केंद्र तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष विनय सेक्सबुद्धे की भागीदारी के साथ ऑनलाइन हुई।

उज़्बेक भारतविदों द्वारा अनुवाद का कार्य भी बहुत अच्छी तरह से किया जाता है और इसकी एक प्रतिष्ठित विरासत है। भारतीय लेखकों की रचनाओं और उज़्बेक लेखकों की रचनाओं का अनुवाद भी लगातार किया जा रहा है। विशेष रूप से, 1961 में टैगोर के जन्म की शताब्दी को समर्पित एक आठ खंडोंवाली पुस्तक, प्रेमचंद, कृष्ण चंदर, यशपाल, सरोजिनी नायडा, मुक्तिबोध, चिन्नप्पा भारती, महाकाव्य रामायण और महाभारत, पंचतंत्र, हितोपदेश जैसे किस्से और कथाओं के संग्रह, शुकस्पताती, वेतालोपांचोविंशति, महात्मा गांधी की "मेरी जीवनी" का अनुवाद किया गया है, इसके अलावा, उज़्बेक टी.वी पर "महाभारत" और "रामायण" सीरियल का उज़्बेक भाषा में अमीरुल्ला फैज़िएव द्वारा अनुवादित दिखाया गया था। पिछले 75 वर्षों में, विभिन्न शैलियों में दो देशों के लेखकों के सौ से अधिक कार्यों का उज़्बेक भारतविदों द्वारा अनुवाद किया गया है। साथ ही, उज़्बेक लेखकों की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया गया है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकी उपन्यासकार अस्कद मुख्तार का उपन्यास चिंगारी ।

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765030

डॉ .मनीष कुमार मिश्रा
विजिटिंग प्रोफ़ेसर)ICCR Chair)
ताशकंद स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज़
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

डॉ .नीलूफ़र खोजाएवा
अध्यक्ष
दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशियाई भाषा विभाग
ताशकंद राजकीय प्राच्य विश्वविद्यालय
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

एक कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार और अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध उज़्बेकी साहित्यकार अस्कद मुख्तार का जन्म 23 दिसंबर सन 1920 को फ़रगना के मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ । आप के पिता एक रेलवे सड़क कर्मचारी थे । आप का बचपन फ़रगना में ही बीता । पिता की मृत्यु हो जाने के बाद आप अनाथालय में रहते हुए ही बड़े हुए । पिता की मृत्यु के समय आप सिर्फ 11 वर्ष के थे । बड़ी मुश्किलों से आप ने 'उरता मकतब' और हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की । अध्ययन के प्रति यह आप का जुनून ही था कि सन 1942 में आप ने एशियन सेंट्रल युनिवर्सिटी,ताशकंद से भाषाशास्त्र/ फिलोलाजी में स्नातक की शिक्षा पूरी की । इसके बाद नौकरी की शुरुआत हुई और आप ने अंदिजान के शैक्षणिक संस्थान में उज़्बेक साहित्य विभाग अंतर्गत प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया । वहां से सेवा मुक्त होने के बाद आपने अपना जीवन साहित्य सेवा को समर्पित कर दिया । कारीगरों, मजदूरों, कपास की खेती से जुड़े किसानों इत्यादि को आपने अपने साहित्य लेखन के केंद्र में रखा । सन 1957 से 1969 तक आप एस.एस.आर. उज़्बेकिस्तान लेखक संघ के सचिव रहे । आप ने 'शर्क युलजुजी' और 'गुलिस्तान' पत्रिका के लिए भी कार्य किया । रज़्ज़ाक़ अबुराशिद, जमाल कमाल, इरकिन वाहिद, रऊफ़ पार्फी, हलीमा खुदायबरदी, मुहम्मद अली, शराफ़ बशबेक और ममादली मोहम्मद जैसे उज़्बेकी साहित्यकार उम्र में तो आप से छोटे हैं लेकिन आप के समकालीन साहित्यकार माने जा सकते हैं । आप की मृत्यु 17 अप्रैल सन 1997 में हुई ।

साहित्य जगत में आप का प्रवेश एक युवा कवि के रूप में होता है । आप की प्रारंभिक कविताओं पर गफ़ूर गुलाम और हामिद ओलिंजान का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है । आप का प्रथम काव्य संग्रह सन 1938 में 'पुलात कुवाची' नाम से प्रकाशित हुआ । 'पुलात कुवाची' का अर्थ है - फ़ौलाद ढालनेवाले । आप के अन्य कई कविता संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें से तीन संग्रह अँग्रेजी भाषा में 'माय फ़ेलो सिटिजन्स','सिटी ऑफ स्टील' और 'थैंक यू माय डियर', नाम से प्रकाशित हुए हैं । आप का पहला और विश्व प्रसिद्ध उपन्यास सन 1954 में 'आपा सिंगिलर' नाम से प्रकाशित हुआ ।

यही उपन्यास अँग्रेजी में 'सिस्टर्स' और हिन्दी में 'चिंगारी' नाम से सन 1966 में प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद राय गणेश चंद्र ने किया है । सन 1966 में यह उपन्यास विश्व की 18 भाषाओं में 23 संस्करणों के साथ छपा । इसकी कुल 20 लाख़ से अधिक प्रतियाँ उस समय प्रकाशित हुईं । आप की 30 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । आप का प्रकाशित अधिकांश साहित्य 'शूरा पीरिएड' से संबंधित एवं प्रभावित रहा है । अँग्रेजी भाषा में जो किताबें आप की प्रकाशित हुई हैं उनमें 'स्टील कास्टर'(1947),'वेयर रीवर कोंफ्लुएंस'(1950),'स्टील सिटी' (1950),'काल टु लाईफ़' (1956),'बर्थ' (1960),'टाइम इन माय डेस्टिनी','दवर','चिनार','अमू' इत्यादि प्रमुख हैं । जिन साहित्यकारों के साहित्य का आप ने अनुवाद किया उनमें 'ए.पुश्किन','एम.यू. लरमोनताव','एम.गोर्की' और 'ए.ए.ब्लॉक' प्रमुख हैं ।

सन 1954 में 'आपा सिंगिलर' नाम से प्रकाशित अस्कद मुख़्तार का विश्व प्रसिद्ध उपन्यास अँग्रेजी में 'सिस्टर्स' और हिन्दी में 'चिंगारी' नाम से क्रमश: सन 1966 व 1979 में प्रकाशित हुआ । विद्वान समीक्षकों के अनुसार यह उपन्यास युज़्बेकिस्तान के आधुनिकीकरण, पुनर्निर्माण और शहरीकरण का व्यापक स्रोत माना जा सकता है । रूप विधान की दृष्टि से उपन्यास किसी न किसी व्यक्ति विशेष के जीवन के आस-पास बुना हुआ ताना-बाना होता है । प्रस्तुत उपन्यास को ध्यान से पढ़ने पर स्पष्ट हो जाता है कि यह उपन्यास व्यक्ति नहीं अपितु स्थान और विचार केन्द्रित उपन्यास है । उपन्यास चिंगारी जब प्रकाशित हुआ, उन दिनों "उज़्बेकिस्तान में सोवियत सत्ता के शुरू के वर्षों में छुपे संघर्ष का तनाव पूरे जोर पर था । नए जीवन के दुश्मनों की शक्तियां अक्सर,यत्र-तत्रबचे खुचे बसमाचियों के सशक्त गिरोहों के सहारे क्रांति द्वारा जनता के जीवन में, उसकी चेतना में लाई जा रही नहीं लहर का मार्ग अवरुद्ध करने की कोशिश कर रही थीं ।"[1] इस परिवेश को उपन्यास के कथानक के माध्यम से मुख़्तार समाजवादी यथार्थवाद की मूल विचारधारा के साथ चित्रित करते हैं । उपन्यास के माध्यम से आप ने उन उज़्बेकी महिलाओं के संघर्ष को बयां किया है, जिन्होंने विरोध और संघर्ष की परिस्थितियों से लोहा लेते हुए अपने भविष्य को गढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी । ये महिलाएं शताब्दियों पुराने विचारों और अंधविश्वासों को अपनी नई सोच की चिंगारी से हवन कर देती हैं ।

यह उपन्यास उन उज़्बेकी औरतों की साहस और शौर्य की गाथा है जिन्होंने पुरानी दमनकारी व्यवस्था और मान्यताओं के खिलाफ क्रांति करते हुए, अपने लिए मेहनतपूर्ण पर सम्मानजनक जीवन का मार्ग स्वयं प्रशस्त करती हैं । अपनी भाग्य विधाता खुद बनती हैं । उस समय शुरू हुई नए आर्थिक नीतियों अर्थात 'नेपमेन',कुद्रतुल्ला ख्वाजा का वर्कशॉप, वहां कठिन परिश्रम करती औरतें, उनकी गंदी बस्तियां और गरीबी इत्यादि का जिसबारीकी से उपन्यास में मुख़्तार वर्णन करते हैं मानों वह सब उनका ही भोगा हुआ यथार्थ रहा हो । इन स्त्रियों के प्रति उपन्यासकार पूरी सहानुभूति रखता है । सहकारी संघों की स्थापना के द्वारा नई बनाई मिल की शुरुआत, व्यक्तिगत व्यापार की समाप्ति,उज़्बेकिस्तान में श्रमिक वर्ग की नई शुरुआत और इन्हें ताकतवर समाजवादी शक्ति के रूप

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

में स्थापित करने की मंशा से उपन्यासकार पूरा ताना-बाना बुनते हैं । साथ ही साथ इस उपन्यास के माध्यम से मुख्तार नारी शक्ति, उसके संकल्प, उसकी स्वतंत्रता, सम्मान और अधिकार को भी प्रमुखता से चित्रित करते हैं ।

एक तरफ मेहनतकश महिला पात्रों में जुराखां,हाजिया,अनाखां, नजाकत, अंजिरत और उनके सहायक तथा क्रांतिकारी मित्र बोतशोविक, यफीम दनीलोविच, इंजीनियर दोब्रोखोतोव जैसे लोग हैं तो दूसरी तरफ कुद्रतुल्लाह ख्वाजा, नईमी और जासूसी करने वाला चाय विक्रेता जैसे पात्र हैं । "लेखक ने अपने पात्रों के जीवन के व्यक्तिगत पक्ष और उसकी विशेषताएं, उनके सामाजिक जीवन के ढांचे और उनकी मानसिक स्थिति को बड़े युक्तियुक्त ढंग से उभारा है ।"[2]इसके एक तरफ उपन्यास का कथ्य अधिक स्पष्ट होता है तो दूसरी तरफ शोषण और बदलाव की आवश्यकता का भाव अधिक प्रबल और विश्वसनीय प्रतीत होता है । उपन्यास की प्रमुख महिला पात्रों में जराखाँ प्रमुख है । लेनिन से मिलने के बाद उसके जीवन को सच में एक नई दिशा मिलती है । मास्को में रहते हुए उसने परंजी छोड़ दी थी । सरकारी कामकाज से जुड़े रहने के कारण उसके अंदर अपने अधिकारों की जागरूकता, दृढ़ता और धैर्य जैसे गुण अच्छे से विकसित हो गए थे । वह शिक्षक नईमी जैसे कमजर्फ़ लोगों पर व्यंग्य करने से नहीं डरती, अन्य स्त्रियों को धैर्य पूर्वक सुनना और उनकी समस्याओं के समाधान का रास्ता सुझाते हुए उसके नेतृत्व कौशल को आसानी से समझा जा सकता है । इसी तरह की दृढ़ निश्चयी और बहादुर स्त्री के रूप में अनाखाँ भी सामने आती है । बीते हुए कल के चंगुल से एक बार निकल जाने के बाद उसके बढ़े हुए कदमों को रोकने का साहस किसी में नहीं होता । वह जो ठान लेती है उसको पूरा करके ही रहती है । हत्या का भय भी उसे इंच मात्र भी डिगा नहीं पाता । डांवाडोल मन स्थिति के प्रतीक के रूप में नजाकत जैसी पत्र उपन्यास में चित्रित किए गए हैं, जो साहस और डर को समान रूप से जीती है । साथी स्त्रियों की बातों से आंदोलित भी होती है और पति ईशन द्वारा डराए जाने पर दुबक भी जाती है। अंजीरत जैसी वयोवृद्धपात्र पुराने संस्कारों, रूढ़ियों और विचारों से धीरे-धीरे सही पर अंत तक छुटकारा पा जाती हैं।

उपन्यास में उज़्बेकी स्त्रियों की मनःस्थिति और उनके संस्कारों को बड़ी सूक्ष्मता से उपन्यासकार सामने लाते हैं । शिक्षक नईमीभी अपने भाषण के द्वारा यही आवाहन करता है कि स्त्रियों को सहकारी समितियां में सहभागी होना चाहिए, उन्हें परंजी छोड़ते हुए बच्चों को शिशुगृह में डालने के लिए तैयार होना चाहिए । साथ ही साथ वह यह भी कहता है कि यदि उनके पति उन पर दबाव बनाए तो उन्हें उनकी बात नहीं माननी चाहिए । इन बातों का परिणाम यह हुआ की सभा में आई हुई स्त्रियां एक-एक कर वहां से जाने लगी । शिक्षक नईमी की बातें उन्हें रुचिकर नहीं लगी । अपने संस्कारों और परंपराओं से बँधी हुई स्त्रियां अपने नवजात को शिशुगृह में छोड़ने और पति की बात की अवज्ञा करने से सहमत होती नहीं दिखती । लेकिन यही स्त्रियां जुराखाँ के प्रति प्रेम और स्नेह से लबालब होते हुए आवेश में एक साथ परंजी उतार कर आग में उसका दहन कर देती हैं । अनाखाँ पर छूरे से कायरता पूर्ण हमला इसकी बड़ी वजह था । अपने प्रति इस तरह के व्यवहार से स्वयं अनाखाँ तिलमिला गई थी । एक घायल शेरनी की तरह अपने आप को संभालते

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हुए सब को चुनौती देती है । इस बीच पहली बार वह बिनापरंजी के बाहर निकलती है । उपन्यासकार अनाखाँ का वर्णन करते हुए लिखता है," उसके कदमों में दृढ़ता थी लेकिन ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके पैरों के नीचे धरती कांप रही हो । ऐसा प्रतीत होता है जैसे सिर्फ लोग ही नहीं बल्कि दीवारें भी उसे घूर रही हो, परंजी के बिना अपना सर सीधे किया रहना, एकदम सीधे आग की ओर देखना, बिना जोर लगाए डग बढाना मुश्किल हो रहा था ।"[3]

अनाखाँ ने सिर्फ परंजी उतार कर नहीं फेंकी थी, बल्कि अपनेडर और बंधनों की मानो पुरानी केंचुली उतार दी हो । वह अब अपने अंदर बने उत्साह और उमंग का संचार महसूस करती है । रूसी इंजीनियर के प्रति प्रेम को अंदर ही अंदर स्वीकार करने का साहस जुटापाती है । इसी साहस के दम पर इंजीनियर पर झूठे आरोप लगाने वालों के विरुद्ध निडरता से बोल पाती है । उपन्यास में बुरे या खलनायक पात्रों में बाय कुद्रतुल्लाह का पुत्र,नईमी, नीली मस्जिद का इमाम अब्दु मजीद ख्वाजा, दुकानदार मतकोबुलजैसे चरित्र गढ़े गए हैं । उपन्यास की स्त्रियों के प्रति इनका व्यवहार और स्त्रियों के रोषपूर्ण विरोध चित्रण के माध्यम से उपन्यासकार आने वाले बदलाव की तरफ इशारा तो करते ही हैं, साथ ही साथ इस संघर्ष में स्त्रियों के प्रति अपनी सहानुभूति पूर्ण दृष्टि भी डालते हैं । किसी स्त्री की सामाजिक और आर्थिक स्थिति कैसी है ?उसके चित्रण के माध्यम से उस स्थिति के प्रति उपन्यासकार पाठकों की सहानुभूति बटोरता है । जैसे कि वह गधे पर बैठे एक मोटे व्यक्ति के चाय खाने में आने का दृश्य उपस्थित करते हुए लिखते हैं कि,"वह मोटा आदमी जिसका पेट भी भरा हुआ है, वह गधे की सवारी करता हुआ आता है और छाया में आराम करने लगता है । जबकि उसके पीछे जो स्त्री चलकर आ रही है, वह एक पुरानीपर बंद लगी परंजी पहने हुए है । उसकी गोद में एक बच्चा भी है । जब तक वह व्यक्ति छाया में आराम करता है वह स्त्री जमीन पर धूल में बैठे अपने नवजात को दूध पिलाती रहती है।"[4] इस तरह के दृश्य मात्र से ही उस स्त्री की दैनिक स्थिति का आकलन हो जाता है । उसके प्रति लोगों में करुणा का भाव आता है जबकि पुरुष पात्र के प्रति क्रोध और घृणा । उपन्यासकार को ऐसे चित्रण में महारत हासिल है । परिस्थितियों का चित्रण परिवेश के माध्यम से करने में वह बेजोड़ हैं ।

उपन्यास की शुरुआत नैमंचा मोहल्ले के बुनकरों के बीच होती है । पीढ़ियों से यह लोग बुनाई का काम करते रहे हैं । औरतें सूतकातती हैं और मर्द बोज जो कि एक मोटे किस्म का कपड़ा होता है । हर पिता मरने से पहले अपने बेटे के लिए चरखा जरूर छोड़ जाता था । यही उसके जीवन भर की कमाई होती और बेटे के लिए भविष्य की कमाई का रास्ता । बच्चों को उसकी पारिवारिक परिस्थितियां यह समझा देती थी कि हुनर ही जिंदगी है । इन बुनकरों में से कइयों को अपनी पिछली सातपीढ़ियों के नाम पता थे, लेकिन इनमें शायद ही कोई था जो अपने लिए कमरबंद तक का कपड़ा जुटा पाया हो । गरीबी, अभाव और शोषण मानो पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी नियत बन गई थी । गंदी रुई की लगातार धुनाई करने के कारण 40 की उम्र तक आते-आते उनके फेफड़े खराब हो जाते, बावजूद इसके अपने बच्चों को यही हुनर सीखाने के लिए वे अभिशप्त थे । उनकी बस्तियों का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं कि," गर्मियों में नैमंचा की गलियां धूल से भर

जाती । भूरी बेजान गर्द की तह छतों, मिट्टी की दीवारों और इक्के दुक्के सूखे पेड़ों को लपेट लेती । छड़ों की धुनाई से फिर से ताजा और साफ की गई रूई से निकलने वाली धूल के बादल कुहासे की तरह हवा में गतिहीन लटकते रहते । यह लोगों के हाथों व चेहरों पर जम जाती । उनके कपड़ों में चिमट जाती और आंगन में भर जाती, जिन्हें उनकी पूरी नग्नता में टूटी-फूटी दीवारों के छेद से देखा जा सकता था ।"[5]

असकद मुख्तार इस मोहल्ले को एक उदास, बेरंग और फटेहाल मोहल्ला कहते हैं । इसी मोहल्ले में पुराने मालिकों में से एक आखरी कुद्रतुल्ला ख्वाजा का भी महलनुमा घर है, जो नैमंचा के जीवित शरीर से जोंक की तरह चिपका हुआहै । उपन्यासकार ने शोषक और शोषित दोनों का चित्रांकन बड़ी खूबी से किया है । साहुकार, दुकानदार और सर्राफ़ामालिक इन गरीब बुनकरों को पैसे उधार देते लेकिन बदले में उनकी मेहनत का माल कौड़ियों के दम लेते । फिर भी उनका कर्ज कभी कम नहीं होता । लेकिन नई सत्ता आने के बाद यहां के पुरुष बुनकरों ने सहकारिता के अंतर्गत एकजुट होकर "लाल सूती वस्त्र मजदूर सहकारिता "की शुरुआत की । इस नई व्यवस्था में कुद्रतुल्लाह जैसे पुराने साहुकार ने हार नहीं मानी । नहीं आर्थिक नीति के अंतर्गत निजी रोजगार देने वाला ,"नई आर्थिक नीति के अंतर्गत निजी रोजगार देनेवाला,नई आर्थिक नीतिका पालन करता बन गया । उसने ताशकंद के शैकांताहूर हिस्से में रहने वाले सईद वक्कास नाम के एक पोशाक बेचने वाले को भाड़े पर रख लिया और मशीनों को नैमंचा की अपनी कारवाँ सराय में भेज दिया,जहां उसने काफी बड़ा सा वर्कशॉप लगा दिया । पुरुष सहकारिता में काम करने जाते लेकिन औरतें घर पर ही रहती । महिला जुलाहिनों में खासकर कारीगरों की विधवाओं को कुद्रतुल्लाह के यहां काम मिल गया ।"[6]

कुद्रतुल्लाह का सेवक मख्सूमनये सोवियत कानून से खुश नहीं था, जिसके अंतर्गत जुलाहिनें 8 घंटे काम करके अपनी नियमित मजदूरी की हकदार हो गई थी । वह चाहता था कि वह जुलाहिनों को डराए, धमकाए । उन्हें डांटे फटकारे तथा उनकी आंखों में अपने लिए डर देखे । लेकिन अब वह यह सब नहीं कर सकता था अतः अपने आप को मजदूरों के ऊपर का आदमी महसूस करने में उसे जो सुख मिलता, उससे वह वंचित सा हो गया था । अब वर्कशॉप की औरतें उससे हंसी ठिठोली करती और कई बार वह शर्मा के भाग जाता । वर्कशॉप में काम करने वाली रिजवान कुद्रतुल्लाह और मख्सूम से नफरत करती थी । उसे अच्छे से याद आता है कि मख्सूमने चिकनी चुपड़ी बातें करके उसके मरहूम पति सुल्तान को अपने कर्ज के जाल में फसाया । वह हर जुम्मे को आकर बोज की एक गठरी ले जाता, जबकि उसका दिया कर्ज हफ्तावार बढ़ता ही रहा । बोज़ बनाते-बनाते बूढ़े सुल्तान की सेहत खराब हो गई । उसके सीने में दर्द रहता लेकिन वह रात रात भर बोज बनाने के लिए विवश था । बोज न देने पर मख्सूमकरघा ले जाने और घर बेचने की धमकी देता । बूढ़ा सुल्तान हर हाल में अपने बेटे एर्गश के लिए करघा बचा लेना चाहता था । उनके लिए करघे से वंचित होने का मतलब था गले में भिखारी का झोलालटका लेना । और अंततः बोज बनाने के अत्यधिक दबाव और कर्ज के बढ़ते बोझ के तले बूढ़ा सुल्तान दम तोड़ देता है ।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

साटन बुनने में माहिर नारमत की बीवी नजाकत साटन के ताने वाले एकमात्र करघे पर काम करती थी । उसने दुख दर्द को उस तरह कभी नहीं महसूस किया था जैसे अन्य औरतों ने किया था । वह हंसमुख और खुश मिजाज थी लेकिन कई बार उसका मजाक माहौल को संजीदा कर देता । वही वर्कशॉप की अनाखा पर मख्सूम की कड़ी नजर रहती । वह पुराने शहर में खुले महिलाओं के क्लब में जाती थी, यह बात मख्सूमऔरकुद्र्तुल्लाह को खतरे की घंटी लगती थी । आज वह क्लब जा रही है, संभव है कि जल्दी व स्वयं सहकारिता में भी सम्मिलित हो जाए फिर अगर उसका अनुसरण करते हुए अन्य औरतों ने भी ऐसा किया तो कुद्रतुल्लाह के वर्कशॉप पर तो ताला लग जाएगा । नए कानून के हिसाब से उसे निकाल कर बाहर करना भी आसान नहीं था । इसलिए कुद्रतुल्लाह अपने सेवक मख्सूम को बार-बार चेताते हुए कहता है कि," अपनी आंख खुली रखो, उसे अपनी नजर से दूर न होने दो ।"[7]इस बात से उनके अंदर का डर साफ दिखाई पड़ता है । अनाखा की दो बेटियां थी बशारत और तुर्सुनाये । पति साबिर का देहांत हो चुका है । मां और बेटियां यफ़ीम चाचा और सफिया चाची को ही अपना सब कुछ मानती थी । साबिर ने अपनी जिंदगी में सिर्फ अभाव देखा । तंगहाली में उसने कुली का काम करना शुरू कर दिया था । उसका मिलना जुलना कामरेड लोगों से होने लगा था । ऐसा ही उसका एक दोस्त था यफ़ीम दनीलोविच । सफिया और यफ़ीम की अपनी कोई औलाद नहीं थी । सबीर किले की रखवाली फौजी का हिस्सा था और उसी के चलते उसकी मृत्यु भी हुई । तब से यफ़ीम और सफिया ने उनके परिवार को बड़ा सहारा दिया ।

उपन्यास की क्रांतिकारी और महत्वपूर्ण पात्र जुराखा कामरेड थी और पार्टी के कार्यों में बड़ी सक्रिय । औरतों के बीच उसका बड़ा आदर था । वह अपनी पार्टी विचारधारा से औरतों को जोड़ने का आवाहन करते हुए कहती है कि," अपने दिल का सारा उत्साह, अपनी भावनाओं की सारी स्वच्छता और व्यग्रता, अपनी इच्छा शक्ति जो कुछ भी आप में है उसे सोवियतों के जनतंत्र को बनाए रखने और इसे एक कम्युनिस्ट भावना में पारंगत करने में अर्पित कर दें ..।"[8] उसकी ऐसी तेजस्वी बातें वर्कशॉप की औरतों पर जादू की तरह असर करती और वे उसकी समर्थन में खुलकर खड़ी हो जाती । यही कारण था कि वर्कशाप का मालिक जुराखा को फूटी आंख भी पसंद नहीं करता था । औरतों ने हिम्मत से सहकारिता शुरू की,अध्यक्षा पर वार भी हुआ लेकिन वे हिम्मती औरतों को डिगा नहीं सके । अंततः बुज़दिल लोग बहादुरजुराखा की हत्या कर देते हैं । उसकी मौत पर अनाखा कहती है," हम तुमसे प्यार करते थे प्यारी बहन । हम तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे और मैं तुम्हारी सौगंध लेती हूं ..... कामरेड़ों,आइये हम एक सौगंध लें । तुमने जो काम शुरू किया था उसे हम पूरा करेंगे ।"[9]इस तरह जुराखा की मौत ने इन महिलाओं को भावनात्मक रूप से और शक्ति दी । औरतों की भावी मिल के सामने जुराखा को दफन कर दिया गया ।

बाय शहर छोड़कर भाग चुका था और उसके बेटे नुस्रतुल्लाह ने उनका मकान मिल परियोजना के लिए दे दिया । मख्सूम ने भी यह स्वीकार किया की बाय के चरणों में उसके जीवन के 30 वर्ष बर्बाद हो गए । निर्माण स्थल पर सब मिलकर काम करते थे । एर्गश की देखरेख में सारा काम व्यवस्थित ढंग से चल रहा था । कुद्रतुल्लाह के पुराने वर्कशॉप को ठीक-ठाक कर वहां प्रशिक्षण का कार्य शुरू हुआ । वह एक तरह का तकनीकी स्कूल जैसा था । पार्टी ने जुराखा की

जगह अनाखा को जिम्मेदारी सौंप दी थी । नाटकी ढंग से नुस्रतुल्लाह की हत्या आत्महत्या और उसकी तहरीर में इसके लिए इंजीनियर को जिम्मेदार ठहराया गया था । थोड़ी बहुत परेशानियों के साथ अंततः अनाखा के नेतृत्व मिल का श्री गणेश हुआ । फीता काटने के साथ यह उपन्यास भी समाप्त होता है। मिलके सामने बनी जुराखा की कब्र पर लोग नियमित फूल चढ़ाते । उपन्यास इन शब्दों के साथ समाप्त होता है कि," लेकिन अब 30 वर्ष हो गए हैं ,जब से लोग बसंत के शुरू से लेकर पतझड़ खत्म होने तक इस एकाकी कब्र पर फूल लाते रहे हैं । फूल तकरीबन रोज लाये जाते हैं और वह काली पट्टी पर कभी सुख नहीं पाते ।"[10] इस तरह यह उपन्यास समाप्त होता है ।

संदर्भ :

1. चिंगारी-अस्कद मुख्तार, हिन्दी अनुवाद- राय गणेश चंद्र, प्रगति प्रकाशन,ताशकंद-1979, पृष्ठ संख्या - 423
2. वही ,पृष्ठ संख्या - 425
3. वही, पृष्ठसंख्या- 428
4. वही, पृष्ठसंख्या- 429
5. वही, पृष्ठसंख्या-03-04
6. वही, पृष्ठसंख्या-04
7. वही, पृष्ठसंख्या - 13
8. वही, पृष्ठसंख्या - 85
9. वही, पृष्ठसंख्या - 272
10. वही, पृष्ठसंख्या - 421
11. https://www.goodreads.com/photo/author/15015255.Askad_Mukhtar
12. https://www.britannica.com/biography/Asqad-Mukhtar
13. ASKAD MUKHTAR IS A GREAT ARTIST-Akbarova Kholiskhan,Kokan State Pedagogical Institute is a teacher,NOVATEUR PUBLICATIONS,JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal,ISSN No: 2581 - 4230,VOLUME 9, ISSUE 6, June -2023
14. ASQAD MUKHTOR: AN UZBEK WRITER AND HIS WORKS, HAROLD R. BATTERSBY,Central Asiatic Journal,Vol. 15, No. 1 (1971), pp. 55-74 (20 pages),Published By: Harrassowitz Verlag.
15. https://www.goodreads.com/author/show/17339986.Asqad_Muxtor
16. https://www.bibliomania.ws/pages/books/62946/askad-mukhtar-aibeck-rahmat-faizi-aidyn-abdullah-kahhar-s-zunnunova/uzbekistan-speaks-short-stories
17. Female images in the works of Askad Mukhtar,"Roots" and Vyacheslav Shugaev "RussianVenus",Kalonova Nargiza Nurzhovna,Independent researcher, teacher of the Russian language,Denau Institute for Entrepreneurship and Pedagogy.Journal of Multidisciplinary Innovations,Volume 11, November, 2o22. ISSN (E): 2788-0389

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

मध्य-एशिया में प्राचीन भारतीय संस्कृति (उज़्बेकिस्तान के विशेष परिप्रेक्ष्य में

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765043

डॉ. शिल्पा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
उत्तर-प्रदेश, भारत

चीन के पश्चिम, ईरान तथा अफगानिस्तान के उत्तर-पूर्व, तिब्बत के उत्तर तथा एशियाई रूस के दक्षिण में अत्यन्त विशाल भूखण्ड एवं स्थूल रूप में 'मध्य एशिया' विराजमान है। यहाँ के निवासी मूलतया तुर्क जाति के हैं, इसी कारण से यह क्षेत्र तुर्किस्तान कहलाता है। राजनीतिक दृष्टि से यह दो भागों में विभक्त है- प्रथम- चीनी तुर्किस्तान या सिंगकियांग (Xinjiang) तथा द्वितीय- रूसी तुर्किस्तान। इनमें चीनी तुर्किस्तान या सिंगकियांग (Xinjiang) को पूर्वी मध्य एशिया तथा रूसी तुर्किस्तान को पश्चिमी मध्य एशिया भी कहते हैं। रूस में कम्युनिस्ट व्यवस्था की स्थापना के बाद रूसी तुर्किस्तान में अनेक सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिकें स्थापित हुयीं। यदि प्राकृतिक दृष्टि से देखा जाता है तो पश्चिमी मध्य एशिया के दो भाग दिखायीं देते हैं- एक दक्षिणापथ और दूसरा उत्तरापथ। इस प्रकार सीर नदी और अराल सागर के दक्षिण में पश्चिमी मध्य एशिया के भाग को दक्षिणापथ कहा जा सकता है। रूसी सोवियत समाजवादी जनतन्त्र संघ (USSR) के अन्तर्गत तुर्कमान रिपब्लिक ताजिक रिपब्लिक तथा उज़्बक रिपब्लिक इसी भाग में स्थित है। उत्तरापथ में किरगिज रिपब्लिक और कज्जाक रिपब्लिक की सत्ता है।

विश्व के अनेक देशों के सदृश मध्य एशिया में भी प्राचीन प्रस्तर-काल, मध्य प्रस्तर-काल और नवीन प्रस्तर-काल के अवशेष दृष्टिगोचर होते हैं। जिनसे ज्ञात होता है कि अत्यन्त प्राचीनकाल में भी इस भूखण्ड में मनुष्यों का निवास स्थान था और वह शनैः शनैः सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हो रहे थें। प्रस्तर-काल के पश्चात् मध्य एशिया में भी ताम्र, पीतल तथा लौह युगों का आरम्भ होता है और वहां के निवासी पशुपालन और कृषि के साथ-साथ धातुओं के प्रयोग में दक्ष होने लगते हैं। मध्य एशिया के ये मूलवासी किस जाति के थे इस विषय पर ऐतिहासिकों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ उन्हें मुण्डा-द्रविड जाति का मानते हैं, और कुछ उन्हें भारोपीय (Indo-European) जाति का स्वीकार करते हैं।

भारोपीय (Indo-European) जातियों ने मध्य-एशिया में प्रवेश किया। इस भूखण्ड में इस जाति की दो शाखायें विकसित हुयीं- शक और आर्य जाति। शक जाति ने सीर नदी और अराल सागर के उत्तरवर्ती प्रदेशों को समृद्ध किया, साथ ही आर्यों ने उनके दक्षिण के प्रदेशों को वैभवयुक्त किया। वंक्षु (आमू नदी) और रसा (सीर नदी) नदियों के मध्यवर्ती प्रदेशों को प्राचीन काल में 'मुग्ध' कहते थे तथा वहाँ आर्य जाति का निवास था।

षष्ठ शताब्दी ईसा पूर्व में ईरान के हखामनी वंश के राजा दारयवुश (डेरियस) ने अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुये उन सब प्रदेशों पर विजय प्राप्त कर लिया और उन्हें अपने अधीन कर लिया जो पश्चिमी मध्य-एशिया के दक्षिणापथ के अन्तर्गत आते थें और जिनमें आर्य जातियों ने अपनी बहुत-सी बस्तियों का निर्माण कर रखा था। खींवा, बल्ख (बाह्लीक/ बैक्ट्रिया) और मुग्ध के प्रदेश उसके अधीन थे। शकों से भी उसने

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनेक युद्ध किये। प्रसिद्ध सीर नदी के उत्तर में निवास करने वाली इन जातियों पर वह अपना अधिकार नहीं बना सका। गत वर्षो में रूस के पुरातत्त्ववेत्ताओं ने शकों के प्राचीन भग्नावेशों का शोध कर इस जाति के धर्म, रीति-रिवाज, सभ्यता के विषय में अनेक नवीन तथ्य प्राप्त किये हैं। शक लोग स्वलियु (सूर्य), दिब्रू (द्यौः), अपिया (आप्या=पृथ्वी), पक (भग) आदि देवताओं की पूजा करते थे और अन्तिम संस्कार के समय अपने शवों के साथ उन वस्तुओं को रखते थें, जिनका उपयोग जीवन-काल में मृत व्यक्ति के द्वारा किया जाता था। शक जाति की बहुत सी उपशाखायें थीं। इस प्रकार चीन के पश्चिम से अराल सागर पर्यन्त के समस्त प्रदेशों में विविध शक जातियों का निवास था, जो प्रायः एक प्रकार से यायावर (Nomads) थीं। इस विशाल शकभूमि के उत्तर-पूर्व में हूण जातियों का निवास था।

कनिष्क महान् युइशि या कुषाण साम्राज्य का स्वामी था। चतुर्दिक् उसने अपनी विजय यात्रायें की थीं और अपने साम्राज्य का विस्तार किया था। प्रायः सम्पूर्ण उत्तर भारत उसकी अधीनता को स्वीकृत कर चुका था और उत्तर-पश्चिम में वंक्षु (आमू) तथा रसा (सीर) नदियों के मध्यवर्ती प्रदेश पर्यन्त के निवासीगण उसके शासन को स्वीकृत कर चुके थें, परन्तु कनिष्क इससे सन्तुष्ट नहीं था। उसकी इच्छा थी कि वह युइशियों के प्राचीन अभिजन (लोपनौर कुण्ड से थियानशान पर्वतमाला पर्यंत के प्रदेश) पर भी अपने आधिपत्य को स्थापित करे, पर उस समय यह भूभाग चीन के अधीन था। जिन दिनों कुषाण राजा विम क्थफिस पूर्वी पंजाब और मथुरा के प्रदेशों को अपनी अधीनता में लेने के लिये प्रयत्नशील था, चीन के सम्राट् मध्य-एशिया पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में परिश्रमरत थे। तकला-मकान की मरुभूमि के दक्षिण में उस समय तेरह राज्य थे जिनमें खोतान सर्वप्रधान राज्य था। चीनी सम्राट् हो-ती ने अपने सेनापति पान-छाओ को इस उद्देश्य से खोतान प्रेषित किया जिससे वहाँ के राजा से सहयोग प्राप्त कर वह इन सब राज्यों को चीन के अधीन कर सके। पान-छाओ को अपने उद्देश्य की पूर्ति में आशातीत सफलता प्राप्त हुयी और उसने न केवल दक्षिण मध्य-एशिया के सब राज्यों को चीन की अधीनता में लाकर खड़ा कर दिया बल्कि मुग्ध देश पर भी विजय प्राप्त कर चीनी साम्राज्य की पश्चिमी सीमा को कैस्पियन सागर तक विस्तृत कर दिया। तारीम नदी की घाटी, जिसमें अनेक राज्य थें, पान-छाओ ने उनको भी चीन के अधीन कर लिया। इस दशा में राजा कनिष्क के लिये यह सरल नहीं था कि वह अपने प्राचीन जाति अभिजन को फिर से अपने अधीन कर सके, साथ ही इस बात की भी आशंका थी कि पान-छाओ कहीं उन प्रदेशों पर भी आक्रमण न करे जो की कनिष्क के आधिपत्य में थे। अतः कनिष्क ने यही उचित समझा कि चीन के सम्राट् के साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर लिये जायें। उसने अपने दूत को यह संदेश लेकर के पान-छाओं के पास भेजा कि वह एक चीनी राजकुमारी का उसके साथ विवाह कर दे। उस युग में राजाओं में मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने के लिये विवाह सम्बन्ध का बहुधा आश्रय लिया जाता था, परन्तु पान-छाओ ने कनिष्क के दूत को कारागार में बन्दी बना दिया। इस पर कनिष्क ने एक विशाल सेना के साथ उत्तर-पश्चिम की ओर प्रस्थान किया, परन्तु पान-छाओं ने उसे पामीर पठार से पूर्व की ओर आगे नहीं बढ़ने दिया। ईसवी सन् की प्रथम शताब्दी के समाप्त होने से पूर्व ही पान-छाओ की मृत्यु हो गयी थी और उसका पुत्र पान-छांग चीन की पश्चिम सेना का सेनापति बन गया था। अब राजा कनिष्क ने एक बार पुनः चीन के विरुद्ध अपनी सैन्य शक्ति को प्रदर्शित किया और पान-छांग को न केवल परास्त किया अपितु अपने प्राचीन जातीय अभिजन को पुनः अपने स्वामित्व में लिया, मध्य-एशिया के उन सब प्रदेशों पर भी अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया जो पहले चीन के अधीन थे।

राजा कनिष्क के पश्चात् (100 ईस्वी) अर्ध शताब्दी के लगभग तक विशाल कुषाण साम्राज्य प्रायः अक्षुण्ण रहा, परन्तु कुषाण वासुदेव (152 से 186 ईस्वी) के समय से इस साम्राज्य में शिथिलता आने लगी और इसकी अखण्डता अक्षुण्ण नहीं रह सकी। भारत में गंगा-यमुना के क्षेत्र से भारशिव-नाग वंश के राजाओं ने

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कुषाणों के शासन का अन्त किया और राजस्थान में मालव गण और हरियाणा में यौधेय तथा कुणिन्द गणों ने स्वतन्त्रता प्राप्त की।

कुषाणों की शक्ति के नष्ट होने पर मध्य-एशिया के विविध प्रदेशों पर किन विविध जातियों द्वारा अपने-अपने साम्राज्य स्थापित किये गये, यह ज्ञात नहीं है। परन्तु पांचवीं शताब्दी के आरम्भ काल में मध्य-एशिया के प्रायः सभी प्रदेश शक्तिशाली जाति द्वारा आक्रान्त किये जा रहे थे, जो ऐतिहासिक रूप से श्वेत हूण या हेफताल हूण न होकर शक जाति के थे। परन्तु हूणों के सम्पर्क में रहने के कारण उनके आचार-विचार और संस्कृति पर हूणों का बहुत अधिक प्रभाव दिखायी देता था। ऐतिहासिक रूप में इन्हें प्रायः श्वेत हूण के नाम से ही लिखा गया। अतः हम भी इसी वंश का प्रयोग करते हैं। थियानशान पर्वतमाला के उत्तर से होते हुये श्वेत हूण पश्चिम मध्य एशिया पहुंच गये और फिर ताशकंद (उज़्बेकिस्तान) से दक्षिण की ओर घूम कर उन्होंने सीर नदी को पार किया और मुग्ध तथा बल्ख पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। इस काल में बल्ख ईरान की अधीनता स्वीकृत करता था। अतः ईरान के सासानी वंश के सम्राटों के लिये हूणों की वृद्धि को नियन्त्रित करना आवश्यक हो गया। एक शताब्दी से भी अधिक समय तक सासानी वंशीय सम्राट् हूणों के विरुद्ध संघर्ष में रत रहे सासानियों को परास्त कर उन्होंने अफ़गानिस्तान पर आक्रमण किया और वहाँ से पंजाब होते हुये वह भारत के मध्य देश तक पहुंच गये। गुप्त वंशीय सम्राट् स्कंदगुप्त (455 से 467 ईस्वी) ने हूणों का सामना करने में अद्‌भुत शौर्य प्रदर्शित किया और उनसे अपने साम्राज्य की रक्षा की। परन्तु इस समय मध्य-एशिया पर श्वेत हूणों का आधिपत्य स्थापित हो चुका था और उनकी राजधानी सम्भवतः बुखारा के समीप एक ऐसे स्थान पर स्थापित की थी, जहां पर एक प्राचीन नगर के बहुत से भग्नावशेष विद्यमान थे। रूसी विद्वानों को वहां जो अवशेष प्राप्त हुये उसमें एक विशाल भवन मिला जिसकी प्राचीर पर मनुष्यों और पशुओं के बहुत से चित्र अंकित हैं। श्वेत हूणों के केवल दो राजाओं के नाम भारत में उपलब्ध हुये जो उनके मुद्राओं तथा अभिलेखों द्वारा प्राप्त होते हैं। यह राजा तोरमाण और मिहिरकुल थे। भारत और ईरान की उन्नत सभ्यताओं के सम्पर्क में आकर श्वेत हूण भी सभ्य और सुसंस्कृत हो गये थे और अपने प्राचीन यायावरीय जीवन का परित्याग कर उन्होंने नगरों में निवास करना प्रारम्भ कर दिया, परन्तु अपने पूर्ववर्ती युइशियों, शकों आदि के समान वे दीर्घकाल पर्यन्त मध्य एशिया के क्षेत्र में शान्तिपूर्वक निवास कर सकने में असमर्थ रहें।

मध्य एशिया के सांस्कृतिक स्थान- ईस्वी सन् से तीन-चार शताब्दी पूर्व भारतीय आर्यों ने भी इस क्षेत्र में प्रवेश करना आरम्भ किया और वहां अपने अनेक उपनिवेश स्थापित किये। इनमें से कुछ उपनिवेश अत्यधिक समृद्ध और शक्तिशाली राज्य बन गये और जो भारतीय उनमें जाकर समृद्ध हुये थे उन्होंने वहां के प्राचीन निवासियों को भी अपने धर्म और संस्कृति के द्वारा प्रभावित कर लिया। परिणामस्वरूप मध्य-एशिया के इन उपनिवेशों व राज्यों के सभी निवासी भारतीय (बौद्ध) धर्म के अनुयायी हुये। लेखन के लिये वह भारतीय लिपियों का प्रयोग करने लगे। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं का वहां प्रचार हुआ और वहां की मूल भाषायें भी भारतीय भाषाओं से बहुत प्रभावित हुयीं। दसवीं शताब्दी के अन्त तक प्रायः 1200 वर्षों के सुदीर्घकाल में मध्य-एशिया के यह भारतीय उपनिवेश विशाल भारत के अंग रहे।

मध्य-एशिया के राजनीतिक इतिहास के परिज्ञान के सम्बन्ध में सम्प्रति तक अत्यल्प कार्य हुये हैं, इसलिये वहां के भारतीय उपनिवेशों की राजनीतिक व अन्य घटनाओं के बारे में उचित ढंग से चर्चा करना सम्भव नहीं है। उनके सम्बन्ध में ज्ञात करने के जो भी तथ्य उपलब्ध हैं, उनके स्रोत अग्रलिखित हैं- **प्राचीन 1.चीनी ग्रन्थ**- चीन की पश्चिमी सीमा मध्य एशिया के साथ लगती थी और वर्तमान समय में इस क्षेत्र का एक बड़ा भूभाग (सिंकियांग या चीनी तुर्किस्तान) चीन के अन्तर्गत भी है। चीन के पराक्रमी सम्राट् समय-समय पर मध्य एशिया के विविध राज्यों पर आक्रमण कर उन्हें अपने अधीन करने के लिये प्रयत्नशील रहें। इस कारण चीन के प्राचीन साहित्य में जहां पराक्रमशील चीनी राजाओं की विजय गाथाओं और साम्राज्य विस्तार का वर्णन

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

है, वहां स्वाभाविक रूप से मध्य-एशिया के विविध राज्यों के विषय में भी अनेक संकेत प्राप्त होते हैं। **2. तिब्बती अनुश्रुति**- तकला मकान मरुभूमि के दक्षिण में जो अनेक उपनिवेश थे, तिब्बत की उत्तरी सीमा उनके साथ लगती थी। इस कारण कुछ प्रतापी तिब्बती राजाओं ने भी उत्तर दिशा में बढ़ करके इन उपनिवेशों पर आक्रमण किया और इन्हें अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिये विवश कर दिया। अतः प्राचीन तिब्बती अनुश्रुति से भी तिब्बत के पार्श्वस्थ इन भारतीय उपनिवेशों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त होती हैं। **3. प्राचीन अवशेष**- मध्य-एशिया के विविध प्रदेशों में प्राचीनकाल में बहुत से बौद्धविहारों, चैत्यों, गुहा मन्दिरों तथा स्तूपों की सत्ता थी, जिनके भग्नावशेष इस समय भी हैं। यह प्रायः रेत के बड़े-बड़े या ढेरों के नीचे दबे पड़े हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक फ्रेंच, जर्मन, रूसी और अंग्रेज पुरातत्त्वविदों ने मध्य एशिया में अनुसन्धान कर उन्हें प्रकाश में लाने का महनीय प्रयत्न किया है। जिसके कारण इस क्षेत्र में भारतीय धर्म तथा संस्कृति की सत्ता के ठोस प्रमाण अब उपलब्ध हो गये हैं, परन्तु अभी इस क्षेत्र से ऐसे अनेक अभिलेख, मुद्रा व ग्रन्थ आदि प्राप्त हुये हैं, जिससे वहां के भारतीय उपनिवेशों का राजनीतिक इतिहास तैयार करने में सहायता प्राप्त हो सके, उनकी संख्या बहुत कम है। इसमें सन्देह नहीं कि मध्य-एशिया में बहुत से प्राचीन नगरों के खंडहर भी रेत के ढेर के नीचे दबे पड़े हैं। अभी उनके उत्खनन के कार्य समुचित रूप से सम्पन्न नहीं किये गये हैं।

तकला मकान मरुस्थल के उत्तर में भरूक, कुची, अग्निदेश, तकला-मकान के दक्षिण में यारकन्द, खोतन, चल्मद, वंक्षु और सीर नदियों के मध्यवर्ती मुग्ध देश में और मुग्ध के दक्षिण में बल्ख प्रदेश में भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित पुरातात्त्विक अवशेष, शिलालेख, मुद्रा, मूर्ति, पाण्डुलिपियां आदि प्राप्त होते हैं।

मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति और धर्म के केन्द्र के यह जनपद ही थे, जिनमें कि आर्य जाति की विविध शाखायें स्थायी रूप से स्थित थीं। समय-समय पर इन पर यायावर जातियों के आक्रमण होते रहे और वे इन्हें अपने आधिपत्य में लेते रहे।

मध्य एशिया के भारतीय उपनिवेशों में खोतन और कुची प्रधान थे। तकला-मकान के दक्षिण में स्थित भारतीय उपनिवेशों में खोतन सर्वाधिक शक्तिशाली और समृद्ध हुये और उत्तर में कुची समृद्ध हुये।

खोतन का राज्य (ताजिकिस्तान/ चीन) - खोतन की स्थापना के सम्बन्ध में तिब्बत और चीन के प्राचीन ग्रन्थों में अनेक कथायें प्राप्त होती हैं- बुद्ध कश्यप के समय में कुछ ऋषि खोतन देश में गयें और वहां के निवासियों ने उनके प्रति दुर्व्यवहार किया। इस कारण वह वहाँ से चले गये। इससे नागों को अत्यधिक कष्ट हुआ। उन्होंने सम्पूर्ण खोतन को एक झील के रूप में परिवर्तित कर दिया। जब बुद्ध शाक्य मुनि संसार में विद्यमान थे तो, वह भी खोतन आये उन्होंने खोतन की झील को प्रकाश की किरणों से आवृत्त कर लिया। इस प्रकार से 363 कमल पुष्प उत्पन्न हुये। प्रत्येक कमल के मध्य में एक-एक दीप प्रज्ज्वलित हो रहा था, समस्त कमल का प्रकाश एक स्थान पर एकत्र हो गया और इस प्रकाश ने झील के चारों ओर बाएं पार्श्व से दाएं पार्श्व की ओर तीन बार चक्कर लगायें। इसके बाद प्रकाश लुप्त हो गया। बुद्ध शाक्य मुनि ने इसी प्रकार से अन्य अनेक प्रयोग किया इसके प्रभाव से खोतन की झील शुष्क हो गयी और वह स्थान मनुष्यों के निवास योग्य बन गया।

राजा अजातशत्रु ने बत्तीस वर्ष शासन किया। उनके राज्याभिषेक के पांच वर्ष बाद महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण होता है। अजातशत्रु से धर्माशोक तक कुल दस राजा हुये। धर्माशोक ने चौवन वर्ष तक शासन किया। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 234 वर्ष पश्चात् भारत में धर्माशोक का राज्य था। यह राजा पहले अत्यन्त क्रूर और अत्याचारी था। उसने अर्हत् यश से बौद्ध धर्म की दीक्षा-ग्रहण की और भविष्य में कोई भी पापकर्म न करने का संकल्प लिया। इस समय तक खोतन की झील सूख चुकी थी पर वह देश अभी भी समृद्ध नहीं हुआ था।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

खोतान की संस्कृति चर्चा में खोतानी रामायण पर प्रकाश डालना अपेक्षित है। रामकथा की विश्वयात्रा में यह खोतान भी पहुॅंचती है।

खोतानी-रामायण- खोतान संस्कृति में ही खोतानी-रामायण विकसित हुआ, जिसकी रचना सम्भवतः नौवीं शताब्दी में हुयी है। इसकी भाषा खोतानी है। एच. डब्लू. बेली ने इसे पेरिस पाण्डुलिपि संग्रहालय से खोजकर प्रकाश में लाया। इसका साम्य तिब्बती-रामायण से है, किन्तु इसमें अनेक कथायें ऐसी भी हैं जो तिब्बती-रामायण में नहीं हैं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (INGCA) के वेबसाइट के अनुसार इस रामायण का संक्षिप्त कथानक इस प्रकार है-

"खोतानी-रामायण के अनुसार राजा दशरथ के प्रतापी पुत्र सहस्रबाहु वन में शिकार खेलने गये जहाँ उनकी भेंट एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण से हुयी। उन्होंने अपनी तपस्या से चिंतामणि और कामधेनु प्राप्त किया था। कामधेनु की कृपा से ब्राह्मण ने राजा का भव्य स्वागत किया। प्रस्थान करते समय राजा की आज्ञा से उनके अनुचर ब्राह्मण की गाय लेकर चले गये। इसकी जानकारी ब्राह्मण पुत्र परशुराम को हुयी। उसने सहस्रबाहु का वध कर दिया। परशुराम के भय से सहस्रबाहु की पत्नी ने अपने पुत्र राम और रैषमा (लक्ष्मण) को पृथ्वी के अन्दर छुपा दिया। बारह वर्षों के बाद दोनों बाहर आयें। राम अद्वितीय धनुर्धर थे उन्होंने अपने अनुज रैषमा को राज्य संभालने के लिये कहा और स्वयं अपने पिता के हत्यारे परशुराम को ढूंढ कर वध कर दिया। दानवराज दशग्रीव को एक पुत्री हुयी। भविष्यवक्ताओं ने अब उसकी कुण्डली देखकर कहा कि वह अपने पिता के साथ समस्त दानव कुल के नाश का कारण बनेगी। इसलिये उसे बक्से में बंद कर नदी में बहा दिया गया। वह बक्सा एक ऋषि को मिला उन्होंने इसका पालन-पोषण किया। वह रक्षा वलय के बीच एक वाटिका में रहती थी। राम और रैषमा उसे देखकर मोहित हो गये। खोतानी-रामायण में यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि राम और रैषम का उसके साथ कैसा सम्बन्ध था।

खोतानी-रामायण के अनुसार चमत्कारी मृग की सौ आंखें थीं। राम और रैषमा ने उसका पीछा किया। इसी अन्तराल में दशग्रीव वहाँ पहुॅंचा, किन्तु वह रक्षावलय को पार नहीं कर सका। इसके बाद वह भिक्षुक वेश में सीता के पास गया और रक्षावलय के बाहर आने पर उन्हें उठाकर भाग गया। सीता अन्वेषण क्रम में दोनों भाइयों की भेंट एक बूढ़े बंदर से हुयी। उसी स्थल पर दो सहोदर बंदर पैतृक राज्य के लिये युद्धरत थे। उनमें से एक का नाम सुग्रीव दूसरे का नाम नंद था। राम की नंद से मैत्री हो गयी। उन्होंने सुग्रीव का वध कर दिया। नंद ने यह कहकर बंदरों को सीता की खोज करने के लिये भेजा कि यदि वह सात दिनों में सीता की खोज नहीं कर पायें तो उनकी आंखें निकाल दी जायेंगी। छः दिन बीत गये। सातवें दिन लफुस नामक एक बंदरी ने मादा काक और उसके बच्चों की बात को सुन लिया। मादा काक अपने बच्चों से कह रही थी कि दशग्रीव ने सीता का अपहरण कर लिया है। बंदर उन्हें खोज नहीं पायेंगे। इसलिये कल्ह उन्हें बंदरों की आंख खाने का सुयोग है। बंदरी के माध्यम से यह समाचार बंदरों को मिला। फिर यह संदेश राम और रैषमा को दिया गया।

राम और रैषमा वानरी सेना के साथ समुद्र तट पर गये। वहाँ पर पहुॅंचने पर नंद ने कहा ब्रह्मा के वरदान के कारण उसके द्वारा स्पर्श करने पर पत्थर जल में तैरने लगते हैं। फिर नंद के सहयोग से सेतु का निर्माण हुआ और सेना सहित राम और रैषमा लंका पहुॅंचे।

बंदरों के कोलाहल से दशग्रीव उत्तेजित हो गया। वह उड़कर आकाश में चला गया और समुद्र से एक विषधर सांप को पकड़ कर उसी से वानरी सेना पर प्रहार किया। नागास्त्र से राम आहत हो गये। नंद अमृत-संजीवनी लाने के क्रम में हिमवंत पर्वत की को ही उखाड़कर ले आया। औषधि के प्रयोग से राम स्वस्थ हो गये।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

रावण की जन्म कुंडली देखने पर पता चला कि उसकी जीवनी उसके अंगूठे में है। राम ने उसे अंगूठा दिखाने के लिये कहा। उसने जैसे ही अंगूठा दिखाया, राम ने उसे पर बाण से प्रहार कर मूर्च्छित कर दिया। आत्मसमर्पण करने के बाद उसे मुक्त कर दिया गया। बौद्ध प्रभाव के कारण उसका वध नहीं किया गया। राम और रैषमा ने सीता के साथ सौ वर्ष बिताया। इसी बीच लोकापवाद के कारण सीता धरती में प्रवेश कर गयीं। अन्त में शाक्य मुनि कहते हैं कि इस कथानक के नायक राम स्वयं वे थे और मैत्रेय रैषमा था।"

धर्मसम्राट् करपात्री जी ने अपने ग्रन्थ "रामायण-मीमांसा" में खोतानी रामायण पर अपनी टिप्पणी इस प्रकार दी है-

"खोतानी (पूर्वी तुर्किस्तान) की उक्त रामायण 9वीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। यह तिब्बती रामायण से मिलती है। फिर भी दोनों में से कोई एक दूसरे का आधार नहीं है।

तिब्बती रामायण का उत्तरकाण्ड खोतानी रामायण में नहीं मिलता। अन्य कई वृत्तान्त खोतानी रामायण में मिलते हैं जिनका अस्तित्व तिब्बती-रामायण में नहीं है। दोनों में निम्नोक्त तुल्यता है-

(1) राम और लक्ष्मण केवल दो भाइयों का उल्लेख।

(2)सीता (दशग्रीव-पुत्री) की जन्म-कथा।

(3)वनवास के समय सीता के विवाह का वृत्तान्त।

(4)रावण द्वारा जटायु को रक्त मिश्रित पाषाण भक्षण कराना।

(5) द्वन्द्व युद्ध के समय वानर विजेता की पूंछ में दर्पण बांधे जाने की कथा।

(6) रावण के मर्म स्थान का उल्लेख।

इसमें बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट है।

(1) खोतानी रामायण में अवतारवाद का उल्लेख न होकर राम का बुद्ध तथा लक्ष्मण का मैत्रेय होना कहा गया है।

(2) यहां आहत रावण का वध नहीं किया जाता है।

(3) इसमें रावण के बाद अर्जुन कार्तवीर्य सहस्रबाहु तथा परशुराम की कथा मिलती है। (4) इसमें दाशरथि राम और परशुराम का मिश्रण है।

(5) इसमें दशरथ पुत्र सहस्रबाहु, परशुराम के पिता की धेनु चुराता है जिसके कारण परशुराम सहस्रबाहु को मारते हैं सहस्रबाहु के राम और लक्ष्मण दो पुत्र होते हैं। राम परशुराम का वध करते हैं।

(6) राम और लक्ष्मण दोनों वनवास करते हैं। निर्वासन का कारण निर्दिष्ट नहीं है। दोनों सीता से विवाह करते हैं। सीताहरण वृत्तान्त में रेखा खींची जाने का उल्लेख है। सेतुबन्ध आदि की कथायें भी इसमें हैं। वस्तुतः भारतीय संस्कृति और संस्कृत ग्रन्थों का ज्ञान उक्त ग्रन्थकर को नहीं था, इसलिये उसने खोतानी रामायण में अशुद्ध कथाओं का संकलन किया है। दशरथ का पुत्र सहस्रबाहु, सहस्रबाहु के पुत्र राम और लक्ष्मण को बताना सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण ही है। वैदिक धर्म-विरोधी बौद्धों में भाई-बहन में शादी एवं एक स्त्री का अनेक पुरुष-सम्बन्ध दोष नहीं माना जाता। इसलिये लेखक ने बौद्ध रामायणों में सीता को राम की भगिनी मानकर भी विवाह सम्बन्ध माना है। खोतानी में उसी प्रभाव के कारण राम और लक्ष्मण दोनों का ही सीता से विवाह मान लिया है। वस्तुतः वैदिक राम के चरित्र का विकृत रूप ही यह कथा है।

कुची का राज्य (चीन)- तकला-मकान मरुस्थल के दक्षिण में जो स्थिति खोतान की थी, उसके उत्तर में वही स्थिति कुची की थी। थियानसान पर्वतमाला और तकला-मकान मरुभूमि के बीच की तारीम नदी द्वारा सिंचित प्रदेश में यह राज्य विद्यमान् था और इस क्षेत्र के विविध राज्यों में यह अत्यधिक शक्तिशाली और समृद्ध था। वाराहमिहिर ने बृहत्संहिता में शक, पह्लव, शूलिक और चीन आदि के साथ 'कुशिक' का भी उल्लेख किया है। वाराहमिहिर को कुशिक से 'कुची' ही अभिप्रेत था। यह अनुमान कर सकना अत्यन्त कठिन नहीं है कि

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अशोकावदान के चीनी अनुवाद में कुचा या कुची को अशोक के राज्य के अन्तर्गत लिखा गया है, परन्तु यह सम्भव प्रतीत नहीं होता है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि अशोक के समय में विदेश में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ हो। कुची से भारतीय धर्म और सभ्यता के मूर्त अवशेष प्राप्त हुये हैं। 184 से 224 ईस्वी पर्यन्त का कुची का इतिहास अज्ञात है। इस काल के मध्य-एशिया के राज्यों के इतिहास में चीनी ग्रन्थों से कोई विवरण नहीं प्राप्त होता है। परन्तु यह अत्यन्त विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि एक समय में कुची एक अत्यन्त शक्तिशाली और समृद्ध राज्य था।

कुची बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा। 751 ई. में चीन के सम्राट् द्वारा एक समूह भारत भेजा गया जिसका नेतृत्व चू कोंग ने किया। उसे बौद्ध धर्म के प्रामाणिक ग्रन्थों को प्राप्त करने और भारत के सम्बन्ध में आवश्यक तथ्य प्राप्त करने का कार्य सौंपा गया था। भारत से वापसी यात्रा में यह समूह काशगर होता हुआ 788 ई. में कुची पहुंचा। उन दिनों कुची के पश्चिमी द्वार के बाहर एक विशाल संघाराम था, जिसे 'उत्पल विहार' कहते थे। इस विहार में ऊ-ति-ति-सि-यू (उत्पलशक्ति) नाम के एक महान् बौद्ध विद्वान् निवास करते थे। उन्हें चीनी और भारतीय भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था। वू कोंग ने आचार्य उत्पलशक्ति से 'दशबलसूत्र' ग्रन्थ का चीनी भाषा में अनुवाद करने की विनती की। वू कोंग की विनती को स्वीकार कर आचार्य उत्पलशक्ति ने दशबलसूत्र का जो अनुवाद किया वह कोरिया के बौद्ध त्रिपिटक का अंग है और उसके कुछ अंश तुङ्ह्वांग के गुहाविहारों से प्राप्त हैं, जिनमें से कुछ को फ्रेंच विद्वान् पेलिओ ने प्राप्त किया और कुछ को सर स्टाइन ने प्राप्त किया।

उज्बेकिस्तान में ब्राह्मी हस्तलेख- इस विषय पर साइमंड्स के लेख प्राप्त होते हैं जिसका अनुवाद इस रूप में देखा जा सकता है- सोवियत समाजवादी संघ (USSR) में प्राचीन भारतीय लिपि का प्रथम प्रमाण उज़्बेकिस्तान के पुरातत्त्वविदों को 1936 ई.में प्राचीन खरोष्ठी के क्षेत्र में उत्खनन करते समय प्राप्त हुआ था। वहां उत्खनन करते समय चूना-पत्थर का एक छोटा टुकड़ा मिला जिस पर खरोष्ठी में एक लघु लेख उत्कीर्ण था। पुरातत्त्व विभाग के अन्वेषक समूहों के मुख्य प्रो. एम. वाई. मैशियन के अनुसार 2000 वर्ष प्राचीन यह अवशेष कुषाण काल का है।

उज्बेकिस्तान के प्राचीन नगर ख्वारिज्म (खींवा) के समीप तोप्राक-कला नामक स्थान में जो उत्खनन 1948 ई. में किया गया था, उसमें पर्याप्त वैज्ञानिक महत्त्व के अभिलेख प्राप्त हुये हैं। इनमें 100 अभिलेख भारतीय लिपि में थे, जिनमें से 18 काष्ठफलक पर उत्कीर्ण थे और शेष चमड़े पर उत्कीर्ण थे। तृतीय चतुर्थ शताब्दी के इन अभिलेखों में उन लोगों के नाम दिये गये हैं जिन पर शुल्क तथा कर लगाये गये। प्रसिद्ध सोवियत वैज्ञानिक श्री एस.पी. तलास्तोव का कथन है कि अभिलेखों में जिन तथ्यों और घटनाओं का वर्णन किया गया है उनके आधार पर यह भारत में शकों के समय के हैं ।

ग्यौर-काल की बस्ती में 1960 ई. के आरम्भ में जो उत्खनन हुआ था उसमें पुरातत्त्वविदों को एक बौद्ध स्तूप में मिट्टी का पात्र मिला उस पर आखेट दृश्य, प्रीतिभोज, किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर शोक के दृश्य उत्कीर्ण हैं। पात्र के भीतर एक अभिलेख के छोटे-छोटे टुकड़े मिलते हैं जिनमें एकेडेमीशियन मैशियन के अनुसार भारत की लिखित भाषा के अक्षर बने हुये हैं। 1961 ई. में तिरमेज़ (Termiz) से लगभग 30 किलोमीटर दूरी पर एक प्राचीन किले जंग-तेपे में उत्खनन करते समय उज्बेकी पुरातत्त्वविदों को लगभग 3 मीटर की गहराई पर अनेक भोजपत्र प्राप्त हुयें जिन पर अक्षर उत्कीर्ण हैं। बाद में ज्ञात होता है कि भोजपत्र की पतली परतों को मिलाकर एक छोटी पट्टी बना ली जाती थी जिस पर दोनों ओर अक्षर बनाये जाते थे। जंग-तेपे के लेख ब्राह्मी का मध्य एशिया रूप सिद्ध हैं उनकी वक्र लेखन शैली खोतान की संस्कृत लेखन शैली से अत्यन्त साम्य रखती है।

जंग-तेपे में कुल मिलाकर छ: अभिलेख प्राप्त हुयें जिनमें से एक पर सत्रह पंक्तियां अत्यन्त उत्तम दशा में थीं। इन पंक्तियों का मूल पाठ संस्कृत में मध्य-एशिया की ब्राह्मी-लिपि में खड़ी शैली में लिखित हैं और यह

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अभिलेख ईसा की सातवीं शताब्दी के अन्त तथा आठवीं शताब्दी के प्रारम्भ के मध्य के समय का है। भारतीय विद्याविदों के अनुसार यह मूल पाठ बौद्ध-ग्रन्थ 'विनयपिटक' का एक अंश है, जिसमें बौद्ध भिक्षुओं के लिये आचरण के नियम बताये गये हैं। जंग-तेपे में जो अभिलेख मिले हैं वे सम्भवतः किसी बौद्ध पुरोहित अथवा बौद्ध धर्म प्रचारक भिक्षु के थे जो मध्य-एशिया में बौद्ध-धर्म का प्रचार करने आया था।

मध्य एशिया से प्राप्त कतिपय महत्त्वपूर्ण संस्कृत एवं पालि-प्राकृत ग्रन्थ-

मध्य एशिया के विविध प्रदेशों में से जो कुछ जो बहुत से भारतीय ग्रन्थ उपलब्ध हुये हैं, उनमें से कुछ का विवरण यहाँ देना उपयोगी होगा-

(1)बावर मैन्युस्क्रिप्ट- यह ग्रन्थ भोजपत्रों पर लिखित हैं और यह कुची के समीप एक प्राचीन स्तूप से दो तुर्कों को प्राप्त था और उन्होंने इसे कर्नल बावर को विक्रय कर दिया था (1890 ई.)। इसके सात भाग हैं या यह कहा जा सकता है कि यह सात लघु पुस्तिकाओं का संग्रह है। पहली तीन पुस्तिकाओं का सम्बन्ध चिकित्साशास्त्र के साथ है जिनमें से एक का नाम 'नावनीतक' है। प्राचीन भारत में चिकित्साशास्त्र उन्नत दशा में था और अनेक विद्वानों ने इस विषय पर ग्रन्थ की रचना की थी। नावनीतक चिकित्साशास्त्र-विषयक प्राचीन ग्रन्थों के नवनीत (मक्खन) या सार के रूप में है और उसमें अग्निवेश, भेद, हारीत, जातुकर्ण, क्षारपाणि, पराशर और सुश्रुत जैसे प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों से उद्धरण दिये गये हैं। चिकित्सा के लिये विविध प्रकार के चूर्णों, तैलों, भस्मों आदि का किस प्रकार निर्माण किया जायें, इसकी प्रक्रिया नावनीतक में उल्लिखित है। चिकित्सा-विषयक एक पुस्तिका में लहसुन के गुणों का तथा विविध रोगों की चिकित्सा के लिये उसके उपयोग का वर्णन है। इसमें यह भी उद्धृत है कि लहसुन के समुचित ढंग से प्रयोग द्वारा मनुष्य शत वर्ष तक जीवित रह सकता है। पाचन शक्ति को किस प्रकार ठीक रखा जाये, इस विषय को भी एक पुस्तिका में प्रतिपादित किया गया है और उसमें ऐसे अनेक प्रयोग भी दिये गये हैं। जिसे मनुष्य अपनी आयु में 1000 वर्षों तक वृद्धि कर सकता है। बावर मैन्युस्क्रिप्ट सर्पदंश की दो पुस्तिकाओं में सर्वप्रथम की चिकित्सा दी गयी है। इसके लिये उसमें तन्त्र-मन्त्र का वर्णन है, जिससे सर्प के दंश का उपचार किया जा सकता है। इस तन्त्र मन्त्र का ज्ञान किस प्रकार हुआ, इस सम्बन्ध में इन पुस्तिकाओं में कथा भी उद्धृत है। बावर मैन्युस्क्रिप्ट की चिकित्सा सम्बन्धी यह पुस्तिकायें इस विज्ञान की संस्कृत ग्रन्थों में सबसे प्राचीन है, जो हस्तलिखित रूप में प्राप्त हुयीं हैं। उनकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है। ये पुस्तिकायें पद्य में हैं और इनका काल ईसा की चतुर्थ शताब्दी में माना जाता है।

(2) धम्मपद- खोतान के समीप गोश्रृंग विहार के भग्नावशेषों से धम्मपद की जो हस्तलिखित प्रति सन् 1892 में फ्रेंच विद्वान् दुत्रइल द रहां को प्राप्त हुयी। यह ग्रन्थ खरोष्ठी लिपि में है और इसकी भाषा प्राकृत है। यह भी भोजपत्रों पर लिखा हुआ है और विद्वानों ने इसे प्रथम और द्वितीय शताब्दी में लिखा हुआ माना है। खरोष्ठी लिपि का सबसे प्राचीन ग्रन्थ अब तक कोई प्राप्त नहीं है, परन्तु इसकी सबसे मुख्य विशेषता इसकी भाषा है। भारत में प्राचीन काल में अनेक प्राकृत भाषायें प्रचलित थी, परन्तु इसकी प्रकृति उन सबसे भिन्न है। उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रान्त की बोलियों की अनेक बातें इसमें विद्यमान हैं, परन्तु इस ग्रन्थ की प्राकृत में कतिपय अनेक विशेषतायें भी हैं जो भारत की किसी भी प्राचीन या आधुनिक भाषा या बोली में नहीं प्राप्त होती हैं। प्रो. कोनो ने प्रतिपादित किया है कि यह विशेषतायें उन भाषा के प्रभाव की परिणाम है जो प्राचीन काल में दक्षिण-पूर्वी तुर्किस्तान में बोली जाती थी।

(3)अश्वघोष के नाटक- बौद्ध धर्म के इतिहास में अश्वघोष का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वह अत्यधिक प्रतिभा सम्पन्न विद्वान् थे। उनका जन्म एक सुशिक्षित ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्होंने सनातन हिन्दू धर्म के शास्त्रों तथा साहित्य का गम्भीर रूप से अध्ययन किया था, परन्तु बाद में वे बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय के अनुयायी हो गये और कुछ समय पश्चात् महायान सम्प्रदाय के अनुयायी हुये। उनकी गणना महायान के प्रसिद्ध विद्वानों में की जाती है और उन्होंने उसके दार्शनिक सिद्धान्तों का निरूपण करने के लिये

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनेक ग्रन्थों की रचना की थी। अश्वघोष केवल दार्शनिक ही थे अपितु कवि भी थे। उनके द्वारा रचित काव्य को संस्कृत साहित्य में आदर की दृष्टि से देखा जाता है, परन्तु वह नाटककार भी थे इसका परिज्ञान उन नाटकों द्वारा ही हुआ है, जो मध्य एशिया से उपलब्ध हुये थे। जर्मन विद्वानों की मण्डली ने तुर्फान के क्षेत्र से जो हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त किये उनमें अश्वघोष द्वारा लिखित एक नाटक का अन्तिम अंक भी था, इनका नाम 'शारिपुत्रप्रकरण' और 'शारद्वतीपुत्रप्रकरण' है और नाटक के अन्त में इसे सुवर्णाक्षी के पुत्र अश्वघोष द्वारा रचित बताया गया है। अश्वघोष के प्रसिद्ध काव्य 'सौन्दरानन्द महाकाव्य' में भी उसके लेखक का नाम सुवर्णाक्षी-पुत्र अश्वघोष कहा गया है। इससे यह निःसन्देह रूप से माना जा सकता है कि शारिपुत्रप्रकरण नाटक का रचयिता भी वही अश्वघोष था जो महायान सम्प्रदाय का प्रसिद्ध आचार्य था। तुर्फान से उपलब्ध शारिपुत्रप्रकरण नाटक ताड़पत्रों पर लिखा हुआ है। उसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है। ब्राह्मी लिपि के जिस रूप में वह नाटक लिखा गया है वह भारत में कुषाऊ युग में प्रचलित थी।

(4) उदानवर्ग- बौद्ध धर्म के सर्वास्तिवादी की सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ उदानवर्ग है, जिसका इस सम्प्रदाय के धार्मिक साहित्य में वही स्थान है, जो कि थेरवाद के साहित्य में धम्मपद का है। पहले यह ग्रन्थ मात्र चीनी और तिब्बती भाषाओं में ही उपलब्ध था। परन्तु अब मध्य एशिया के भग्नावेशेषों में इसका मूल संस्कृत के रूप भी प्राप्त होता है। जर्मन विद्वानों की मण्डली द्वारा जो बहुत से हस्तलिखित ग्रन्थ मध्य एशिया से प्राप्त थे, उनमें एक उदानवर्ग भी था। इसकी भाषा संस्कृत है और लिपि ब्राह्मी। यह जिस रूप की ब्राह्मी लिपि में लिखा गया है, वह सातवीं शताब्दी ईस्वी में कुची के प्रदेश में प्रचलित थी। पेलियो के नेतृत्व में फ्रांस के विद्वानों की जो मण्डली मध्य एशिया में अनुसन्धान के लिये गयी थी, उस द्वारा भी उदान वर्ग की हस्तलिखित प्रतियों के अनेक अंश प्राप्त किये गये थे। इनमें से एक प्रति तुङ्-ह्वांग् से प्राप्त हुयी थी, जिसकी लिपि अश्वघोष के नाटकों की लिपि से मिलती-जुलती है।

(5) कल्पनामण्डितिका- जर्मन विद्वानों की जी मण्डली ने तुर्फान के प्रदेश से अश्वघोष के नाटकों के कतिपय अंश प्राप्त किये थे, उसी के द्वारा कल्पनामण्डितिका नाम के एक अन्य ग्रन्थ की भी हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुयी थी। इसका लेखक कुमारलात नामक विद्वान् है, जिसका उल्लेख ह्यु एन-त्सांग के यात्रा विवरण में प्राप्त होता है। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वानों का वर्णन करते हुये ह्यु एन-त्सांग ने लिखा कि विश्व को आलोकित करने वाले चार महान् आचार्य हुये, पूर्व में अश्वघोष, पश्चिम में नागार्जुन, दक्षिण में देव और उत्तर में कुमारलात। कुमारलात तक्षशिला के निवासी थे और उनके द्वारा बौद्ध धर्म के चार मुख्य दार्शनिक सम्प्रदायों में सौत्रान्तिक सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया गया था। उनका प्रधान कार्यक्षेत्र मध्य एशिया में था और चीन की बौद्ध अनुश्रुति में उनकी गणना बौद्ध धर्म के महान् गुरुओं में की गयी है। उनके काल के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है, परन्तु यह सब स्वीकार करते हैं कि वह कनिष्क तथा अश्वघोष के यदि समकालीन नहीं थे, तो उनका समय इनके काल के समीप ही था। प्रायः विद्वानों ने द्वितीय में इनके समय को स्वीकार किया है। कुमारलात द्वारा विरचित कल्पनामण्डितिका की जो प्रति मध्य एशिया से उपलब्ध हुयी है, वह ताड़पत्रों (Plam leaf)पर लिखी हुयी है। उसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है।

(6) ब्राह्मी लिपि में लिखित अन्य ग्रन्थ- मध्य एशिया के विविध प्रदेशों से ब्राह्मी लिपि में लिखे हुये जो अन्य संस्कृत ग्रन्थ प्राप्त हुये हैं, उनमें भिक्षुणी-प्रतिमोक्षसूत्र, भिक्षुणी-विभंग और भी भिक्षुप्रतिमोक्ष विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनकी हस्तलिखित प्रतियों के अनेक अंश जर्मन, फ्रेंच और इंग्लिश विद्वानों की मण्डलियों को प्राप्त हुये थे। इनकी भाषा यद्यपि संस्कृत है, पर उसे व्याकरण की दृष्टि से पूर्णतया शुद्ध नहीं कहा जा सकता। पाणिनि के व्याकरण में संस्कृत भाषा के लिये जिन नियमों का प्रयोग किया जाता है, इसमें उनका स्थान-स्थान पर अतिक्रमण हुआ है। इनकी लिपि ब्राह्मी है, परन्तु इसकी शैली ऐसी है, जो तकला मकान के उत्तरी प्रदेश में प्राचीन काल में प्रचलित थी।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

ब्राह्मी लिपि की विविध शैलियां- मध्य एशिया में उपलब्ध जिन संस्कृत ग्रन्थों की लिपि ब्राह्मी है, उन पर इस प्रकरण में उल्लेख मिलता है कि ब्राह्मी लिपि भारत में कुषाण और गुप्त कालों में प्रचलित थी, बावर मैन्युस्क्रिप्ट तथा अश्वघोष के नाटक आदि उसी में रचित हुये थें, परन्तु मध्य एशिया में इन लिपि के दो मुख्य भेद व शैलियां भी पृथक् रूप से विकसित हो गयीं थीं और उन्हें भी संस्कृत के ग्रन्थों को लिखने के लिये प्रयुक्त किया जाता था। तकला मकान मरुस्थल के उत्तरी प्रदेशों में प्राचीन काल में एक भाषा का विकास हुआ था जिसे जर्मन विद्वानों ने तुखारी और फ्रेंच विद्वानों ने कुचियन नाम दिया है। इस भाषा की अनेक शाखायें थीं, जो तुर्फान आदि विविध प्रदेशों में बोली जाती थीं। इसी प्रकार तकला मकान मरुस्थल के दक्षिणी प्रदेशों में एक अन्य भाषा प्रचलित थी जिसे विविध विद्वानों ने शक, पूर्वी ईरानी और खोतानी आदि नामों से लिखा है। यह पुरानी भाषायें अब लुप्त हो चुकी हैं, यद्यपि अनेक विद्वान् इनका परिचय प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील हैं। इन कुचियन और खोतानी भाषाओं को अपनी-अपनी पृथक् लिपियां भी विद्यमान् थीं, जो गुप्त युग की ब्राह्मी लिपि से ही विकसित हुयी थीं। यह स्वाभाविक था कि इन प्रदेशों के निवासी संस्कृत ग्रन्थों को लिखते हुये इन लिपियों का प्रयोग करें। यही कारण है कि अनेक प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ इन लिपियों में लिखे हुये प्राप्त होते हैं।

इस प्रसंग में ध्यातव्य है कि मध्य एशिया के क्षेत्र में से जो विविध ग्रन्थ व लेख आदि उपलब्ध हुये हैं, वह केवल संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में ही नहीं हैं, चीनी, तिब्बती, कुचियन, खोतानी आदि भाषाओं के भी बहुत से हस्तलिखित ग्रन्थ और लेख इस क्षेत्र में प्राप्त होते हैं। मध्य एशिया के निवासी प्राचीन समय में वैदिक एवं बौद्ध धर्म के अनुयायी थे, अतः वहाँ से संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के ग्रन्थों का प्राप्त होना तो स्वाभाविक ही था। परन्तु राजकीय तथा कानूनी कार्यों और जनता के सामान्य व्यवहार के साथ सम्बन्ध रखने वाले लेखों का भी भारतीय भाषा और लिपि में प्राप्त होना इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन समय में मध्य एशिया के विविध प्रदेशों पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अतुलनीय प्रभाव था।

इस क्षेत्र में केवल बौद्ध धर्म का ही प्रचार नहीं था वहाँ के कुछ निवासी सनातन हिन्दू धर्म के भी अनुयायी थे, यह उन मुद्राओं से प्रमाणित होती है जिन पर कुबेर और त्रिमुख की प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं। ऐसी मुद्रायें नीया के भग्नावेशेषों से उपलब्ध होती हैं। आन्देरे नामक स्थान पर चित्रित हुयी गणेश की एक प्रतिमा भी प्राप्त होती है।

(7) पंचतन्त्र- इस प्रसंग में ध्यातव्य है कि संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध कथा ग्रन्थ पंचतंत्र का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। इस क्रम में इसका सर्वप्रथम अनुवाद सन् 570 ईस्वी में सासानी वंश के सम्राट् खुसरो अनोशेखां (540 से 600) के मन्त्री बुजुर्ग मेहर ने इसका अनुवाद हकीम बरजवै से पहलवी (मध्यकालीन फारसी) में कराया, जो अनुपलब्ध है, किन्तु इसके आधार पर अब्दुल्लाह इब्न अल मुकफ्फा ने अरबी अनुवाद किया जो परवर्ती अनुवादों का आधार बना। इस क्रम में मध्य एशिया में इस ग्रन्थ के अनेक फ़ारसी अनुवाद हुये। ध्यातव्य है कि इसी परम्परा में पंचतंत्र का एक फ़ारसी अनुवाद 970 ईस्वी में उज्बेकिस्तान के प्रसिद्ध कवि रूद्रकी समरकन्दी[27] ने 'कलीला दिम्ना' के नाम से पद्य में किया।

उपसंहार- इस प्रकार हम निष्कर्षत: कह सकते हैं कि एक समय मध्य एशिया प्राचीन भारतीय संस्कृति का भव्य केन्द्र रहा है। जहाँ से हमें अनेक पुरातात्त्विक सामग्री, महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्राप्त हुये हैं। मध्य एशिया के महत्त्वपूर्ण राष्ट्र उज़्बेकिस्तान में भी भारतीय-सभ्यता संस्कृति के पर्याप्त अवशेष प्राप्त होते हैं। आज भी उज़्बेकिस्तान, भारत एवं यूरोप के संग्रहालयों, पुस्तकालयों में उपलब्ध सामग्री भारत एवं उज़्बेकिस्तान के प्राचीन सुदृढ़ सांस्कृतिक सम्बन्धों की पुष्टि करते हैं।

[27] अबू अब्दुल्ला जाफर इब्न ए मुहम्मद रूदकी (858-941 ई.)

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

सहायक ग्रन्थसूची-

1.रामायण-मीमांसा, लेखक- स्वामी करपात्री जी महाराज, प्रकाशक- राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, रमण रेती, वृन्दावन (मथुरा), उत्तर प्रदेश, भारत, अष्टम् संस्करण, मार्च 2019

2. मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय संस्कृति, लेखक- सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रकाशन- श्री सरस्वती सदन, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974 ई.

3. मध्य एशिया का इतिहास, लेखक- राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशन- बिहार राष्ट्रभाषा प्रकाशन, पटना, वर्ष 1956 ई. (प्र. सं.), 1985 ई. (द्वि. सं.)।

4.बौद्ध सम्बन्ध, लेखक- राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशन- आधुनिक पुस्तक भवन, कलकत्ता।

5.India and Central Asia, Prabodh Chandra Bagchi and Hemchandra Basu Malik, National Council Of Education, Bengal, Calcutta, 32, 1955.

6. Ancient Khotam, Sir Aurel Stein, Oxford at the Clarendon Press, 1907.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में हिंदी : दशा और दिशा

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765056

डॉ. विजय पाटिल (वरिष्ठ शिक्षक)
उ.मा.वि गवाड़ी जिला बड़वानी मप्र

प्रस्तावना:_ उज्बेकिस्तान में 1940 से 1960 के मध्य हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद कृष्णचंद्र,मोहम्मद इकबाल,मिर्ज़ा ग़ालिब अली सरदार, जाफरी अमृता प्रीतम की रचनाएं प्रकाशित की गई ।वर्ष 1960 से 1980 के मध्य 25 भारतीय लेखको की रचनाओं का अनुवाद उज्बेकी में किया जा चुका था। प्रसिद्ध उज़्बेक कवि गफ़ूर गुलाम हमीद गुलाम,असद मुख्तार,हामिद अलीम जान,मिर्तेमीर, शाहिद जूनूनोवा, जैसे कई साहित्यकारों ने भारत के साहित्य पर कविता लेख निबंध रेखाचित्र लिखे। गफूर गुलाम ने रविंद्र नाथ टैगोर, प्रेमचंद, कृष्ण चंद्रर पर निबंध उनकी कविता का अनुवाद किया।उज्बेकिस्तान में हिंदी साहित्य का अध्ययन का प्रारंभ 1947 से माना जाता है। हिंदी साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन के इतिहास से संबंधित लेखकों की रचनाओं पर यहां काम किया गया है, जैसे हजारी प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद के लेखन पर। भारतीय साहित्य केवल एक राष्ट्र की संपत्ति ही नहीं अपितु समस्त विश्व की अमूल्य धरोहर है। उज़्बेक विद्वानों के शोध पर कार्यों में समकालीन भारतीय साहित्य के प्रसिद्ध मोहम्मद इकबाल, केदारनाथ सिंह मुक्तिबोध ,सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की जीवनी रचनाओं को महत्व दिया जाकर दक्षिण एशियाई भाषा के विभाग साहित्य प्रोग्राम में शामिल किया गया।उज्बेकिस्तान में हिंदी को भी खूब पढ़ाया जा रहा है, अनुवाद क्षेत्र में खूब विकास हुआ है। हिंदुस्तानी जर्नलिज्म को पढ़ाया जा रहा है, हिंदी में पीएचडी की जा रही है, शोध छात्र-छात्रा की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। अधिकतर हिंदी साहित्य के इतिहास पर शोध किया जा रहा है। उज़्बेकिस्तान गणराज्य के रूप में स्थापित है, यह 31 अगस्त 1991 को आजाद हुआ देश है ,यह मध्य एशिया में एक स्थल रूद्ध देश है, दुनिया के 42 वे क्रम पर सबसे बड़ी आबादी वाला देश है,भूमि क्षेत्रफल में विश्व का 56 वा सबसे बड़ा देश है। जलवायु महाद्वीपीय पाई जाती है, उज़्बेकिस्तान की साक्षरता दर 99.9 है। यह मध्य एशियाई देश है,जिसकी राजधानी ताशकंद है।यहां पर तीन उज़्बेकिस्तान शैक्षणिक संस्थान है जो प्राथमिक से स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी भाषा के अध्ययन को बढ़ावा देते हैं। भारत और उज्बेकिस्तान के संबंध 2000 साल पुराने हैं, उज़्बेकिस्तान 1993 से आईटीइसी के तहत उम्मीदवारों को भारत भेज रहा है, आईसीसीआर और हिंदी संस्थान के छात्र-छात्राओं को आईसीसी और केंद्रीय हिंदी संस्थान छात्रवृत्ति का लाभ भी मिलता है। समरकंद राज्य में एक विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन केंद्र की स्थापना की है। जिसका नेतृत्व भारत के

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

एक वरिष्ठ प्राध्यापक करते हैं, पूरे देश में भारतीय हिंदी फिल्में, अभिनेता, गाने लोकप्रिय है। लाल बहादुर शास्त्री सांस्कृतिक केंद्र पूरे देश में सांस्कृतिक आयोजन करता है और हिंदी योग कथा तबला सिखाता है। ताशकंद में कई स्कूल विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है, उज्बेकिस्तान में दूतावास और भारतीय संस्कृति केंद्र द्वारा 100 से अधिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके भारत की आजादी का अमृत महोत्सव भी मनाया गया है। ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ओरिएंटल स्टडीज में एक इंडिया रूम खोला गया है, जिसमें आईटी उपकरण लगाए गए हैं इन कमरों में भारत सरकार की सहायता से हिंदी साहित्य संगीत वाद्य यंत्र पोशाके कलाकृतियां रखी गई है।

भारत और उज़्बेकिस्तान के सांस्कृतिक सम्बध:_भारत के उज्बेकिस्तान के साथ सांस्कृतिक संबंध रहे हैं, उज्बेकिस्तान में फरगना, समरकंद बुखारा, व्यापार के प्रमुख मार्ग थे ।आजादी के समय यह क्षेत्र भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का केंद्र हुआ करता था,दोनों के बीच सांस्कृतिक संबंध काफी समृद्ध रहे हैं। ताशकंद 1995 भारतीय संस्कृति केंद्र की स्थापना की गई 2005 के बाद में इसका नाम लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र रखा गया इसके माध्यम से दोनों देशों के बीच संस्कृती भाषा व्याख्यान का आदान-प्रदान होता है, भारत और उज्बेकिस्तान में सांस्कृतिक सहयोग के माध्यम से द्विपक्षी संबंधों को मजबूत किया जा रहा है। उज़्बेकिस्तान कई संस्कृतियों का घर है, बहुसंख्यक समूह उज़्बेक है ।संगीत उनकी संस्कृति का अहम हिस्सा है और भारतीय संगीत भारतीय सिनेमा हिंदी गाने कथक नृत्य में अधिक रुचि लेते हैं। रेशम ,चीनी ,मिट्टी, कपास की बुनाई, पत्थर और लकड़ी की नक्काशी धातु की नक्काशी,चमड़े की मुद्रांकन, सुलेख चित्रकला प्राचीन काल से यहां पर प्रसिद्ध है ।जिसका आदान-प्रदान भारत में किया जाता है।लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में नियमित योग कथा तबला कार्यक्रम का आयोजन होता है। एक वर्ष में 40 से अधिक साप्ताहिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। इसमें नृत्य संगीत कला प्रदर्शनी सेमिनार सार्वजनिक व्याख्यान भी आयोजित होते हैं। यहां केंद्र पर भारतीय गीतों का गायन हिंदी पाठ हिंदी कक्षा भी नियमित होती है।

उज्बेकिस्तान में हिंदी साहित्यकार:_ उज्बेकिस्तान में हिंदी साहित्य को जन जन तक पहुंचाने में हिंदी साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ,जिसमें मोहम्मद इकबाल, केदारनाथ सिंह, मुक्तिबोध ,सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अशोक वाजपेई,अली सरदार जाफरी प्रमुख है ।उज्बेकिस्तान के अधिकतर निवासी हिंदी भाषा और भारतीय लेखकों से अच्छी तरह परिचित है। प्रसिद्ध उज़्बेक कवि और लेखक गफूर गुलाम,हमीद गुलाम, असकद मुख्तार कवियों ने भारत के साहित्य हिंदी भाषा विषय पर बहुत सारी कविताएं लेख निबंध लिखे हैं मशहूर उज़्बेक कवि उगून ने हिंदी भाषा में हिमालय के ऊपर,बुलबुल, तारा चौधरी नामक कविताए भी लिखी है। हिंदी साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन में हिंदी इतिहास से संबंधित लेखक के रचनाओं पर भी उज्बेकिस्तान में काम हुआ है। यहां के शिक्षा पाठ्यक्रम में समकालीन भारतीय साहित्य की नई धाराएं विदेश से भारत के साहित्यिक संबंधी साहित्य शास्त्र, पंजाबी साहित्य, बंगाली साहित्य ,दक्षिण भारत साहित्य मुख्य रूप से उपलब्ध है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान और भारत:भविष्य की संभावनाएं:__भारत और उज्बेकिस्तान की राजनीतिक संबंधों साइबर सुरक्षा, आतंकवाद विरोध,व्यापार और निवेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ-साथ सांस्कृतिक संबंधों में विविध क्षेत्रों को शामिल करते हुए दीर्घकालिक द्विपक्षीय सहयोग को विस्तारित और मजबूत करना चाहिए ।भारत को अंतरराष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन कॉरिडोर में शामिल होने के लिए उज़्बेकिस्तान को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उज्बेकिस्तान के साथ में भविष्य की संभावनाएं :_1.भारतीय कंपनियां उज्बेकिस्तान के विभिन्न व्यापार समझौता का लाभ उठा सकती है। 2. लाभकारी निवेश परियोजनाओं को लागू कर सकती है 3. भविष्य में मजबूत संबंध बनाए रखने के लिए तालमेल बढ़ाने की जरूरत है । 4. उज़्बेकिस्तान को अंतरराष्ट्रीय दक्षिण परिवहन कॉरिडोर में शामिल होना चाहिए। 5. आईसीटीसी के सदस्यों के रूप में उज्बेकिस्तान के शामिल कनेक्टिविटी उचित दिशा में आगे बढ़ेगी 6. भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और उभरती हुई शक्ति है उज़्बेकिस्तान को देश की स्थिरता और विकास करने के लिए भारत के सहयोग की आवश्यकता है 7.भारत का आईटी क्षेत्र उज़्बेकिस्तान को अपने सेवा क्षेत्र में बढ़ावा देने में सहायक होगा 8. भारत जेनेरिक दवाओं का प्रमुख उत्पादक देश है,उज़्बेकिस्तान को अपने फार्मास्यूटिकल उद्योग को विकसित करने में सहायक होगा 9. उज़्बेकिस्तान यूरेनियम समृद्ध देश है जो भारत को अपने परमाणु ऊर्जा संयंत्र को बनाए रखने के लिए सहयोगी होगा 10.भारतीय निवेश में फार्मास्यूटिकल्स मनोरंजन फॉर्म पार्क ऑटोमोबाइल,आतिथ्य उद्योग के क्षेत्र में निवेश शामिल है 11.एमिटी विश्वविद्यालय शारदा विश्वविद्यालय ने ताशकंद एवं अंगीजन में कैंपस खोले हैं12. ताशकंद और मुंबई के बीच सीधी उड़ाने शुरू की गई है एवं ई-वीजा सुविधा का विस्तार किया गया है 14. सौर ऊर्जा क्षेत्र के विकास में भारतीय भागीदारी में रुचि बढ़ रही है।

उज्बेकिस्तान में हिंदी दशा और दिशा:_उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा का साहित्य और हिंदी साहित्यकारों का अपना एक मुकाम है। यहां के कई प्रतिशत निवासी हिंदी से जुड़े हुए उनके हृदय के तारों से हिंदी अनभिज्ञ नहीं है, यहां के प्राच्य शिक्षा संस्थान में 10 से अधिक शिक्षक शिक्षकों द्वारा हिंदी भाषा हिंदी साहित्य और इतिहास का अध्ययन किया जाता है। जिसमें से कई विद्यार्थी हिंदी भाषा साहित्य इतिहास पर अपना शोध कार्य भी कर रहे हैं। दोनों देशों की मित्रता की बहुमुखी दिशाओं में से एक हमारे उनके साथ साहित्यिक संबंध भी है, जब से यह राष्ट्र स्वतंत्र हुआ है, दोनों देशों में हिंदी भाषा के साथ साहित्यिक संबंधों को अधिक विस्तारित कर नई राहे नई संभावनाएं खुलती जा रही है। भक्ति साहित्य भारतीय भाषाओं के हर एक साहित्य में विद्यमान है। उज्बेकिस्तान में भी इसका अध्ययन बीसवीं सदी में कुछ लेखकों के रूप में हुआ था । उज्बेकिस्तान में हिंदी का विकास प्रगति की ओर है वहां भी हिंदी को अब पढ़ाया जाता है,अनुवाद के क्षेत्र में खूब विकास हो रहा है, हिंदुस्तानी जर्नलिज्म को भी पढ़ाए जाने लगा है ।हिंदी में पीएचडी की जा रही है, हिंदी शोध छात्रों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। हिंदी साहित्य के इतिहास का अनुवाद पर शोध कार्य हो रहा है। हालांकि दोनों देश ने ढाई दशक पहले की राजनीतिक संबंध स्थापित किए थे रूस और

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान और पड़ोसी देशों में हमारी भाषा हिंदी और कथक,भरतनाट्यम जैसे शास्त्री नृत्य के प्रति प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ,चाहे हिंदी फिल्में हो चाहे हिंदी गाने सभी ने देश में लोगों के दिलों पर अपनी खास जगह बनाई है ।ऐतिहासिक रूप से भी भारत और उज्बेकिस्तान के बीच में गहरा सांस्कृतिक संबंध है, यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक एकता ही है, जो भारत और उज्बेकिस्तान को लग्जरी संगोष्ठी के लिए एक साथ लाती है ।अपनी कालातीत कला और शिल्प की विविधता के बावजूद भारत को लग्जरी और डिजाइन की वैश्विक दुनिया में कोई उल्लेख नहीं मिलता है , उज़्बेकिस्तान को भी ऐसे ही चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है,इस मंच का उद्देश्य दोनों देशों को लग्जरी के क्षेत्र में अपने अपने स्थान को सुनिश्चित करना है। लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र ताशकंद में स्थित है, यह केंद्र हिंदी भाषा कथा तबला योग में निशुल्क नियमित कक्षाएं आयोजित करता है एवं कार्यशाला व्याख्यान सेमिनार प्रदर्शनियों का आयोजन भारतीय जीवन शैली संस्कृति के बारे में जानकारी का प्रसार प्रचार करता है।उज्बेकिस्तान में हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं भविष्य स्वर्णिम अक्षरों से लिखा हुआ है दोनों देशों के साहित्यिक संबंध भाषा के साथ मजबूत स्थिति में है। जहां भारत में करोड़ों लोगों की मातृभाषा हिंदी है, भारत के बाहर जहां भी भारतीय है उनमें से शत प्रतिशत हिंदी का प्रयोग करते हैं।दुनिया में हिंदी तीसरे स्थान पर अपना स्थान बनाए हुए हैं, नेपाल एशिया महाद्वीप तमाम देशों में यह प्रयोग की जाती है विश्व के 12 से अधिक विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन पाठन किया जा रहा है। उज्बेकिस्तान में यह लिंक भाषा के रूप में लोगों और दोनों देशों के बीच भावात्मक संबंध स्थापित कर रही है ।हिंदी आज वैश्विक भाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है, परंतु यह जान लेना आवश्यक है कि हिंदी भाषा का पहला व्याकरण एक डच विद्वान कैटलॉग ने लिखा था ,पहले हिंदी साहित्य का इतिहास फ्रांसीसी विद्वान गरसीन दरेसी ने लिखा था।देश का सामाजिक आर्थिक राजनीतिक धार्मिक वातावरण भाषा तय करती है,उज्बेकिस्तान में हिंदी की दशा एक मजबूती स्तंभ के रूप में अपने पांव जमा रही है और यही भाषा सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ाकर उभरती हुई शक्ति भारत के साथ मिलकर उज़्बेकिस्तान को एक नया शक्तिशाली राष्ट्र में परिवर्तित करने में सहायक सिद्ध होगी। भाषा ही व्यक्ति को समाज और समाज को विश्व नीड़ बनाती है। बहुभाषी समाज को राष्ट्र बनाने में भी भाषा की बड़ी भूमिका है। हिंदी की दशा दिशा में विश्व बाजार में हिंदी का भविष्य स्वर्णिम है, आज वह वैश्विक भाषा का दर्जा प्राप्त कर वैश्विक भाषा बन गई है ,परंतु इन सबसे बढ़कर हिंदी हिंद की भाषा है, हिंदुस्तान की भाषा है, हिंदी भारत की आत्मा ही नहीं धड़कन भी है और उभरती हुई शक्ति भारत की हिंदी भाषा की और पूरी दुनिया आकर्षित हो रही है। हिंदी भाषा ही किसी भी देश की सांस्कृतिक साहित्यिक संबंधों को मजबूत कर उसकी दशा और दिशा बदलने में सक्षम है।

निष्कर्ष:_भारत में मुगल साम्राज्य के समय से ही भारत एवं उज़्बेकिस्तान मे द्विपक्षीय संबंधों का सिलसिला जारी रहा है,दोनों देश राजनीतिक वाणिज्यिक सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत कर रहे हैं। उज़्बेकिस्तान तेल और प्राकृतिक गैस के भंडार के कारण भारत को अपनी ओर आकर्षित करता है। उज़्बेकिस्तान भारत की ऊर्जा की सुरक्षा को सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकता है।उज़्बेकिस्तान देश की स्थिरता और विकास सुनिश्चित करने के लिए भारत के सहयोग की

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

आवश्यकता है क्योंकि भारत आज एक उभरती हुई शक्ति है।मध्य एशियाई देश में उज्बेकिस्तान अत्यंत बहुभाषी बहुजातीय और बहु सांस्कृतिक है। यह विविधता यहां बोली जाने वाली भाषा और भाषाई विविधताओं में विविधता देखी जा सकती है ।यहां पर 32 भाषा को सूचीबद्ध किया है, जिसमें हिंदी भाषा का अपना अहम स्थान है।हिंदी भाषा और भारत की उभरती शक्ति का परिणाम यह की यूक्रेन भारतीय छात्रों के लिए मेडिकल की पढ़ाई का पसंदीदा गंतव्य स्थल रहा है। रूस यूक्रेन जंग से हालात एकदम बदल दिया ऐसे में उज्बेकिस्तान के संस्थान ने खुद ही यूक्रेन का विकल्प बनने की कोशिश की है,इसी वजह से यहां उन छात्रों को पढ़ाई जारी रखने का मौका दिया गया जो यूक्रेन में अपना कोर्स पूरा नहीं कर पाए थे। यहां शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। माहौल भी शांतिपूर्ण, अपेक्षाकृत सस्ता भी है । हिंदी और उज़्बेक भाषा में काफी शब्द समान है।हिंदी के अक्सर जहां शब्द में आ का स्वर आता है,उसे उज़्बेक में ओ या आ के स्वर में कहा जाता है । ख का उच्चारण ख से जरा सा भिन्न है।

जैसे_सलाम _सालोंम, दवाखाना_दोरीखाना, जनाब _जानोब ।

भारतीय साहित्य पर 1991 में पहली बार पाठ्य पुस्तक में उज्बेकिस्तान में तमारा खोजाएवा,द्वारा तैयार की गई थी जिसमें टैगोर, प्रेमचंद,वृंदावनलाल शर्मा,यशपाल जैनेंद्र कुमार, अमृता प्रीतम, हजारी प्रसाद द्विवेदी ,जयशंकर प्रसाद,श्रीकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत की रचनाओं को शामिल किया गया। उज़्बेक की हिंदी शब्दकोश का निर्माण भी हाल ही में यहां के शिक्षकों द्वारा किया गया है। भारत के संदर्भ में साहित्य रचना करने वाले उज़्बेक की साहित्यकार गफूर गुलाम,हमीद गुलाम, असमद मुहतार ,हमीद अलीमजान, मिसते मीर, साहिदा जुनुनोवा, तमारा खोदजायवा, प्रमुख हैं। उज्बेकिस्तान में हिंदी दशा और दिशा में मजबूती से अपना कार्य कर रही है, उसकी दशा ही वहां के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को बदलने में कारगर सिद्ध होगी एवं हिंदी की दिशा ही वहां के राष्ट्र को एक शक्तिशाली राष्ट्र में परिवर्तित करने में सक्षम होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1.प्रो.तमरा खोदजाएवा __भारत और उज़्बेकिस्तान संबधो की विकास समस्या ।

2. पंचकुला ब्यूरो सारांश 22/8/2020 .

3. हिंदी राइस _भारत उज़्बेकिस्तान संबध 10/8/23.

4. द संडे गार्डियन __19/10/2019.

5. चित्रा राजौरा __भारत और उज़्बेकिस्तान द्विपक्षीय संबध 25/7/17.

6. डॉ. विजय शर्मा __विश्व हिंदी दिवस भाषा की दिशा दशा ।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

भारत और उज्बेकिस्तान का संबंध

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765065

डॉ. उषा आलोक दुबे
एम.डी.महाविद्यालय, मुंबई

प्राचीन काल से ही भारत का विदेशों के साथ गहरा संबंध रहा है, क्योंकि यह ऐसा देश है जो सहअस्तित्व व विश्वशान्तिपर विशेष ज़ोर देता रहा है। सांस्कृतिक, आर्थिक, और सामाजिक स्तरों पर भारत की विदेश नीति सक्रिय रही है, उसी का परिणाम है कि भारत आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अहम भूमिका में है। समय के साथ-साथ भारत ने व्यापारिक और राजनीतिक स्तर को मजबूती प्रदान करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है,साथ ही इसकी अर्थव्यवस्थाविश्व की बढ़ती हुई व्यवस्था है।

भारत के सामयिक संबंधों की बात की जाए तो भारत शुरुवाती दौर से ही मित्रता का भाव रखने वाला देश है। यदि हम बात करें मध्य एशिया देशों की तो भारत – उज्बेकिस्तान की मित्रता इस बात का प्रमाण है कि यह संबंध कुछ वर्षों का नहीं बल्कि दशकों पुराना है,जिसे हम कई बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य : राजनीतिक स्तर पर उज्बेकिस्तान का संबंध भारत के साथ स्नेहपूर्ण रहा है। भारत और पाकिस्तान के मैत्री पूर्ण रिश्ते में उज्बेकिस्तान की अहम भूमिका रही है। ताशकंद घोषणापत्र इस बात का प्रमाण है। उज्बेकिस्तानका दशकों से भारत के प्रति रवैया सकारात्मक रहा है, जिसके फलस्वरूप भारत और उज्बेकिस्तान के रिश्ते और भी अधिक घनिष्ठ होते गए। 1955 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने ताशकंद का दौरा किया, जो उनकी राजकीय यात्रा थी। 1966में उज़्बेक सोवियत समाजवादी गणराज्य ने ताशकंद में बैठक आयोजित की थी,जिसकी मध्यस्थता सोवियत प्रिमियर एलेक्सी कोसिगिन ने की थी। इन्होंने लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब को ताशकंद में आमंत्रित किया था,जहां दोनों देशों के बीच समझ और मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देने के लिए अपना दृढ़ संकल्प व्यक्त कियागया था । फलस्वरुप दोनों देशों ने अपने-अपने सैन्य बल लौटा लिए,ताकि दोनों देश के नागरिक शांति और सौहार्दपूर्ण तरीके से जीवन यापन और अपने लोगों को सुरक्षा प्रदान कर सकें। ताशकंद समझौता पूरे विश्व में एतिहासिक रूप में जाना जाता है।

उज्बेकिस्तानमध्य एशिया में स्थित होने के कारण विशाल ऊर्जा से परिपूर्ण है। अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए वह लगातार अन्य देशों के साथ जुड़ा हुआ है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद उज्बेकिस्तानएक मजबूत अर्थव्यवस्था के साथ उभरा है। कच्चे माल एवं प्राकृतिक गैस से समृद्ध यह अन्य देशों के लिए आकर्षण का केंद्र बना है। दशकों पहले मध्यएशिया देशों के साथ जुडने का माध्यम सिल्क रूट था। इस मार्ग को हम रेशम मार्ग के नाम से भी जानते है,जो सुदूर पूर्व यूरोप और मध्य एशिया देशों को जोड़ता था। इसी माध्यम से अनेक देश आपस में जुड़े थे। व्यवसायिक दृष्टि से देखें तो इसी के माध्यम से कई देश आपसी व्यापारिक आयात-निर्यात करते थे।

समसायिक समय की यदि हम बात करे तो भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने दौरों में कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए है, जिसमें आर्थिक सहयोग के साथ-साथ आतंकवाद के विरोध में, व्यापारिक

स्तर में बढ़ौती आदि विषयों को लेकर राजनयिक निर्णय लिए गए है। महत्वपूर्ण है कि वर्तमान में भारत और उज्बेकिस्तान के बीच रक्षा सहयोग भी बढ़ रहा है। दोनों देशमिलकर सैन्य अभ्यास करते हैं और रक्षा क्षेत्र में तकनीकी सहयोग पर काम कर रहे हैं,ताकि आतंकवाद का डट कर मुक़ाबला किया जा सके।

उज्बेकिस्तानका पड़ोसी देश अफगानिस्तान है, यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि आतंकवाद को रोकने में अहम भूमिका निभा सकता है। इस तरह हम देखते हैं कि राजनीतिक स्तर पर भारत और उज्बेकिस्तानकी आपसी रणनीतियों को सफलता पूर्वक साझा किया जा रहा है।

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य: उज्बेकिस्तान का भारत के साथ सांस्कृतिक संबंध काफी पुराना है।मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर का जन्म उज्बेकिस्तान में हुआ था और उसने भारतमें एक बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। दशकों से दोनों देशों की सांस्कृतिक कलाएं एक दूसरे को प्रभावित करती आ रही है। 1995 से ही भारतीय सांस्कृतिक केंद्र ताशकंद में स्थापित है, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता आ रहा है और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दे रहा है।2005 में इसका नाम बदलकर लालबहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र रखा गया जो वर्तमान समय में इसी नाम से जाना जाता है।

दोनों ही देश एक दूसरे की संस्कृति से इतने प्रभावित है कि वे एक दूसरे की भाषा सीख रहें हैं। उज्बेकिस्तान में हिंदी भाषा के प्रति भी रुचि बढ़ रही है। कईविश्वविद्यालयोंमें हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं और हिंदी साहित्य का अध्ययन भी हो रहाहै। वहाँ के नागरिक हिन्दी विषय को ले कर पी.एच.डी तक की पढ़ाई कर रहे हैं। वहाँ भारतीय त्योहार, जैसे होली, दीवाली, और गणेश चतुर्थी,बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं। इन आयोजनों में स्थानीय लोग भी बड़ी संख्या में भागलेते हैं।भारतीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा नियमित रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम,प्रदर्शनियाँ और समारोह आयोजित किए जाते हैं, जिनमें भारतीय संस्कृति का प्रदर्शनकिया जाता है।

2015 की यात्रा में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संस्कृति और शिक्षा के आदान-प्रदान के साथ-साथ पर्यटन पर भी अधिक ज़ोर देते हुये कहा है कि "मैं संस्कृति और पर्यटन के क्षेत्रों में किए गए समझौतों को लेकर खुश हूँ क्योंकि ये हमारे लोगों को एक-दूसरे के नजदीक लाएंगे"। परिणाम स्वरूप उज्बेकिस्तान में भारतीय पर्यटकों की संख्या भी बढ़ रही है, जो भारतीय संस्कृतिके प्रसार में योगदान दे रहे हैं। साथ ही, उज्बेक पर्यटक भी भारत की यात्रा कर भारतीयसंस्कृति का अनुभव कर रहे हैं।

दोनों देशों के बीच कला, शिल्प,और विचारधाराओं का आदान-प्रदान होता आ रहा है पहले सीमित साधनों के बावजूद ये एक दूसरे की संस्कृति से प्रभावित हुआ करते थे। वर्तमान समय में मीडिया ने अपनी अहम भूमिका निभाई है जिसके कारण भारतीय परिदृश्य से कई देश प्रभावित है। उज्बेकिस्तान में भारतीय फिल्मों और संगीत का बड़ा प्रशंसक वर्ग है। बॉलीवुडफिल्में वहाँ बहुत लोकप्रिय हैं और भारतीय अभिनेता-अभिनेत्रियों को वहां काफी पसंदकिया जाता है।भारतीय नृत्य और संगीत भी उज्बेकिस्तान में सराहनीयहैं। कई स्थानीय नृत्य के साथ-साथ भारतीय संगीत वहाँ सिखाया जाता हैं। ताशकंद और अन्य बड़े शहरों में कई भारतीय रेस्तरां हैं जो भारतीयकलाकारों के नाम पर रेस्तरां खोले गए है। जैसे “राजकपूर,द केसर,अग्नि लाउंज” आदि। इन जगहों पर भारतीय व्यंजनों का स्वाद के साथ-साथ भारतीय संगीत का आस्वाद लिया जाता हैं। यह भारतीय खानपान संस्कृति को उज्बेकिस्तान मेंलोकप्रिय बना रहा हैं। समान्यत: भारतीय रेस्तरां में उज्बेक और अन्य विदेशीपर्यटकों की भीड़ देखी जा सकती है, जो भारतीय भोजन का आनंद लेने आते हैं।

आज योग के प्रति लोगो का रुझान बढ़ा है। उज्बेकिस्तान में कई योग केंद्र औरसंस्थान योग प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं, और भारतीय योग शिक्षकों को विशेष रूप सेआमंत्रित किया जाता है।भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा भी वहाँ लोकप्रिय हो रही है, और अनेक व्यक्ति आयुर्वेदिकचिकित्सा पद्धतियों का लाभ उठा रहे हैं।

उज्बेकिस्तान में भारतीय संस्कृति का प्रभाव गहरा और सर्वव्यापी है। यह सांस्कृतिक संबंध दोनोंदेशों के बीच मित्रता और सहयोग को और मजबूत करता है। भारतीय संस्कृति के विभिन्नपहलुओं, जैसे कला, नृत्य, संगीत, योग और आयुर्वेदको उज्बेकिस्तान में व्यापक रूप से बढ़ावा मिल रहा है, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को और समृद्ध बना रहा है।भारतीय पर्यटकों की उज्बेकिस्तान में बढ़ती संख्या और उज्बेक पर्यटकों का भारतमें स्वागत, दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को और समृद्ध कर रहा है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य: भारत और उज्बेकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार बढ़ रहा है। भारत मुख्य रूपसे फार्मास्यूटिकल्स, मशीनरी और टेक्सटाइल्स से संबन्धित वस्तुओं का निर्यात करता है, जबकि उज्बेकिस्तानभारत को कच्चा कपास और रसायन निर्यात करता है। भारत की कई कंपनियाँ उज्बेकिस्तान में निवेश कर रही हैं, विशेषकर आईटी, कृषिऔर माइनिंग क्षेत्रों में यह निवेश बढ़ रहा है।

भारत और उज्बेकिस्तान ने निवेश के क्षेत्र में सहयोग बढ़ानेके लिए कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे दोनों देशों की कंपनियों को एक-दूसरेके देशों में निवेश करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।"उज़्बेकिस्तान के पूर्व- राष्ट्रपति करीमोव की 2011 में भारत यात्रा के दौरान भारतीय तेल व प्राकृतिक निगम (ONGC) विदेश लिमिटेड (OVL) का उज़्बेकिस्तान की उज्बेनेफ्तगाज़ के बीच द्विपक्षीय सम्बन्ध को आगे बढने के लिए "Long Term Strategic Partnership" पर समझौता हुआ"। 1991 के बाद से भारत लगातारउज्बेकिस्तान की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने के लिए बड़े निवेशकों में से एक हैं, जहां दोनों ही देश को आर्थिक रूप से सहयोग होता आया है। रोजगार को बढ़ावा मिले इस ओर भी बड़े पैमाने पर दोनों देश कार्यरत है। तत्कालीन भारत के प्रधानमंत्री ने कहा कि "दोनों पक्षों में आर्थिक संबंधों के स्तर को बढ़ाने, उज़्बेकिस्तान में निवेश करने में भारतीय बिजनेस की अत्यधिक रुचि, भारतीय निवेश के लिए प्रक्रिया और नीतियों को और अधिक सुचारू बनाया जाए आदि पर राष्ट्रपति करीमोव द्वारा मेरे सुझाव पर सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की|"उज्बेकिस्तान में विभिन्न प्रकार के भारतीय व्यापारिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है,जिसमें भारतीय कंपनियाँ अपने उत्पादों और सेवाओं का प्रदर्शन करती हैं। इससेव्यापारिक संबंधों को बढ़ावा मिलता है। साथ ही दोनों देशों की कंपनियाँ मिलकर संयुक्त उपक्रम स्थापित कर रही हैं, जोद्विपक्षीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने में सहायकहैं।

दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किएजा रहे हैं, जो न केवल व्यापार को बल्कि दोनों देशों कीअर्थव्यवस्था को भी लाभ पहुँचाएंगे।इन प्रयासों से दोनों देशों के व्यवसायियों के लिए नए अवसर पैदा हो रहे हैं।

पर्यटन एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो दोनों देशों की न केवल संस्कृति से एक दूसरे से परिचित कराता है, वरन पर्यटन के द्वारा अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान की जा रही है। ऐसे कई स्थल है उज्बेकिस्तान में जहाँ पर्यटक अधिक संख्या में जाते हैं। समरकंद: यह ऐतिहासिक शहर, जो सिल्क रोड पर स्थित है, अपने अद्वितीय वास्तुशिल्प,जैसे रेजिस्तान स्क्वायर, बीबी-खानम मस्जिद और शाह-ए-ज़िन्दा मकबरा, के लिए प्रसिद्धहै।

बुखारा: एक अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलहै। बुखारा में भारतीय पर्यटक आर्क ऑफबुखारा, कालोन मीनार, और इस्माइल सामानी मकबरा जैसे स्थलों को देख सकते हैं।

खिवा: यह प्राचीन शहर अपनी ऐतिहासिक दीवारों और इचान कला (भीतरी शहर) के लिएप्रसिद्ध है, जो अंदरूनी इचान कला भाग में ५० ऐतिहासिक स्थल और २५० मध्यकालीन घर हैं।

ऐसे ही कई स्थल है जो भारतीयों के लिए आकर्षण का केंद्र है। उसी तरह भारत में दिल्ली, मध्यप्रदेश, बनारस, केरला आदि कई शहर है जहां विदेशी आना पसंद करते हैं। इस प्रकार पर्यटन भी दोनों देशों की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में महत्वपूर्ण है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

निष्कर्षत: भारत और उज्बेकिस्तान के संबंध को विकसित करने में और भी कई बिन्दु महत्वपूर्ण भूमिका में है। शिक्षा के स्तर, सुरक्षा के स्तर,**कनेक्टिविटी के स्तर,क्षेत्रीय एक्सचेंज, चिकित्सा के स्तर पर आदि ऐसे कई महत्वपूर्ण पहलू है जो दोनों देशों को सकारात्मक रूप से जोड़े रखे हैं। हालांकि कई महत्वपूर्ण मुद्दे पर दोनों देशों की सरकार ने अनिवार्य कदम उठाए हैं। जैसे आतंकवाद के विरोध में अफगानिस्तान से बात-चीत, साइबर क्राइम, आदि चुनौतियों को साथ में मिल कर विचार-विमर्श किए गए हैं।** द्विपक्षीय समझौतों, व्यापारिक मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए भी नए सिरे से कई कदम उठाए जा रहे हैं।उज्बेकिस्तान में भारतीय समुदाय की स्थिति सामान्यत: सकारात्मक और स्थिर है। भारतीयसमुदाय,उज्बेकिस्तान में सीमित है, लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय और योगदानशील है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. https://eoi.gov.in/tashkent/?2385?004#
2. https://www.mea.gov.in/Speeches-Statementshi.htm?dtl/25430/media+statement+by+the+prime+minister+during+his+visit+to+uzbekistan
3. https://www.icwa.in/show_content.php?lang=1&level=3&ls_id=1570&lid=1514
4. https://eoi.gov.in/tashkent/?2615?000
5. https://en.wikipedia.org/wiki/India%E2%80%93Uzbekistan_relations
6. https://www.thehindu.com/news/national/Prime-Minister-Narendra-Modis-visit-to-Uzbekistan/article60325401.ece

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

भारत और उज़्बेकिस्तान की भविष्य की मित्रता

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765077

सृष्टि प्रिया
विद्यार्थी
संस्था- बारकेश्वर कॉलेज ऑफ एजुकेशन (पश्चिम बंगाल)

भारत और उज़्बेकिस्तान की भविष्य की मित्रता की नींव तो 11वीं शताब्दी में ही पढ़ चुकी थी, जब अल-बरूनी भारत आए।भारत में समय बिताने के दौरान उनका सबसे प्रियकार्यकिताब "अल हिंद या तारीख अल-हिंद" लिखना था।इसमें उन्होंने भारत केलोगों की मान्यताओं,सभ्यताओं और संस्कृति पर शोध किया जो हमेशा के लिए अमर हो गया। उन्होंने भारत में अध्ययन के संस्थापक के रूप में भी कार्य किया एवं उन्हें इसी नाम से जाना जाता है। इस प्रकार अल-बरूनी वर्तमान को कैद करने की अपनी कोशिश में भी सफल हुए।उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से भारतीय विचारधारा कोहमेशा केलिए जीवित रखने की कोशिश की।

•भारतीय इतिहास का पहला जानकार

अल-बरूनी ने "तारीख अल हिंद" नामक किताब लिखी। जिसमें उन्होंने 11वीं शताब्दी के दौरान भारत में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों का वर्णन किया। उन्होंने 11वीं शताब्दी के दौरान भारत में हिंदुओं और मुसलमान के बीच बातचीत का भी वर्णन किया।उन्होंने इस किताब में हिंदू लोगों का मुस्लिम दृष्टिकोण से विश्लेषण किया।उन्होंने 1017 से 1030 के बीच के अपने अवलोकनों से यह पुस्तक लिखी। इस पुस्तक से भारत के समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा उस समय के भारत के विज्ञान और साहित्य को प्रकाश मिलती है। अलबरूनी की पुस्तक में भारत की राजनीतिक स्थिति का कालानुक्रमिक वर्णन किया गया है और सामाजिक धार्मिक, वैज्ञानिक पहलुओंपर भी विचार किए गए हैं। अल-बरूनी ने अपनी पुस्तक में सामाजिक, आर्थिक पहलुओं की कमियों का भी उल्लेख किया है। उन्होंने दावा किया है कि आक्रमणकारियों द्वारा भारतीयों की हार और अपमान का कारण ही यही था। उनके भारत विवरण का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि उन्होंने बिना किसी पक्षपात या पूर्वाग्रह के सभी जानकारी दर्ज की।आज जितनी भी योजनाएं चलाई जा रही हैं भारत एवं उज़्बेकिस्तान के संबंध को प्रगाढ़ करने हेतु इस का विचार भर ही अल-बरुनीकीदेन है।

• भाषा (हिंदी का स्थान)

अमेरिका में प्रेमचंद सबसे ज्यादा लोकप्रिय लेखक हैं।फिजी, मॉरिशस उज़्बेक जैसे देशोंने भारत के साथ हिंदी की वजहसे ही अपने संबंध को भविष्य की संभावना दिखाई है। उनके साहित्य ने हिंदी को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। उज़्बेक मेंहिंदी को लेके काफी रुचि देखी जाती है। उज्बेकिस्तान के बड़े-बड़े शहरों में हिंदी भाषा सिखाई जाती है। पंजाब विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्षने बताया कि इस वर्ष हिंदी महोत्सव में विशेष तौर पर ऑनलाइन माध्यम का लाभ उठाकर देश-विदेश के विभिन्न हिस्सों के विद्वानों को जोड़ने की कोशिश की गई है। ताकि हमारे विद्यार्थी हिंदी की व्यापक पहुंच से अवगत हो सकें।

•परिचय

मध्य एशियाई देश उज़्बेक अत्यंत बहुभाषी बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक देश है। यहां विविधता उज़्बेक के क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा और भाषण विविधताओं की विविधता में देखी जा सकती है। यहां रूसी और उज़्बेक सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। भारतीय जहां-जहां भी गए अपने साथ अपनी

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

संस्कृति,अपना साहित्य और अपनी भाषा ले गए। वे जिस देश में भी रहे वहां की भाषा तो उन्होंने सीखीही किंतु अपनीमूल भाषा को वह भूले नहीं। अपितु उसे अमूल्य निधि के समान सुरक्षित रखते हुए उसके सम्मान तथा उसकी सुरक्षा के प्रति हमेशा सजग रहे। वह यह मानते रहे कि अपनी संस्कृति को बचाए रखने का मूल मंत्र अपनी भाषा की सुरक्षा तथा उसका सम्मान है। मॉरीशस के प्रतिष्ठित साहित्यकार "अभिमन्यु अनंत" की अपनी भाषा के प्रति प्रतिबद्धता इस प्रकार है कि वह कहते हैं- "छीननेनहीं दूंगा तुम्हें, लेकिन अपनी पहचान अपनी भाषा" फीजी, मॉरीशस सूरीनाम,त्रिनिदाद, गयाना, दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में "हिंदी" भारतवंशियों के मध्य आज भी मातृभाषा के रूप में बोली जाती है तथा उसे वहां सम्मानितस्थान प्राप्त है। पर इनमें से कई देशों में हिंदी लुप्त होने के कगार पर है। जिसकी सुरक्षा के लिए आज प्रयत्न आवश्यक है। भाषा कीप्रतिष्ठा उसके बोलने वाले की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी होती है। भाषाई सहायता की वजह से उज़्बेकिस्तान और भारत दो होकर भी विश्व का एक ही अंश प्रतीत होता है।

•प्रवासी भारतीयों का योगदान

प्रवासी भारतीयों ने जिस दिन विदेशी भूमि पर पदार्पण किया उसी दिन से उन देशों में हिंदी का वृक्षारोपण हुआ समझ जाना चाहिए। व्यक्ति और उसकी भाषा साथ-साथ चलती है।विदेश में बसे हुए प्रवासी भारतीयों में सबसे बड़ी संख्या हिंदी भाषा भारतीयों की ही रही है। इसका कारण यह भी है कि हिंदी भाषा सबसे बड़े भू-भागकी भाषा है।किसी एक भाषा का लुप्त हो जाना उसे भाषिक समुदाय के संस्कृति,अनुभूति और अभिव्यक्ति, आचार – विचार, मान्यताएं और आस्था,विश्वास का लुप्त हो जाना है। भाषा बचतीतभीहै जब उसका बोलचाल में प्रयोग होता रहे।

भारत और मध्य एशिया के संबंध बहुत पुराने हैं।तब से अब तक यह संबंध विकसित हो रहे हैं। भारत और उज्बेकिस्तान के बीच राजनीतिक, आर्थिक, कूटनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंध हमेशा से रहे हैं। यहां के अधिकतर निवासी हिंदी भाषा और भारतीय लेखकों से अच्छी तरह परिचितहैं।भारत और उज्बेकिस्तान की मित्रता की बहुमूल्य दिशाओं में से एक हमारे "साहित्यिक संबंध" है। सन 1991 में जबउज़्बेकिस्तानस्वतंत्र राष्ट्र बनातोदोनों देशों के साहित्यिक संबंधों को और विस्तार देने के नए रास्ते और नई संभावनाएं खुली। इस दिशा में ताशकंद में भारतीय राजदूत आवास और भारत का साहित्यिक केंद्र महत्वपूर्ण योजनाएं अमल में ला रहा है। आधुनिक काल में एक उज़्बेकिस्तानमें भारतीय साहित्य से नजदीकी परिचय प्राप्त करने और अध्ययन करने का काम 1925 से ही शुरू हुआ था। जब यहां रविंद्र नाथ टैगोर की कहानी और कविताएं उज़्बेकीऔर रूसी भाषा में प्रकाशित की गई थी।

भारतीय साहित्य पर अध्ययन का काम उज्बेकिस्तान में 1947 से शुरू हुआ। तब सबसे पहले रविंद्रनाथ टैगोर की रचना पर एक निबंध प्रकाशित किया गया और ताशकंद विश्वविद्यालय के पूर्व फैकल्टी के भारतीय भाषाओं के विभाग में भारतीय लेखक कृष्ण चंद्र की रचना पर कई निबंध प्रकाशित हुए। "भारत और उज़्बेकिस्तान के साहित्यिक संबंध" विषय के अध्ययन और अध्यापन के काम में जहां हम सफल हुए वहां इस कार्य में बहुत सी कमियां कठिनियां भी रहीं। इन कमियों को हल करने के लिए कुछ विचार आवश्यक हैं –

1. उज़्बेक के विशेषज्ञों का अध्यापकों को भारत में होने वाले साहित्यिक सम्मेलनों में भाग देने का अवसर देना।

2. भारतीय साहित्य पर नए वैज्ञानिक विश्लेषकों से परिचय प्राप्त करने के लिए साहित्य पाठ्यक्रम को तैयार करने के उद्देश्य से भारतीय विशेषज्ञों से विचार विनिमय करने, परामर्श लेने के लक्ष्य से नई पाठ्य पुस्तकों को तैयार करने के लिए साहित्य अकादमी जैसे संस्थानों तथा विश्वविद्यालय में जाकर कार्य करने की सुविधा होनी चाहिए।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हम देखें की किस तरह विश्व के विभिन्न में विश्व को मजबूत, शक्तिशाली एवं शिक्षित बनाने के लिए केवल एक भाषा किस प्रकार अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

•फिल्मी माध्यम

भारत और उज्बेकिस्तान के संबंधों के बारे में चर्चा करते हुए कुलपति प्रोफेसर "योगेश सिंह" ने कहा कि भारत को पाकिस्तान में फिल्मों के माध्यम से अधिक जाना गया। उन्होंने बताया कि जब यूएसएसआर था उस समय भारतीय फिल्में भारत के साथ उस पा रमें भी रिलीज होती थी। उज़्बेकिस्तान के कलाकारों के कार्यक्रम की प्रस्तुति को लेकर उन्होंने सराहनाकरते हुए कहा कि हमारे दोस्त देश के कलाकारों द्वारा यहां कार्यक्रम प्रस्तुत करने पर हम उससे जुड़ाव महसूस करते हैं। कुलपति ने कहा कि हम चाहते हैं कि आने वाले समय में हमारे यहां से भी म्यूजिकल ग्रुप उज़्बेकिस्तान जाएं और दिल्ली विश्वविद्यालय के बच्चे भी वहां कार्यक्रम प्रस्तुत करें।फिल्मों के माध्यम से भी उज़्बेकिस्तान और भारत का एक जुड़ाव रहा है। यह संकेत है दोनों देशों कि भविष्य की अच्छी संभावनाओं की। उज्बेकिस्तान में अपने देश में फिल्में बनाने के लिए भारतीय निर्माता के साथ सहयोग करने की इच्छा जाहिर की है।मध्यएशिया गणराज्य अपने देश में शूटिंग के लिए राष्ट्रीय और स्थानीय भाषा फिल्म उद्योग से संबंधित फिल्म उद्योग के हितधारकोंकी मेजबानी करने का इच्छुक है। भारतीय फिल्म निर्माता को देश की मस्जिदों, मकबरों और अन्य स्थलों से एक वस्तु कला धार्मिक और प्राकृतिक स्थलों का लाभ उठाकर इसकी फिल्मों के विस्तार गहराई और संस्कृति को बढ़ाने के लिए यहां निमंत्रण मिला है।

•शिक्षा

मेडिकल की पढ़ाई के लिए उज़्बेकिस्तान भारत की पहली पसंदबन रहा है।रूस- यूक्रेन युद्ध के कारण बड़ी संख्या में भारतीय मेडिकल छात्रों को यूक्रेन छोड़कर लौटना पड़ा था और उनके पास अपना कोर्स आगे जारी रखने का कोई रास्ता नहीं था। तब समरकंद विश्वविद्यालय ने हीउनकेलिए अपने दरवाजे खोले और करीब 1000 छात्रों को समायोजित किया उज़्बेकिस्तान की समरकंद यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने वाले भारतीय मेडिकल छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। 93 साल पुराने इस विश्वविद्यालय में 2021 तक भारतीय छात्रों की संख्या 100 से 150 तक ही रही थी। लेकिन 2023 में यहआंकड़ा पार करके 3000 के ऊपर पहुंच गया।यहबदलाव जंग के कारण यूक्रेन के संस्थानों के दरवाजे बंद होने के कारण आया। हम यह कह सकते हैं कि युद्ध में जहां दो देशोंके आपसी संबंध बिगड़ने हैं वहीं कुछ देशों के आपसी संबंध और प्रगाढ़हो जाते हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण बड़ी संख्या में भारतीय मेडिकल छात्रों को यूक्रेन छोड़कर लौटना पड़ा था और उनके पास अपना कोर्स आगे जारी रखने का कोई रास्ता नहीं था। तब समरकंद विश्वविद्यालय नहीं उनके लिए अपने दरवाजे खोल और करीब 1000 छात्रों को समायोजित किया।स्टेट समरकंद मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉक्टर जफर अमीनोवने बताया किभारतीय छात्रों की संख्या तेजी से बड़ी है और हम यह सुनिश्चित करने में जुटे हैं कि यह ट्रेन इसी तरह बना रहे। हमारी पूरी कोशिश है कि छात्रों को किसी भी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े।

अमीनोवने कहा कि हमने इस वर्ष भारत से 40 से अधिक शिक्षकों को अपने यहां नियुक्त किया है।वह बताते हैं कि विश्वविधालय में पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी ही है लेकिन संस्थान नहीं चाहता कि उच्चारण की वजह से छात्रों को कोई दिक्कत हो।इसलिएभारतीय शिक्षकों की मौजूदगी से फायदा होगा इसके अलावा संस्थान अपने प्रबंध में भी भारतीय शिक्षकों की मदद ले रहा है।

• प्रधानमंत्री और द्विपक्षीय बैठक

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

प्रधानमंत्री श्रीनगर नरेंद्र मोदी ने शंघाई सहयोग संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष की परिषद की 22वें बैठक के अवसर पर उज्बेकिस्तान के समरकंद में उज्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री शौकत मिर्जियोयेबसे मुलाकात की।

यह दोनों देशों के लिए एक विशेष वर्ष साबित रहा था। क्योंकि यह राजनीतिक संबंधों की स्थापना की 30वीं वर्षगांठथी।नेताओं ने दिसंबर 2020 में वर्चुअल शिखर सम्मेलन के निर्णय के कार्यान्वयन सहित द्विपक्षीय संबंधों में समग्र प्रगति की सराहना की थी।

अफगानिस्तान समेत क्षेत्रीय मुद्दों पर चर्चा की गई। नेता इस बात पर एकमत थे कि अफगानिस्तान की धरती का इस्तेमाल आतंकवादी गतिविधियों के लिए नहीं किया जाना चाहिए। बैठक में उपस्थित सभी ने भारत के विकासात्मक अनुभव और विशेषज्ञ के आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य सेवा, उच्च शिक्षा आदि जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर जोर दिया। भारतीय शिक्षण संस्थानों के खुलने तथा उज़्बेकऔर भारतीय विश्वविद्यालय के बीच साझेदारी का स्वागत भी किया गया।

प्रधानमंत्री ने SCO शिखर सम्मेलन की बेहतरीन आयोजन तथा उज़्बेकिस्तान की सफल अध्यक्षता के लिए राष्ट्रपति मिर्जियोयेब को बधाई भी थी।

प्रधानमंत्री ने दोनों देशों के आपसी संबंधों को सकारात्मक रूप देने के लिए कई सारे आयोजन की सराहना की एवं कई सारी योजनाएं भी चलाई। जैसे उज्बेकिस्तान के विद्यार्थी जो भारत देश में पढ़ रहे हैं उनके लिए एक अलग तरह की स्कॉलरशिप की योजना का ऐलान किया गया।

वर्ष 2015 में विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत और उज्बेकिस्तान के बीच पारस्परिक रूप से सहमत परियोजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी के लिए राष्ट्रीय समन्वयं समितियां की पहली बैठक में यह समीक्षा की गई की दोनों देशों के आपसी संबंध को कैसे बेहतर बनाया जाए।उज़्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति श्री इस्लाम कोरिमोवकेनियंत्रण पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 6 से 7 जुलाई 2015 को उज्बेकिस्तान गणराज्य का आधिकारिक दौरा किया था।

निष्कर्ष-

भारत और पाकिस्तान का संबंध कई सदियों पुराना है जिसके लिए अल-बरूनी ने डाली थी। जिसे समृद्ध करने का कार्य माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने किया। ऐसे कई सारे पक्ष है जिससे दोनों देश की आपसी साझेदारी से दोनों देश विश्व में अपना एक बहुत मजबूत स्थान प्राप्त कर सकते हैं। चाहे वह फिल्मी क्षेत्र हो शिक्षा का क्षेत्र हो राजनीतिक क्षेत्र हो या सबसे महत्वपूर्ण साहित्य का क्षेत्र हो इन सभी क्षेत्र की आपसी साझेदारी एवं आदान-प्रदान की प्रवृत्ति से ही समृद्धि संभव है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान और भारत : मीडिय क्षेत्र में सहयोग के नए पहलू

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765091

शाहनाजा ताशतेमीरोवा
अनुवाद अध्ययन और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिताविभाग,
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

उन्हें मास मीडिया इसलिए कहा जाता क्योंकि वे एक साथ बहुत बड़ी संख्या में दर्शकों, श्रोताओं एवं पाठकों तक पहुँचते हैं। उन्हें कभी-कभी जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) के साधन भी कहा जाता है। आपकी पीढ़ी के बहुत से लोगों के लिए जनसंपर्क के किसी माध्यम से विहीन दुनिया की कल्पना करना भी संभवत: कठिन होगा।डेटा की तरह मीडिया भीलैटिन से सीधे उधार लिए गए शब्द का बहुवचन रूपहै। एकवचन, माध्यम, ने शुरू में "एक हस्तक्षेप करने वाली एजेंसी, साधन या साधन" का अर्थ विकसित किया और इसे पहली बार दो शताब्दियों पहले समाचार पत्रों पर लागू किया गया था।

20वीं सदी के उत्तरार्ध में जनसंचार माध्यमों को आठ जनसंचार उद्योगों में वर्गीकृत किया जा सकता था: पुस्तकें, इंटरनेट, पत्रिकाएं, फिल्में, समाचार पत्र, रेडियो, रिकॉर्डिंग और टेलीविजन।मीडिया उद्योग करियर ऐसे पेशे हैं जिनमें जनता के साथ सामग्री बनाना और साझा करना शामिल है। मीडिया उद्योग पत्रकारिता, मनोरंजन, संचार और विज्ञापन जैसे कई विषयों में फैला हुआ है।समकालीन मीडिया युग की उत्पत्ति विद्युत टेलीग्राफ से मानी जा सकती है, जिसका पेटेंट संयुक्त राज्य अमेरिका में 1837 में सैमुअल मोर्स द्वारा कराया गया था।मीडिया और समाज सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में मीडिया की भूमिका का परिचय देता है, हमारे रोज़मर्रा के जीवन के साथ डिजिटल मीडिया प्रौद्योगिकी की बढ़ती उलझन को उजागर करता है। यह सहभागी संस्कृति, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के युग में अर्थ और शक्ति के बीच संबंधों की खोज करता है।

इस दिशा में, दोनों देशों को और मजबूत करने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण घटनाएँ हो रही हैं। मार्च 2023 में उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोयेव की भारत यात्रा के दौरान कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवधि के दौरान, उज़्बेकिस्तान के सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विकास मंत्रालय ने आईटी, अंतरिक्ष और शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय भागीदारों के साथ कई अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए।

उज़्बेकिस्तान मीडिया प्रतिनिधिमंडल का भारत दौरा – जून 2024 में, उज़्बेकिस्तान के मीडिया प्रतिनिधियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने भारत का दौरा किया और आपसी सहयोग को और बढ़ाने के उद्देश्य से बातचीत इस बैठक में प्रेस क्लब ऑफ इंडिया ने दोनों देशों के बीच तेजी से विकसित हो रहे सहयोग की व्यापक कवरेज, हमारे देशों में लागू बड़े पैमाने पर सुधारों की सामग्री और महत्व के मुद्दों पर चर्चा की। आयोजन के ढांचे के भीतर, उज्बेकिस्तान के पत्रकार संघ और प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के बीच सहयोग के एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।यह दस्तावेज़ निम्नलिखित मुद्दों का प्रावधान करता है:

- उज़्बेकिस्तान के पत्रकारों के ज्ञान और कौशल में सुधार;
- प्रसिद्ध भारतीय पत्रकारों की भागीदारी के साथ मास्टर कक्षाएं आयोजित करना;

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

- पारस्परिक रचनात्मक यात्राओं और सूचना आदान-प्रदान का संगठन ।

आजकलउज़्बेकिस्तान-भारत मास मीडिया सहयोग की मुख्य दिशाएँ इस प्रकार हैं:

- तकनीकी पार्क - उज्बेकिस्तान प्रमुख भारतीय प्रौद्योगिकी पार्कों के साथ सहयोग में रुचि रखता है, जिसमें सोसाइटी फॉर सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया (एसटीपीआई) भी शामिल है।उज्बेकिस्तान में सॉफ्टवेयर और नवीन उत्पादों का एक तकनीकी पार्क बनाने की संभावना पर विचार करने के लिए भारतीय भागीदारों को आमंत्रित किया जाता है।

- इलेक्ट्रॉनिक सरकार: उज़्बेकिस्तान सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विकास केंद्र और भारत के राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के बीच संयुक्त गतिविधियों और प्रौद्योगिकी आदान-प्रदान पर समझौते हुए।

- कास्मोस: उज्बेकिस्तान और भारत की सरकारों के बीच शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए अंतरिक्ष के अध्ययन और उपयोग पर एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।उज़्बेकिस्तान का सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विकास मंत्रालय भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के सहयोग से इस क्षेत्र में संयुक्त कार्य करता है।

फर्गाना के पत्रकार भी उज्बेकिस्तान-भारत संबंधों को मजबूत करने में सक्रिय रूप से शामिल हैं। 16 पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में बैठक की। आयोजनों में उज्बेकिस्तान में लागू किए गए सुधारों और भविष्य में सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की गई। 2024 के लिए आपसी सहयोग पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जो पत्रकारों के आदान-प्रदान और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के आयोजन का प्रावधान करता है।

परिणाम और दृष्टिकोण

मास मीडिया के क्षेत्र में उज्बेकिस्तान और भारत के बीच सहयोग बढ़ रहा है, जिससे ज्ञान, सांस्कृतिक मूल्यों और नवीन प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान के नए पहलू खुल रहे हैं। ये पहल न केवल पत्रकारों के व्यावसायिक विकास में योगदान देती हैं, बल्कि दोनों देशों के लोगों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को मजबूत करने में भी योगदान देती हैं।

संदर्भ सूची

1. https://uza.uz
2. https://hi.wikipedia.org

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हिन्दी भाषा में वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द (साधारण वाक्यों (simple sentence) के उदाहरण में)

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765105

सादिकोवा मौजूदा काबिलोवना
हिन्दी भाषा की प्राध्यापिका
लाल बहादुर शास्त्री नामक भारतीय साँस्कृतिक केंद्र
ताश्कन्द, उज़्बेकिस्तान

हिन्दी भाषा में वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द की समस्या व्यापक और जटिल भाषा - वैज्ञानिक घटना समझी जाती है । एक विचार को हिन्दी भाषा में भिन्न - भिन्न वाक्यों के मध्यम से प्रकट करना संभव है । इस में उन वाक्यों का अलग - अलग रूप में प्रयोग किया जाता है । विभिन्न वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्दों का अपने स्थान में ठीक उपयोग करना बोलनेवाले की भाषण की संस्कृति और ज्ञान के स्तर से घनिष्ठि संबंधित है । संयुक्त वाक्य का (CompoundSentence) एक पद्हतिगत माध्यम के रूप में लेखन और भाषण में भी विस्तृत रूप से प्रयोग किया जाता है । परन्तु भाषण में साधारण वाक्य का इस्तेमाल किया जाता है , लेखन में मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य का अधिक उपयोग किया जाता है ।

वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द पद्धति की दृष्टि से आपस में भिन्न हो सकते हैं । इस विषय का विश्लेषण करने में उज़्बेकी तथा विदेशी स्रोतों में आधारित होते हुए यह कहना है कि इस समस्या का आधुनिक भाषा - विज्ञान में गम्भीरतापूर्वक और ठीक अध्ययन नहीं किया गया है ।एक विचार को भिन्न - भिन्न वाक्यों से प्रकट करना मुमकिन है लेकिन एक ही वाक्य इसी विचार को ठीक और सही प्रकट करता है । एक अर्थ और आषय विभिन्न वाक्यात्मक विधियों से दिया जाता है , इस में मिश्रित , संयुक्त वाक्यों का , आवाज़ के उतार - चढ़ाव का इस्तेमाल करना मुमकिन है । वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द शैली विज्ञान के प्रमुख भागों में से एक समझा जाता है ।

वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द एक विधि में या कई विधियों में मिलता है । उदाहरण के लिये संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य पर्यायवाची शब्द होकर आते हैं , तो संयुक्त वाक्य अधिकतर भाषण में मिलता है , क्योंकि संयुक्त वाक्य में आवाज़ का उतार - चढ़ाव महत्व रखता है , कई विद्वानों का विचार है कि पर्यायवाची शब्द शैली का एक प्रकार है और मुख्यतः अतिरिक्त अर्थ को प्रकट करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है । वाक्य - विन्यास पद्हतिगत माध्यमों और रंगों से भरा - पूरा क्षेत्र माना जाता है । वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्दों में वक्रपटुता , भावना और प्रभाव जैसे शैलीगत अर्थ व्यक्ट किये जाते हैं । परंतु वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द व्याकरण के ढाँचे के अर्थ पर प्रभाव डालता है । हिन्दी भाषा में वाक्य और उसके भागों के अर्थों की समानताएँ वही भाषिक मामलों से संबंधितहोती हैं या भिन्न होती हैं उदाहरण के लिये काल , वाच्य , अर्थ आदि । उन में खास वही

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

भाषिक एकता का प्रकट करनेवाला आपसी रिश्ता सामान्य अर्थ में दिखाई देता है । वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्दों में विशेष तौर पर विधेय सामान्य होता है , पर व्याकरण की संरचना और दूसरे भाग बदल सकते हैं । वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द एक आशय को भिन्न - भिन्न व्याकरणिक तरीकों से प्रकट करने का साधन है । वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्दों के कई प्रकार प्रत्यक भाषा में विशेष रूप से हिन्दी भाषा में विभिन्न हो सकते हैं , खास स्वरूप के हो सकते हैं , इस का अर्थ है कि एक भाषा की वाक्यरचनागत एकता दूसरी भाषा में बिलकुल दूसरे रूप में दिखाई देती है , क्योंकि भाषाओं में वाक्य और वाक्यांश अपने निर्माण और क्रम से एक दूसरे से अलग होते हैं , उदाहरण के लिए अँग्रेजी और हिन्दी भाषाओं में वाक्यों की तुलना कर सकते हैं ।

अँग्रेजी में :

Entering the room he greeted everyone most kindly.

When he entered the room he greeted everyone most kindly.[28]

मेरी बहन दुकान जानेवाली है कि कुछ फल खरीदे ।

मेरी बहन कुछ फल खरीदने के लिए दुकान जानेवाली है ।

मालूम है कि संसार की भाषाएँ चार मुख्य प्रकार में बाँटी जाती हैं इन्फ़्लेक्टिव, एग्लूटिनेटिव, सिंथेटिक, एनालिटिकल, इसके साथ - साथ भाषाओं के व्याकरण की संरचना भी भिन्न भिन्न होती है । उदाहरण के लिए अँग्रेज़ी और रूसी भाषाओं में विधेय उद्देश्य के बाद आता है , उज़्वेकी और हिन्दी भाषाओं में वाक्य के अंत में होता है ।

इस के अनुसार वाक्य का निर्माण भी भिन्न भाषाओं में भिन्न - भिन्न होता है । एक आशय विभिन्न भाषाओं में विभिन्न वाक्य के ज़रिये दिया जा सकता है । इन भेदों में आधारित करते हुए हिन्दी भाषा के पर्यायवाची शब्दों का अध्ययन करने की कोशिश की और हिन्दी में वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्दों को साधारण वाक्यों में अध्ययन किया है ।

साधारण वाक्यों के आपसी पर्यायवाची शब्द भाषा में ज़्यादा मिलते हैं । इसका मुख्य कारण वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द सब से पहले मौखिक भाषा में बातचीत के प्रति प्ररूपी है ।मौखिक भाषा में सब से अधिक साधारण वाक्यों का प्रयोग किया जाता है । साधारण वाक्यों के पर्यायवाची शब्द वाक्य के भागों, विभक्तियों , शब्दों के समानार्थी के आधार पर बनाये जाते हैं ।साधारण वाक्यों के पर्यायवाची शब्द हिन्दी भाषा में भी व्यापक प्रचलित है ।साधारण वाक्यों के पर्यायवाची शब्द भाषा का अवियोज्य भाग है , वह भाषा को आकर्षक बनाता है , दोहरावों से बचाता है ।

साधारण वाक्य आपसी पर्यायवाची शब्द के रूप में आते हैं तो उनके बीच का अंतर पद्हतिगत अंतर में होता है । उदाहरण :

---

[28]J. Daniel Hasty. We might should be thinking this way: Theory and practice in the study of syntactic variation. Michigan State University 2022.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

1. बारिश हो रही है ।
   पानी बरस रहा है ।
2. क्या मैं बैठ सकता हूँ ।
   मैं बैठ जाऊँ ?
3. क्या अब आप के पास समय है ?
   क्या इस वक़्त आप को फ़ुर्सत है ?
4. आप कैसे हैं ?
   क्या हाल - चाल है ?
   आपका मिजाज़ कैसा है ?
   आपकी तबीयत कैसी है ?
5. उम्मीद है फिर मिलेंगे ।
   आशा है आपके दर्शन होंगे ।
6. आज बहुत दिनों बाद मिले हैं ।
   आज बहुत दिनों बाद मुलाकात हुई है ।
7. आपका आम पास्पोर्ट है इस लिये आपका सामान चेक किया जायेगा ।
   आपका आम पास्पोर्ट है इस लिए आपके सामान की जाँच की जाएगी ।
8. मेरे जूते तंग हैं ।
   मेरे जूते दबा रहे हैं ।
9. इस फ़िल्म के मुख्य अदाकार राज कपूर हैं ।
   इस फ़िल्म में मुख्य पार्ट राज कपूर ने अदा किया है ।
10. मेरा भी शाम को घर से निकलने को जी नहीं चाहता ।
    मैं भी शाम को घर से निकलना नहीं चाहता ।

हिन्दी भाषा में साधारण वाक्यों के बीच मिलनेवाले मुख्य पर्यायवाची शब्दों के प्रकारों में से एक एक अर्थ का प्रकट करनेवाले पर भिन्न - भिन्न कालों में उचित साधारण वाक्यों का पर्यायवाची शब्द है ।सामान्य वर्तमान काल में आया साधारण वाक्य सामान्य भविष्य काल में आये वाक्य से आपस में समानार्थी हो सकता है । या उल्टे भविष्य काल का प्रकट करने के लिये सामान्य भविष्य काल और सामान्य वर्तमान काल के आपस में समानार्थी अधिक मिलते हैं।

उदाहरण :

माँ : " आओ , खाना खा लो । " बेटा : " अभी आऊँगा । "
माँ : " आओ , खाना खा लो ।" बेटा : " अभी आता हूँ । "

तुम नहीं जाते उनके घर ?
तुम नहीं जाओगे उन के घर ?

मैं कल रात जा रहा हूँ ।

मैं कल रात जाऊँगा ।

अक्सर सामान्य वर्तमान काल के वाक्यों और तात्कालिक वर्तमान काल के वाक्यों के बीच पर्यायवाची शब्द मिलते हैं ।

उदाहरण :

तुम ऐसा क्यों कहते हो ?

तुम क्यों ऐसा कह रहे हो ?

गाड़ी आती है ।

गाड़ी आ रही है ।

कभी कभी सामान्य भविष्य काल में आये वाक्य " वाला " के द्वारा बनाये गये साधारण वाक्यों से समानार्थी हो सकते हैं ।

उदाहरण :

दोनों आज यहाँ ठहरनेवाले हैं ।

दोनों आज यहाँ ठहरेंगे ।

कृदन्त शामिल हुए साधारण वाक्यों और पूर्वकालिक कृदन्त वाले वाक्यों के पर्यायवाची शब्द भी मिलते हैं । लेकिन ऐसे वाक्यों के बीच अर्थ में अंतर नज़र आता है ।

उदाहरण :

अम्मी ने कान पकड़ते हुए तौबा की ।

अम्मी ने कान पकड़के तौबा की ।

राज दौड़ता हुआ आया - वह देखो आखिरी नाव आ रही है ।

राज दौड़कर आया और कहा - देखो आखिरी नाव आ रही है ।

प्रत्यक्ष वाक्यों और अप्रत्यक्ष वाक्यों के पर्यायवाची शब्द अधिक मिलते हैं ।

उदाहरण :

निर्मला मुस्कराकर बोली : " तुझे अम्मा जाने न देंगी । "

निर्मला मुस्कराकर बोली कि अम्मा उसे जाने न देंगी ।

मुख्य वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द कर्तृ - वाच्य और कर्म - वाच्य में आये साधारण वाक्यों में दिखाये देते हैं । हिन्दी भाषा में भी ऐसे वाक्यरचनागत पर्यायवाची शब्द मिलते हैं । अधिकांशभाषाविदों के विचारों के अनुसार यदि कर्म - वाच्य में आये वाक्य का कर्ता होता है तो यह वाक्य कर्तृ - वाच्य में आये वाक्य का पर्यायवाची शब्द हो सकता है ।

उदाहरण :

इस होटल की इमारत भारतीय मज़दूरों से बनाया गया है ।

इस होटल की इमारत भारतीय मज़दूरों ने बनायी है ।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

निष्कर्ष करते हुए यह बोल सकते हैं कि हिन्दी भाषा में पर्यायवाची शब्द न केवल शब्दों के बीच बल्कि साधारण वाक्यों के बीच में भी भिन्न भिन्न प्रकारों में अक्सर मिलते हैं ।

संदर्भ सूची

1. To'ychibayev Zamonaviy o‘zbek tilida sintaktik sinonimika ". T. 1988

2. Barannikov A.P. Stilisticheskiye sinonimii v sovremennom yazike xindi. M. 1961

3. Izotov A.I. " Leksicheskaya i sintaksicheskaya sinonimiya ". M. 1980

4. Solganini G. Ya. " Sintaksicheskaya sinonimiya ". M. 2006.

5. J. Daniel Hasty " We might should be thinking this way: Theory and practice in the study of syntactic variation. 2012.

6. क गुरू . हिन्दी व्याकरण . वाराणसी . पंद्रहवाँ पुनर्मुद्रण .

7. अशोक गुप्त : सचित्र राष्ट्रभाषा व्याकरण तथा रचना . नई दिल्ली . 2003

8. अभिनव . हिन्दी व्याकरण तथा निबंध रचना . नई दिल्ली . 2001

9. Z.M.Dimshis. Grammatika yazike xindi. M. 1986

10. प्रेमचन्द " कहानी संग्रह " . नई दिल्ली . 1980

11. Beskrovniy V.M. Xindi - russkiy slovar. M. 1979

12. https://hindigrammar.in/Synonyms

13. https://www.hindikunj.com/2009/09/blog-post.html?m=1

14. https://rekhtadictionary.com

15. www.philology.ru

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हिन्दी के निपुण विशेषज्ञ:बयात रखमतोव

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765621

कमोला अखमेदोवा
अनुवाद अध्ययन और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता विभाग,
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

मालूम है कि उज्बेकिस्तान और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध काफी पुराने हैं। अब भी विभिन्न क्षेत्रों में मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित हो रहे हैं। ऐसे संबंधों में दोनों देशों की भाषाएं सीखना जरूरी है। उज्बेकिस्तान में 1947 से हिंदी पढ़ाई जाती है। आजकल उज्बेकिस्तान में हिन्दी भाषा के शिक्षक बहुत हैं। इनमें बयात रखमतोव का नाम प्रमुख है।

रहमताव बायोत, जिनका जन्म 4 मई 1949 को हुआ। कई वर्षों तक ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय (टी.एस.यू.ओ.एस.), दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई भाषाओं विभाग में हिंदी भाषा के वरिष्ठ शिक्षक रहे । उन्होंने अपने जीवन में हिंदी और उर्दू भाषा के अध्ययन और शिक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके पेशेवर अनुभव और उपलब्धियों की सूची व्यापक है, जिसमें कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में अनुवादक के रूप में उनकी भागीदारी, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और शिक्षण में उनकी विशिष्टता, और भाषाई अनुसंधान में उनकी भागीदारी शामिल है।

पेशेवर अनुभव और उपलब्धियां:

बयात रखमतोव ने 1971 से 1986 तक ताशकंद में "एशियाई और अफ्रीकी देशों के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव" में अनुवादक के रूप में भाग लिया। 1980 में "मॉस्को विश्व ओलंपियाड" में भी उन्होंने अनुवादक के रूप में सेवा दी। वे 1992 से अब तक "उज्बेक-भारतीय मित्रता सोसायटी" के सदस्य हैं और 2005 से 2010 तक वे शिक्षा केंद्र, उज्बेकिस्तान गणराज्य, ताशकंद के सदस्य भी रहे।

उन्होंने 27-29 मार्च 2007 को मॉस्को में आयोजित "मॉस्को हिंदी महोत्सव" में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया। 1986 से 1990 तक उन्होंने बिहार (अब झारखंड), भारत में बोकाड़ो स्टील परियोजना में हिंदी भाषा के अनुवादक के रूप में कार्य किया। मई 1993 में भारतीय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव की उज्बेकिस्तान यात्रा के दौरान उन्होंने हिंदी भाषा के अनुवादक के रूप में सेवा दी। 2015, 2016 और 2017 में ताशकंद में भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित "विश्व हिंदी दिवस" संगोष्ठियों में भी उन्होंने अनुवादक के रूप में भाग लिया।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

बयात रखमतोव ने 21 जून, 2015 और 2017 को ताशकंद में भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित "विश्व योग दिवस" सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अनुवादक के रूप में भाग लिया। मई 2015 में ताशकंद में साहित्यिक सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान, मुंबई द्वारा आयोजित "वैश्वीकरण के दौरान भाषाओं की भूमिका" पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भी उन्होंने भाग लिया। 1 जनवरी 2017 को ताशकंद में अंतरराष्ट्रीय ज्योतिष फाउंडेशन द्वारा आयोजित 10वें ज्योतिष सम्मेलन में उन्होंने स्वागत भाषण दिया और "श्रेष्ठ प्रदर्शन एवं आत्म विकास के लिए उत्कृष्ट योगदान के प्रमाण पत्र" से सम्मानित किया गया।

मार्च और जून 2017 में लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र द्वारा आयोजित "हिंदी मंच" में उन्होंने "तरह-तरह की होलीयाँ" और "भारत की आर्य जाति" विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं। 19-23 फरवरी 2019 को प्रयागराज, भारत में आयोजित कुम्भ मेला समारोह में उन्होंने आईसीसीआर के निमंत्रण पर भाग लिया। 19-25 अक्टूबर 2019 को गुजरात, भारत से उज्बेकिस्तान के दौरे के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी के नेतृत्व में आए प्रतिनिधिमंडल के दौरान वे हिंदी भाषा के अनुवादक के रूप में नियुक्त हुए। 16-19 अगस्त 2022 को एससीओ देशों के गृह मंत्रियों के शिखर सम्मेलन में भी वे हिंदी भाषा के अनुवादक के रूप में सेवा दी।

अनुवाद कार्य:

बयात रखमतोव ने 2008 में ताशकंद में टी. नुरमोहम्मद की पुस्तक "डायगलेसा" का उज़्बेकी से हिंदी में अनुवाद किया। उन्होंने 2010 में "करीना, करीना" नामक हिंदी टीवी सीरियल का उज़्बेकी टीवी के लिए 129 भागों में अनुवाद किया। उन्होंने हिंदी फिल्मों "हीना" (1991), "अंदाज" (2006) और "शिखर" (2009) का उज़्बेकी में अनुवाद किया।

शिक्षण और अनुसंधान अनुभव:

बयात रखमतोव ने 1978 से 1982 तक ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक शिक्षण प्रक्रिया संगठन विभाग में तकनीकी सहायक के रूप में कार्य किया। 1982 से 1986 तक उन्होंने ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय में ओरिएंटल स्टडीज फैकल्टी में हिंदी भाषा के शिक्षक के रूप में सेवा दी। 1986 से 1990 तक वे ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय में भारतीय फिलोलॉजी विभाग में हिंदी भाषा के वरिष्ठ शिक्षक रहे। 1990 से 2023 तक वे ताशकंद राज्य ओरिएंटल स्टडीज संस्थान (अब ताशकंद राज्य ओरिएंटल स्टडीज विश्वविद्यालय) में हिंदी भाषा के वरिष्ठ शिक्षक के रूप में काम किया।

विदेशी विद्यार्थियों के लिए उज़्बेकी भाषा शिक्षण में अनुभव:

बयात रखमतोव ने 1999-2000 में ताशकंद में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय (भारत) के डॉ. शाहिद तसलीम को उज़्बेकी भाषा का व्यावहारिक पक्ष सिखाया। आज कल डॉ.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

शाहिद तसलीम नई दिल्ली में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में उज़्बेकी भाषा और साहित्य के प्रोफेसर हैं। नवंबर 2014 से मार्च 2015 तक उन्होंने ताशकंद में भारत के पूर्व राजदूत श्री विक्रम दोराई स्वामी को उज़्बेकी भाषा का व्यावहारिक पक्ष सिखाया। 2018-2019 में उन्होंने ताशकंद में बांग्लादेश के पूर्व राजदूत श्री मसूद मनान को उज़्बेकी भाषा का व्यावहारिक पक्ष सिखाया। आज कल इस विषय पर बहुत सारे सामग्री एकत्रित की गई है और भविष्य में अन्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर विदेशी विद्यार्थियों के लिए उज़्बेकी भाषा की नई पाठ्यपुस्तक तैयार की जा रही है।

शैक्षिक योग्यताएँ:

बयात रखमतोव ने 1974 में ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय, उजबेकिस्तान के ओरिएंटल स्टडीज फैकल्टी से हिंदी और उर्दू में इन्डोलॉजिस्ट के रूप में स्नातक किया। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत में दिसंबर 1974 से अक्टूबर 1975 तक हिंदी भाषा का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा किया।

बयात रखमतोव को उज़्बेकी, रूसी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं आती है।

प्रकाशित पुस्तकें और आलेख:

1. "संक्षिप्त हिंदी-उज़्बेकी शब्दकोश" (ए. शमातोव, ज़. बेगिज़ोवा, एम. सादिकोवा, एच. बुरियेव के साथ सह-लेखन), कोलकाता, भारत, 2002

2. "हिंदी की पाठ्य पुस्तक" 1-भाग (उज़्बेकी में), (आर. अउलोवा, एम. सादिकोवा के साथ सह-लेखन), ताशकंद, 2008।

3. "हिंदी की पाठ्य पुस्तक" 2-भाग (उज़्बेकी में), (आर. अउलोवा, ए. शमातोव, एम. सादिकोवा के साथ सह-लेखन), ताशकंद, 2009।

4. "उज़्बेकिस्तान में हिंदी भाषा का शिक्षण" (रूसी में), उज़्बेकिस्तान के इन्डोलॉजिस्ट्स सम्मेलन, ताशकंद, 2006।

5. "उज़्बेकिस्तान में हिंदी भाषा शिक्षण के दृष्टिकोण" (उज़्बेकी में), पत्रिका "शार्कशुनोस्लिक (ओरिएंटोलॉजी)", ताशकंद, 2006।

6. "हिंदी भाषा का शब्दविज्ञान" (ए. शमातोव के साथ सह-लेखन), ताशकंद, 2009।

7. "हिंदी भाषा" 1-भाग (उच्च विद्यालयों के लिए), (ओ. युनुसोवा, एम. सादिकोवा के साथ सह-लेखन), ताशकंद 2010।

8. "उज़्बेकी-हिंदी शब्दकोश" (ए. शमातोव के साथ सह-लेखन), ताशकंद, 2015। भारतीय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जुलाई 2015 में उज्बेकिस्तान की अपनी यात्रा के दौरान इसे प्रस्तुत किया।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

9. "विदेशियों के लिए हिंदी शिक्षण पुस्तकों के संकलन में सामग्री के मानकीकरण पर कुछ प्रश्न"। जी. रोएरिक से "संस्कृति धरोहर: भविष्य के लिए अतीत का संरक्षण" से पठन के सारांश (रूसी में), ताशकंद, 2016।

आज कल बयात रखमतोव ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी भाषा प्रेमियों को हिंदी सिखा रहे हैं। उपरिलिखित देख सकते हैं कि वे अपना पूरा जीवन भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के लिए समर्पित कर रहे हैं। यहां तक कि उनकी पत्नी भी इंडोलोजिस्ट सेवारा रख्मातोवा हैं। सेवारा रख्मातोवा भी कई वर्षों तक स्कूल में हिंदी पढ़ा रही थी। हम उन को शुभकामनाएं देते हैं।

संदर्भ सूची

1. Ўзбек ҳиндшунослигининг 60 йиллик тўйига махсус тўплам, Тошкент давлат шарқшунослик институти Жанубий Осиё тиллари кафедраси, 2007 (उज़्बेक इंडोलॉजी की 60वीं वर्षगांठ के लिए विशेष संग्रह, दक्षिण एशियाई भाषा विभाग, ताशकंद स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, 2007)

2. https://uza.uz

3. https://tsuos.uz

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

विदेशी भाषा सीखने और सिखाने में मातृभाषा का प्रभाव (उज़्बेकी में हिंदी सीखने के उदाहरण के रूप में)

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765635

डा० कमोला रहमतजनोवा
सैद्धांतिक और व्यावहारिक भाषाविज्ञान विभाग,
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

आज कल विदेशी भाषा सीखना बहुत आवश्यक है।एक नई भाषा सीखने सेलोगोंको दूसरों की बात बेहतर तरीके से समझने और जवाब देने का तरीका सीखने में मदद मिलती है। विदेशी भाषा सीखने का दस से ज्यादा कारण है:

- संवर्धित संचार कौशल - एक नई भाषा सीखने से आपको यह सीखने में मदद मिलती है कि दूसरों को कैसे बेहतर ढंग से सुनना और प्रतिक्रिया देना है। यह आपको सामाजिक संकेतों, संदर्भों और शारीरिक भाषा पर ध्यान देना सीखने में मदद करता है।

- कैरियर के अवसर - हाल के शोध से पता चलता है कि द्विभाषी कर्मचारी केवल एक भाषा बोलने वालों की तुलना में प्रति घंटे 5% से 20% अधिक पैसा कमा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, द्विभाषी कर्मचारियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय अवसर खुलते हैं।

- सांस्कृतिक संवर्धन - एक नई भाषा सीखना व्यक्तियों को इतिहास, राजनीति और संस्कृतियों के बारे में जानने के लिए प्रोत्साहित करता है। भाषा का अध्ययन व्यक्तियों को उन गतिविधियों में संलग्न होने के लिए भी प्रोत्साहित करता है जिन्हें वे अन्यथा कभी नहीं खोज पाते। शिक्षा के अवसर - विशेष शैक्षिक अवसरों (विदेश में अध्ययन, कार्यशालाओं के लिए चयन, छात्रवृत्ति आदि) में भाग लेने के लिए अक्सर द्विभाषी व्यक्तियों को एकभाषी व्यक्तियों के स्थान पर चुना जाता है।

- संज्ञानात्मक लाभ - द्विभाषी लोगों में अक्सर एकभाषी समकक्षों की तुलना में बेहतर ध्यान और कार्य-परिवर्तन क्षमता होती है। वे अधिक रचनात्मक भी हो सकते हैं, बेहतर धातु-भाषा संबंधी जागरूकता रखते हैं, और दृश्य-स्थानिक कौशल विकसित करने में बेहतर हो सकते हैं।

- सामाजिक संबंध - जो लोग एक से अधिक भाषाएँ बोलते हैं उनमें स्वतः ही अधिक लोगों से जुड़ने की क्षमता आ जाती है। सामाजिक संबंध बनाने से एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ व्यावसायिक और सामुदायिक संबंध बनते हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

- यात्रा और अन्वेषण - नई भाषा सीखने से अक्सर यात्रा में रुचि बढ़ती है। भाषा सीखने वाले अक्सर दूर-दराज के स्थानों की यात्रा करना चाहते हैं ताकि उन्हें और वहां रहने वाले लोगों को और अधिक व्यक्तिगत रूप से जान सकें।

- व्यक्तिगत विकास - एक नई भाषा सीखना चुनौतीपूर्ण है, जिससे शिक्षार्थियों को अपनी ताकत, कमजोरियों और वे कैसे सीखते हैं, इस पर फिर से विचार करना पड़ता है। भाषा अध्ययन छात्रों को नई रुचियाँ विकसित करने में भी मदद करता है।

- व्यक्तिगत रुचि - भाषा का अध्ययन अक्सर शिक्षार्थियों को भोजन और वित्त से लेकर कला, राजनीति और नृत्य तक हर चीज़ में नई रुचियों की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

- भाषाई शक्ति - किसी के साथ उसकी भाषा में संवाद करने की क्षमता शक्तिशाली है। यह दूसरों की समझ और दुनिया को अपने दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि दूसरे के दृष्टिकोण से देखने की इच्छा को प्रदर्शित करता है। तोविदेशी भाषा सीखने के कई फायदे हैं। हालाँकि, किसी अन्य भाषा को सीखना, समझना, बोलना, अपने विचारों को व्यक्त करना कोई आसान प्रक्रिया नहीं है।

लोगोंमें दूसरी भाषा सीखने पर मातृभाषा का प्रभाव महत्वपूर्ण है। मातृभाषा का प्रभाव किसी व्यक्ति की विचार प्रक्रिया और लक्ष्य भाषा में उच्चारण को प्रभावित कर सकता है। इससे बोलने और व्याकरण में कठिनाई हो सकती है, और प्रभावी संचार और शैक्षणिक प्रदर्शन में बाधा आ सकती है। मातृभाषा का हस्तक्षेप अन्य भाषाओं में व्याकरण की निपुणता में भी बाधा उत्पन्न कर सकता है। हालाँकि, बचपन की कक्षाओं में मातृभाषा का उपयोग बच्चों की सीखने की क्षमताओं को बढ़ावा देने में प्रभावी पाया गया है। कुल मिलाकर, मातृभाषा बच्चे के भाषा सीखने के अनुभव को आकार देने में भूमिका निभाती है और उनकी दूसरी भाषा सीखने पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ सकते हैं।किसी विदेशी भाषा को सीखने पर मातृभाषा के प्रभाव को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: हस्तक्षेप(interference) और सुविधा (facility)।

भाषाई हस्तक्षेप (linguistic interference) तब होता है जब एक भाषा दूसरे के उपयोग को प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो अंग्रेजी बोलता है लेकिन फिर हिंदी और फ्रेंच सीखता है, वह फ्रेंच बोलते समय गलत तरीके से हिंदी शब्दों और व्याकरण का उपयोग कर सकता है।

सुविधा (facility) - किसी विदेशी भाषा को सीखते समय उस भाषा के नियम और शब्द मूल भाषा के समान होते हैं, सीखने वाले के पास भाषा सीखने के अधिक अवसर होते हैं। भाषा विज्ञान में इस घटना को सुविधा कहा जाता है।

उज्बेकिस्तान में हिंदी एक विदेशी भाषा के रूप में व्यापक रूप से पढ़ाई जाती है।स्पष्ट है किभारत और उज्बेकिस्तान के बीच कई समानताएं हैं।यहां तक कि दोनों देशों की भाषाएं भी एक-दूसरे के काफी करीब लगती हैं।हालाँकि, यह केवल बाहर से है।क्योंकि हिंदी भाषा इंडो-आर्यन भाषाओं से संबंधित है, और उज़्बेकी भाषा तुर्क भाषा परिवार से संबंधित है।रूपात्मक

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

(morphological) दृष्टि से ये दोनों भाषाएँ एक ही समूह की नहीं हैं। हिंदी विभक्ति (inflectional) भाषा समूह की विश्लेषणात्मक (analytical) भाषाओं से संबंधित है, जबकि उज़्बेक एक समूहात्मक (agglutinative) भाषा है।मालूम है कि विदेशी भाषाएँ सीखने में मुख्य बाधा अध्ययन की जा रही भाषाओं की संरचना पर निर्भर करती है।भाषाएँ मुख्य रूप से उनकी ध्वन्यात्मक (phonetic), रूपात्मक (morphological), शाब्दिक (lexicon) और वाक्यात्मक (syntactic) विशेषताओं के अनुसार भिन्न होती हैं।

हिंदी और उज़्बेकी के बीच ध्वन्यात्मकता से लेकर वाक्य रचना तक कई अंतर हैं। ये अंतर उन लोगों के लिए हिंदी सीखना कठिन बना देते हैं जिनकी मातृभाषा उज़्बेकी है।उदाहरण के लिए, उज़्बेकी वर्णमाला में 29 अक्षर हैं और उनका उच्चारण सामान्य रूप से किया जाता है।तथा हिन्दी में 50 से अधिक अक्षर हैं, जो व्यंजन मेंमस्तिष्कात्मक (cerebral), श्वासात्मक (respiratory) तथा स्वरों को छोटा तथा लंबा स्वरों में विभाजित किया गया है। हालाँकि, हिंदी में अक्षर शब्दांश (syllable) वर्णमाला हैं। हिंदी में स्वरों का उच्चारण उज़्बेकीकी तरह नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, उज़्बेकी में 'a' अक्षर का उच्चारण हिंदी में दो तरह से किया जाता है, छोटा 'अ' और लंबा'आ'।इसके अलावा, उज़्बेकी में कोई अर्ध-स्वर (semitone) अक्षर नहीं हैंजैसे हिंदी में 'ऋ'।

हिन्दी व्यंजन प्रणाली की भी अनेक विशेषताएँ हैं। उज़्बेकी भाषा में ऐसी विशेषताएँ नहीं पाई जातीं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण मस्तिष्कात्मक (cerebral) और श्वासात्मक (respiratory)ध्वनियाँ हैं। उदाहरण के लिए, 'खा', 'घ', 'ध', 'फ', 'भ' जैसी ध्वनियाँ उज़्बेकी भाषा में नहीं पाई जाती हैं, और मूल उज़्बेकी शिक्षार्थियों को उनका उच्चारण करना बहुत कठिन लगता है।

इन दोनों भाषाओंमें कई रूपात्मक समानताएँ और भिन्नताएँ भी हैं।उदाहरण के लिए, दोनों भाषाओं में शब्द समूह और व्याकरणिक श्रेणियाँ समान हैं। परहिंदी में व्याकरणिक श्रेणियों की लिंग श्रेणी की अनुपस्थिति इस भाषा को सीखने में बड़ी कठिनाई पैदा करती हैक्योंकि उज़्बेकी में लिंग व्याकरणिक श्रेणी नहीं है।और उज़्बेक भाषा में अधिकारवाचक (possessive)श्रेणी है, हिंदी में यह श्रेणी नहीं है और वह जो अर्थ व्यक्त करती है वह अधिकारवाचक सर्वनाम के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदी में यह 'मेरी किताब', लेकिन उज़्बेकीमें यह 'kitobim'।

इन दोनों भाषाओं में रूप और अर्थ में कई समान शब्द हैं।उदाहरण के लिए, 'मुहब्बत', 'दोस्त', 'किताब', 'नान', 'कबाब', 'चाय' और आदि।बाह्य दृष्टि से दोनोंभाषाओं के शब्दकोष में कई शब्द समान प्रतीत होते हैं, लेकिन वे शब्दार्थ की दृष्टि से भिन्न होते हैं। जैसे हिंदी में 'तकलीफ करना' - दुःख, कष्ट, विपत्ति, संकट (जैसे–तक़लीफ़ में परेशान होना)।उज़्बेकी में भी 'taklif' शब्द है। पर इसका अर्थ 'निमंत्रण करना'।हिंदी में 'ज़ोर' शब्द है। उदाहरण के लिए 'ज़ोर से बोलना' - आप किसी को धीमे बोलते हैं। लेकिन वह नहीं सुनता, तब आप उसको ऊंचे आवाज़ से बोलते हैं।उज़्बेकीभाषा में भी"zor" शब्द है।परउसका अर्थ 'शाबाश' है।उसका प्रयोग अच्छे काम करने वाले और धन्य होने के लिए किया जाता है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यद्यपि दोनों भाषाएँ वाक्यात्मक रूप से समान हैं, कुछ क्रिया-विशिष्ट विशेषताएँ दोनों भाषाओं को अलग करती हैं।उदाहरण के लिए,हिंदी में'हम प्रतिदिन विश्वविद्यालय बस से जाते हैं'और'आप प्रतिदिन विश्वविद्यालय बस से जाते हैं'।देख सकते हैं की संज्ञा क्रिया से संबंधित है। संज्ञा से हम क्रिया को जानते हैं। हालाँकि, उज़्बेकी में, वाक्य का संज्ञा हमेशा क्रिया के माध्यम से जाना जाता है: 'Har kuni universitetga avtobusda boramiz (biz)', 'Har kuni universitetga avtobusda borasiz (siz)'.

उपरिलिखितदेख सकते हैं किजिनकी मातृभाषा उज़्बेक है उनके लिए हिंदी सीखना इतना आसान नहीं है।भले ही हिंदी सीखना उन लोगों के लिए आसान लगता है जिनकी मातृभाषा उज़्बेक है, वास्तव में, इन भाषाओं की आंतरिक विशेषताओं के आधार पर यह एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है। यह विशेष रूप से उच्चारण के मामले में स्पष्ट है।इसके अलावा, हमने ऊपर रूपात्मक, शाब्दिक और वाक्यात्मक बाधाओं पर विचार कियाहै।हिंदी सीखने में मातृभाषा संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण के लिए भारत जाना और देशी भाषियों से बातचीत करना जरूरी है।साथ साथसामान्य भाषा विज्ञान और अपनी मातृभाषा से संबंधित नियमों का अच्छा अध्ययन विदेशी भाषा को आसानी से और जल्दी सीखने में मदद करता है।

संदर्भ सूची

1. Irisqulov M. Tilshunoslikka kirish. - T.: O'qituvchi, 1992. - B. 256.
2. रामराजपल निवेदी ददल्ली – शब्दकोश व्याकरण निन्दी -, 2000. - पृ० 134.
3. Colin P. Masica the Indo-Aryan Languages, Cambridge, Cambridge University, 1991. - P. 553.
4. Suraj Bhan Singh A syntactic grammar of Hindi, Delhi, Bhanu printers, 2012. - P. 263.
5. https://www.ithaca.edu/
6. https://t.me/yorqinjonodilov

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान व भारत के सामाजिक परंपराएँ : समानता की भावना

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765645

आस्था शर्मा
(शोधार्थी, बनस्थली विद्यापीठ)
शोधार्थी, इतिहास व संस्कृति विभाग

उज़्बेकिस्तान मध्य एशियाई देशों में से एक है, **जिसकी राजधानी ताशकंद है**, **जो अरल सागर की सीमा से लगा हुआ है**। उज़्बेकिस्तान का क्षेत्र मैदानी इलाकों और पहाड़ी इलाकों का एक संयोजन है। भारत के साथ उज़्बेकिस्तान के संबंध सौहार्दपूर्ण रहे हैं तथा इन दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंध प्राचीनकाल से ही चले आ रहे हैं। इन्हीं सांस्कृतिक संबंधों की झलक इतिहास में भी दिखाई देती है।भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच ऐतिहासिक रूप से बहुत सी समानताएँ हैं, जैसे:पाली और संस्कृत साहित्य में कंबोज के नाम से वर्तमान उज्बेकिस्तान के कुछ हिस्सों का अक्सर उल्लेख मिलता है।प्राचीन व्यापार मार्ग उत्तरपथ उज्बेकिस्तान से होकर गुजरता था, जो उज्बेकिस्तान में फ़रगना,समरकंद,बुखारा को कवर करता था।ऐसा कहा जाता है कि बौद्ध धर्म उज्बेकिस्तान और मध्य एशिया से होते हुए चीन पहुंचा।दोनों देशों के बीच घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। उदाहरण के लिए मिर्जा गालिब और अमीर खुसरो उज़्बेक वंश के उल्लेखनीय भारतीय हैं।दोनों देशों के सामाजिक रीति रिवाजों में भी काफी समानता देखने को मिलती है।किसी भी सभ्य समाज की प्रमुख पहचान उसके रीति-रिवाज व संस्कार ही होते हैं। जिनमे उनके समाज व विश्वासों की परिणिती दिखाई पड़ती है। भारत व उज्बेकिस्तान के सामाजिक रीति रिवाजों में भी समानता दिखाई पड़ती है, यह समानता उनके जन्म संबंधित संस्कारों, परिवार की महत्ता, विवाह संस्कार आदि में स्पष्ट परिलक्षित होती है। जिन्हें कुछ उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है-

भारतीय वैदिक परम्परा में मनुष्य जीवन में सोलह संस्कार किये जाते हैं। संस्कार का अर्थ है संशोधन/परिशोधन/परिशुद्धि। हमारे शास्त्र पुनर्जन्म में आस्था और विश्वास को पोषित करते हैं। संस्कार के माध्यम से जीव की तीनों प्रकार (आध्यात्मिक-आधिभौतिक-आधिदैविक) शुद्धि होती है। हमारे शास्त्र मानव जन्म को मोक्ष-मुक्ति के योग्य मानते हैं, संस्कार के माध्यम से ही वह दोषमुक्त होकर अपना उद्धार कर सकता है। मानव जीवन की प्रत्येक अवस्था में संस्कार करने से जीव चौरासी लाख योनियों में घूमते हुए अपने साथ लाए गए सभी जन्मोंकी अशुद्धियों से मुक्ति पा सकता है और स्वयं को शुद्ध कर सकता है। संस्कार मनुष्य के लिए एक आवश्यक नियम माना गया है और इसलिए इस नियम का पालन करना अनिवार्य है। ऐसा माना जाता है, जो व्यक्ति अपने जीवन

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

में इन सोलह संस्कारों का पालन नहीं करता,उसका जीवन अधूरा रह जाता है। हमारी प्राचीन आर्य परंपरा सोलह संस्कारों पर अत्यधिक विश्वास रखती है तथा वर्तमान में भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन शैली में ये संस्कार पूर्ण रूप से पाए जाते हैं। ये संस्कार मानव जीवन को वैज्ञानिक रूप से प्रभावित करते हैं। इन सभी संस्कारों को करते समय प्रत्येक संस्कार के अनुसार वैदिक मंत्रों का जाप किया जाता है, जिनका अपना महत्व है। भारतीय परंपरा के अनुसार ये सभी संस्कार मनुष्य जीवन के लिए बहुत आवश्यक है, इन सभी संस्कारों का महत्व व प्रक्रिया अलग-अलग है।

1. **गर्भाधान संस्कार:** यह बालक के जन्म के पूर्व का संस्कार है। गर्भाधान संस्कार गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले नवदम्पत्तियों के लिए पारिवारिक दायित्व को संभालने हेतु पूर्व शिक्षण है। इस संस्कार में यह बताया जाता है कि आने वाली जीवात्मा परमात्मा का स्वरूप एवं प्रतिनिधि है।

2. **पुंसवन संस्कार:** गर्भस्थ शिशु के समुचित विकास के लिए गर्भिणी द्वारा सम्पन्न किया जाता है। पुसवन संस्कार से गर्भ पवित्र हो जाता है। इस संस्कार में गर्भिणी स्त्री के दाहिने नासिका छिद्र में वटवृक्ष की छाल का रस श्रेष्ठ सन्तान की उत्पत्ति के लिए छोड़ा जाता है। इसके पश्चात् गर्भपूजन करने के बाद परिवारजन श्रेष्ठ मन्त्रों का उच्चारण करते हैं।

3. **सीमांतोन्नयन संस्कार:** यह तीसरा संस्कार है। यह छठे तथा आठवें मास में किया जाता है।

4. **जातकर्म संस्कार:** जन्म के तुरन्त बाद सम्पन्न होता है। नाभि बन्धन से पूर्व वेद मन्त्रों के उच्चारण के साथ यह सम्पन्न होता है।

5. **नामकरण संस्कार:** शिशु कन्या है या कि पुत्र, इसका भेद न करते हुए यह संस्कार किया जाता है। सामान्यत: यह जन्म के दसवें दिन यज्ञ कर्म के द्वारा सम्पत्र होता था। जन्म के बाद प्रसूता का शुद्धिकरण भी हो जाता था। सभी उपस्थित व्यक्ति कलश में जल लेकर अभिषेक के द्वारा शिशु पर श्रेष्ठ संस्कारों के प्रभाव की कामना करते हैं। शिशु की कमर पर मेखला इस आशा से बांधी जाती है कि नवजात शिशु निष्ठा की दृष्टि से सदैव सजग रहे। अभिभावक शिशु की कमर पर मेखला बांधकर उसके संरक्षण के प्रति तथा उसे जीवन-भर दोष, दुर्गुणों से बचाये रखते हैं। इसके पश्चात् शिशु को सूर्य का दर्शन कराकर उसको प्रखर एवं तेजस्वी बनाने की कामना की जाती है। इसके पश्चात् सज्जित थाली में लिखा नाम सभी को दिखाते हुए आचार्य मन्त्रोच्चारण के साथ उसके नामन की घोषणा कहते हैं। उसे चिरंजीवी, धर्मशील एवं प्रगतिशील होने का आशीर्वाद देते हैं।

6. **निष्कमण संस्कार:** निष्क्रमण का तात्पर्य है: घर से बाहर निकालना। इस संस्कार में कोई वयोवृद्ध व्यक्ति बच्चे को गोदी में लेकर उसे बाहर का खुला वातावरण दिखाता है, ताकि बालक विराट ब्रह्मरूपी संसार को समझे। उसे सूर्य का दर्शन भी करवाया जाता है।

7. **अन्नप्राशन संस्कार:** यह शिशु के छठे मास में किया जाता है। उसे प्रथम अन्न ग्रहण करने के बाद यह भावना की जाती है कि बालक सदैव सुसंस्कारी अन्न ग्रहण करे। सुपाच्य खीर,

मधुरता का प्रतीक मधु, स्नेह का प्रतीक घी, विकार नाशक पवित्र तुलसी तथा पवित्रता का प्रतीक गंगाजल का सम्मिश्रण प्रत्येक विशिष्ट मन्त्रोच्चार के द्वारा भगवान् तथा यज्ञ के प्रसाद के रूप में बच्चे को खिलाया जाता है।

8. चूड़ाकर्म: चूड़ाकर्म संस्कार के साथ शिखा की तथा यज्ञोपवीत (उपनयन) के साथ सूत्र की स्थापना को भारतीय संस्कृति का आधार माना जाता है। जहां शिखा संस्कृति की गौरव पताका का प्रतीक है, वहीं सूत्र विशिष्ट संकल्पों एवं व्रतों का प्रतीक है। जन्म के पश्चात् प्रथम वर्ष के अन्त अथवा तृतीय वर्ष की समाप्ति के पूर्व यह सम्पन्न होता है। हिन्दू धर्म में यह मान्यता है कि मनुष्य कई योनियों में भटककर मानव योनि प्राप्त करता है। अत: उसके अनुपयुक्त एवं अवांछनीय संस्कारों का निष्कासन बालक के समुचित मानसिक विकास हेतु आवश्यक है। मुण्डन सदा किसी तीर्थस्थान या देवस्थान पर किया जाता है, ताकि सिर से उतारे गये बालों के साथ कुसंस्कारों का शमन हो सके। शिखा स्थान पर बालों का गुच्छा व्यक्ति की कुप्रवृत्तियों पर अंकुश रखता है।मुण्डन विधान में बालक के बालों को गौदुग्ध, दही में भिगोकर ब्रह्म, विष्णु महेश के प्रतीक के रूप में तीन गुच्छों में कुश तथा कलावे से बांधते हैं। इसका आशय यह है कि शुभ देव शक्तियां सदैव मस्तिष्क तन्त्र का इस्तेमाल करें।गायत्री मन्त्रोच्चार के साथ पांच आहुतियां यज्ञ में मिष्ठान्न के साथ दी जाती हैं। यज्ञशाला से बाहर मुण्डन कर बालों को गोबर में रख जमीन में गाड़ दिया जाता है। फिर मस्तिष्क पर स्वस्तिक या ओम शब्द चन्दन या रोली से लिखते हैं।

9. कर्णवेध संस्कार: इस संस्कार में शिशु का कर्ण छेदन किया जाता था, परंतुइस संस्कार का वर्तमान में कोई विशेष महत्त्व नहीं है।

10. विद्यारम्भ संस्कार: यह आयु के पांचवें वर्ष में तब सम्पन्न कराया जाता है, जब बालक शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता है। शिक्षा मात्र शिक्षा न रहकर विद्या बने, इसीलिए गणेश व लक्ष्मी के पूजन के बाद विद्या तथा ज्ञानवर्द्धन करने वाले इस संस्कार को सरस्वती का नमन कर पूर्ण किया जाता है। शिक्षा के उपकरण दवात, कलम, पट्टिका को वेद मन्त्रों से अभिमन्त्रित कर पूजन किया जाता है।विद्यार्थी गुरु को प्रणाम करता है। बालक पट्टी या कॉपी पर लिखता है, तो उस पर अक्षत छुड़वाकर बालक को तिलक लगाकर आशीर्वाद देते हैं। बालक श्रेष्ठ लोकसेवी व नागरिक बने, यही कामना की जाती है।

11. उपनयन संस्कार: यज्ञोपवीत, अर्थात उपनयन संस्कार दूसरा जन्म है। इस संस्कार में बालक को वैदिक मन्त्रोच्चारों के बीच विधि-विधान द्वारा तीन बंटे हुए धागों की पतली डोरी धारण करवाई जाती है। इसमें नौ धागे, नौ गुणों (विवेक, पवित्रता, बलिष्ठता, शान्ति, साहस, स्थिरता, धैर्य, कर्तव्य, समृद्धि) प्रतीक माने जाते हैं।यज्ञोपवीतधारी इसे मन्त्रोच्चार के साथ कन्धों पर धारण करते हैं और श्रेष्ठ कार्यो का संकल्प लेते हैं। भारतीय संस्कृति में लिंग, जाति, वर्ण आदि किसी भी प्रकार का भेदभाव किये बिना यज्ञोपवीत कराने की बात कही गयी है। यज्ञोपवीत व शिखा के बिना किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण नहीं होता है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

12. वेदारम्भ: यज्ञोपवीत संस्कार के साथ प्राचीनकाल में वेदारम्भ की शिक्षा प्रारम्भ होती थी। वेद जीवन विकास, जीवन एवं परिष्कार के महत्त्व को दर्शाते हैं। वेदों की शिक्षा प्रारम्भ करने से पूर्व बालक श्रद्धापूर्वक गुरु का पूजन करता है।इसके बाद उससे भिक्षा मांगने की क्रिया पूर्ण करवायी जाती है। इस क्रिया को परमार्थ प्रयोजन के रूप में किया जाता है।

13. केशान्त संस्कार: सिर के बाल जब उतारे जाते हैं, तब यह संस्कार होता है। बालक के केश किसी देवस्थान में उतारे जाते हैं। दूसरे या तीसरे वर्ष में बाल उतारने के बाद शिखाबन्धन होता है।

14. समावर्तन संस्कार: शिक्षा की समाप्ति पर किया जाने वाला यह सरकार है। यह संस्कार पचीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला शिक्षार्थी गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर पूर्ण करता है और अपने परिवार, समाज तथा -देश के प्रति सभी कर्तव्यों को पूर्ण करता है।

15. विवाह संस्कार: हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था का एक प्रमुख संस्कार है- विवाह संस्कार। विवाह को हमारी संस्कृति में शरीर का ही नहीं, मन तथा आत्मा का पवित्र बन्धन माना जाता है। इस संस्कार के पूर्ण होने पर पति-पत्नी एकसूत्र में बंध जाते हैं तथा एक-दूसरे के सुख-दुःख में समान रूप से सहभागी होकर जीवनपर्यन्त सभी प्रकार के धार्मिक, सामाजिक कर्तव्यों को पूर्ण करने की शपथ लेते है।वर-वधू अग्नि के चारों तरफ सप्त परिक्रमा लेते हैं। सप्तपदी के बाद अभिभावकगण कन्यादान करते हैं। पाणिग्रहण, ग्रन्थिबन्धन, सप्तपदी, शिलारोहण, लाजाहोम, शपथ, आश्वासन मांग भरना, (सुमंगली) यज्ञ आहुति जैसे धार्मिक विधि-विधान सम्पन्न होते हैं। वधू पक्ष वाले कन्या की विदाई करते हैं।

16. अंत्येष्टि संस्कार: मानव शरीर इस संसार की सबसे बड़ी विभूति है। मृत्यु इसकी चिरन्तन गति है। व्यक्ति जब मृत्यु को प्राप्त होता है, तो उसकी आत्मा की शान्ति व वातावरण की शुद्धि के लिए हमारी भारतीय संस्कृति में कुछ विशेष संस्कार किये जाते हैं।उसे अंत्येष्टि संस्कार कहते हैं। मृतक को इन संस्कारों द्वारा सम्मानपूर्वक विदाई दी जाती है। सर्वप्रथम मृत व्यक्ति को स्नान कराया जाता है। उसके मस्तक तथा शरीर पर चन्दन का लेप लगाया जाता है।श्मशान भूमि को गोबर मिट्टी से पवित्र किया जाता है। यज्ञ कुण्ड बनाया जाता है। मृतक शरीर की अंत्येष्टि हेतु वट, पीपल, आम, गूलर, ढाक, शमी, चन्दन, अगर इत्यादि पवित्र काष्ठों की लकड़िया एकत्रित की जाती हैं।मन्त्रोच्चार के साथ घी आदि से पांच पूर्णाहूतियां दी जाती हैं। शव का दाह संस्कार करके अंत्येष्टि के साथ पिण्डदान किया जाता है, जो जीवात्मा की शान्ति के लिए होता है। कपालक्रिया के बाद अस्थि, अवशेष एकत्र कर उसे कलश के लाल वस्त्र में लपेटकर किसी पवित्र स्थान गे धार्मिक विधि-विधान से विसर्जित कर दिया जाता है।शरीर समाप्त होने के तेरहवें दिन मरणोत्तर संस्कार किया जाता है। यह शोक, मोह की विदाई का विधिवत आयोजन है। दिवंगत जीवात्मा की सदगति के लिए अंत्येष्टि संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज्बेकिस्तान : जिस प्रकार भारतीय समाज में संस्कारों व परंपराओं का अत्यधिक महत्व है, उसी प्रकार उज़्बेक समाज में भी उनकी सामाजिक परंपराओं व रीति-रिवाजों का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। उज़बेकिस्तान की आबादी के बहुमत वाले उज़बेकों की परंपराएँ हर जगह एक जैसी नहीं हैं। लेकिन उनकी समानता उज़बेक परंपराओं का आधार है। उज़बेकों के रोज़मर्रा के जीवन में अनोखे रीति-रिवाज़ हैंऔर उन सभी को गिनना मुश्किल है। एक प्राचीन संस्कृति के आधार पर लोक ज्ञान और परंपराओं में से एक के रूप में गठित जो लंबे समय से विकसित हुई है। ये समारोह एक परिवारबच्चे के जन्म और मृत्यु के बाद के जीवनकाल से जुड़ी एक प्रणाली बनाते हैं।

विवाह से संबंधित समारोह: शादी की शुरुआत दुल्हन को चुनने और उसके घर जाने से होती है। दुल्हन चुनते समयउसका चरित्र,उम्र,रूप और करीबी रिश्ते महत्वपूर्ण होते हैं और यह "लड़की को देखने" और "घर देखने" की प्रक्रिया में पूरा होता है। दुल्हन के चयन के बादरोटी तोड़ने"का समारोह आयोजित किया जाता है, जिसमें बुजुर्ग महिलाओं में से एक दो पारिवारिक मिलन और समझौतों के संकेत के रूप में रोटी तोड़ती है। सभी ऐतिहासिक चरणों मेंशादी का मुख्य आधार धार्मिक विवाह है।इसलिएविवाह के राज्य पंजीकरण के साथ-साथ धार्मिक विवाह भी किए जाते हैं। विवाह का अंतिम चरण दुल्हन के नए घर में आने,दूल्हे के रिश्तेदारों से परिचय और "केलिन सलोम" समारोहों के साथ समाप्त होता है।

बच्चे के जन्म से संबंधित अनुष्ठान- इसमें अज़ोन, अकीका-तोई,बाल (कोकिल) विवाह,बेशिक तोई,ओघिल तोई और मुचल तोई शामिल हैं। इन समारोहों में कई परंपराओं को संरक्षित किया गया है

कुछ स्थानों पर बच्चे को पहली बार पालने में डालने के अवसर परएक समारोह होता है,जबकि अन्य स्थानों पर इसमें दो समारोह होते हैं। आमतौर पर बच्चे को उसके जन्म के विषम दिनों में पालने में लिटाया जाता है। जन्म के सातवें,नौवें या ग्यारहवें दिन, मुख्यतः शुक्रवार को। बच्चे के जन्म के 40वें दिन के बाद,जिस दिन परिवार के लिए सुविधाजनक हो,उस दिन विशेष भोज (बेशिकतोई) आयोजित करने की प्रथा है। दोनों (माता व पिता) पक्षों के सबसे करीबी रिश्तेदारों को अनुष्ठान में आमंत्रित किया जाता है और बुजुर्ग दादियाँ युवा माँ को बच्चे को पालने में लिटाने का तरीका सिखाती हैं। सबसे पहले कायवोनी यायोल (ज्ञानी महिलाएँ,विवाह और समारोहों की स्वामी) के नेतृत्व में बच्चे को नहलाया जाता है। बच्चे को पानी में डालने से पहले,उसके शरीर पर विशेष रेत का अभिषेक किया जाता है। इसका उद्देश्य अवांछित बालों को दूर रखना और पानी डालना है। अगला चरण है कतीक (दही) का अभिषेक करना ताकि बच्चे की त्वचा कोमल और पीली हो जाए। जिस बर्तन में बच्चे को नहलाया जाता है,उसमें चांदी के सिक्के (चांदी पानी को कीटाणुओं जैसे कीटों से साफ करती है) और सोने की वस्तुएं डाली जाती हैं,ताकि बच्चा भरपूर जीवन जिए।

बच्चे को नहलाने के बाद,उसे नए कपड़े पहनाए जाते हैं और पालने के सामने लाया जाता है। बच्चे को पालने में लिटाया जाता है (सिर की तरफ किबला की ओर इशारा किया जाता है) और

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कायवोनी अयोल पालने के चारों ओर 4 या 6 चम्मच घुमाता है। पालने के चारों ओर सम संख्या वाले चम्मच घुमाना इस परिवार के भावी बच्चों के लिए अबुन नृत्य का प्रतीक है। फिरपालने के पर्दे बंद कर दिए जाते हैं और कायवोनी अयोल, बच्चे की माँ से दो पातिर (रोटी का एक प्रकार) या रोटी काटने के लिए कहता है। इस अनुष्ठान का अर्थ है माँ को बच्चे को खिलाने के लिए पर्याप्त दूध की कामना करना और बच्चे के लिए भरपूर जीवन की कामना करना। माँ द्वारा काटी गई रोटी को रख लिया जाता है या मेहमानों को दे दिया जाता है। कायवोनी अयोल, धूप का धुआँ छोड़ता है और उसे पालने के चारों ओर घुमाता है। ऐसा करके वह कमरे में हवा साफ करती है और बच्चे को नकारात्मक ऊर्जा से बचाती है। माँ बच्चे को स्तनपान कराती है और उसे सुलाती है और उसके आस-पास की महिलाएँ बच्चे के लिए लोरी गाती हैं।

सुन्नत खिलौना या खतनाके दिन बच्चों को पुरस्कार दिए जाते हैं साथ ही बच्चों के खेल (जैसे "ओल्टिनकोवोक" - खोरेज़्म में, "कुलोक्चोज़दी" - फ़रगना घाटी में, "मस्त बोला" - ताशकंद में, आदि) भी आयोजित किए गए। उत्सव के अंत में एक कुशल नाई ने एक लड़के का खतना किया जाता है (जिसके सम्मान में वास्तव में यह आयोजन किया गया था)। हालाँकि, आजकल खतना शल्य चिकित्सकों द्वारा किया जाता है। खतना के दौरान, लंबी उम्र और समृद्धि की कामना करते हुए, लड़के को रोटी(ब्रेड) दी जाती है, जिसे वह एक टुकड़ा खाता है, ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि बच्चे को पीड़ा का अहसास कम हो । यह समारोह तब आयोजित किया जाता है, जब बच्चा 3-5-9 साल का होता है, कभी-कभी इससे भी बड़ी उम्र में। उज्बेकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रों में इस समारोह को अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे "सुन्नत तोयि", "चिप्रोन", "चुक्रोन", "खतनातोयि", "कोलनिहालोलश (पोकलाश)"। सुन्नत तोयि का इतिहास आदिम जनजातियों में वयस्कता और बच्चों के किशोरावस्था में संक्रमण काल के उत्सवों तक जाता है। उस समय बच्चों के खतने की प्रथा प्रचलित थी और यह गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों में स्वच्छता के नियमों के पालन का साधन था, साथ ही यह साहस और वीरता का प्रतीक था। खतना स्थानीय रीति-रिवाजों से जुड़ गया । इस उत्सव में पलोव चढ़ाना सबसे बड़ा समारोह माना जाता है। चाय के बाद मेहमानों को पलोव पेश किया जाता था, जो इस समारोह के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता था। एक भोज का आयोजन किया जाता था, कविताएँ पढ़ी जाती थीं और भीतरी कमरों में (महिलाएँ अंदर होती थीं) बख्शियों द्वारा दोस्तों के अंश प्रस्तुत किए जाते थे। शादी के दिन बच्चे की माँ की ओर से उसकी दादी उसे विशेष रूप से सजाए गए बछेड़े के साथ-साथ विभिन्न पोशाकें भेंट करती हैं। लड़का बछेड़े पर सवार होकर करनय-सुरनय की धुनों के साथ गाँव की गलियों में घूमता है।

मुचल आयु समारोह : वह समारोह था,जो मानव जीवन में बारह वर्षों में एक बार मनाया जाता है। परंपरा के अनुसारमुचल आयु नवरौज अवकाश के दौरान मनाई जाती थी।अधिक विशेष रूप सेबारह-वर्षीय चक्र के अंत के बाद (यानी 12-13, 24-25, 36-37 वर्ष की आयु में)। पहले मुचल काल का अंतयानी 12 वर्ष की आयु का होनाआमतौर पर गंभीरता से और भव्यता के साथ मनाया जाता था (अन्य मुचल आयु की तुलना में)। मुचल आयु को समर्पित समारोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों की भागीदारी के साथ किया जाता है । समारोह के दौरान प्रतिभागियों को विशेष दावत दी जाती है । विभिन्न स्थानों पर भोज का आयोजन अलग-अलग तरीके से किया जाता है। नियम के अनुसार 12 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाले सभी बच्चे सफेद कपड़े पहनते हैं, एक स्थान पर एकत्रित होते हैं और एक-दूसरे को बधाई देते हैं । सफेद रंग को पवित्रता और अच्छाई का प्रतीक

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

माना जाता हैं। बच्चों को बिल्कुल सफेद रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं , ताकि ऐसी पवित्र इच्छाएँ उनके जीवन भर उनके साथ रहें। नवरूज पर मुचल आयु प्राप्त करने वाले लड़के और लड़कियाँ एक-दूसरे के घर आते हैं और एक-दूसरे को बधाई देते हैं,फिरवे निर्दिष्ट स्थान पर एकत्रित होते हैं।

निकोह (विवाह समारोह) एक उत्सव हैजिसका आयोजन दूल्हा और दुल्हन के बीच विवाह के समापन की घोषणा करने के उद्देश्य से किया जाता है। अरबी में "निकोह" का अर्थ है शरिया कानूनों के साथ विवाह को वैध बनाना। विवाह समारोह में तीन भाग होते हैं और इसमें वे समारोह शामिल होते हैंजो विवाह से पहलेउसके दौरान और बाद में किए जाते हैं। मैचमेकर्स को भेजना और सगाई इस समारोह का पहला भाग है,विवाह का पंजीकरण और उसका गंभीर उत्सव - दूसरा भागऔर "युज़ोचदी" ("दुल्हन का चेहरा खोलना")‚‚केलिनसालोम" ("दुल्हन का अभिवादन"),‚‚कुयो वोशी" ("दूल्हे का पालोव"),“कुदा चाकिरीक" ("मैचमेकर्स का निमंत्रण") जैसे समारोह करना - तीसरा भाग है। एक नियम के रूप में दुल्हन का पक्ष सफ़ेद कपड़े देकर अपनी सहमति व्यक्त करता है। "फ़ोतिहा तोयी" (सगाई की रस्म) के अंत मेंआपसी सहमति के आधार परआधिकारिक शादी का दिन तय किया जाता है। निकोह समारोह शादी के एक दिन पहले या उसी दिन दुल्हन के घर में आयोजित किया जाता है (हाल के दिनों से दुल्हन के घर के पास की मस्जिद में)।दूल्हा अपने करीबी दोस्त,चाचा (या किसी अन्य रिश्तेदार) के साथ बताए गए स्थान पर आता है। काजी भावी दूल्हे को विवाह की जिम्मेदारियाँ और अधिकार समझाता है और लड़की की यांगा (दुल्हन के प्रतिनिधि) के माध्यम से उसकी सहमति प्राप्त करता है। और उसके बाद ही मुल्ला "निकोह खुतबासी" ("शादी की प्रार्थना") पढ़ता है। दूल्हा अपनी दुल्हन को अपने घर ले जाने से पहलेनिम्नलिखित रस्में और समारोह मनाए जाते हैं: "केलिन्याशिरार",‚‚तोश तलशर",‚‚इट इरिलर" "चिरोकयलंतिरार", ‚‚कम्पिर ओल्डी", ‚‚कम्पिर तुश कोर्डी", ‚‚सोच सियपतर",‚‚कोल क़िसर",‚‚तोशाक टोल्डिरार" और उनमें से कुछ आज तक संरक्षित हैं। शादी के दिन या उससे थोड़ा पहलेदुल्हन पक्ष (कभी-कभी दूल्हे का पक्ष भी) पालोव समारोह आयोजित करता है। पालोव समारोह पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग आयोजित किया जाता है। शादी के दिनदोनों पक्ष अपने रिश्तेदारों के साथ शादी समारोह में इकट्ठा होते हैं। रिश्तेदार शादी के उपहार लेकर आते हैं। शादी के बाद सबसे बड़े समारोहों में से एक "केलिनसालोम" ("दुल्हन का अभिवादन") है। समारोह का उद्देश्य दूल्हे के रिश्तेदारों को दुल्हन से मिलवाना है।

केलिन सालोम :शादी के बाद सबसे बड़े समारोहों में से एक है "केलिन सालोम" (दुल्हन का अभिवादन)।इस समारोह का उद्देश्य दूल्हे के रिश्तेदारों को दुल्हन से मिलवाना है।यह समारोह अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग तरीके से आयोजित किया जाता है।उदाहरण के लिए,ताशकंद क्षेत्र और ताशकंद शहर में शादी के अगले दिन दुल्हन के साथ आई महिलाएँ और दूल्हे के सबसे करीबी रिश्तेदार इकट्ठा होते हैं।घर के आंगन के द्वार के पास एक विशेष स्थान तैयार किया जाता है और दुल्हन को उसके ‘यांगा’, दुल्हन के मुख्य साथी) इस स्थान पर लाते हैं। दुल्हन के चेहरे पर रूमाल (या छोटा पर्दा) सबसे छोटे बच्चों द्वारा उपजाऊ पेड़ से बनी लकड़ी की छड़ी की मदद से गिराया जाता है। पहले दुल्हन अपना चेहरा खोलने के बाद दूल्हे के बच्चों और रिश्तेदारों को रूमाल (खुद से कढ़ाई किए हुए) और अन्य उपहार देती थी। दुल्हन जब सभी रिश्तेदारों को बधाई दे देती है,तो मेहमानों के लिए भोज का आयोजन किया जाता है। पहले यह समारोह शादी के अगले दिन

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

आयोजित किया जाता था,लेकिन आजकल कुछ क्षेत्रों में इसे शादी की रात को आयोजित किया जाता है।

इसी प्रकार अन्य कई परंपरा भी उज़्बेक समाज में प्रचलित हैं । उदाहरण के लिए, जब लोग एक-दूसरे से मिलते हैं तो अभिवादन करना,भोजन करने से पहले हाथ धोना,दूसरों की बात सुनना, बड़ों का सम्मान करना,मेहमानों के प्रति आदर प्रकट करना आदि । जब भी कोई मेहमान घर में आता है, तो उसे सबसे पहले खाना परोसा जाता है, तथा उसके आथित्य में कोई कमी नहीं रखी जाती। यह परंपरा भारतीय संस्कृति के अतिथि देवो भवः परंपरा से बहुत साम्यता रखती है। इसके अलावा भी अनेक ऐसे दैनिक जीवन के कार्य हैं, जो भारतीय व उज़्बेक समाज में समान रूप से व्याप्त हैं। इनमें शामिल हैं: अभिवादन (बुजुर्गों को अभिवादन),भोजन करने से पहले और बाद में हाथ धोना,सुबह के बाद चेहरा और हाथ धोना,दिन के दौरान साफ-सुथरा चलना,वयस्कों,माता-पिता का सम्मान करना,उन्हें बूढ़ा होने पर अकेला नहीं छोड़ना,आगंतुकों का सम्मान करना,पुरुषों का परिवार का मुखिया होना,मेहमानों का सम्मान करना,बच्चों की शादी और विवाह,मृतक लोगों की आत्मा के लिए प्रार्थना करना आदि।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता हैकि भारत व उज्बेकिस्तान के जो सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से चले आ रहे हैं, वे आज भी इनकी प्रचलित परंपराओं में परिलक्षित होते हैं। भले ही भौगोलिक विषमताओं की वजह से किसी कार्य को करने का तरीका अलग हो, परंतु इन उत्सवों व परंपराओं का मुख्य ध्येय एक ही है, जैसे- मौसम बदलने पर, फसल पकने पर, विवाहादि के मौके पर, जन्मोत्सव पर या मृत्यु संस्कार के समय। इन सभी परंपराओं के पीछे की भावना एक ही है।

संदर्भ :

1. अथर्ववेद,14/1/58,14/2-31,32,38,39

2. वामन शिवराम आप्टे,संस्कृत-हिन्दी कोष

3. अय्यर, रामास्वामी. द कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया. वॉल्यूम 2, कलकत्ता, द रामकृष्णा मिशन इंस्टिट्यूट, 1969.

4. पांडे, राजबली. द सिक्स्टीन संस्कार. न्यू दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास, 1993.

5. लॉरेल, मारलेने(संपादक). उज्बेकिस्तान पोलिटिकल ऑर्डर एंड ट्रांसफॉर्मेशन सोसेटियल चेंजेस. वाशिंगटन, डी. सी., द जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, सेंट्रल एशिया प्रोग्राम, 2017.

6. मामुबरेक, उत्किर. उगली, कारिमोव. सुन, मी किम. चांगहों, चोई. ग्लोबल स्ट्रेटर्जी फॉर कल्चरल टुरिज्म ऑफ उज्बेकिस्तान. स्पेक्ट्रम जर्नल ऑफ इनोवेशन, रिफॉर्म एण्ड डेवेलपमेंट, जेओनबक नैशनल यूनिवर्सिटी, वॉल्यूम 07, सितंबर 2022.

7. एडम्स, एल, लौरा. व्हाट इज कल्चर ? स्कीम एण्ड स्पेक्टकल्स इन उज्बेकिस्तान. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बरकेली.

8. अब्दुल्लाएव, रुस्तमबेक. ताशमतोव, उराजली. एशओनकुलोव, जब्बोर. आशिरोव, अदखम. खाकीमोव, अकबर. इंटैनजीबल कल्चरल हेरिटिज ऑफ उज्बेकिस्तान. नैशनल कमिशन ऑफ उज्बेकिस्तान फॉर यूनेस्को, 2017

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकी साहित्यिक यात्रा : भारतीय नज़रिया

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765655

डॉ. अनुराधा शुक्ला

सहायक प्रोफेसर (बिजनेस कम्युनिकेशन)
नरसी मोनजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट,नवी मुंबई
महाराष्ट्र, भारत

भारत और उज़्बेकिस्तान के संबंध एक प्राचीन इतिहास से जुड़े हैं, जो एक-दूसरे के साथ विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक, और वाणिज्यिक रूप से संवाद करते आए हैं। यूरोपीय साम्राज्यों के शासन काल में, उत्तरी भारतीय सभ्यताओं और उज़्बेकिस्तानी खानावलियों के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का इतिहास रहा है। यही विशेषता उनके संबंधों में एक अद्वितीयता और गहराई को दर्शाती है। (इस्मतुल्लाएव) 1 यहां भारत और उज़्बेकिस्तान के संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर इतिहास और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए उज़्बेकी साहित्य की संपूर्ण यात्रा को प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस बात से भी हमारा परिचय है, भारतीय और उज़्बेकिस्तानी साहित्य में प्रेम कहानियाँ एक महत्वपूर्ण भाग रही हैं, जो समाज, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रतिबिम्बनों को दर्शाती हैं।प्राचीन लोककथाएँ जैसे " तख़ीर और ज़ुखरा ", "फ़रहाद और शिरीन", "लेयली और मजनूं", आदि उज्बेक साहित्य की क्लासिक्स हैं।

"उज़्बेकी साहित्य का सच्चाईकरण उसकी सांस्कृतिक और भावनात्मक समृद्धता में छिपा है, जो विचारों और भावनाओं को नये रूपों में व्यक्त करता है।" (शर्मा) 2

उज़्बेक साहित्य , मध्य एशिया के उज़्बेक लोगों द्वारा निर्मित लिखित कार्यों का समूह है , जिनमें से अधिकांश उज़्बेकिस्तान में रहते हैं, तथा उनकी छोटी आबादी अफ़गानिस्तान, ताजिकिस्तान और किर्गिज़स्तान में भी रहती है।

यद्यपि इसकी जड़ें 9वीं शताब्दी तक जाती हैं, आधुनिक उज़्बेक साहित्य का मूल भाग काफी हद तक चगताई साहित्य और चगताई की तुर्क साहित्यिक भाषा में लिखी गई रचनाओं का एक समूह है। चगताई साहित्य की सबसे पुरानी रचनाएँ 14वीं शताब्दी की हैं, लेकिन आधुनिक उज़्बेक भाषा के पाठकों के लिए आसानी से उपलब्ध हैं । आधुनिक उज़्बेक ने आज मध्य एशिया में तुर्क ऐतिहासिक और साहित्यिक कार्यों के लिए संदर्भ भाषा होने की भूमिका को ग्रहण कर लिया है, जो कभी चगताई द्वारा निभाई जाती थी, जो 20वीं शताब्दी की शुरुआत में लगभग लुप्त हो गई थी।

उज़्बेक साहित्य का शास्त्रीय काल 9वीं से 19वीं सदी के उत्तरार्ध तक चला। उस अवधि के दौरान कई साहित्यिक कृतियाँ लिखी गईं, जो अक्सर तुर्क सम्राटों, राजाओं, सुल्तानों और अमीरों के संरक्षण में लिखी गईं। तुर्किस्तान के रूप में जाने जाने वाले ऐतिहासिक क्षेत्र के तुर्क साहित्य के सबसे प्रसिद्ध संरक्षकों में - जिसमें आज का उज़्बेकिस्तान और साथ ही आसपास के कई देश शामिल हैं - क़ाराख़ानिड्स (10वीं-13वीं शताब्दी) शामिल हैं; तैमूरिड्स (14वीं-16वीं शताब्दी) जैसे कि तैमूर (तैमूर लंग), शाहरुख, उलूग बेग , हुसैन बक़रा और भारत में मुगल वंश के संस्थापक बाबर ; और कोकंद की खानते के 19वीं सदी के शासक उमर खान।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

10वीं से 12वीं शताब्दी तक, उज़्बेक लिखित साहित्य तुर्की लिपि से अरबी लिपि में स्थानांतरित हुआ। इस परिवर्तन ने उज़्बेक लेखकों को अरबी साहित्य के प्रभाव के लिए खोल दिया; इसका परिणाम यह हुआ कि उज़्बेक साहित्य में व्यापक परिवर्तन हुए क्योंकि इसने अरबी कविता और गद्य के कई रूपों और कुछ भाषा को अपनाया। इस अवधि के कार्यों में यूसुफ ख़ास हाजीब की कुतुदगु बिलिग ("ज्ञान जो खुशी की ओर ले जाता है"; अंग्रेजी अनुवाद। शाही गौरव की बुद्धि), 1069-70 में लिखी गई; महमूद काशगारी की दीवान लुघाट अल-तुर्क (तुर्किक बोलियों का संग्रह), 1072-74 में संकलित; और अहमद युगनाकी की 12वीं सदी की हिबात अल-हक़ाइक ("सत्य को उपहार")

अन्य मध्य एशियाई कवियों में से जिनका उज्बेक साहित्य पर स्थायी प्रभाव था, वे हैंअहमद येसेवी , 12वीं सदी के एक धार्मिक कवि थे जो महान सूफी नेता यूसुफ हमदानी के अनुयायी थे। अहमद येसेवी की कविताओं को दीवान-ए-हिकमत ("बुद्धि की पुस्तक") के रूप में संकलित किया गया है - जिसने मध्य एशियाई तुर्क साहित्य की एक नई शैली का गठन किया : एक धार्मिक लोक कविता। उन्होंने एक लोकप्रिय स्थानीय भाषा का इस्तेमाल किया जिसमें थोड़ी अरबी और फ़ारसी उधार ली गई थी और जिसमें एक तुर्क शब्दांश मीटर था ।

13वीं और 14वीं शताब्दियों में चगताई में लिखी गई रचनाओं का उदय हुआ, एक ऐसी परंपरा जिसका साहित्य पर गहरा प्रभाव था जिसे बाद में उज्बेक के रूप में वर्गीकृत किया गया। इस अवधि के कवियों में, जिनकी रचनाएँ आधुनिक समय तक संरक्षित हैं और आज भी लोकप्रिय हैं, वे हैं ख़्वारिज़्मी, जो अपने मुहब्बतनामा ("प्रेम पत्र") के लिए जाने जाते हैं; कुतब खोराज़मी, जिन्होंने 1340 में नेज़ामी के रोमांटिक महाकाव्य खोसरो ओ-शीरिन ("खोसरो और शीरिन") का अनुवाद किया; और दुर्बेक, जो अपने यूसुफ ओ-जुलयखा ("यूसुफ और जुलयखा") के लिए जाने जाते हैं । 14वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 15वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, ट्रांसोक्सानिया और खोरासान के क्षेत्र—विशेषकर समरकंद और हेरात शहर —मध्य एशिया में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के केंद्र बन गए। तिमुरिड्स के तहत, चगताई में लिखे गए साहित्य का गहन विकास हुआ। कई काव्य विधाएँ विकसित हुईं, जिनमें गीत , शोकगीत और रोमांटिक डेस्तान (एक मौखिक महाकाव्य कविता) शामिल हैं। गद्य में कई रचनाएँ, विशेष रूप से ऐतिहासिक रचनाएँ भी लिखी गईं। इस अवधि के कई उत्कृष्ट कवियों में से,लुत्फ़ी ग़ज़ल (गीतात्मक प्रेम कविता) और तुयुग (तुर्की कविता, रोबाई के समान) के महान गुरु थे , और उन्होंने अपने समय के कवियों पर व्यापक प्रभाव डाला। अपनी एकमात्र कथात्मक कविता, गुल वा नवरूज़ (1411 में लिखी गई; "गुल और नवरूज़") में, उन्होंने आदर्श प्रेम की प्रशंसा की। सक्काकी, जो उस दौर के प्रमुख कवियों में से एक हैं, अपने दीवान (कविताओं का संग्रह) के लिए सबसे ज़्यादा जाने जाते हैं, जिसमें उलूग बेग को समर्पित मुनाजात (भजन), ग़ज़लें और क़सीदे (कविताएँ) शामिल हैं। लेकिन यहगदाई 14वीं और 15वीं सदी के सबसे उल्लेखनीय उज़्बेक कवि थे। हालाँकि उनके दीवान को सुरक्षित रखा गया है, लेकिन उनके जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी है। यहाँ तक कि कवि का मूल नाम भी अज्ञात है; गदाई की उत्पत्ति उनकी ग़ज़लों में तहल्लुस (उपनाम) के रूप में गदा ("भिखारी") के उपयोग से हुई है । उनके दीवान में 229 ग़ज़लें , 5 तुयुग , 2 कसीदा और 1 मुस्तज़ाद (एक कविता जिसमें हर दूसरी अर्धांश या आधी पंक्ति के बाद एक छोटी छंदबद्ध पंक्ति होती है जिसका अर्थ बदले बिना पहली अर्धांश के अर्थ पर कुछ असर पड़ता है) शामिल है।

चगताई - जो अंततः आधुनिक उज़्बेक में विकसित हुआ - ने किसकी रचनाओं में अपना शास्त्रीय आकार ग्रहण किया, अली शिर नवाज़ी , एक उत्कृष्ट विचारक और महान कवि होने के साथ-साथ अपने समय के एक प्रसिद्ध साहित्यिक संरक्षक भी थे। वह एक राजनेता और सुल्तान हुसैन बक़रा के दरबार के एक प्रमुख सदस्य भी थे। मध्य एशिया के तुर्क लेखकों पर और विशेष रूप से उज्बेक लेखकों पर नवाज़ी के प्रभाव को

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कम करके नहीं आंका जा सकता है। उनके चार दीवानों में, जिसमें चगताई में लिखी गई गीतात्मक कविता की दसियों हज़ार पंक्तियाँ हैं, 14वीं और 15वीं शताब्दियों के दौरान प्रचलित लगभग हर साहित्यिक शैली के उदाहरण हैं। उन्होंने फ़ारसी में फ़ानी नाम से ग़ज़लें भी लिखीं। नवाज़ी के महत्वपूर्ण कार्यों में लिसान उल-तैर ("पक्षियों की भाषा"), 1498 में पूरी हुई एक रहस्यमय मसनवी (दोहों में कविता) शामिल है; मजालिस-ए-नेफा'ईस (1491; "द एक्सक्लूसिव असेंबलीज़"), एक गद्य रचना जिसमें नवा'ई ने 14वीं और 15वीं शताब्दी के प्रमुख कवियों का संक्षिप्त विवरण दिया; और मिज़ान अल-अवज़ान (1498; "द बैलेंस ऑफ़ मीटर्स"), तुर्किक प्रोसोडिक सिस्टम पर एक ग्रंथ । वह कई ऐतिहासिक और वैज्ञानिक ग्रंथों के लेखक भी थे , जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण मुहाकामत अल-लुगतायन (1499; "दो भाषाओं पर निर्णय") है, जो फ़ारसी और चगताई भाषाओं की सापेक्ष खूबियों की तुलना करता है।

बाबर , तिमुरी राजवंश का एक राजकुमार था, जिसे 12 वर्ष की आयु में फरगाना (अब उज्बेकिस्तान में) की रियासत का राजा बनाया गया था और वह भारत में मुगल राजवंश का संस्थापक था , वह एक उत्कृष्ट चगताई कवि और लेखक भी था। न केवल चगताई साहित्य में बल्कि मध्य एशियाई साहित्य और इतिहासलेखन में सबसे आकर्षक कार्यों में से एक उसका संस्मरण, बाबर-नामेह है , जिसे 16वीं शताब्दी के दौरान स्पष्ट और परिष्कृत चगताई गद्य में लिखा गया था।

17वीं से 19वीं शताब्दी तक उज्बेक साहित्य तीन स्वतंत्र राज्यों में अलग-अलग विकसित हुआ।उज़्बेक खानते , जिनमें से दो की स्थापना 15वीं शताब्दी में हुई थी (बुखारा औरख़िवा (ख़्वारेज़्म) और तीसरा 18वीं सदी के मध्य में (कोकंद)। ''17वीं से 19वीं शताब्दी तक उज़्बेक साहित्य तीन स्वतंत्र उज़्बेक खानतों में अलग-अलग विकसित हुआ, जिनमें से दो की स्थापना 15वीं शताब्दी में (बुखारा और खिवा [ख्वारेज़्म]) और तीसरी की स्थापना 18वीं शताब्दी के मध्य में (कोकंद) में हुई थी।'' (विकिपीडिया) 3 बुखारा में सबसे प्रसिद्ध कवि मुजरिम ओबिद थे, जो 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी के आरंभ के सर्वश्रेष्ठ गीत कवियों में से एक थे; नवावी के अनुयायी तुरदी जिन्होंने सूफ़ी कविताएँ लिखीं, हालाँकि बाद में उनकी कविताओं का चरित्र और मूल भाव बदल गया जब उन्होंने सामाजिक रूप से जुड़ी कविताएँ लिखना शुरू किया; और सईदो नसाफ़ी। 17वीं सदी के ख़िवा के खान अबू अल-गाज़ी बहादुर ने उज़बेकों, तुर्कमेन, कज़ाकों और कराकल्पकों के इतिहास पर लिखा। उन्होंने इनमें से कई लोगों की लोक कथाओं , कहानियों, कहावतों और कथनों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सबसे उल्लेखनीय रचनाएँ शजारे-ए तरकीमे (1659; "तुर्कमेन का वंशावली वृक्ष") और शजारे-ए तुर्क (1665 में उनके बेटे द्वारा मरणोपरांत पूरा किया गया; "तुर्कों का वंशावली वृक्ष") हैं। 18वीं सदी के एक महत्वपूर्ण कवि निशात ने चगताई में अंतिम प्रमुख मसनवी की रचना की । 19वीं सदी के प्रमुख ख़िवान लेखकों में शामिल हैं शेरमुहम्मद मुनिस और मुहम्मद आगही , कवि और इतिहासकार दोनों थे। मुनिस ने ख़ीवा का इतिहास फ़िरदौस-उल इक़बाल ("ख़ुशी का स्वर्ग") लिखना शुरू किया, लेकिन वे केवल परिचय और पहले अध्याय ही लिख पाए; इसे अंततः उनके भतीजे आगही ने पूरा किया। कोकंद खानते ने 17वीं शताब्दी के दौरान मशरब, 18वीं शताब्दी के दौरान महमूर और 19वीं शताब्दी के दौरान मुहम्मद शराफ़ गुलखानी, उवेसी और नोदिरा जैसे उत्कृष्ट कवियों को जन्म दिया।

उज़्बेक खानों में ज़ारिस्ट औपनिवेशिक काल स्वदेशी साहित्य के लिए एक अंधकारमय, दुखद युग था । इन खानों पर सैन्य आक्रमण और कब्जे की शुरुआत से - 1868 में बुखारा पर आक्रमण किया गया और 1873 में खिवा पर, 1876 में कोकंद पर कब्ज़ा कर लिया गया; तीनों तुर्किस्तान के रूसी प्रांत का हिस्सा बन गए - रूसियों ने अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए साहित्य का उपयोग करने की कोशिश की। मुकीमी जैसे उज़्बेक लेखक,फुरकत , ज़ावकी, दिलशाद, अनबर अतीन और नाज़िमखानम को अपनी रचनाओं में रूसी संस्कृति और समाज की प्रशंसा करने के लिए मजबूर किया गया था। कोकंद से ताल्लुक रखने वाले फुरकत

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

इन लेखकों में से एक थे: अपनी कविताओं में उन्होंने ज़ारिस्ट रूस की प्रशंसा की, और प्रत्येक ऐसी कविता के लिए उन्हें - जैसा कि बाद में अभिलेखीय शोध से पता चला - तुर्किस्तान के गवर्नर-जनरल द्वारा पुरस्कृत किया गया। हालाँकि, जब फुरकत ने फ़रगना घाटी में रूसी शासन की दमनकारी प्रकृति की आलोचना करते हुए कविताएँ लिखना शुरू किया, तो उन्हें चीनी तुर्किस्तान में निर्वासन में भेज दिया गया ।

20वीं सदी के पहले दशकों में तुर्की पत्रकार इस्माइल गैसप्रिंस्की के अनुयायियों से मिलकर बने जदीद सुधार आंदोलन ने उज्बेकिस्तान और पूरे मध्य एशिया में प्रभाव प्राप्त किया । जदीदों की प्राथमिक चिंता तथाकथित नई पद्धति (उसुल-ए जदीद) स्कूलों के माध्यम से शिक्षा के लिए एक नया दृष्टिकोण था। उज्बेकों के बीच तुर्क-भाषी लेखकों की एक नई पीढ़ी-ज़ियोलिलर ("ज्ञानवर्धक"), जिन्होंने खुद को जदीद सुधारक माना- ने आधुनिक उज़्बेक साहित्य में प्रमुख योगदान दिया। इन लेखकों में महमूद खोजा बेहबूदी,अब्दालरौफ फ़ितरत , अब्दुल्ला कादिरी,चोलपान (अब्दुलहमिद सुलेमान युनुस), मुनव्वर कारी और मन्नान रमिज़। वे उन लेखकों में से थे जिन्होंने 20वीं सदी के अंत में उज़्बेक लोगों को नाटक, उपन्यास और लघु कथाएँ पेश करने में मदद की। इन पश्चिमी शैलियों के आगमन ने चगताई में शास्त्रीय कविता के विकास के उच्चतम चरण को भी चिह्नित किया , जो उसके बाद तेजी से गिरावट आई।

जब 1917 की रूसी क्रांति के परिणामस्वरूप ज़ार निकोलस द्वितीय को पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो तुर्किस्तान के बुद्धिजीवियों के बीच अधिक स्वतंत्रता की उम्मीदें जगी । अक्टूबर 1917 में कोकंद स्वायत्तता नामक एक स्वतंत्र सरकार की घोषणा की गई, हालांकि अगले वर्ष रूसी अधिकारियों ने इसे खत्म कर दिया। हालाँकि, सोवियत शासन के शुरुआती वर्षों के दौरान, प्रबुद्ध लोगों को एक अंतरराष्ट्रीय तुर्क संस्कृति और साहित्य का प्रसार करना आसान लगा। अन्य समस्याओं से चिंतित, सोवियत संघ ने शुरू में तुर्किस्तान में उज़्बेक बुद्धिजीवियों की गतिविधियों में बाधा डालने के लिए कुछ नहीं किया, लेकिन बाद में उन्होंने प्रेस पर अपने नियंत्रण का इस्तेमाल बाधाएँ पैदा करने के लिए किया। सोवियत संघ द्वारा उज़्बेक लोगों के विद्रोह को कुचलने और तुर्किस्तान पर पूर्ण नियंत्रण करने के बाद, उन्होंने स्थानीय साहित्य, संस्कृति और शिक्षा को तेजी से दबा दिया।

इन कठिनाइयों के बावजूद , उज़्बेक साहित्य अपनी आत्मा को बनाए रखने में सक्षम था। फ़ितरत, चोलपैन, कादिरी, एल्बेक (मशरिक यूनुस ओगली) और कई अन्य कवियों और लेखकों ने 1920 और 1930 के दशक के दौरान अपनी बेहतरीन रचनाएँ प्रकाशित कीं, उज़्बेक राष्ट्र की आवाज़ को व्यक्त करने के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालते हुए उन्होंने अपना ध्यान सोवियत शासन के विचारों और सामाजिक प्रथाओं की आलोचना करने पर केंद्रित किया।

फितरत जदीद युग के एक उत्कृष्ट विद्वान, सिद्धांतकार और जदीद आंदोलन के प्रेरक, साहित्यिक इतिहासकार और शुरुआती उज़्बेक नाटककारों में से एक थे। इस्तांबुल विश्वविद्यालय (1909-13) में अपने समय के दौरान वे यंग तुर्कों के सुधारवादी विचारों के संपर्क में आए और बुखारा लौटने पर वे यंग बुखारान में सक्रिय हो गए, जो एक ऐसा समूह था जो राजनीतिक सुधार की वकालत करता था। फितरत के कई नाटक - उदाहरण के लिए, अबू मुस्लिम (1918), उलूग बेग (1919), तेमुर्निंग सागनासी (1919; "तैमूर का मकबरा"), ओगुज़ खान (1919), चिंगगिस खान (1920), और अबुल फ़ैज़ खान (1924) - ने ऐतिहासिक नाटकों का रूप लिया, जिसमें मध्य एशिया के शुरुआती और मध्ययुगीन इस्लामी काल के वास्तविक व्यक्तियों को दर्शाया गया। फ़ितरत के नाटकों ने उज़बेक लोगों में राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना को बढ़ाने में मदद की। इस अवधि के कई मध्य एशियाई लेखकों की तरह फ़ितरत ने भी मध्य एशिया की विभिन्न तुर्किक भाषाओं को सभी मध्य एशियाई लोगों के लिए एक साहित्यिक भाषा में एकीकृत करने का प्रयास किया। उन्होंने तुर्किस्तान के रूप में जाने जाने वाले व्यापक ऐतिहासिक क्षेत्र को एक साझा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान वाला

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

एक एकल, अविभाज्य राज्य माना और उन्होंने रूस से निर्यात की गई सर्वहारा क्रांति को लागू करने का विरोध किया।

उज़्बेकी साहित्य ने अपने पंख चारों ओर और अपने ही जमीं पर इस तरह फैलाये हैं की हामिद इस्माइलोव के शब्द में एक साक्षात्कार में कहना बिल्कुल उचित है -''किसी भी बुखारी को उज़्बेक में संबोधित करें, और उत्तर उज़्बेक में होगा। ताजिक में पूछें, और उत्तर ताजिक में होगा। रूसी में पूछताछ करें, और आपको रूसी में स्पष्टीकरण प्राप्त होग।'' (हेंडल) 4

चोलपान 20वीं सदी के पहले भाग में मध्य एशिया के सबसे लोकप्रिय कवि थे। वह एक नाटककार और उपन्यासकार भी थे और विलियम शेक्सपियर के नाटकों का उज़्बेक में अनुवाद करने वाले पहले व्यक्ति थे। उनके जीवनकाल में उनकी कविताओं के तीन संग्रह प्रकाशित हुए: उइघोनिश (1922; "जागृति"), बुलोक्लार (1924; "स्प्रिंग्स"), और टोंग सरलारी (1926; "सीक्रेट्स ऑफ़ डॉन")। इसके अलावा, चोलपान की कई कविताएँ ओज़बेक योश शोइरलारी (1922; "युवा उज़्बेक कवि") संग्रह में दिखाई दीं। चोलपान ने एक उपन्यास , केचा वा कुंदुज़ (1935; "रात और दिन"), साथ ही कई नाटक और कई लघु कथाएँ भी प्रकाशित कीं ।

चोलपैन की कविताएँ बाद के उज़्बेक लेखकों के लिए स्थायी प्रेरणा का स्रोत बन गईं, खास तौर पर इसलिए क्योंकि उन्होंने अभिव्यक्ति के नए रूपों का अभिनव उपयोग किया। उन्होंने शास्त्रीय काल की उज़्बेक कविताओं पर हावी रहस्यवाद को खारिज करके अतीत से नाता तोड़ा, और उनकी कविताओं में सरल, सीधी भाषा दिखाई देती है जो विदेशी उधारों से मुक्त है। चोलपैन ने उज़्बेक राष्ट्रीय पहचान को भी मजबूती से आकर्षित किया। कविता “उदाहरण के लिए, उइघोनिश में "बस एंडी!" ("बस बहुत हो गया!") रूसी कब्जे के खिलाफ विद्रोह की पहली जागृति को व्यक्त करता है:

कादिरी मध्य एशिया में यथार्थवाद को पेश करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से ऐसा किया, जिसमें उन्होंने एक ऐसी शैली और पद्धति अपनाई, जो सर वाल्टर स्कॉट की प्रतिध्वनि में, उनके काम को जुर्जी ज़ैदान के काम से अलग करती थी, जो बेरूत में जन्मे अरबी में लिखने वाले उपन्यासकार थे और उस समय बहुत प्रचलित थे। कादिरी के ऐतिहासिक उपन्यासों ओटगन कुनलार (1922; "डेज़ गॉन बाय") और मेहरोबदान चायोन (1929; "स्कॉर्पियन फ्रॉम द अल्टर") का मुख्य महत्व रूसी विलय से पहले उज़बेक लोगों के जीवन और समय के उनके सहानुभूतिपूर्ण प्रतिपादन में निहित है। कई अन्य मध्य एशियाई उपन्यासकारों- जिनमें मुख्तार औएज़-उली (औएज़ोव) शामिल हैं, जो शायद 20वीं सदी के कज़ाख साहित्य में सबसे प्रमुख व्यक्ति हैं- ने कादिरी के उदाहरण का अनुसरण किया।

सोवियत शासक फितरत, चोलपान और कादिरी से डरते थे क्योंकि सोवियत संघ की तुर्क-भाषी आबादी के बीच उनके विचारों की अपील थी। सोवियत शासन ने उन्हें सोवियत प्रणाली के समर्थन में लिखने के लिए प्रोत्साहित करके उनकी लोकप्रियता का फायदा उठाने की कोशिश की, लेकिन ये प्रयास विफल रहे और 1930 के दशक के अंत में जोसेफ स्टालिन द्वारा निर्देशित शुद्धिकरण परीक्षणों (ग्रेट पर्ज) के दौरान, कई प्रमुख उज़्बेक लेखकों- जिनमें फितरत, चोलपान और कादिरी शामिल थे- को मार दिया गया। हजारों अन्य लेखकों, शिक्षकों और विद्वानों को भी कैद किया गया, उनमें से कई जदीद आंदोलन से जुड़े थे, जिसे सोवियत संघ पैन-तुर्कवाद की एक खतरनाक अभिव्यक्ति मानता था ।

कई उज़्बेक लेखकों की फांसी ने साहित्यिक हलकों पर एक भयावह प्रभाव डाला। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के दशकों में ऐसे लेखकों का उदय हुआ जो सोवियत शासन के कर्तव्यनिष्ठ लेकिन अकल्पनीय सेवक थे, उनमें कामिल याशिन, शराफ़ आर. रशीदोव, नजीर सफारोव, जुमानियाज शारिपोव, हामिद गुलियाम, मिरमुहसिन, रामज़ बाबाजान, सईद अहमद, अयबेक और इब्राहिम रहीम शामिल थे। समाजवादी यथार्थवाद की तकनीकों का उपयोग करते हुए , उज़्बेक गद्य लेखकों ने मुख्य रूप से समकालीन ग्रामीण जीवन के बारे

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

में उपन्यास लिखे। ग्रामीण जीवन के बारे में लिखने वाले कई लेखकों ने अक्सर किसानों द्वारा अनुभव की जाने वाली पीड़ा की वास्तविकता को गलत बताया; अन्यथा उनकी कविताएँ, लघु कथाएँ, नाटक और उपन्यास कभी प्रकाशित नहीं होते।

1991 में सोवियत संघ के पतन और उसके बाद उज्बेकिस्तान की स्वतंत्रता ने उज्बेक साहित्यिक परिदृश्य को बदल दिया। सोवियत द्वारा लिखित लेकिन प्रतिबंधित साहित्य (जैसे, फितरत के नाटक, चोलपैन के उपन्यास) व्यापक रूप से उपलब्ध हो गए, लेकिन स्वतंत्र प्रेस जो 1980 के दशक के अंत में थोड़े समय के लिए अस्तित्व में थी, गायब हो गई: समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उनके प्रधान संपादकों को जेल में डाल दिया गया या निर्वासित कर दिया गया। सोवियत शैली की सेंसरशिप व्यापक रूप से लागू हुई, और कई प्रमुख लेखकों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें प्रताड़ित किया गया (जैसे, मामादली महमूदोव, एमिन उस्मोन, यूसुफ जुमेव, मुहम्मद सालेह और सफ़र बेकजोन)। उस्मोन जैसे कुछ लोगों की जेल में ही मृत्यु हो गई।

उज़्बेक लेखकों और आलोचकों को इस बात पर गंभीर बहस करने के लिए मजबूर होना पड़ा कि उज़्बेक साहित्य कैसा होना चाहिए। स्वतंत्र उज़्बेकिस्तान में इस्तेमाल किए जा रहे दमनकारी उपायों से हतोत्साहित होकर, उन्होंने सोवियत संघ के बाद की अराजकता से बाहर निकलने के संभावित तरीकों के बारे में बहस की। 1990 के दशक में अतीत की साहित्यिक शैलियों और विषयों से जुड़ाव बहुत मजबूत रहा, और समाजवादी यथार्थवाद की आदतों को हिला पाना मुश्किल साबित हुआ, खासकर उपन्यास में। लेखकों के एक समूह (अब्दुल्ला अरिपोव, एरकिन वाहिदोव, आदिल याकूबोव, सईद अहमद और उत्किर हाशिमोव) ने जीवित रहने के लिए देश के राष्ट्रपति की प्रशंसा करना शुरू कर दिया,इस्लाम करीमोव को उनकी कविताओं और लेखों के लिए जाना जाता था, और बहुत जल्द ही इनमें से तीन लेखकों (अरिपोव, वाहिदोव और अहमद) को देश के सर्वोच्च पुरस्कार, हीरोज ऑफ़ उज्बेकिस्तान से सम्मानित किया गया। ''बीसवीं सदी के उज़्बेक साहित्य ने सार्वजनिक क्षेत्र में सामाजिक-राजनीतिक के साथ-साथ वैचारिक संघर्ष के प्रवचन को मजबूत किया और राष्ट्रीय पुनरुत्थान की साहित्यिक अभिव्यक्ति के साथ राष्ट्र के भाग्य का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण स्थान लिया।''(मिर्ज़ायेवा) 5

स्वतंत्रता के बाद के दौर में प्रकाशित अधिकांश बेहतरीन रचनाएँ गद्य में थीं। तोगहे मुराद के गीतात्मक उपन्यास ओटमदम क्कोलगन दलाल (1994; "फील्ड्स विच रिमेन्ड फ्रॉम माई फादर") में 19वीं सदी में मध्य एशिया पर रूस के आक्रमण का वर्णन है। तोहिर मलिक के उपन्यास शैतानात (1992-96; "शैतानी") को उज़बेकों ने बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा, क्योंकि कई लोगों ने अपने स्थानीय राजनीतिक नेताओं (तथाकथित "नए उज़बेक") को, जिन्हें वे अपराधियों की तरह व्यवहार करते हुए देखते थे, इस उपन्यास के "नायक" के रूप में देखा।

गौरतलब है, ''उज़्बेक स्कूलों में उपयोग की जाने वाली इतिहास की पाठ्यपुस्तक में उज़्बेक इतिहास और साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ बताई गई हैं, जिनमें उनके चित्र भी शामिल हैं। ताशकंद और बुखारा जैसे संग्रहालयों में इनकी तस्वीरें हैं।'' (फ़िरमैन) 6

संदर्भ:

1. खैरुल्ला एच. इस्मतुल्लाएव. तथ्य-जांचकर्ता,एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के संपादक.

2. योगेश्वर शर्मा. उज़्बेक साहित्य की विशेषताएँ.

3. विकिपीडिया

4. नथाली हेंडल . शहर और लेखक: बुखारा, उज़्बेकिस्तान में हामिद इस्माइलोव के साथ, नथाली हेंडल द्वारा, बिना सीमा के शब्द, अंतर्राष्ट्रीय साहित्य का घर, 5 दिसंबर 2017.

5. जुल्खुमोर मिर्ज़ायेवा. युद्ध के रूप में आलोचना: 1950 से 1990 के दशक तक उज़्बेक साहित्यिक अध्ययन का वैचारिक युद्धक्षेत्र, खुला संस्करण जर्नल , पृ. 1.

6. विलियम फ़िरमैन. उज़्बेक की जातीयता की भावनाएँ-हाल के उज़्बेक साहित्य में व्यक्त दृष्टिकोण का एक अध्ययन, एनी 1981, पृ.192-193.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में विविध आयोजनों की भूमिका

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765663

निकिता
कथक शिक्षिका
लाल बहादुर शास्त्री संस्कृति केंद्र
ताशकंद

भारतीय शास्त्रीय संगीत (गीत, वाद्य एवं नृत्य) अपने शास्त्रीय सिद्धान्तों को संरक्षित करने में सक्षम है। संगीत के विभिन्न प्रचलित, अप्रचलित एवं बहुप्रचलित तथ्यों को अनेकों ग्रन्थों के माध्यम से पुनः पुनः उजागर करता है और तर्क भी देता है। जो क्रमशः कला की शास्त्रीयता को पूर्ण रूप से प्रमाणिक करता है।कथक नृत्य भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसने अपने आकर्षक ताल-मेल, गति, और भावनात्मकता के लिए विख्यात है। इस नृत्य की साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्य उसे दुनियाभर में एक अद्वितीय कला रूप में स्थापित करते हैं। कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में विविध आयोजनों की भूमिका विशेष महत्व रखती है, क्योंकि ये आयोजन न केवल इस नृत्य की प्रस्तुति को बढ़ाते हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति और कला को विश्व स्तर पर प्रस्तुत करते हैं।

'कथक' संस्कृत की दशम गण की ''**कथ**'' धातु की विनिर्मित (कथकर्त रिण्वुल) एक कृदंत शब्द है। इसकी व्युत्पत्ति के अनुसार **'कथयति यः सःकथक'** अर्थात जो कथन करता है वह कथक है। पारम्परिक नर्तक भी इसकीयही व्याख्या करते हैं ''कथा कहे सो कथक'' या 'कथन करे सो कथककहाये' इत्यादि।

यह अर्थ परम्परा 'कथक' शब्द को मुख्यतः तीन विशिस्ताओसे संबंद्धकरती है- कथाअभिनय और उपदेश। यदि इन तीनों विशेषताओं को संयुक्त रूप से ग्रहण किया जाए तो 'कथक' शब्द का संपूर्ण व्यक्तित्व इसरूप में प्रकट होगा - कथक वह व्यक्ति विशेष है जो लोकापदेश के लिएअभिनव के माध्यम से कथा की प्रस्तुति करे।

भारत के शास्त्रीय नृत्यों में कथक नृत्य का प्रमुख स्थान है। कथक नृत्य उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। नृत्य के ऐतिहासिक तथ्य को देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि यह नृत्य मात्र मनोरंजन का साधन नही था बल्कि समाजजनसाधारण तथा धर्म से पूरी तरह जुड़ा हुआ था। सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में कथक नृत्य का विशिष्ट स्थान है। क्योंकि इस नृत्य शैली में ताण्डव की उद्धत चारियों के साथ-साथ लास्य की कोमलता भी है। जो इस नृत्य शैली में नृत्तनृत्य एवं नाट्य तीनो का सम्मिश्रण है।१कथक नृत्य मुख्यतः एक प्रदर्शनात्मक या दृश्य-श्रव्य कला है अतः इस नृत्य के प्रदर्शन हेतु आयोजन की भूमिका विशिष्ट है। प्राचीन काल अर्थात् मंदिरों से प्रारंभ होते हुए मुगल काल, आधुनिक काल और इसके पश्चात् वर्तमान समय तक कथक नृत्य के आयोजनों में पर्याप्त परिवर्तन होते रहे हैं। कथक जैसे प्रदर्शनात्मक कला के लिए आयोजन आवश्यक हैं। वर्तमान में आयोजनों की संख्या निःसन्देह बढ़ती जा रही है, जिसमें कथकादि शास्त्रीय नृत्यों के प्रदर्शन हो रहे हैं। प्रदर्शन एक ऐसा माध्यम है।जिसके द्वारा नर्तक अथवा कलाकार अपनी भावनात्मक अभिव्यक्ति को प्रस्तुत करता है। प्रदर्शन के माध्यम से अपनी कला को जनसामान्य या कुछ विशिष्ट लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना एक कलाकार का मुख्य ध्येय है। यदि कलाकार अपनी कला को सीखकर केवल अपने तक ही सीमित रखेगा या वह किसी को उसकी शिक्षा नहीं देगा या उसका प्रदर्शन नहीं करेगा।तो उसकी कला भी स्वयं ही समाप्त हो जायेगी। इसीलिए कलाओं के प्रदर्शन के लिए कार्यक्रमोंका आयोजन आवश्यक है। कलाओं के प्रचार-प्रसार के लिए

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

तो आयोजन आवश्यक हैं साथ-ही-साथ कलाकारों तथा आयोजकों के जीविकोपार्जन के लिए भी यह अनिवार्य बन चुका है। कथक नृत्य के आयोजक व आयोजनों के माध्यम से होने वाले प्रचार-प्रसार पर दृष्टिपात किया गया था।किन्तु यहाँ आयोजनों की प्रवृत्ति पर दृष्टिपात करते हुए अध्ययन किया जा रहा है। कथक नृत्य के विकास के संबंध में समय-समय पर विद्वानों द्वारा जिस प्रकार के तथ्य प्रस्तुत किये गए हैं।उस आधार पर यह कहा जा सकता है।कि विभिन्न कालों में कथक नृत्य में परिवर्तन के साथ-साथ विकास का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। कथक नृत्य के प्रस्तुतिकरण व आयोजन से जुड़ी बातों को ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर ही स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा।

प्राचीन मंदिरों का अवलोकन किया जाए, तो ज्ञात होता है कि मंदिरों का निर्माण करते समय उसमें मण्डप की व्यवस्था की जाती थीजिसमें सामान्यतः नृत्यादि का आयोजन किया जाता था। पुरातत्त्ववेतत्ता एवं इतिहासकार डॉ. जितेन्द्र कुमार का मत है।कि प्राचीन मंदिरों में मण्डप विशेष रूप से बनाये जाते थेजिनमें मुख्यतः नट-नर्तकोंदेवदासियों द्वारा गायनवादन व नृत्य के आयोजन किये जाते थे। साथ हीइन्हीं मण्डपों में कथावाचन भीकिया जाता था। मंदिरों में मण्डप बनाने का मुख्य उद्देश्य संगीतादि कलाओं के माध्यम से धर्म का प्रचार करना था।"

मुस्लिम दरबारों में कथक नृत्य का स्वरूप बदलने के साथ-साथ इसकी प्रवृत्ति में परिवर्तन आये। सर्वप्रथम यदि आयोजनों की बात करें।तो मुगलकालीन मुस्लिम राजाओं के दरबारों में ही नृत्य के आयोजन हुआ करते थे। मुगल बादशाह व अन्य सभासदों के मध्य कथकों द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया जाता था। ऐसे आयोजनों का मुख्य उद्देश्य बादशाह या नवाब तथा उनके सभासदों का मनोरंजन करना मात्र था। इसके अतिरिक्त मुस्लिम दरबारों में कथक नृत्य एवं अन्य सांगीतिक कलाओं में प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती थीं। गायक और वादक के मध्यगायक और नर्तक के मध्य और वादक और नर्तक के मध्य तथा दो नर्तकों के मध्य प्रतियोगितायें कराने का प्रचलन प्रायः इसी काल की देन है। अक्सर ये सामन्त अपने आनन्द के लिए तबलियों-पखावजियों से इनकी लडन्त-भिड़न्त करवाते थे।जिसके फलस्वरूप ताल-प्रधान नृत्तांग तो आश्चर्यजनक रूप से पल्लवित होने लगा1905 ई. में मध्य भारत के रायगढ़ राजवंश के तत्कालीन राजा भूपदेव सिंह द्वारा आयोजित किये गये गणेशोत्सव के अवसर पर कथक नृत्य का सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ। इसके पश्चात् सामाजिक आयोजनों में कथक नृत्य की प्रस्तुतियाँ धीरे-धीरे प्रारंभ हो गयी थीं। शिक्षण संस्थानों की स्थापना के साथ-साथ बहुत से आयोजन संगीत व कलाप्रेमियों द्वारा आयोजित किये जाते थे, जिसमें कथक नृत्य प्रस्तुत किया जाने लगा। कहीं-न-कहीं यह समयावधि कथक नृत्य के विकास की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण रही है।क्योंकि एक ओर घराने थे और दूसरी ओर शिक्षण संस्थाएँ थीं। अर्थात् परम्परागत और आधुनिक शिक्षा के माध्यम से विभिन्न कलाओं के साथ-साथ कथक नृत्य का विकास प्रारंभ हो चुका था। साथ ही, कुछ प्रभावशाली कथकाचार्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रस्तुतियाँ देने लगे थे।वस्तुतः स्वतंत्रता से पूर्व देश-विदेश में आयोजित कांफ्रेंसअखिल भारतीय संगीत एवं नृत्य सम्मेलन आदि अवसरों पर कथक नृत्य को विषय के रूप में सम्मिलित किया जाने लगा था। कथक नृत्य की प्रस्तुतियाँ भी विशेष रूप से आरंभ हो चुकी थीं। ऐसे आयोजनों को महफिलकहा जाता था। इस बात का उल्लेख पं. राजेन्द्र गंगानी ने साक्षात्कार के दौरान शोधार्थी के समक्ष किया है। इस संबंध में डॉ. शोवना नारायण का मत है।कि आज हम फेस्टिवल कहते हैं। उस ज़माने में कांफ्रेंस कहा जाता था। म्यूज़िक एण्ड डांस कांफ्रेंस या अखिल भारतीय....। इलाहाबाद संगीत सम्मेलन, इलाहाबाद संगीत कांफ्रेंस। फेस्टिवल शब्द आया 80 के दशक से।वर्तमान में देश-विदेश में अनेकानेक आयोजन होने लगे हैं। इन आयोजनों को यदि अध्ययन की दृष्टि से देखें तो ज्ञात होता है।कि पहले आयोजनों की संख्या बहुत सीमित थी तथा कलाकार भी सीमित थे। आज आयोजन तो बढ़े हैं साथ-ही-साथ कलाकारों की संख्याभी बढ़ी है। पहले पंडालटॉकीज और थियेटर आदि में नृत्य का प्रदर्शन होता था। आज नृत्यादि कलाओं के प्रदर्शन के लिए बड़े-बड़े ऑडिटोरियमस्थायी मंचमुक्ताकाशी मंच बने हुए हैं। आज अलग-अलग तरह के आयोजन हो रहे हैं जहाँ शास्त्रीय कलायें प्रदर्शित हो रही हैं। इन आयोजनों को पृथक् पृथक् स्वरूप में देखा जा सकता है। पहला प्रकार उन आयोजनों के लिए निश्चित किया जा सकता है, जिसमें केवल कथक नृत्य ही विशिष्ट रूप से आयोजित होता है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

श्री ईश्वर प्रसाद जी कोकथक नृत्य का जन्मदाता कहना परम्परा वप्रमाणों से मुंह फेरना ही होगा क्योंकि उनका काल 17वीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जाता है जबकि उनसे पूर्व अकबरजहांगीर आदि बादशाहों के काल मेंकथक नर्तकों के स्पष्ट परमाण प्राप्त होते हैं। यद्यपि कथक नृत्य अपने वर्तमानस्वरूप के लिए बड़ी सीमा तक श्री ईश्वर प्रसाद जी के वंश का ऋणी है।ईश्वर जी व उनके पुत्र-पौत्रादिकों ने आज तक इस महान शैली की जोसेवायें की है वे वर्णनतीत हैं अतः उन्हें इस शैली का पुनरूद्धारक कहनाअधिक समीचीन प्रतीत होता है।

किट्शू लिखते हैं कि कथक की उत्पत्ति के संबंध में दो पौराणिककथायें प्रसिद्ध है - प्रथम कहानी के अनुसार नृत्य प्रतियोगिता में पार्वती नेजब शिवजी को हरा दिया तो वे क्रुद्ध हो उठे और ताण्डव नृत्य कर समस्तसंसार को नष्ट करने को तत्पर हो उठे। पार्वती ने अपनी हार मान कर उन्हेंशान्त किया। तब शिव ने पार्वती को महत्व देने के लिये उन्हीं के द्वाराकथक नृत्य का प्रसार करवाया।किट्शू का दूसर मन्तव्य - भस्मासुर की कथा के समान ही प्रतीतहोता है इसमें उसके भस्म होते समय की भंगिमा कथक नृत्य में सर्वाधिकप्रयोग होने वाली भंगिमा के समान है। यहां से उन्होंने कथक की उत्पत्तिमानी है।2

साहित्य और नृत्य: कथक का अध्ययन - डॉ. अर्चना सिंह द्वारा लिखा गया यह ग्रंथ कथक नृत्य और उसके साहित्यिक पक्ष का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस पुस्तक में कथक नृत्य के विकास, उसकी उत्पत्ति, और उसके विभिन्न शैलियों की गहन जानकारी दी गई है।

डॉ. अर्चना सिंह ने न केवल कथक नृत्य की तकनीकी पहलुओं का वर्णन किया है, बल्कि इसके साहित्यिक पक्ष पर भी ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार कथक नृत्य ने साहित्यिक रचनाओं को प्रेरित किया है और साहित्य ने कथक को समृद्ध किया है। इस संदर्भ में, पुस्तक में विभिन्न कवियों और लेखकों द्वारा कथक पर लिखी गई रचनाओं का विश्लेषण किया गया है।

पुस्तक में विभिन्न अध्यायों के माध्यम से कथक के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख कलाकारों, और कथक के मौजूदा रूपों की चर्चा की गई है। विशेष रूप से, यह पुस्तक कथक के प्रचार-प्रसार में आयोजनों, सरकार की नीतियों, और मीडिया की भूमिका को रेखांकित करती है। डॉ. सिंह ने प्राचीन और आधुनिक कथक नृत्य के बीच संबंध स्थापित करते हुए इस कला के भविष्य पर भी विचार प्रस्तुत किए हैं।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक कथक नृत्य के साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यह न केवल कथक प्रेमियों बल्कि शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए भी एक उपयोगी संसाधन है।

कथक नृत्य के प्रमुख आयोजन:

1. **कथक महोत्सव:**

विवरण:कथक महोत्सव भारत में कथक कला को प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण प्लेटफ़ॉर्म है। यह आयोजन वर्षभर भारत के विभिन्न शहरों में होता है और कथक कला के प्रति लोगों का उत्साह और रुझान बढ़ाता है। इस महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख कथक नृत्यकार और गुरुओं का सम्मानित प्रदर्शन होता है, जिससे कथक कला की गहराई और विविधता को समझने का अवसर मिलता है।

इस महोत्सव में युवा कलाकारों को भी एक मंच प्राप्त होता है जहां वे अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत कर सकते हैं। युवा प्रतिभाओं को महोत्सव में सम्मान और मार्गदर्शन मिलता है, जिससे उनकी स्थापना में मदद मिलती है और कथक कला के नए दिशानिर्देश स्थापित होते हैं।

इस महोत्सव के माध्यम से भारतीय संस्कृति में कथक कला की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया जाता है और लोगों के बीच इस कला के प्रति जागरूकता फैलाई जाती है। साथ ही, यह महोत्सव कथक कला के नए समीक्षात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण को भी प्रोत्साहित करता है जिससे इस कला के प्रगति में सहायक होता है।

इस प्रकार, कथक महोत्सव एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन है जो भारतीय नृत्य के प्रति जनमानस में उत्साह और गर्व बढ़ाने में सक्षम है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

महत्व:कथक महोत्सव एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन है जो कथक नृत्य की प्रसार और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस महोत्सव के माध्यम से कथक कला के प्रमुख कलाकारों का प्रस्तुतिकरण होता है और उनका प्रमोशन किया जाता है। यहां पर कलाकारों को अपने प्रतिभा का प्रदर्शन करने का मौका मिलता है और उनकी कला को विशेषज्ञों और जनता के सामने प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

इसके अलावा, कथक महोत्सव भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रस्तुत करने का माध्यम बनता है। यहां पर विदेशी दर्शकों को भारतीय नृत्य और संस्कृति का सांस्कृतिक अनुभव मिलता है और इसके माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत का प्रचार-प्रसार किया जाता है। इससे भारतीय संस्कृति का गौरव बढ़ता है और इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

इस महोत्सव के माध्यम से नई पीढ़ियों तक कथक कला का पहुँचावा होता है। युवा कलाकारों को भी अपनी कला का प्रदर्शन करने और सीखने का मौका मिलता है, जिससे इस कला की जानकारी और उन्हें अधिक समझ मिलती है। इस प्रकार, कथक महोत्सव न केवल कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है बल्कि भारतीय संस्कृति के प्रति जनमानस में गहराई और उत्साह भी बढ़ाता है।

अनुसंधान की आवश्यकता:कथक महोत्सव जैसे सांस्कृतिक आयोजन के प्रचार-प्रसार के प्रभाव को मापने के लिए अनुसंधान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हमें यह जानकारी प्राप्त हो सकती है कि इस महोत्सव का सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक प्रभाव कैसे होता है और इसके माध्यम से कथक कला के प्रति लोगों की दृष्टि कैसे बदलती है।

अनुसंधान के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों का विश्लेषण किया जा सकता है:

1. **माध्यमिक प्रभाव (Media Impact):**यह शामिल करता है कि कथक महोत्सव के बारे में विभिन्न समाचार माध्यमों में कैसे रिपोर्टिंग की गई है। कितनी बार यह आयोजन समाचार बना, क्या उसकी कवरेज नेगेटिव, पॉजिटिव या न्यूट्रल थी, और इसका जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ा।

2. **सामाजिक मीडिया प्रभाव (Social Media Impact):**कथक महोत्सव के बारे में सोशल मीडिया पर कितनी बातें हुईं, कितनी लोकप्रियता मिली, और लोगों के बीच इसकी कितनी वायरलिटी थी। इससे हम यह भी जान सकते हैं कि यह आयोजन युवा पीढ़ी तक कैसे पहुँचता है और उनकी रुचि में कैसे वृद्धि होती है।

3. **आर्थिक प्रभाव (Economic Impact):**यह शामिल करता है कि कथक महोत्सव के आयोजन से स्थानीय अर्थव्यवस्था में कैसा प्रभाव होता है। कितने लोगों को रोजगार का मौका मिलता है, कितनी विदेशी पर्यटक आते हैं, और क्या यह स्थानीय व्यवसायों के लिए एक बड़ा मौका प्रदान करता है।

4. **समूहों तक पहुँच (Audience Reach):**इस महोत्सव का लाभ लेने वाले समूहों का विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण है। क्या यह सिर्फ शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है या गाँवों और छोटे शहरों में भी पहुँच पहुँचता है। यह जानकारी हमें यहां तक पहुँचाने में मदद कर सकती है कि कैसे इस महोत्सव की उपयोगिता बढ़ाई जा सकती है और नए और विविध दर्शकों तक कैसे पहुँचा जा सकता है।

इस प्रकार का अनुसंधान हमें सांस्कृतिक आयोजनों के प्रभाव को समझने में मदद कर सकता है और उन्हें और अधिक समर्थन और प्रशंसा प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

ताल कला मंचन विवरण:

ताल कला मंचन एक महत्वपूर्ण प्रमुख आयोजन है जो कथक नृत्य के प्रस्तुतिकरण का माध्यम है। इस मंचन में शिक्षार्थी से लेकर अनुभवी कलाकारों तक कई लोग भाग लेते हैं, जिनमें ताल, लय, और राग की महानुभूति के माध्यम से कथक की समृद्धता प्रदर्शित की जाती है। इस मंचन के माध्यम से निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं को दर्शाया जाता है:

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

1. **कलाकारों का संगठन (Organization of Artists):**ताल कला मंचन में विभिन्न उत्कृष्ट कथक कलाकारों को एकत्रित किया जाता है। इसमें युवा प्रतिभाओं को भी मंचन का मौका मिलता है अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए।

2. **ताल, लय, और राग का प्रदर्शन (Display of Taal, Lay, and Raag):**यहां पर ताल, लय, और राग के माध्यम से कथक नृत्य की समृद्धता प्रदर्शित की जाती है। ताल कला मंचन में विभिन्न तालों का प्रदर्शन किया जाता है जैसे की तीन ताल, एक ताल, झाप ताल आदि। इसके साथ ही, विभिन्न लयों (विलम्बित, मध्यम, तेज) और रागों के माध्यम से नृत्य की भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।

3. **शिक्षार्थियों का योगदान (Contribution of Students):**ताल कला मंचन में न केवल अनुभवी कलाकारों का ही प्रदर्शन होता है, बल्कि यहां शिक्षार्थी भी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यह उन्हें अनुभव का मौका देता है और उनके लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित होता है।

4. **सांस्कृतिक विस्तार (Cultural Expansion):**ताल कला मंचन अवधियों और समुदायों के बीच कथक नृत्य की सांस्कृतिक विस्तार का माध्यम भी बनता है। यहां पर विभिन्न सम्प्रदायों और स्थानीय समुदायों के लोग एक साथ आते हैं और एकजुट होकर नृत्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति को महसूस करते हैं।

5. **समुदायिक भावनाओं का प्रदर्शन (Display of Community Sentiments):**ताल कला मंचन में समुदाय की भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम भी होता है। यहां पर विभिन्न समुदायों की भावनाएं और संस्कृति के माध्यम से संवाद होता है और एक साथीतिक सम्पर्क बनाया जाता है।

इस प्रकार, ताल कला मंचन एक अत्यधिक महत्वपूर्ण आयोजन है जो कथक नृत्य के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करता है और इस आदि के विस्तार और समृद्धता को बढ़ावा देता है।

महत्व:ताल कला मंचन एक महत्वपूर्ण आयोजन है जो कथक नृत्य के तालमेल और भावनात्मक प्रभाव को दर्शाता है। इस आयोजन के माध्यम से कथक कलाकारों को विभिन्न तालों, लयों और रागों के साथ मिलकर नृत्य करने का अवसर मिलता है। यहां पर कलाकार तालमेल के माध्यम से अपनी नृत्य कला को प्रदर्शित करते हैं और इससे उनके भावनात्मक संवेदनशीलता में भी वृद्धि होती है।

इस आयोजन का महत्व निम्नलिखित कारणों से बढ़ता है:

1. **तालमेल का प्रदर्शन:**ताल कला मंचन में विभिन्न तालों का प्रदर्शन किया जाता है जैसे कि तीन ताल, एक ताल, झाप ताल आदि। इससे कलाकारों की तालमेल की क्षमता में सुधार होता है और वे ताल के संगतता में अधिक समर्थ बनते हैं।

2. **भावनात्मक प्रभाव:**यहां पर राग, लय और भावना के माध्यम से नृत्य किया जाता है जिससे कलाकारों की भावनाओं को व्यक्त करने में मदद मिलती है। ताल कला मंचन में विभिन्न रागों के द्वारा भावनाओं को साझा करने का मौका मिलता है, जिससे दर्शकों तक भावनात्मक संदेश पहुँचाया जा सकता है।

3. **कलाकारों का प्रशिक्षण:**ताल कला मंचन युवा और अनुभवी कलाकारों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है। यहां पर वे अपनी कला को निरंतर स्थायी करने का अवसर प्राप्त करते हैं और अन्य कलाकारों से सीखते हैं।

4. **सामूहिक नृत्य का प्रदर्शन:**इस मंचन में ग्रुप नृत्य के माध्यम से सामूहिक भावनाओं का प्रदर्शन होता है। यह न केवल कलाकारों के बीच भावनात्मक संवाद को बढ़ाता है, बल्कि दर्शकों तक भी समुदाय के भावनाओं को समझाने में मदद करता है।

इस प्रकार, ताल कला मंचन न केवल कथक नृत्य के तालमेल और भावनात्मक प्रभाव को प्रदर्शित करता है, बल्कि इसके माध्यम से कलाकारों को उनकी कला में स्थायीता प्राप्त करने का अवसर भी प्रदान करता है।

अनुसंधान की आवश्यकता:ताल कला मंचन जैसे सांस्कृतिक आयोजन के अनुसंधान से हमें कई महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में मदद मिलती है, जो कथक नृत्य और समुदाय के बीच संबंध को विस्तार से व्यक्त करते हैं। इस अनुसंधान के माध्यम से हम निम्नलिखित पहलुओं का विश्लेषण कर सकते हैं:

1. **समाजिक प्रभाव (Social Impact):**ताल कला मंचन के माध्यम से कैसे समुदाय के भीतर और बाहर नृत्य के प्रति रुझान बढ़ता है, इसका अध्ययन किया जा सकता है। यहां पर नृत्य के माध्यम से किस

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

प्रकार समाजिक संदेश व्यक्त होते हैं, कैसे इससे समाज की भावनाओं में बदलाव आता है, और कलाकारों के द्वारा सामाजिक मुद्दों के उजागर होने में क्या भूमिका होती है।

2. **सांस्कृतिक प्रभाव (Cultural Impact):**ताल कला मंचन का कथक नृत्य की सांस्कृतिक विरासत पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इसे भी विश्लेषित किया जा सकता है। यहां पर विभिन्न राग, ताल और लयों के माध्यम से कितनी गहराई में नृत्य की सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा मिलता है, और कैसे यह संस्कृति के अन्य रूपों से जुड़ा रहता है।

3. **कथक नृत्य की उत्कृष्टता को बढ़ाने में योगदान (Contribution to Excellence in Kathak):**ताल कला मंचन के माध्यम से कथक नृत्य के उत्कृष्टता को बढ़ाने में इसका क्या योगदान होता है, यह भी अध्ययन किया जा सकता है। कैसे इस मंचन के माध्यम से कलाकारों का विकास होता है, कैसे वे नए पहलुओं को अनुसरण करते हैं और नृत्य में नई उच्चताओं को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

4. **संस्कृति और समुदाय के बीच संवाद (Dialogue between Culture and Community):**ताल कला मंचन के माध्यम से संस्कृति और समुदाय के बीच कैसे संवाद होता है, इसका भी अध्ययन किया जा सकता है। यहां पर कलाकार और दर्शकों के बीच साझा भावनाओं और सोच का संवाद होता है जो समुदाय के भीतर एकता और समझ बढ़ाता है।

इस प्रकार, ताल कला मंचन के अनुसंधान से हमें समाजिक, सांस्कृतिक और कलाकारीक पहलुओं का विश्लेषण कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि यह आयोजन कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उत्कर्ष:

विवरण:यह आयोजन विशेष रूप से युवा कलाकारों के लिए होता है, जिन्हें निर्धारित थिएटर में उनकी प्रदर्शन का मौका मिलता है। यहां पर उनका कार्यक्षमता को परखा जाता है और उन्हें प्रतिस्पर्धा का मौका मिलता है।

महत्व:उत्कर्ष आयोजन के माध्यम से युवा कलाकारों का प्रोत्साहन किया जाता है और उन्हें विशेष प्रस्तुतिकरण करने का मौका मिलता है। यह उनके लिए एक महत्वपूर्ण पाठशाला की भूमिका निभाता है।

अनुसंधान की आवश्यकता:उत्कर्ष के अनुसंधान में इसके प्रभाव, प्रतिस्पर्धा की गुणवत्ता, और युवा कलाकारों के उत्थान के लिए उपाय के बारे में विचार करना चाहिए।

कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में आयोजनों की सफलता के लिए कई समस्याएँ हैं। सामाजिक रूप से, लोकप्रियता की कमी और युवा पीढ़ी की रुचि में कमी हो सकती है। आर्थिक दृष्टिकोण से, वित्तीय संकट, स्थानीय समर्थन की कमी और प्राधिकृतिकरण की समस्याएँ उभरती हैं। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, विभिन्न प्रांतीय संस्कृतियों के बीच विवाद और परंपरागत मान्यताओं की अवशेषन की समस्या हो सकती है। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए सामुदायिक समर्थन बढ़ावा देना, सरकारी योजनाओं का सहायता प्राप्त करना और विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ साझेदारी मजबूत करना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष (उपसंहार) **:**कथक नृत्य के बारे में आपने विस्तार से बताया है, और कथक महोत्सव के बारे में विशेष रूप से जानकारी दी है। जिस प्रकार कथक नृत्य में समय के साथ-साथ परिवर्तन हुए हैं, उसी प्रकार इसके प्रचार-प्रसार के माध्यमों में भी परिवर्तन आये हैं। यद्यपि स्वतंत्रता से पूर्व प्रचार-प्रसार के अधिक साधन उपलब्ध नहीं थे, क्योंकि कलायें घरानों तथा कुछ विशेष वर्ग तक सीमित थीं। इसका एक कारण यह भी है, कि आधुनिक काल से पूर्व विभिन्न आक्रमणों और अंग्रेजों के आधिपत्य के कारण नृत्यादि कलाओं का अस्तित्व संकट में पड़ गया था। अतः इसके कारण आधुनिक काल में कलाओं को स्थापित, विकसित, संरक्षित करने के साथ- साथ इसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पड़ी। इसीलिए शैक्षणिक संस्थानों में कथक नृत्य को एक विषय के रूप में स्थापित करने और समाज में इसे पुनः प्रतिष्ठित करने में कलाकारों, कलामर्मज्ञों, कला प्रेमियों तथा सामाजिकों ने विशेष प्रयास किये। इसके कारण शिक्षण संस्थानों के माध्यम से यह कला जन-सामान्य तक पहुँची और धीरे-धीरे इस प्रदर्शन भी समाजित मंचों के माध्यम से किया जाने लगा।20वीं शताब्दी के मध्य में भारतीय नृत्य कलाओं के साथ कथक नृत्य का प्रदर्शन देश-विदेश में भी होने लगे, जिससे धीरे-धीरे ही सही पर इन कलाओं का प्रचार-प्रसार प्रारंभ हो गया। स्वतंत्रता के पश्चात् कलाओं के प्रचार-प्रसार व विकास का

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

कार्य तीव्र गति से प्रारंभ हुआ। सांस्कृतिक चेतना जागृत हुई और कलाओं के साथ-साथ कथक नृत्य के पुनरूत्थान का कार्य शासन द्वारा किया जाने लगा। वस्तुतः जहाँ एक ओर देश में संगीत नाटक अकादमी तथा कथक केन्द्र जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई वहीं दूसरी ओर संगीत और कला को समर्पित विश्वविद्यालय भी प्रारंभ किये गये,

यहाँ आपके द्वारा दिए गए विशिष्ट बिंदुओं का एक संक्षेप दिया जा रहा है:

1. **कथक नृत्य का महत्व**: कथक नृत्य भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे ताल-मेल, गति, और भावनात्मकता के लिए जाना जाता है। इसका शास्त्रीय और साहित्यिक मूल्य भी उजागर किया गया है।

2. **कथक महोत्सव का महत्व**: यह आयोजन कथक कला को भारत में और विदेशों में प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। यह कला के प्रति जागरूकता बढ़ाता है और नए प्रतिभागानों को मौका देता है अपनी कला का प्रदर्शन करने का।

3. **आनंद कित्शू की प्रतिक्रिया**: उन्होंने कथक नृत्य की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न पौराणिक कथाओं का उल्लेख किया है, जो इसके ऐतिहासिक पारंपरिक मूल से जुड़े हुए हैं।

इन सभी पहलुओं से स्पष्ट होता है कि कथक नृत्य न केवल भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है, बल्कि इसके आयोजनों और आत्मिकताओं से भी गहरा संबंध है। इसे बनाए रखने और उसके प्रसार-प्रचार में लगे रहने का महत्वपूर्ण संदेश उपस्थित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. टाक, डॉ. माया, 'ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य', कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006

2. चौबे, डॉ. अमरेशचन्द्र, 'संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली', कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, प्रथम संस्करण 1988

3. प्रो. हरिमोहन, 'रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2017

4. Ghosh, M.M., 'Nandikeswara'sAbhinayadarpanam', Published by K.L. Mukhopadhyay, Calcutta, 2nd Edition 1957

5. मूर्ति, जेम्स एस., 'दृश्य श्रव्य सम्प्रेषण और पत्रकारिता', भारतीय भाषापीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990

6. बाजपेयी, रश्मि, 'कथक वितान', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019

7. डॉ. बल्देव, 'रायगढ़ का सांस्कृतिक वैभव', छ.ग. राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, प्रथम संस्करण 2008

8. सिंह, मांडवी, 'भारतीय संस्कृति में कथक परम्परा', स्वाति पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990

9. बाजपेयी, रश्मि (संपादिका), 'कथक प्रसंग', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1999

10. 'Marg' (Special Issue based 50 Years of Celebrating the Arts), Published by Rizio B. Yohannan, Mumbai

11. 'वार्षिक प्रतिवेदन', 2008-09, प्रसार भारती, भारत सरकार

12. संगीत नाटक अकादेमी, वार्षिक रिपोर्ट 2017-2018

13. '78वाँ वार्षिक प्रतिवेदन', बनस्थली विद्यापीठ, बनस्थली (राजस्थान), जुलाई 2012-जून 2013

14. 14.गुप्ता, भारती, 'कथक और आध्यात्म', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001

15. https://www.ugc.ac.in/hindi_new/page/Genesis.aspx

16. I.G.N.C.A. द्वारा आयोजित ऑनलाईन कार्यक्रम, कलादर्शन डिवीज़न, वक्ता - पं. बिरजू महाराज, विषय युगों-युगों से कथक साहित्य में बदलाव, दिनांक 22/06/2020, समय शाम 4 बजे से 5 बजे तक. (Facebook के माध्यम से प्राप्त ऑनलाईन विडियो)

17. https://aiu.ac.in/history.php

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्में

https://doi.org/10.5281/zenodo. 13765673

अहमदजान कासिमोव

ऐतिहासिक स्रोतों से हम को अच्छी तरह विदित है कि भारत और मध्य एशिया के लोगों के बीच के सांस्कृतिक आर्थिक तथा व्यापारिक संबंधों की जड़े बहुत गहरी है। ये संबंध लगभग 2500-2700 वर्षों से बनते चले आ रहे हैं। पुरातत्व विषयक स्रोतों और पुरानी हस्तलिपियों में इसके बारे में स्पष्ट रूप से बताया गया। उदाहरण के लिए Termiz और Karshi शहरों में खास तौर पर Al-hakim-at-Termiziy की समाधिय में किये गये पुरातत्त्व विषयक खोदों को ही लीजिये। इन खोदों के परिणाम में बौधिक, कुशल - काल की संस्कृति से संबंधित पुरातत्व विषयक विभिन्न जीने पायी गयी है।

भारत और उज्बेकिस्तान के वैज्ञानिक संबंधों में महान प्राच्यविद Abu Rayhan Beruniy की उपलब्धियां अलग स्थान रखती है। भारत की आज़ादी के बाद भारत और उज़्बेकिस्तान के संबंध नये स्तर पर पहुंचे। 1955-1961 के दौरा में स्वाधीन भारत के पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने दो बार उज़्बेकिस्तान की याता की थी। ताशकन्द के अलावा समरकन्द और बुखारा में भी हो आये थे।

आजकल भारत विश्व का एक शक्तिशाली और प्रतिभाशाली देश माना जाता है । यहाँ न सिर्फ़ उद्योग, कार बनाने और कृषि के क्षेत्रों में ही बल्कि ज्ञान और तेकनोलोजी, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा-केंद्र की शक्ति के लाभ उठाने, महासागरों के अनुसंधान, समाचार प्रोद्योगीकरण के क्षेत्रों के विकास में भी बहुत बड़ी उपलब्धियां प्राप्त हो रही है। भारत ने उज्बेकिस्तान की आज़ादी को पहले ही दिनों में मान लिया था। यह हमारे देश के स्वाधीन विकास पर उसके सख़्त विश्वास का प्रतीत था।

दोनों देशों के संबंध केवल संस्थाओं के स्तर पर नहीं बल्कि जन-कूटनीति की संभावनाओं का विस्तार तौर पर लाभ उठाने में भी विकसित हो रहे हैं। सन् 1992 का 18 मार्च उज़्बेकिस्तान और भारत की जनताओं की मित्रता और सहयोग का एक अध्य ऐतिहासिक तिथि मानी जाती है। इसी दिन को भारत और उज़्बेकिस्तान में राजदूतावासों के उद्घाटन के बारे में प्रोटोकोल पर हस्ताक्षर किया गया था। इस प्रोटोकोल के अनुसार सन् 1992 के सितंबर में दिल्ली में उज़्बेक जनतंत्र के कोंसल का उद्घाटन किया गया था । सन् 1994 के जनवरी को कोंसल राजदूतावास में परिवर्तित किया गया था।

सन् 1988 के 7 अगस्त को ताशकन्द में भारतीय जनतंत्र के प्रधान कोंसल कार्यरत हो गया था और सन् 1992 में वह राजदुतावास में परिवर्तित हो गया था। सन 1995 में ताशकन्द में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का उद्घाटन हमारे सांस्कृतिक संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना साबित हुई थी। सन् 2004 के अक्टूबर महीने में ताशकन्द स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र को लाल बहादुर शास्त्री की 100 वर्षीय वर्षगांठ के अवसर पर उन्हीं का नाम दिया गया था। यह सांस्कृतिक केंद्र आज कल दोनों देशों की सांस्कृति तथा कला के बीच में एक सेतु का काम पूरा करता आ रहा है। यहाँ हिन्दी भाषा सिखाई जा रही है। "योगा" तथा "कथक" मंडलियां कार्यरत हैं ।

उज़्बेकिस्तान - भारत की मित्रता कभी खत्म नहीं होगी। हमें याद है कि हमारे दादा-दादी कैसे लगाव से हिन्दी फिल्मों को देखा करते थे। इसके अलावा भारतीय संस्कृति हमारी संस्कृति से काफी मिलती - जुलती है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में भारतीय फिल्में अत्यंत लोकप्रिय है। मेरे भारतविद बनने में भारतीय फिल्मों का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। मैं अंदीजान नगर (Andijan) के जिस स्कूल में पढ़ता था उस में विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती थी। स्कूल पास करने के बाद मैं ताशकन्द राजकीय विश्वविद्यालय की ओरिएंटल फेकल्टी में भरती हुआ। जहाँ मुझे अध्यापकों से भारत के बारे में गहरी जानकारी मिली। सन् 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय में व्यावहारिक प्रशिक्षण पाने के बाद स्वदेश लौटकर में उज़्बेकिस्तान की टेलीविजन और रेडियो कंपनी में काम करने लगा। भारतीय फिल्मकारों का प्रतिनिधि मंडल हमारे देश में पहली बार 1954 में आया । 21 सितंबर से 20 अक्टूबर तक उसने कई नगरों का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान एक संयुक्त फिल्म बनाने का तय हुआ और 3 साल बाद फिल्म " परदेसी " वजूद में आई । मुख्य पार्ट नरगीज़ और रूसी अभिनेता ओलेग स्त्रिजेनोव ने अदा किया। इस के बाद " काला पठाड़ " फिल्म, खाजा अहमद अब्बास की फिल्म " मेरा नाम जोकर " उज़्बेक फिल्म-निर्देशक Mr. Latif Fayziev की फिल्म " गंगा पर सूर्योदय " तथा " अली बाबा और 40 चोर ", " सोहनी महीवाल " व " शिकारी " फिल्मों का निमार्ण हुआ । हर 2 साल में ताशकन्द में होनेवाले " एशियाई, अफ्रीकी और लातिन अमरीकी देशों के फिल्मोत्सव " में भी भारतीय फिल्मों का प्रभार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीते लगभग 45 वर्षों के दौरान उज़्बेकिस्तान के नगरों और गांवों, पड़ोसी गणतंत्रों की काम-काजी यात्राओं के दौरान मुझे ऐसे लोगों से मिलने और बात करने का मौक़ा मिला जिनके माता-पिता ने भारत के विख्यात राजनेताओं और लोकप्रिय फिल्मी अभिनेताओं व अभिनेत्रियों के सम्मान में अपने बच्चों का नाम जवाहरलाल, इंदिरा, राजीव, राज, नरगीज़, अमिताभ रखा।

सन् 1980 से सन् 2006 तक भारतीय श्रोताओं के लिए हिन्दी और उर्दू भाषाओं में उज़्बेकिस्तान के बारे में रेडियो कार्यक्रम तैयार करने के साथ-साथ 5 सितंबर 1994 से मैं " दूरदर्शन " और इसके बाद " नमस्ते " नामक एक घंटे के कार्यक्रम तैयार करने लगा जिनके माध्यम से मैं उज़्बेकिस्तान के दर्शकों को भारत के इतिहास, संस्कृति, कला और रीति-रिवाज से अवगत कराता था। सन् 1998 से मैं " Yoshlar " रेडियो चैनल पर " नमस्ते हिन्दुस्तान " नामक कार्यक्रम तैयार करता आ रहा हूँ। मैं हमेशा चाहता था कि जो फिल्में मैं ने भारत में देखी थी, उन्हें मेरे देशवासी उज़्बेक भाषा में देखें। आज तक मैं 300 से ज़्यादा भारतीय फिल्मों का अनुवाद कर चुका हूँ। उनके बीच धारावाहिक फिल्म " बहादूर शाह ज़ाफ़र " और " दिशाएँ " भी है।

" नमस्ते हिन्दुस्तान " कार्यक्रम का उद्देश्य उज़्बेकिस्तान - भारत मित्रता को बढ़ाना है। श्रोताओं के अनुरोध पर 25 साल से हिन्दी भाषा भी सीखाते हैं और हर तरह की प्रतियोगिता का भी एलान करते हैं। हम न सिर्फ उज़्बेकिस्तान के नगरों, गांवों बल्की तुर्कमनिस्तान, ताजिकिस्तान से भी चिट्ठी (ख़त) प्राप्त करते हैं। यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है कि हमारे दोनों जनगण के बीच सदियों पुरानी मैत्री को मज़बूत करने में मेरा भी कुछ हिस्सा है।

आज़ादी के अपने ७४ वर्षों में भारत ना सिर्फ़ अपने घर पर बल्कि विदेशों में विकसित प्रगतिशील देशों पर भी अपना प्रभाव छोड़ा है। कई ऐसे विषय है जिनपर चर्चा की जा सकती है। चुकि मैं उज़बेकिस्तान गणतंत्र का नागरिक हूँ। इसीलिए विदेश में भारत सरकार द्वारा किए गए विशेष कार्य में एक आईटीईसी ITEC भी है जिससे हज़ारो विदेशी मुल्कों के नागरिकों ने पदाई और ट्रेनिंगनपूर्णकर कर अपने देश में कार्य कर रहे है। जैसे कि मैं, अहमदजान कसिमोव ITEC से पर कर गये अपने देश में 44 से आदिक सालो तक काम करने के बाद अब मैं पेंशन पर हूँ लेकिन "नमस्ते हिंदुस्तान" आज भी चल रहा है।

प्रत्येक स्वतंत्र देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होती है। भारत ने ना अपने यहाँ बल्कि हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए बहुत प्रशंसनिये कार्य किए है जहाँ तक मुझे ज्ञात है कि आज विश्व के कई देशों में हिन्दी का प्रचार प्रसार हो रहा है। साथ ही साथ मैं यह यह भी कहना चाहूँगा की भारत सरकार, उनकी राजदूतावास

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

के मेहनत के अलावा हिंदी फ़िल्म- नाटकों ने भी एक अहम रोल अदा किए है, साथ ही साथ इनके ज़रिये हम संस्कृति को भी और अच्छे तरीक़े से जानने लगे है मौक़ा का फ़ायदा उठा कर हम यह कहना चाहते है की सास - बहू, बाग़बान आदि फ़िल्म हमें भरतियों संस्कृति से अवगत करती है हज़ारो स्टूडेंट्स ने हिन्दी में पदाई पूरी करने के बाद ऐन उज़मेकिस्तान में अपना हिन्दी स्कूल , कॉलेज तक है और पदाई जारी है हर कोई वहाँ नमस्ते या प्रणाम जाना है . कहने का मतलब भले ही हम दो अलग देश है लेकिन हमारे दिल एक है । इस सच से शायद ही कोई इंकार कर पाएगा की हिन्दी एक विश्वभाषा है केयोकिं वह एक देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में बोली और समझी जाती है

जीवित और सशक्त भाषा समाज की आधारशिला होती है जो मानसिक संकल्पना, सामाजिक यथार्थ और संप्रेषण की इकाई होने के साथ राष्ट्रीय प्रतीक भी है भारतीय विदेश मंत्रालय का ।TEC हम विदेशियों के लिये काफ़ी लफ़दायक है केयोकि इसी कार्यक्रम के ज़रिए हम आप तक पहुँच पाये हैं और अपनी पदाई भी पूरी की है तथा मैं इसका एक उदाहरण भी हूँ। साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय सांस्कृति सम्बंध परिषद की भूमिका भी महत्वपूर्ण है जो हमे भारतवर्ष पर बहुत ज्ञान देती है।

इन सभी बातो के साथ हिन्दी का और अधिक विकास पर सरकार को ध्यान देना चाहिए। उज़बेकिस्तान जैसे देश में ४००० से अधिक हिन्दी के जानकार हैं, कॉलेज में हिन्दी पदाई जारी है साथ ही स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी के नाम हिन्दी स्कूल भी है लेकिन मेरा एक सवाल क्या यह काफ़ी है? एक और आग्रह : हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए हम सबको इसके अधिक इस्तेमाल की ज़रूरत है आयोजित समारोह का आयोजन हिन्दी में हो ना की इंगलिश में हमे याद है कि भरतिये प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी में उज़्बेक छत्राओ से जान हिन्दी में बारे की तो काफ़ी खुश थे और स्टूडेंट्स को इंडिया आने का निमंत्रण भी दिया कहने का मतलब : ज़्यादा से खड़ा कार्यक्रमों में हिन्दी का प्रयोग ह और मैं यही प्रार्थना करता हूँ की वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में हिन्दी को समुचित सम्मान प्राप्त हो।

साथ ही साथ , दुख इस बात का। ही है की ताशकंद रेडियो के इंटरनेशनल विभाग में हिन्दी विभाग भी था जो ४० से अधिक समय से सफ़लतापूर्बक काम कर रहे थे परमूसे बंद कर दिया गया और भारत सरकार / राजदूतावास चुप रही। उज़बेकिस्तान में और भारत वर्तमान सरकार को चाहिए कि हिन्दी कॉलेज- स्कूल खोले जाए।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी भाषा अध्ययन - अध्यापन की समस्याएँ

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765681

डॉ सिराजूद्दीन नुर्मातोव

दक्षिणी एशिया की भाषाओं का विभाग,

ताश्कंद राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,उज़्बेकिस्तान

विश्व भर में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की समस्या हमारे विचार में अत्यंत महत्वपूर्ण लग रही है, क्योंकि आगामी भविष्य में हिन्दी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त करने की हेतु एक विशेष रणनीति विकसित करने की आवश्यकता है। इसी वातावरण में विशेषकर यह बात कहने योग्य है कि विख्यात भारतीय लेखक तथा कवि रघुवीर सहाय ने इसी सिलसिले में ऐसा विचार व्यक्त किया था। "कोशिश होनी चाहिए कि सामाजिक यथार्थ के प्रति अधिक से अधिक जागरूक रहा जाए और वैज्ञानिक तरीके से समाज को समझा जाए। वास्तविकताओं की ओर ऐसा ही दृष्टिकोण रहना चाहिए और यही जीवन को स्वरूप बनाए रख सकता था।... मैं ने अपनी कविता के इस चरण तक पहुँचते-पहुँचते शैली में ताल और गति के कुछ प्रयोग किये हैं। ताल को साधारण बोलचाल की ताल के जैसा बनाने में कुछ कविताओं में सफलता मिली थी"। हालाँकि उस कोशिश में कही कहीं उर्दू की गति की बंधी हुई शैली का सहारा लेना पड़ा है। भाषा को भी साधारण बोलचाल की भाषा के निकट लाने की कोशिश रही है, मगर इस में कहीं-कहीं भाषा की फिजूलखर्ची करनी पड़ी है। बहरहाल इस तरह की कोशिशें विचारवस्तु के दिल और दिमाग में उतरने के तरीके पर निर्भर रहेंगी और जरूरी है कि हम अपनी अनुमति को उसी प्रकार सुधारें, ताकि कविता भी वैसी ही जानदार हो सके, जैसी कि वे वास्तविकताएँ जिनसे हम कविता की प्रेरणा लेते हैं। विचारवस्तु का कविता में खून की तरह दौड़ते रहना कविता को जीवन और शक्ति देना है, और यह तभी संभव है जब हमारी कविता की जड़े यथार्थ में हों। *(वागर्थ पत्रिका, फरवरी 2014, अंक 223, पृ 7 भारतीय भाषा परिषद्)।*

उल्लेखनीय है कि उज़्बेकिस्तान में भारतविद्या की परम्पराओं का विकास, जो पिछले सत्तर वर्षों से होता आ रहा है मुख्यतः भूतपूर्व सोवियत देश में कार्यरत मास्को और लेनिनग्राद के दो मौलिक भारतविद् स्कूलों की उपलब्धियों और अनुभवों के आधार पर उभर आया था। आज कल हमारे देश में हिन्दी भाषा की उच्चतम शिक्षा का प्रतिनिधित्व करनेवाले हमारे विभाग के अध्येताओं में जिसको आज दक्षिण ऐशियाई भाषाओं का विभाग कहलाया जाता है उन दोनों स्कूलों के वरिष्ठ डॉ मोस्काल्योव और प्रो सेरेब्रयाकोव जैसे प्राध्यापक शिक्षक रहे थे। कारण विभाग की आधुनिक कार्य प्रणाली में उपर्युक्त स्कूलों की परम्पराएँ अभी तक सुरक्षित है।

गत अवधि के दौरान हमारे यहाँ नवीन भारतीय भाषाओं तथा साहित्य पर विशेषज्ञों की तैयारी के उद्देश्य से बहुत सी पाठ्य पुस्तकें, शब्दकोश और दूसरी पाठ्य सामग्रियाँ संकलित की गई थीं, जिनका उपयोग माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के संस्थानों में हो रहा है और विभाग के सारे सदस्यगण हमारे पूर्वजों और स्वर्गवास गुरुजनों के सृजनात्मक घरोहर को सीखने और दैनिक कार्यों में लाने को अपना सज्जनात्मक कर्तव्य समझते हैं। हम इसी सिलसिले में पाठकों को हमारे प्रयत्नों के कुछ परिणामों से परिचित कराना चाहते हैं।

स्वाधीन उज़्बेकिस्तान के माध्यमिक और उच्चशिक्षा के क्षेत्रों में हो रहे सुधारों के कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए, जिनका लक्ष्य निरंतर शिक्षा का कार्यान्वयन माना जाता है, हिन्दी की अध्यापन प्रणाली को हम तीन चरणों में विभाजित कर सकते हैं। इन में सब से पहले चरण में आम शिक्षा प्रदान करनेवाली पाठशालाएँ हैं जहाँ दूसरी कक्षा से नौवीं कक्षा तक पढ़ाई होती हैं। दूसरे चरण ने तो जिस में दसवीं कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है अकादमिक *lyceums* का नाम ले लिया है और तीसरा चरण हमारे विभाग में दी जानेवाली बी ए और एम ए की शिक्षा के रूप में प्रस्तुत है। इसी संबंध में हमारा उद्देश्य केवल पाठकों को तीनों चरणों की बुनियाद में डाले गये मुख्य सिद्धांतों से अवगत कराने का है।

हमारी समझ में सब से पहले मुख्य सिद्धांत के रूप में उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं की सांस्कृतिक भाषागत तथा *topological* समानता का सिद्धांत परमोचित माना जा सकता है, जो हमारे सदियों पुराने प्रचीन और दीर्घकालीन ऐतिहासिक आपसी संबंधों का परिणाम है। इसी लिये हमारी जनताओं के इतिहास में जर्दूश्ती, सूफ़ी-मत, भक्ति, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम की स्पष्ट रेखाएँ सर्वविदित हैं, जिनके सौजन्य से दोनों जनताओं के लिये अल-बेरूनिय, इब्न सिना, अमीर खुसरो, अलिशेर नवाई, जहरिद्दीन मुहम्मद बबुर, अब्दुलकदिर बेदिल, जेबुनिसा, बयरम खां, अबदुररहीम खने खनान, मिर्जा गालिब और आनकल रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, जुल्फीय, अम्रीता प्रितम जैसे व्यक्तित्व, कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ और सांस्कृतिक तथा कला की हस्तियाँ भी जीता-जागते मिसाल हो सकते हैं।

जहाँ तक भाषागत दृष्टिकोण का सवाल हो, उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं में कई हजार की संख्या में पायी जानेवाली आम शब्दावली के अतिरिक्त, जो सांस्कृतिक शब्दसंम्पदा का एक महत्वपूर्ण भाग सिद्ध है, ध्वनिविचार, व्याकरण और वाक्य-विन्यास के क्षेत्रों में भी बहुत सी समान विशेषताएँ दृष्टिगोचर हैं। इसी कारण दोनों भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण के संकलन के हेतु बहुत ठोस आधार बनाया जा सकता है और इसी के भीतर एक ऐसे आधारभूत तत्त्वों का आविष्कार किया जा सकता है, जो पाठन प्रक्रिया के लिये परम लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिये ध्वनिसमूह में *ज़ (za), क़ (qa), ग़ (g'a), ख़ (ha), फ़ (fa)* जैसे व्यंजन हैं, जो दोनों भाषाओं में अरबी और फारसी प्रभावों के फलस्वरूप प्रविष्ट हुए थे। व्याकरण में तो एसी बहुत सी संयुक्त क्रियाएँ मिल जाती हैं, जो दोनों भाषाओं में लगातार उपलब्ध हैं। फिर संज्ञा शब्दों के विकृत रूप जो विशेष प्रत्ययों के माध्यम से उज़्बेक भाषा में बनते हैं हिन्दी में विभक्तियों या परसर्गों के प्रयोग के अनुकूल हैं। और फिर बिलकुल इसी प्रकार दोनों भाषाओं के वाक्य-विन्यास में शब्दों का प्रमाणित क्रम निर्धारण एक ही पद्धति से स्थापित किया जाता है। इसी क्षेत्र में संयुक्त वाक्यों के निर्माण में भी *"लेकिन", "बल्कि", "कि", "ताकि", "अगर", "अगरची", "या"* जैसे संयोजकों की दोनों भाषाओं में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

इसी सिलसिले में उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं के इतिहास की तुलना अंग्रेज़ी और फ्रेंच के आपसी संबंधों और संपर्कों की ऐतिहासिक प्रक्रिया से की जा सकती है। इसी लिये हमें प्रतीत होता है कि हमारे भारतविद् विशेषज्ञों को अंग्रेज़ी-फ्रेंच तुलनात्मक व्याकरण का अनुभव गंभीरतापूर्वक सीखना चाहिए।

अभी रही बात हिन्दी भाषा के उन विशेष अध्यापनात्मक पद्धतियों की, जो विद्यार्थियों की विभिन्न कुशलताओं और दक्षताओं को विकसित करने के लिये खास तौर पर काम आ सकती हैं।

पहले पहल व्याकरण संबंधी कुछ ऐसी कुशलताओं का उल्लेख करना जरूरी है, जो बोलचाल और लेखन के अभ्यासों के जरिये से आप से आप इस्तेमाल में मौलिकता या स्थिरता प्राप्त कर सकती है। ऐसी कुशलताएँ संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक मिश्रत प्रणालीवाली जर्मनी और हिन्दी जैसी भाषाओं के अध्यापन के लिये बहुत सकारात्मक सिद्ध हो सकती हैं, जो प्रमाणित रूप से बोलचाल करने और भाषा समझने में ठीक से काम आ सकती हैं।

यह बात भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, विश्लेषणात्मक भाषाओं में वाक्य-विन्यास के उचित नियमों को अपनाने की दक्षताओं के विकास की अलग भूमिका होती हैं।

इस के अतिरिक्त हिन्दी के अध्यापनकार्य में भाषा मध्यम का भी बहुत विशेष महत्व होता है। इसी संबंध में वास्तव में उज़्बेकिस्तान में भाषा मध्यम के रूप में दो भाषाएँ उज़्बेक और रूसी प्रचलित है। इसका मतलब यह है कि, हमारे अधिकांश विद्यार्थी द्विभाषी हैं और यह तथ्य खास तौर पर बहुत उल्लेखनीय है, क्योंकि हिन्दी भाषा की कुछ व्याकरणिक विशेषताओं की तुलना बारी-बारी से उज़्बेक और रूसी भाषाओं से की जा सकती है। उदाहरण के लिये जब वाक्य-विन्यास के अभ्यासों की आवश्यकता पड़ती है तो उज़्बेक भाषा से और जब कभी कारकों के प्रयोग की बात उठती है, तो रूसी व्याकरण से तुलना की जा सकती है।

बिलकुल इसी ही तरह अप्रमाणिक या टकसाली न होनेवाले क्रिया रूपों के भूतकालिक कृदंत के अभ्यासों की ओर जब ध्यान जाता तो रूसी भाषा में प्रचलित व्याकरण में नियमों की सहायता ली जा सकती है। दूसरी ओर से आजकल विश्व भर में अंतरराष्टीय सम्पर्क और संप्रेषण की भाषा में परिणित होनेवाली अंग्रेज़ी के बढ़ते हुए प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, जिसकी प्रबल धारा का प्रभाव हिन्दी की शब्दगत और व्याकरणिक विकास में स्पष्ट रूप से विद्यमान होता जा रहा है - इसी लिये स्कूलों और उच्चशिक्षा संस्थानों में कार्यरत भारतविदों को अंग्रेज़ी व्याकरण और शब्दावली के उचित ज्ञान से सुसज्जित होते हुए भारतीय और अंग्रेज़ी मूर्धन्य ध्वनियों के उच्चारण में जो सुक्षम बारीकियाँ पायी जाती है उन पर पूरा काबू पाना चाहिये।

अंत में यह बात भी उचित लग रही है कि वर्तमान उज़्बेक और हिन्दी भाषाओं के सामाजिक और व्यवहारिक विशेषताओं में भी समानता उत्पन्न हो रही है। उदाहरणार्थ दोनों भाषाएँ हाल ही में स्वाधीन हुए देशों की राष्ट्रभाषाएँ बन चुकी हैं, जिनमें उन्हीं देशों की बहुजातीयता, बहुसाँस्कृतिकता और बहुपंथीयता निहित हैं। अतः दोनों में एक ही साथ विशेष महत्व रखनेवाली भाषा निर्माण की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, जो भाषागत परिस्थिति और भाषागत राजनीति पर निर्भर हैं। मिसाल के तौर पर नयी तकनीकी प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक परिभाषाओं के निर्माण और प्रमाणीकरण तथा नये शब्दों और परिभाषाओं को बनाने के स्त्रोतों की खोज, बोलचाल और साहित्य शैलियों के विभेदों से निपटने के उपायों का निर्धारण और स्पष्टीकरण जैसी समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। इन समस्याओं को सुलझाने की विधियाँ हमारे बीच में विचार और अनुभव का आदान-प्रदान और आपसी समृद्धिकरण की परंपराओं को विकसित करने के प्रयत्नों से ही दोनों जनताओं को आपस में लाने और सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में आगे बढ़ाने के हेतु नये-नये फलदायक आपाम खुल सकते हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हिंदी पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765687

युनूसोवा आदोलत
दक्षिणी एशिया की भाषाओं का विभाग,
ताशकन्द राजकीय प्राच्य-विद्या विश्वविद्यालय

उज़्बेकिस्तान और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का इतिहास बहुत पुराना है। उज़्बेक और भारतीय लोगों के बीच वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संबंध हमेशा विकसित होते रहे हैं। ग्यारहवीं शताब्दी के महान वैज्ञानिक बिरूनी ने भारतीय और संस्कृत भाषाओं का अध्ययन किया था। अल बेरुनी की रचनाएँ में लिखी थीं पर उन को अपनी मातृभाषा फ़ारसी के अलावा और तीन भाषाओं का ज्ञान था –

रीति-रिवाजों तथा प्रथा, सामाजिक जीवन, मापतंत्र विज्ञान आदि विषयों का भी अध्ययन किया था। भारत की यात्रा से पहले उन्होंने हिंदी सीख ली। बिरूनी ने संस्कृत से अरबी में "सांखी" और "योगसूत्र पतंजल" का अनुवाद किया और ग्रीक विद्वान Claudius Ptolemy टॉलेमी की कृति "यूक्लिड और अल्मागेसी" का संस्कृत में अनुवाद किया। भारत में रहे हुए वर्षों के दौरान बिरूनी ने एक प्रमुख विश्व प्रसिद्ध विश्वकोश की रचना की, जिसका नाम "इंडिया" रखा गया। इस कृति का अरबी, फ़ारसी और पश्चिमी भाषाओं में अनुवाद किया गया, जो न केवल मध्य एशिया में बल्कि पूरे विश्व में लोकप्रिय हुई। उज़बेक पाठक सदियों से इस पुस्तक को पढ़ते रहे हैं और वह हम को भारतवर्ष से परिचित कराती रहती हैं।

आज कल भारत संसार के विकासशील देशों में से एक है। हम जानते हैं कि वह पिछले बीस वर्षों से विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी देश रहा है। योग्य पेशेवरों को प्रशिक्षित करने में उच्च शिक्षा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। दुनिया भर के कई देशों के युवा भारत के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। वर्तमान समय में कई उज़्बेक युवा भारतीय भाषा और साहित्य के अध्ययन के माध्यम से भारत में रुचि रखते हैं। और

निस्संदेह, ये आकांक्षाएं उन्हें भविष्य में योग्य अनुवादक बनने की मदद करेंगी। हमारे देशों के राष्ट्राध्यक्षों द्वारा शिक्षा प्रणाली में आमूल सुधार के क्षेत्र में अनेक कदम उठाए जा रहे हैं। हम हिंदी भाषा के शिक्षकों को छात्रों के लिए नए प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना चाहिये है। सैकड़ों युवा लोग स्कूल, लाइस्युम और विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा सीखते हैं। ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री स्कूल №24 में 1956 से तथा ताशकंद राज्य विश्वविद्यालय के अंतर्गत लाइस्युम में भी सन् 1992 से हिंदी पढ़ायी जा रही है। स्कूल के छात्रों के लिए हिन्दी की सब से पहली तीन पाठ्य-पुस्तकें 1960-1962 में प्रकाशित की गईं। नीचे 1962 में प्रकाशित हुई तीसरी पाठ्य-पुस्तक की तसवीर है।

इस लेख में उज़बेकिस्तान में प्रकाशित हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। दोनों देशों के बीच वैज्ञानिक सहयोग स्थापित करने के लिए हमारे युवाओं को उच्च स्तर की हिन्दी सीखने की आवश्यकता है। पिछले तीस-पैंतीस सालों के दौरान स्कूल के बच्चों और लाइस्युम के छात्रों के लिए हिंदी भाषा पर कोई पाठ्य-पुस्तकें नहीं बनाई गई थीं। और मैं आज स्कूल और लाइस्युम में पढ़ाई जानेवाली हिंदी भाषा की पाठ्य-पुस्तकों की जानकारी देना चाहती हूँ । सन् 1985 में ल.ब.शास्त्री नामक 24 वीं स्कूल के

छात्रों के लिये 5-8 कक्षाओं के लिए हमारे उस्तादों द्वारा क्रेस्टोमैथी यानी टेक्स्टों का संग्रह बनाया था। उज़बेकिस्तान के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भारी परिवर्तन हो रहे हैं। हमारा देश विश्व के सामने खड़ा है और यूरोप तथा विश्व के सर्वाधिक विकसित पूर्वी देश इसे पहचान रहे हैं। परिणामस्वरूप, हमारे देश में विज्ञान के विकास के साथ, प्राच्य अध्ययन की दिशा में एक व्यापक क्षेत्र खुल गया है। प्राच्य भाषाएँ सीखने की मांग बढ़ रही है। हाई स्कूल के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तकों में हिन्दी में अधिक विस्तृत ध्वन्यात्मक और व्याकरण संबंधी स्रोत दिए गए हैं; विभिन्न विषय दिए गए हैं, जैसे भूगोल, इतिहास, प्रसिद्ध भारतीय

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

राजनेताओं के बारे में बताने वाले ग्रंथ, भारत के राष्ट्रीय अवकाश, व्याकरण की सारणियाँ, ग्रंथों के शब्दकोश, मौखिक और लिखित अभ्यास, परीक्षण करने से हिन्दी भाषा का ज्ञान बढ़ता है। उज्बेकिस्तान और भारत के बीच संबंधों के विकास और सुदृढ़ीकरण के लिए इन देशों की संस्कृति, संबंधों और मौजूदा भाषाओं का गहन अध्ययन आवश्यक है।

दो साल पहले कक्षा 5 से 11 तक के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें बनायी गईं। इन पुस्तकों को लिखने का उद्देश्य आधुनिक शैक्षणिक तकनीकों और नई शिक्षण विधियों का उपयोग करके छात्रों को हिंदी की मूल बातें सिखाना, उनके ज्ञान और कौशल को विकसित करना है। ये पुस्तकें ताशकंद के लाल बहादुर शास्त्री नामक स्कूल नंबर 24 विद्यार्थियों के लिए प्रकाशित की गई हैं, जहां हिंदी विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। भारतीय दूतावास और लाल बहादुर शास्त्री भारतीय संस्कृति केंद्र की सिफारिश पर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के वित्तीय अनुदान से मुद्रित किया गया है। मेरी तरफ़ से 5-6 कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं। पाठ्य-पुस्तकों में 30-40 पाठ हैं, जिन में विभिन्न विषयों पर 6 से 8 तक अनुवाद करने के व्याकरणिक अभ्यास, पढ़ने और सुनाने के लिए टेक्स्ट और नए शब्दों और वाक्यांशों की शब्दावली भी दी गयी हैं। छात्र लेखन अभ्यास के आधार पर स्वरों और व्यंजनों को याद करते हैं और बिंदुओं के स्थान पर उपयुक्त अक्षर लगाकर लिखते हैं।

अभ्यास №1. इन अक्षरों का प्रयोग करके नये शब्द लिखिये।

अ	आ	इ	ई
अनार	आलू	इमारत	ईख
......	......	......	......

स्कूली बच्चों के लिए यह शैक्षिक मार्गदर्शिका पिछली पाठ्य-पुस्तकों के विपरीत अनेकता मौखिक और लिखित अभ्यास मिलते हैं, विभिन्न विषयों पर पाठ, अस्तित्व का अध्ययन करने के लिए विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया गया था, विशेष रूप से व्याकरण संबंधी विषयों के अध्ययन में। बच्चों को हिंदी भाषा में रुचि पैदा करने, नई शब्दावली सीखने और उन्हें याद करने के लिए विभिन्न की तालिकाएं दी गईं। इन पाठों का उद्देश्य मौखिक भाषण का सुधार करना और शब्दावली को बढ़ाना है। 1500 से अधिक शब्दोंवाले इन पाठों में स्कूल, परिवार और हमारा घर जैसे विषय शामिल हैं। प्रश्नोत्तर का अभ्यास, हिंदी से उज्बेक और उज्बेक से हिंदी में अनुवाद करने के अभ्यास, विभिन्न प्रकार के चित्र, पोस्टर, कविताएँ और हिन्दी में वीडियो फ़िल्म का उपयोग करना देवनागरी वर्णमाला को सीखने के लिए प्रभावी हो सकता है।

अभ्यास № 2. प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

यहाँ कितना पेड़ है ? वहाँ कितने पेड़ हैं ?

अभ्यास № 3. निम्नलिखित उदाहरणों को लिख लीजिये।

कापी + याँ → कापियाँ	अलमारी + याँ → अलमारियाँ
लड़की + याँ → लड़कियाँ,	खिड़की + याँ → खिड़कियाँ

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

छठीं कक्षा की हिंदी पुस्तक लिखने का उद्देश्य पढ़ाने की नवीनतम तरीकों, वीडियो और ऑडियो प्रस्तुतियों के माध्यम से छात्रों की सहभागिता बढ़ाना है। पाठ के समय कई अलग-अलग अभ्यास उदाहरण के रूप में दिए गए हैं। इस अभ्यास से छात्रों को शब्दों को सही ढंग से लिखकर उन्हें याद करने में मदद मिलेगी, साथ ही शब्दावली में भी वृद्धि होगी। उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र को उत्कृष्ट ग्रेड मिलेगा, जिस से छात्र कक्षा में सक्रिय रह सकेगा। हिंदी लेखन और वर्तनी नियमों की शिक्षा लिखित अभ्यास के माध्यम से दी जाती है। संज्ञानात्मक मानचित्र पर नए शब्द लिखने की प्रतियोगिता से हिंदी में नए शब्दों को सही ढंग से लिखने और सही वाक्य बनाने की क्षमता विकसित होती है। नीचे हम उन अभ्यासों के उदाहरण दे रहे हैं जो छात्रों के संज्ञानात्मक कौशल को बढ़ाते हैं।

अभ्यास № 4. नये शब्दों का अनुवाद करके वाक्य बनाइये।

1. poytaxt- राजधानी
2. shahar- ....
3. qism- ....
4. yangi- ....
5. eski - ....
6. respublika- ....
7. daryo- ....
8. joylashmoq- ......

नये शब्दों को लिखिये।

हिंदी में संज्ञा दो लिंगों में विभाजित किया जाता है। हमारे छात्रों के लिए संज्ञाओं को स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में विभाजित करने से कुछ कठिनाई होती है। क्योंकि उज़बेकी भाषा में लिंग नहीं मिलते। इसी लिए महत्वपूर्ण बात है कि प्रत्येक पाठ में शिक्षक को संज्ञाओं

के स्त्रीलिंग और पुल्लिंग से संबंधित नियमों को समझाना चाहिये। अद्यापक को हर पाठ में शब्दों को लिंग के साथ लिखना पड़ता होगा। लिंग सहित शब्दों को याद न करने से वाक्य बनाना गलत हो जाता है। इसके अलावा, बहुवचन में संज्ञा बनाने के नियमों की अज्ञानता से ग़लतियाँ हो सकती हैं। नए शब्दों के लिंग सूचक के साथ बहुवचन रूप के संस्मरण और संयुग्मन के विषय पर अभ्यास करने की सिफारिश की जाती है। नियमों को प्राप्त करने के बाद छात्रों के लिए सरल अभ्यास करना उचित है। शिक्षक शब्दों को स्त्रीलिंग और पुल्लिंग में विभाजित करके तालिका भरने के अभ्यास को नियंत्रित करता है।

अभ्यास № 5. निम्नलिखित शब्दों को लिंग के अनुसार पर तालिका भरिये।

बेग, खिड़की, अलमारी, तख़्ता, पुस्तक, चित्र, कापी, झंडा, पेंसिल, फल।

शब्द	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
उदाहरण	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कमरा	कमरा	कमरे		
मेज़			मेज़	मेज़ें

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

बेग	......	......	......	......
खिड़की	......	......	......	......

हिन्दी में प्रत्यय-पूर्वसर्गों का सही प्रयोग भी बहुत महत्वपूर्ण समझा जाता है। अधिकांशतः छात्र लोग अभ्यास करते समय तथा वाक्यों का अनुवाद करते समय पूर्वसर्गों के साथ गलतियाँ करते हैं। ऐसा न होने के लिए शिक्षक को व्याकरणिक नियमों की याद दिलाते रहना चाहिए तथा हिंदी में वाक्यों की सही रचना पर नज़र रखनी चाहिए।

अभ्यास № 6. **का** विभक्ति का प्रयोग करके अभ्यास पूरा कीजिये।

का	के	की
अहमद का बेग सईद का समाचार-पत्र दिलबर का घर भाई का रबड़ कमरे का दरवाज़ा	आज़ाद के दो भाई सईद के साथी कमोल के बेग नादिरा के तीन गिलास कमरे के दरवाज़े	सईद की पुस्तक अनवर की ऐनक ज़मीरा की सहेलियाँ पाठशाला की कक्षाएँ कमरे की खिड़कियाँ

स्कूल, परिवार के सदस्यों, मित्र और व्यवसायों के बारे में वाक्य बनाना और बातचीत करना तथा इन विषयों पर अभ्यास करना छात्रों को बोलने के कौशल को सुधारने में लाभदायक है। छात्रों की शब्दावली जानने को बढ़ाने के लिए लगातार नए शब्दों को सीखाना बड़ा महत्व रखता है। निम्नलिखित उदाहरण शब्दकोश के आधार पर आपसी बातचीत बनाने का उपाय दिया है।

अभ्यास № 7.निम्नलिखित शब्दों की सहायता से अपने घरवालाओं के पेशाओं के बारे में वाक्य बनाइये।

मज़दूर, कारीगर, नरस, बेचनेवाला, बावरची, वकील, पुलिसवाला

विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के लिए लाइस्यम के छात्रों को हिंदी पाठ्य - पुस्तकें लिखी गई हैं। लाइस्यम में पढ़नेवाले छात्रों के लिए हिंदी की पाठ्य-पुस्तक का पहला भाग 2010 में प्रकाशित हुआ, 2017 में दूसरा भाग का संस्करण प्रकाशित किया गया। इन नयी पाठ्य-पुस्तकों में नये विषय प्रस्तुत किये गये। पहले पाठ्य-क्रम में ध्वन्यात्मक और व्याकरण संबंधित विषय हुए थे तथा दूसरे पाठ्यक्रम में व्याकरण और वाक्यविन्यास के विषयों के साथ-साथ भारतीय साहित्य और संस्कृति से संबंधित 1,500 से अधिक शब्द और वाक्यांश उपस्थित हैं। हिंदी में पाठ पढ़ने, अपने विचार लिखने और समझाने, दो भाषाओं में अनुवाद करने और बोलने के कौशल विकसित करने पर भी ध्यान दिया गया। इनके अतिरिक्त,

हिंदी में साहित्य वाचन और स्वतंत्र कार्यों के अनुवादिक अभ्यास भी इस पुस्तक में लिखे गये। प्रथम चरण की शिक्षण पुस्तिका दूसरी पाठ्य-पुस्तक की तुलना में विषयों की विविधता, विशेष रूप से व्याकरण संबंधी विषयों, बहुत सारे अभ्यासों और पाठ के शब्दकोश के संदर्भ में भिन्न होती है। ध्वनिविज्ञान एवं लेखन अनुभाग में हिंदी में स्वरों और व्यंजनों का उच्चारण तथा लेखन नियम बताए गए हैं। इस खंड के सात पाठों में प्रतिलेख, ध्वन्यात्मक नियम और अभ्यास दिए गए हैं । ध्वन्यात्मक अभ्यास करने की प्रक्रिया में, छात्रों

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

को हिंदी वर्णमाला, दीर्घ स्वर, स्वरों के प्रकार, उनके जोड़ के साथ लिखने के नियम, साथ ही सही उच्चारण की समझा गया है। व्यंजन और महाप्राण व्यंजनों के लेखन और उच्चारण में अंतर को समझने के लिए एक नमूना अभ्यास दिया गया है। लेखनविधि और व्याकरण के प्रारंभिक विषय हैं। माध्यमिक विद्यालयों की पाठ्य-पुस्तकों में हिंदी के ध्वन्यात्मक और व्याकरण संबंधित अभ्यास दिए गए हैं। साथ ही भारत के भूगोल, इतिहास, प्रसिद्ध राजनेता, राष्ट्रीय अवकाशों, पद्यों की शब्दावली, टेस्टों के नमुने भी प्रस्तुत हुए हैं। पहले संस्करण की पाठ्य-पुस्तक मात्रा, विषयों की विविधता, विशेष रूप से व्याकरण, बड़ी संख्या में अभ्यास और पाठ के शब्दकोश के संदर्भ में स्कूल के लिए तैयार की गई पाठ्य-पुस्तक से भिन्न है।

अभ्यास 8. व्यंजन और महाप्राण व्यंजनों के लिखने पर ध्यान दीजिये।

at- āṫh	अत-आठ	pal-phal	पल- फल
ko'nā - kho'nā	कोना-खोना	do'l- dho'p	दोल-धोप
kāt-khāt	काट-खाट	tānā – thānā	ताना-थाना
go'rī - gho'ṙ ī	गोरी-घोड़ी	sāt – sāth	सात-साथ
bāg – bāgh	बाग-बाघ	do'nā - dho'nā	दोना-धोना
cho'r – chho'ṙ	चोर-छोड़	pal – phal	पल-फल

व्याकरण अनुभाग में हिंदी आकृति विज्ञान से संबंधित विषय शामिल हैं। हिन्दी में संज्ञाओं की श्रेणी, संज्ञाओं का दो लिंगों और उपमाओं में विभाजन, उज्बेक भाषा से मूलतः भिन्न है। इन्हें जानने के लिए व्याकरण के नियमों में निपुणता हासिल करना आवश्यक है। छात्र अभ्यास करके नये विषय सीखते हैं। प्रस्तुतिकरण की विधि, अर्थात स्लाइडों के द्वारा व्याकरण के नियमों को मजबूत किया जाता है। छात्र पाठ्यक्रम प्रक्रिया के विषयों पर स्वतंत्र रूप से अपनी प्रस्तुतियां भी प्रदर्शित कर सकेंगे।पाठ्य-पुस्तक के प्रथम भाग में सर्वनाम, गणनावाचक, क्रमवाचक और समुदायवाचक संख्याँ, विशेषण, विशेषणों की तुलना, क्रिया काल जैसे “सामान्य वर्तमानकाल” “ नित्यताबोधक भूतकाल ”, “सामान्य भविष्य काल” दिए गए हैं।

पढ़े हुए व्याकरणिक विषयों के बाद नियंत्रण कार्य किया जाता है । जिन विद्यार्थियों ने व्याकरण के विषयों को अच्छी तरह सीख लिया है, उनका हिंदी की जानकारी बढ़ रही है। पाठ्य-पुस्तकों की शब्दावली और शब्दार्थीक अभ्यास छात्रों की शब्दावली साधनों को बढ़ाने के साथ-साथ हिंदी में वाक्य रचना को भी विकसित करते हैं। छात्र लोग भारत के भूगोल, इतिहास और राष्ट्रीय त्योहारों पर भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पाठ्य-पुस्तक में भारतीय राज्य, प्रमुख शहर, प्रसिद्ध नेता, लेखकों, सुधारक, राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्रियों की कारवाइयाँ का वर्णन किया गया है। इसके अलावा भारत के इतिहास पर आधारित कहानियाँ भी मिलती हैं जिन में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री जैसे प्रसिद्ध नेताओं के जीवन और कार्यकलापों के बारे में पढ़ सकते हैं । राजा राम मोहन राय, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं और विश्व भर प्रसिद्ध लेखों में से राबिन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेम चन्द की जीवनी से संबंधित टेक्स्ट दिये गये हैं। भारत और उज़्बेकिस्तान के राजकीय नेताओं की भेंटें, सामाजिक-राजनितिक विष्यों पर शब्दावली तथा समातार-पत्रों के लेखों से कुछ नमुने, परीक्षण कार्यों का (टेस्ट) संग्रह इस पुस्तक में मिलता है। मुझे आशा है कि इन पाठ्य-पुस्तकों में हिन्दी भाषा सीखना और भारत के बारे में दी गई जानकारी उज़बेक छात्रों के लिये लाभदायक होगी।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उज़बेकिस्तान के इतिहास में भारतीय मूल निवासी।

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765691

बयोत रहमतोव
पूर्व प्राध्यापक
ताशकन्द राजकीय प्राच्य-विद्या विशविद्यालय
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

I.उज़बेकिस्तान में पूर्व भारतीय खानाबदोश जातीय समूह।

यह ध्यान देने योग्य है कि यह लेख " डायस्पोरा" परिभाषा से संबंधित है । यद्यपि यह अवधारणा प्राचीन काल से मौजूद है, फिर भी इस परिभाषा के अर्थ को स्पष्टीकरण में एकमत नहीं है । [1] ज्यादातर मामलों में, "डायस्पोरा" शब्द की परिभाषा जातीय समुदायों से जुड़ी होती है, जिसमें किसी विशेष राष्ट्र के व्यक्तिगत प्रतिनिधियों की भूमिका शामिल नहीं होती है। इस मुद्दे की व्याख्याओं में विचलन को ध्यान में रखते हुए, हमने अपने लेख " उज़बेकिस्तान के इतिहास में भारतीय मूल निवासी।" का शीर्षक दिया है, जो एक जातीय और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से दोनों मुद्दों को शामिल करता है।

वैश्वीकरण के प्रक्रिया के प्रकाश में, यह मुद्दा और भी प्रासंगिक हो जाता है, और यह लेख विदेशों में भारतीय प्रवासियों के प्रभाव क्षेत्र में और भी गहन अनुसंधान करने के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

उज़बेक भारतविद्या में इस विषय का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। A. X. Doniyarov, O. Buriyev, और A. A. Ashirov कि, प्रसिद्ध पुस्तक " मध्य एशियाई लोगों के एथनोग्राफी और उन का जातीय इतिहास" [2] में भी इस मुद्दे पर अपेक्षाकृत कम जानकारी मिलती है। इसका कारण यह है कि एक लंबे समय के दौरान, उज़बेकिस्तान के विद्वानों में जातीय मुद्दों पर विचार किए बिना भारत और मध्य एशिया के बीच राजनीतिक-आर्थिक और सांस्कृतिक-वाणिज्यिक संबंधों पर अधिक ध्यान दिया गया डै। यह भी उल्लेखनीय है कि उज़बेकिस्तान 1860 से 1917 तक ज़ार रूस के तुर्केस्तान क्षेत्र का हिस्सा रहा। इसलिए, इस लेख में, इस अवधि की घटनाओं का उज़बेकिस्तान से नहीं, बल्कि तुर्केस्तान नाम से वर्णन किया जाता है है।

"डायस्पोरा" परिभाषा के मूल अर्थ के अनुसार , आधुनिक उज़बेकिस्तान के क्षेत्र में पुराने ज़मानों से बसे अनेक जातीय समुदायों का विषय सामने आता है , जिस में "लोली" नाम के जनजातियों पर अधिक चर्चा होती है। ऐतिहासिक रूप से उन को भारतीय मूल प्रवासी जनजाती माना जाता है। ताजिकिस्तान में, उन्हें "जोगी (जुगी)" कहा जाता है, और वे स्वयं को "मुगट" के रूप में पहचानते हैं। वैज्ञानिक लेखों और आधिकारिक दस्तावेजों में, उन्हें अक्सर "मध्य एशियाई जिप्सी" या सिर्फ़ "जिप्सी" के नाम से संदर्भित किया जाता है, इस लिये इन चारों नामों को एक अर्थ में समझना पड़ेगा। हालांकि, वास्तव में, एक तरफ सार्वभौमिक रूप से यूरोप में मान्यता प्राप्त "जिप्सी", और दूसरी तरफ मध्या ऐशिया के स्थानीय "लोली" और "जोगी", जनजातियां अपने आप को एक दूसरे से अलग रखते हैं।

मध्य एशिया के जिप्सियों की संख्या के बारे में भी सटीक जानकारी देना मुश्किल है। एस. एन. अबाशिन के अनुसार, "मध्य एशिया में जिप्सियों की संख्या को कभी भी सटीक रूप से गिना नहीं गया है, और उन्हें गिनना असंभव है, क्योंकि कई जिप्सी अन्य राष्ट्रीयताओं के प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं। 1989

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

की जनगणना के अनुसार, लगभग 25,000 मध्य एशियाई जिप्सी थे पर उनकी वास्तविक संख्या हमेशा कम से कम दोगुना अधिक है "[3]

निवास क्षेत्रों के अनुसार , वे काराकल्पकिस्तान को छोड़कर उज़्बेकिस्तान के सभी क्षेत्रों में रहते हैं। रूसी मानवविज्ञानी ए.आई. विल्किंस के अनुसार, 19 वीं शताब्दी में, वे मुख्य रूप से बल्ख, बुखारा, समरकंद, ताशकंद, फर्गाना और चिमकेंत में बसे थे ।[3]

"मध्य एशियाई जिप्सी" समुदाय के निवासी, विद्वान होल नाजारोव ने कई वर्षों तक इन जनजातियों का विभिन्न नृवंशीय लोक किंवदंतियों, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक पहलुओं से अध्ययन किया है। [4] उनके शोध के अनुसार, मध्य एशिया में भारतियों का प्रवास 10 वीं शताब्दी में शुरू हुआ, फिर भारत में अमीर तैमूर के अभियानों के बाद 14 वीं शताब्दी में इस प्रक्रिया में तेजी आई। मध्य एशिया के खास क्षेत्रों में बसे भारतीय प्रवासियों के बारे में प्रसिद्ध भारतीय भाषाविद् भोलानाथ तिवारी जी की जानकारियां बड़ी दिलचस्प हैं । [5] उन्हों ने , सुरखांडरिया क्षेत्र में बसे अलग-अलग जातीय समूहों की बोलियों का अध्ययन किया है और उस की परिणाम में हिंदी की एक नई बोली की खोज की है। उन्होंने यह राय व्यक्त की कि इस जातीय समूह का पुनर्वास अपेक्षाकृत हाल की अवधि में हुआ, अर्थात् 19 वीं शताब्दी में।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार यह जनजाती मुख्य रूप से तोते, बंदर और भालू जैसे जानवरों के साथ शो करते थे। इसके अतिरिक्त, उनमें से कई लोग छोटे-मोटे घरेलू सामान बेचकर गुज़ारा करते थे । उन को स्थानीय लोग "अत्तार" कहते थे [5] । स्थानीय आबादी के साथ वे उज़्बेकी या ताजिकी में संवाद करते थे, जबकि आपस में, अपनी बोली का उप्योग करते थे। यह देखते हुए कि वे अफगानिस्तान से यहां आए थे, अपनी बोली को "अफ़ग़ानी," " जुबानी अफ़ग़ानी " या "ल़फ़्ज़ी अफ़ग़ानी" के रूप में संदर्भित करते थे। हालांकि, भ. तिवारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि उनकी बोली का अफगानी (दारी) भाषा या पश्तो से कोई संबंध नहीं है। इस जनजाति के कुछ सदस्यों ने खुद को और अपनी भाषा को "परया" के रूप में संदर्भित किया है। एक व्यापक भाषाई विश्लेषण के माध्यम से, भ. तिवारी जी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह हिंदी की एक अलग नई बोली है, जिसे उन्होंने "ताजउज़्बेकी " नाम देना सही है। [5] उनकी पुस्तक "ताजउज़्बेकी" में इस विषय पर व्यापक भाषाई विश्लेषण मौजुद है।

भोलानाथ तिवारी ने "ताजउज़्बेकी" बोली के वक्ताओं और यूरोपीय "जिप्सी" ,यानी, "रोमानी" जनजातियों के बीच के संबंध की भी जांच की है, जो 2 वीं शताब्दी के आसपास यूरोप, एशिया और अन्य देशों में जा बसे थे। नीचे उनमें से कुछ जानकारियां हैं: [5]

ताजउज़्बेकी बोली रोमानी बोलियों से भी पूरी तरह अलग है। विशेषकर, रोमानी बोलियां मूल रूप से प्राकृत से जुड़ी हुई हैं, जबकि ताजउज़्बेकी का संबंध हिंदी और आधुनिक भारतीय भाषाओं से है। हालांकि रोमानी लोग उज़्बेकिस्तान और ताजिकिस्तान में भी रहते थे, पर यहां उन्होंने अपनी बोली खो दी है और अब अन्य स्थानीय भाषाओं या ताजउज़्बेकी का उपयोग करते हैं।

ताजउज़्बेकी में बोलने वाली आबादी में मुख्य रूप से सुन्नी मुसलमान शामिल हैं। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनका प्रवास उनके ऐतिहासिक क्षेत्र में इस्लाम के प्रचार से भी जुड़ा हुआ हो सकता है। भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ताजउज़्बेकी का आधार पश्चिमी हिंदी भाषाओं के साथ मेल खाता है। इस आबादी की भाषाई विशेषताओं का अध्ययन करके, भोलानाथ तिवारी का सुझाव है कि वे मूल रूप से राजस्थान में रहते थे। वहां से वे पंजाब चले गए, जहां उनकी बोली पंजाबी भाषा से प्रभावित थी। इसके बाद वे मुल्तान चले गए और बाद में अफगानिस्तान चले गए। कुछ समय के लिए अफगानिस्तान में रहने के बाद, वे ताजिकिस्तान चले गए, और फिर आबादी का एक हिस्सा उज़्बेकिस्तान में बस गया। हालांकि भोलानाथ तिवारी रोमा सहित अन्य जातीय प्रवासियों से ताजउज़्बेकी वक्ताओं को अलग करने की ओर झुकाव रखते

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हैं, यह मुद्दा जटिल बना हुआ है, और स्थानीय आबादी के बीच, उज़्बेकिस्तान में सामूहिक रूप से उन्हें "लोली " और ताजिकिस्तान में "जोगी (जुगी)" के रूप में संदर्भित करने के लिए एक प्रचलित धारणा है, जबकि आधिकारिक ग्रंथों में, उन्हें "जिप्सी" कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि आधुनिक दिल्ली के आसपास के क्षेत्र में जोगी के नाम से जानी जाने वाली आबादी भी है।

भारतीय डायस्पोरा से संबंधित और एक लेख महत्वपूर्ण है जो उज़बेकिस्तान की एकेडमी ऑफ साइंसेज की "इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज" की एक शोधकर्ता बी. खोजाएवा द्वारा लिखा गया है । यह लेख 20वीं सदी के अंत में फ़रगाना घाटी में भारतीय डायस्पोरा से संबंधित है। यह लेख अलग विश्लेषण के योग्य है इस लिये यहाँ इसका वर्णन नहीं किया गया है। [6]

सन् 1991 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, उज़बेकिस्तान की सरकार ने देश में सभी जातियों को समानाधिकार दिलाने पर विशेष जोर दिया है। उज़बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रीय मानवाधिकार केंद्र के प्रमुख, श्री उत्किर अचीलोव के अनुसार, वर्तमान में उज़बेकिस्तान में 130 से अधिक जातियां और जातीय समूहों के प्रतिनिधि रहते हैं। उनमें से रोमा (लोली) जनजातियों को भी हमारे देश में समानाधिकार प्राप्त है। [7]

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में उज़बेकिस्तान में 86,563 रोमा (लोली) रह रहे हैं, जिनमें 45,092 महिलाएं और 41,471 पुरुष शामिल हैं। इनमें से 30,506 लोगों की कोई शिक्षा नहीं है, जिनमें 6 वर्ष से अधिक आयु के 46,422 व्यक्ति हैं, उन में से 27,803 लोगों ने नागरिकता पासपोर्ट प्राप्त किया है। 2020 के अंत तक, 28,000 से अधिक रोमा (लोली) नाबालिगों को पंजीकृत किया गया था, जिसमें 15,000 घर पर रहते थे, 428 बच्चे पूर्वस्कूली शैक्षणिक संस्थानों में जाते थे, 12,000 बच्चे सामान्य शिक्षा स्कूलों में जाते थे, और 98 कॉलेजों और लाइसेमों में नामांकित थे। [7]

वर्तमान में, रोमा (लोली) उज़बेकिस्तान के विभिन्न क्षेत्रों में समूहों के रूप में रहते हैं । वे लोग घुमंतू जीवनशैली को छोड़कर स्थायी रूप में गुज़ारा करते हैं। विशेष रूप से, वे ताशकंद,बुखारा, समरकंद, फ़रगाना, जिज़ख, नवोई, काश्कादारया, सुरखांदरिया में या उन के आसपास के क्षेत्रों में उज़बेकों के साथ-साथ रहते हैं।

उज़बेकिस्तान में रहने वाले रोमा (लोली) लोगों की जीवन शैली आज अतीत से काफी अलग है। दूसरे शब्दों में, वे नए सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का अनुभव कर रहे हैं। रोमा (लोली) हमारी सरकार द्वारा छोटे व्यवसायों और निजी उद्यमिता के विकास के लिए प्रदान किए गए अवसरों का भी उपयोग करते हैं। नतीजतन, उद्यमिता या छोटे व्यवसाय में लगे रोमा (लोली) लोगों का एक आग्रणीय समुदाय उभरा है। उनके बच्चे शैक्षिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हैं, जिस से उनमें शिक्षित व्यक्तियों में वृद्धि हुई है। [7]

आधुनिक उज़बेकिस्तान में रोमा (लोली) लोगों के वर्तमान जीवन के बारे में जानकारी इंटरनेट पर कई ब्लॉगर्स द्वारा प्रकाशनों में पाई जा सकती है, उदाहरण के लिए: मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी के तहत इस्लामिक स्टडीज अकादमी में तुर्किक भाषाशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर लोसेवाया-बख्तियारवा; आई। वरलामोव (यूट्यूब वरलामोव 23/08/2022)। इंस्टाग्राम पर, Elvira Ibragimova (Instagram/ com/ ELV_Ibragimova)

II. आज के उज़बेकिस्तान में भारतीय प्रवासी लोग।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, उज़बेकिस्तान में भारतीय प्रवासियों के गठन का एक नया चरण शुरू हुआ। ताशकंद में भारत के दूतावास के अनुसार [8], वर्तमान में, लगभग 11,000 भारतीय नागरिक ताशकंद, बुखारा ,कर्शी, अंदिजान, फरगाना, उरगेंच में रहते हैं। उन में में मुख्य रूप से विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों में उद्यमी शामिल हैं। उनकी गतिविधि के प्रमुख क्षेत्रों में फार्मास्यूटिकल्स, कपड़ा

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

उद्योग, निर्माण, स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा शामिल हैं। वे आईसीटी (इंडिया क्लब ताशकंद) नामक एक गैर-लाभकारी संगठन द्वारा एकजुट हैं, जिसका गठन 2014 में किया गया था। अपनी पहचान बनाए रखते हुए, क्लब के सदस्य स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, होली, दिवाली, नवरात्रि जैसे राष्ट्रीय त्योहारों को मनाते हैं । ताशकंद में इस्कॉन मंदिर (कृष्ण चेतना के लिए अंतर्राष्ट्रीय सोसायटी) में धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करते हैं। वे स्थानीय त्योहारों के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं । 2023 में, पहली बार, उज़्बेकिस्तान में रहने वाले भारतीय प्रवासियों का एक प्रतिनिधि "प्रतिष्ठित प्रवासी भारतीय सम्मान" पुरस्कार का विजेता बन गया है। यह पुरस्कार भारतीय क्लब ताशकंद के अध्यक्ष और एक उद्यमी श्री अशोक कुमार तिवारी को प्रदान किया गया। यूक्रेनी संकट के बाद, उज़्बेकिस्तान भारतीय चिकित्सा छात्रों के लिए एक प्रमुख केंद्र बन गया है। वर्तमान में, लगभग 4,000 छात्र उज़्बेकिस्तान के विभिन्न चिकित्सा विश्वविद्यालयों में चिकित्सा का अध्ययन कर रहे हैं। [10]

संदर्भ:

1. Т.С.Кондратьева , К вопросу о понятии "диаспора ": Дискуссия в научном сообществе. 2009. ऑनलाइन उपलब्ध: https://cyberleninka.ru>article>k....
2. А. Х. Дониёрова , О.Буриева и А.А.Аширова " Марказий Осиё халқлари этнографияси, этногенези ва этник тарихи" Т "Янги давр" 2011
3. С.Н.Абашин, Цыгане-люли, ऑनलाइन उपलब्ध: URL: https://mytashkent/uz.>2010/04/02
4. Мустахкам Тангриёрова Правда и мифы о цыганах (рус.яз) ऑनलाइन उपलब्ध: URL : https://xabar.uz.>mustahkam
5. भोलानाथ तीवारी. ताजुज़्बेकी. 1970, दिल्ली / Bholanath Tivari. Tajuzbeki. 1970, Delhi.
6. Xodjayeva B. XX asr oxirida Farg'ona vodiysida hind diasporasi ....? ऑनलाइन उपलब्ध: URL:https://doi.org/10.5281/zenodo.7398208 /www.oriens.uz.
7. Гулчехра Дурдиева, ऑनलाइन उपलब्ध: URL:https://yuz.uz/uz/news/lolililarning-turmush-tarzini--yaxshilash-borasida- 05.11.2021
8. India-Uzbekistan Relations. ऑनलाइन उपलब्ध: URL: https://eoi.gov.in/tashkent/

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

देवियों के व्युत्पत्ति संबंधी विश्लेषण की समस्या पर – सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा"

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765699

जियाज़ोवा बेरनोरा मंसूरोवना
प्राच्य भाषा विभाग
विश्व अर्थव्यवस्था और कूटनीति विश्वविद्यालय

यह विश्लेषण, जिस पर इस लेख में विचार किया जाना है, मुख्य रूप से वी.म. बेसक्रोवनी के "हिंदी-रूसी शब्दकोश" और रामचंद्र वर्ममा "मानक हिन्दी कोश" पर आधारित है। साथ ही, "कालिका प्रसाद" द्वारा संपादित "बृहत हिन्दी कोश" से भी बहुत सारी जानकारी प्राप्त हुई थी। इसके अलावा, "संस्कृत-जर्मन शब्दकोश" और "संस्कृत-रूसी शब्दकोश" का भी उपयोग किया गया था।

भारतीय संस्कृति, जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, अपनी प्राचीनता से प्रतिष्ठित है और सैकड़ों सदियों से अपनी परंपराओं को संरक्षित रखती है। हिंदू धर्म की नींव 12 वीं -10 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में बनाई गई थी और यह चार पवित्र वेदों में शामिल है। इस मामले पर सबसे महत्वपूर्ण और सबसे पुराना काम ऋग्वेद[29] है, जिसमें वैदिक युग के हिंदुओं ने अपनी सभी घरेलू समस्याओं के लिए देवताओं की ओर रुख किया। उदाहरण के लिए: इंद्र, सूर्य, सोम, आर्य, मित्र, वायु आदि। उस समय से लेकर आज तक, हिंदुओं के जीवन में देवताओं का बहुत बड़ा स्थान है। प्राचीन परंपराओं के संरक्षण और धार्मिक समारोहों के संचालन के तरीके को उनके नाम से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए: "सप्तपदी" हिंदू विवाह समारोह का केंद्रीय समारोह है। "सप्तपदी" शब्द का अर्थ "सात कदम" है। समारोह के दौरान, ब्राह्मण पुजारी मंत्रों का पाठ करते हैं और दूल्हा और दुल्हन सप्तपदी नामक पवित्र अग्नि के चारों ओर सात बार चक्कर लगाते हैं। उसके बाद ही, दूल्हा और दुल्हन को कानूनी रूप से "पति" और "पत्नी" माना जाता है।[30]

भारतीय देवताओं की तरह देवियों की भी संख्या असंख्य है और हिंदुओं के जीवन में इनका बहुत महत्व है। ये सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा और अन्य देवियां हैं।

सरस्वती हिन्दू धर्म की प्रमुख वैदिक एवं पौराणिक देवियों में से हैं। अन्य दो लक्ष्मी और दुर्गा देवी हैं। सरस्वती को साहित्य, संगीत, कला की देवी माना जाता है। उसमें विचारणा, भावना एवं संवेदना का त्रिविध समन्वय है। वीणा संगीत की, पुस्तक विचारणा की और हंस वाहन कला की अभिव्यक्ति है।[31]

सूत्रों के अनुसार सरस्वती सोने के रथ पर सवार हैं और घोड़ों के धनी हैं, वहीं वे गायिकाओं की रक्षा करती हैं और काव्य से भी जुड़ी हैं। वह पवित्र वाच या वाक् की देवी हैं।[32]

"ब्राह्मणों" में वाच को वाक् और वाक्पटुता की देवी भी कहा जाता है।[33] महाकाव्य काल तक, "वाच" विज्ञान और वाक्पटुता की देवी सरस्वती के रूप में प्रकट हुआ।[34] स्रोत सरस्वती को ब्रह्मा की पत्नी, संस्कृत

[29] Индийская философия: Энциклопедия / Отв. ред. М.Т. Степанянц; Ин-т философии РАН. — М.: Вост. лит.; Академический Проект; Гаудеамус, 2009. – С. 259.

[30] http://www.vivaaha.org/saptapad

[31] https://hi.wikipedia.org

[32] Мифы народов мира. Энциклопедия. (В 2 томах). Гл. ред. С.А.Токарев. М.: 1982. – т. 1. К-Я. – С. 409.

[33] Шоматов О.Н. "Қадимги ҳинд маданиятига оид сўзлар луғати". Т., 2005. С. 83.

और देवनागरी वर्णमाला के आविष्कारक और कला और विज्ञान के संरक्षक के रूप में वर्णित करते हैं। सरस्वती बुद्धि की देवी के साथ-साथ पूर्वी पंजाब से बहने वाली एक नदी के नाम से जुड़ी हुई है।[35] अन्य मामलों में, मिश्रित राय है कि सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी या बेटी कहा जाता है और बाद में वह विष्णु की पत्नी थी। बृहद्धर्मपुराण के अनुसार, सरस्वती शिव के पुत्र को लिखने के लिए एक कलम और रंगीन स्याही ले आई।[36]

हमारे शोध के परिणामों के अनुसार कुछ सूत्रों का कहना है कि देवी सरस्वती के 16 नाम हैं।[37] इनमे से: - प्रथम वह भारती हैं, द्वितीय सरस्वती। शारदा देवी उनका तृतीय नाम है और चतुर्थ हंसगामिनी ।।४।। विदुषी,वागीश्वरी, कुमारी, ब्रह्मचारिणा ये उनके पंचम-पष्ठ-सप्तम और अष्टम नाम हैं ।।५।।नौवाँ नाम जगन्माता, दशवाँ नाम ब्राह्मिणी, ग्याहरवाँ नाम ब्रह्माणी और बारहवाँ नाम वरदा है।।६।। तेरहवाँ नाम वाणी, चौदहवाँ नाम भाषा, पन्द्रहवाँ नाम श्रुतदेवी, सोलहवाँ नाम गौ हैं। इस प्रकार ये सरस्वती देवी के सोलह नाम हैं।

लक्ष्मी हिन्दू धर्म की एक प्रमुख देवी हैं। वह भगवान विष्णु की पत्नी हैं। पार्वती और सरस्वती के साथ, वह त्रिदेवियाँ में से एक है और धन, सम्पदा, शान्ति और समृद्धि की देवी मानी जाती हैं। पौराणिक कथा के अनुसार, देवताओं ने दानवों के साथ मिलकर क्षीर सागर में समुद्र मंथन किया, जिससे 14 रत्न सहित अमृत और विष की प्राप्ति हुई। इस समुद्र मंथन से मां लक्ष्मी की भी उत्पत्ति हुई, जिसे भगवान विष्णु ने अर्धांग्री रूप में धारण किया।[38]

हिंदू धर्म में, शरद ऋतु के मौसम में मनाई जाने वाली त्यौहार दिवाली, देवी लक्ष्मी को समर्पित है।[39] सूत्रों के अनुसार दीपावली शरद ऋतु (उत्तरी गोलार्द्ध) में हर वर्ष मनाया जाने वाला एक प्राचीन सनातन त्यौहार है।[40] प्राचीन हिंदू ग्रन्थ रामायण में बताया गया है कि, कई लोग दीपावली को 14 साल के वनवास पश्चात भगवान राम व पत्नी सीता और उनके भाई लक्ष्मण की वापसी के सम्मान के रूप में मानते हैं। अन्य प्राचीन हिन्दू महाकाव्य महाभारत अनुसार कुछ दीपावली को 12 वर्षों के वनवास व 1 वर्ष के अज्ञातवास के बाद पांडवों की वापसी के प्रतीक रूप में मानते हैं। कई हिंदु दीपावली को भगवान विष्णु की पत्नी तथा उत्सव, धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी से जुड़ा हुआ मानते हैं। दीपावली का पांच दिवसीय महोत्सव देवताओं और राक्षसों द्वारा दूध के लौकिक सागर के मंथन से पैदा हुई लक्ष्मी के जन्म दिवस से शुरू होता है। दीपावली की रात वह दिन है जब लक्ष्मी ने अपने पति के रूप में विष्णु को चुना और फिर उनसे शादी की।[41] एक अन्य सूत्र के अनुसार उन्हें भृगु और ख्याति की पुत्री बताया गया है।[42]

लक्ष्मी भगवान विष्णु की पत्नी हैं, जिनका विवाह उनके सभी अवतारों से हुआ है। उदाहरण के लिए: राम (सीता के रूप में) और कृष्ण (राधा और बाद में रुक्मिणी के रूप में)। लक्ष्मी को कभी-कभी "श्री" (श्री,

---

[34] Мифологический словарь / Гл.ред. Е.М.Мелетинский. “Советская энциклопедия”. М., 1991., С. 672. http://mifolog.ru/mythology

[35] Бонгард-Левин Г.М., Ильин Т.Ф. «Древняя Индия» Исторический очерк. М., 1969. С. 182.

[36] Мифы народов мира. Энциклопедия. (В 2 томах). Гл. ред. С.А.Токарев. М.: 1982. – т. 1. А-К. – С. 409.

[37] https://hi.wikipedia.org

[38] https://www.jagran.com/spiritual/puja-path-know-story-of-devi-maa-lakshmi-derivation-and-the-benefits-of-doing-worship-20435608.html

[39] Большой энциклопедический словарь. – 2-е изд., перераб. и доп. – М.: “Большая Российская энциклопедия”; СПб.: “Норинт”, 2000. - С. 411.

[40] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B2%E0%A5%80#cite_note-OED-Diwali-2

[41] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A5%80%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A4%B2%E0%A5%80#cite_note-tp-12

[42] Мифы народов мира. Энциклопедия. (В 2 томах). Гл. ред. С.А.Токарев. М.: 1982. – т. 1. К-Я. – С. 35.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

"समृद्धि", "खुशी", "महिमा") के रूप में जाना जाता है[43], हालांकि प्रारंभिक वैष्णववाद में श्री, जाहिरा तौर पर, एक अलग देवी थीं, जिनकी छवि बाद में लक्ष्मी के साथ विलीन हो गई।[44]

माता महालक्ष्मी के अनेक रूप है जिस में से उनके आठ स्वरूप जिन को अष्टलक्ष्मी कहते है प्रसिद्ध है । लक्ष्मी का अभिषेक दो हाथी करते हैं। वह कमल के आसन पर विराजमान है। कमल कोमलता का प्रतीक है। लक्ष्मी के एक मुख, चार हाथ हैं। वे एक लक्ष्य और चार प्रकृतियों (दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प, श्रमशीलता एवं व्यवस्था शक्ति) के प्रतीक हैं।[45]

दुर्गा शब्द का अर्थ "हासिल करना कठिन ", "अजेय" है और हिंदू पौराणिक कथाओं में यह भगवान शिव की पत्नी है। देवी दुर्गा की पूजा शबर, बर्बर और पुलिंदा की गैर-आर्यन जनजातियों की भी विशेषता थी। किंवदंतियों में, दुर्गा को देवताओं की रक्षक और एक योद्धा देवी के रूप में चित्रित किया गया है, जो राक्षसों के खिलाफ निर्दयता से लड़ती है और दुनिया की व्यवस्था की रक्षा करती है।[46]

एक अन्य सूत्र के अनुसार दुर्गा पार्वती का दूसरा नाम है। हिन्दुओं के शाक्त सम्प्रदाय में भगवती दुर्गा को ही दुनिया की पराशक्ति और सर्वोच्च देवता माना जाता है (शाक्त सम्प्रदाय ईश्वर को देवी के रूप में मानता है) वेदों में तो दुर्गा का कोई ज़िक्र नहीं है, मगर उपनिषद में देवी "उमा हैमवती" उमा, हिमालय की पुत्री का वर्णन है। पुराण में दुर्गा को आदिशक्ति माना गया है। दुर्गा असल में शिव की पत्नी पार्वती का एक रूप हैं, जिसकी उत्पत्ति देवताओं की प्रार्थना पर राक्षसों का नाश करने के लिये हुई थी। इस तरह दुर्गा युद्ध की देवी हैं।[47] किंस्ले की पुस्तक "Hindu Goddesses : Visions of the Divine Feminine in the Hindu Religious Tradition" में दुर्गा के बारे में कहती है: - "दुर्गा हिंदू देवताओं की सबसे प्रभावशाली और डरावनी देवी में से एक है और सबसे लोकप्रिय में से एक देवी दुर्गा है। इसका मुख्य पौराणिक कार्य उन राक्षसों के खिलाफ लड़ाई है जो ब्रह्मांड की स्थिरता को खतरे में डालते हैं। इस भूमिका में, उन्हें कई भुजाओं वाली एक महान युद्ध रानी के रूप में दर्शाया गया है, जिनमें से प्रत्येक के पास एक हथियार है। वह एक भयंकर शेर की सवारी करती है और उसे युद्ध में अप्रतिरोध्य बताया गया है। जिस राक्षस को उसने सबसे अधिक हराया है वह भैंसा राक्षस महिसा है। उनके सबसे महत्वपूर्ण त्योहार, दुर्गा पूजा में, उन्हें उनके बच्चों के रूप में पहचाने जाने वाले चार देवताओं से घिरा हुआ चित्रित किया गया है: कार्तिकेय, गणेश, सरस्वती और लक्ष्मी।"[48]

इस लेख में व्युत्पत्ति की दृष्टि से देवियों से संबंधित सामूहिक शब्दों का विश्लेषण किया गया है।

व्युत्पत्ति शब्द - ग्रीक भाषा से लिया गया है और भाषा विज्ञान की एक शाखा है जो शब्दों की उत्पत्ति और स्रोत का अध्ययन करती है।[49] ज्ञातव्य है कि व्युत्पत्ति के क्षेत्र में काफी शोध कार्य हुए हैं। शब्दों की व्युत्पत्ति के निर्धारण में शब्दों की प्रथम उत्पत्ति के इतिहास, उनके वास्तविक अर्थ और उनके रूपों, भाषा के इतिहास और अन्य भाषाओं और बोलियों में शब्दों की तुलना का अध्ययन किया जाता है। शब्दों की उत्पत्ति का अध्ययन भूगोल, पुरातत्व, नृविज्ञान और संस्कृति के विज्ञान के माध्यम से किया जाता है।[50]

भारतीय भाषाविद शब्दों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर चार समूहों में विभाजित करते हैं।[51]

1. तत्सम - तत् (उसके) + सम (समान) अर्थात उसके समान। जो शब्द संस्कृत भाषा (मूल भाषा) से ज्यों के त्यों हिंदी में आ गए हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं।

---

[43] Мифы народов мира / Гл. ред. С. А. Токарев. — Энциклопедия. Электронное издание. — М.: Большая Российская энциклопедия, 2008. С. 574.

[44] Jones C. Encyclopedia of Hinduism / Jones C. and Ryan J. — New York: Facts On File, 2007., - P. 256.

[45] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B2%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A5%80

[46] Мифы народов мира. Энциклопедия. (В 2 томах). Гл. ред. С.А.Токарев. М.: 1982. – т. 1. А-К. – С. 409.

[47] https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%A6%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%97%E0%A4%BE

[48] Kinsley D. Hindu Goddesses: Visions of the Divine Feminine in the Hindu Religious Tradition. Berkeley, University of California Press, 1988. - P. 95.

[49] Ўзбек тилининг изоҳли луғати. 2-том. М., 1981. – Б. 456.

[50] Ўзбек тилининг изоҳли луғати. 2-том. М., 1981. – Б. 457.

[51] Шоматов О.Н. Жанубий Осиё тилларига кириш. 1- қисм. -Т.: ТошДШИ нашриёти, 2003. – Б. 39.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

2. तद्भव - जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं वे तद्भव कहलाते हैं।

3. देशज - जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं वे देशज कहलाते हैं।

4. विदेशज - विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते हैं।

विषय से संबंधित एकत्रित शब्दों के व्युत्पत्ति संबंधी विश्लेषण की प्रक्रिया में हमने पाया कि उनमें से 99% संस्कृत शब्द हैं।

निष्कर्षतः यह कहना चाहिए कि देवियों से संबंधित शब्दों के विश्लेषण के दौरान यह पाया गया कि उनमें से अधिकांश संस्कृत शब्द हैं। इससे हमें एक बार फिर विश्वास हो गया कि भारतीय संस्कृति, कला, पौराणिक कथाएँ और भारतीय भाषा कितनी समृद्ध और प्राचीन हैं। साथ ही, इस विश्लेषण के फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि हिन्दू देवी-देवताओं का मुख्य शाब्दिक स्रोत अर्थात् शब्द भंडार बहुत प्राचीन काल का है।

अतः एकत्रित शब्दों का मुख्य भाग संस्कृत शब्द हैं जो प्राचीन काल से विद्यमान हैं और बिना किसी परिवर्तन के संरक्षित किये गये हैं।

संदर्भ सूची

1. Болъшой энциклопедический словаръ. - 2-е изд., перераб. и доп. – М.: "Болъшая Российская энциклопедия, СПб.: "Норинт", 2000.

2. Болъшой энциклопедия. (В 30 томах). Гл.ред. А.М.Прохоров. Изд. 3-е. М., "Российская Энциклопедия", 1973.

3. Бонгард-Левин Г.М., Ильин Т.Ф. «Древняя Индия» Исторический очерк. М., 1969.

4. Мифологический словарь / Гл.ред. Е.М.Мелетинский. "Советская энциклопедия". М., 1991., С. 672. http://mifolog.ru/mythology.

5. Мифы народов мира. Энциклопедия. (В 2 томах). Гл. ред. С.А.Токарев. М.: 1982.

6. Индийская философия: Энциклопедия / Отв. ред. М.Т. Степанянц; Ин-т философии РАН. — М.: Вост. лит.; Академический Проект; Гаудеамус, 2009. – С. 259.

7. Шоматов О.Н. Жанубий Осиё тилларига кириш. 1- қисм. -Т.: ТошДШИ нашриёти, 2003.

8. Шоматов О.Н. "Қадимги ҳинд маданиятига оид сўзлар луғати". Т., 2005.

9. Ўзбек тилининг изоҳли луғати. 2-том. М., 1981.

10. Kinsley D. Hindu Goddesses: Visions of the Divine Feminine in the Hindu Religious Tradition., Berkeley., University of California Press, 1988.

11. Jones C. Encyclopedia of Hinduism / Jones C. and Ryan J. — New York: Facts On File, 2007., - P. 256.

12. रामचन्द्र वर्म्मा। मानक हिन्दी कोश । पाँचवाँ खंड। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग। १९६६

13. सम्पादक कालिका प्रसाद - बृहत हिन्दी कोश । वाराणसी। जनवरी १९५९

14. Хинди-русский словарь. В двух томах. Около 75 000 слов / Под ред. В. М. Бескровного. — М.,1972.

15. Санскритско-русский словарь. Сост. В.А.Кочергина. М., 1982.

16. Русско-узбекский словарь – изд. "Насаф", Қ., 2005.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनुवाद में समतुल्यता की समस्याएं।

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765702

इरोडा फतखुतदीनोवा
पीएचडी शोधकर्ता
दक्षिणी एशिया की भाषाओं का विभाग,
ताशकन्द राजकीय प्राच्य-विद्या विशविद्यालय
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

सार: समकक्षता डिग्री, समकक्षता बढ़ाने पर डिग्री का स्थान, आवेदन की विधि अनुवाद में प्रासंगिक मुद्दे माने जाते हैं। इसका उद्देश्य समतुल्यता द्वारा उठाए गए मुद्दों की समस्याओं की पहचान करना, समतुल्यता का मूल्य निर्धारित करना, मूल पाठ और अनुवाद के बीच अर्थों की समानता की तुलना करना है। उद्देश्य: अनुवाद में तुल्यता की डिग्री निर्धारित करना, संचार के लक्ष्य को बनाए रखते हुए वाक्यांशों का अध्ययन करना, तुलना और विशेष शब्दों में समकक्ष अर्थ निर्धारित करना। हमारे शोध का उद्देश्य अनुवाद के पाठ में परिवर्तित मूल पाठ की तुलना और वाक्यांशों का रूप है; और अनूदित पाठ में समकक्ष रूप शोध का विषय है। अध्ययन में तुलनात्मक विश्लेषण की पद्धति का उपयोग किया गया। अध्ययन सामग्री का उपयोग "अनुवाद के सिद्धांत और अभ्यास" और "भाषाविज्ञान संस्कृति" के शिक्षण में किया जा सकता है। वैज्ञानिक शोध कार्य में परिचय, निष्कर्ष और ग्रंथ सूची शामिल होती है। मूल पाठ और अनुवाद के समकक्ष वाक्यांशों के संक्रमण पर उनके अर्थ में संकुचन देखा गया है, साथ ही मूल पाठ से अनुवाद के पाठ में संक्रमण पर, उनके अर्थ में कमी आई है और पूरक के रूप में, नया मूल्य ग्रहण किया गया है।

कीवर्ड: तुल्यता, वाक्यांशविज्ञान, सादृश्य, लिप्यंतरण, संचार, परिवर्तन।

अनुवाद सार्वजनिक संचार का सबसे महत्वपूर्ण रूप है और अनुवाद अध्ययन विभिन्न देशों को जोड़ने वाली संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

अनुवाद गतिविधियों की मुख्य दिशा विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों को एक-दूसरे से परिचित कराना, साहित्य के माध्यम से आपसी संचार को व्यवस्थित करना, दूसरे शब्दों में, अंतरसांस्कृतिक संचार (संवाद) के अवसर पैदा करना है। अनुवाद की प्रक्रिया में न केवल दो भाषाएँ, बल्कि दो संस्कृतियाँ, साहित्य और साथ ही दो विपरीत वास्तविकताएँ भी संचार में मिलती हैं। इस दृष्टिकोण से, अनुवादक न केवल समतुल्यता की उपमाओं की तलाश करता है, बल्कि उन स्थानों की भी तलाश करता है जहां अंतर-सांस्कृतिक मतभेद मिश्रित होते हैं, जो अनुवादित टेक्स्ट को पाठक आवश्यक स्पष्टीकरण प्रदान कर सकते हैं

समतुल्यता के स्तर के बारे में भाषाविदों और अनुवादकों के सिद्धांत हैं। उनके अनुसार समतुल्यता को मुख्य रूप से निम्नलिखित पांच स्तरों में विभाजित किया गया है:

1. समतुल्यता के संप्रेषण लक्ष्य का स्तर (व्यावहारिक),
2. स्थिति का वर्णन करने का स्तर (महत्वपूर्ण),
3. स्थिति का वर्णन करने की विधि का स्तर (प्रतीकात्मक)),
4. क्यांश संरचना का स्तर। (वाक्यविन्यास),
5. शाब्दिक-अर्थ अनुकूलता का स्तर।

इनमें समतुल्यता के स्तर संप्रेषण, उद्देश्य का विशेष स्थान है।

किसी कार्य के अनुवाद में, प्रत्येक संकेत और यहां तक कि एक बिंदु भी संचार का लक्ष्य हो सकता है,

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

जिसमें वक्ता और श्रोता के बीच संबंध भाषण संचार के संदर्भ में होता है.

उदाहरण के लिए, भीष्म साहनी की बसंती के निम्नलिखित वाक्यांश का विश्लेषण करें:

बसंती के पिता को देख कर दीनू भीगी बिल्ली बन गया. इस स्थान पर, हिंदी में "bhigi billi" की अवधारणा उज़्बेक वाक्यांश (suvga tushgan mushukdek) "पानी में गिरने वाली बिल्ली की तरह" के बराबर है जिसका अर्थ है "निराश"। दोनों भाषाओं में, हम देख सकते हैं कि यह वाक्यांश एक बिल्ली की छवि द्वारा दर्शाया गया है।

संप्रेषण के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए, अनुवादक को यह जानना चाहिए और यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि वह जिन शब्दों का अनुवाद कर रहा है उनका अर्थ पाठक को किस प्रकार प्रभावित करता है। उचित होने पर आवश्यक टिप्पणियाँ और footnote शामिल करना चाहिए।

कोई भी टेक्स्ट कुछ कहता है, कुछ जानकारी देता है। यदि पाठक उस सूचना या सन्देश पर ध्यान नहीं देता है तो टेक्स्ट का संचारी कार्य पूर्ण नहीं होता है। इस सूचना या संदेश पर ध्यान देने पर, इसे आत्मसात करने वाला पाठक स्वचालित रूप से इस पाठ पर प्रतिक्रिया करता है। विभिन्न भावनात्मक-अभिव्यंजक स्थितियों में, उदाहरण के लिए, आश्चर्य या घृणा, रवैया भिन्न, नकारात्मक या सकारात्मक हो सकता है।

हम दूसरे उदाहरण का विश्लेषण करें: "आज ही लड़की के हाथ पीले कर देंगे" "हाथ पीले करना" का अनुवाद "विवाह करना" या " शादी करवाना, शादी देना" के रूप में किया जाता है। यहां जो बात अनुवादक को गंभीरता से सोचने पर मजबूर करती है वह यह है कि भारतीय परंपराओं के अनुसार शादी से पहले लड़कियों के हाथों में मेहंदी लगाने की एक परम्परा होती है। अनुवादक ने पात्रों के भाषण के उद्देश्य को सही ढंग से समझा और समतुल्य अभिव्यक्ति "शादी कराना" का उपयोग करके इसका अनुवाद किया। ऐसे वाक्यांशों के शाब्दिक अनुवाद से मूल अर्थ का विरूपण होता है।

अनुवादक को मूल के लेखक द्वारा वर्णित चित्रों और विवरणों को अपनी मूल भाषा की सीमा के भीतर अपनी भाषा में इस प्रकार अनुवाद करना चाहिए कि अनुवाद मूल की छाप छोड़े। यहां अंतरभाषा संचार प्रदाता के रूप में अनुवादक की क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार की रूसी वैज्ञानिक कोमिसारोव ने कहा कि "समतुल्यता में, यद्यपि विचार अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग ढंग से व्यक्त किया जाता है, फिर भी स्थिति की एक ही तस्वीर बनती है। ऐसी स्थिति संवाद प्रतिभागियों के extralinguistic अनुभवों के आधार पर पैदा होती है,"

इसलिए, समतुल्यता के स्तर यह आकलन करने की अनुमति देते हैं कि संचार के उद्देश्य के लेखक की संचार संबंधी इच्छा पाठकों तक किस हद तक पहुंचाई गई है।

परिनाम मिला है कि मूल और अनुवादित ग्रंथों में समकक्ष वाक्यांशों में अर्थ में बदलाव देखा गया, और जब मूल वाक्यांशों का अनुवाद किया गया, तो उनका अर्थ संकुचित हो गया और पाठकों को प्रत्यय के रूप में एक नया अर्थ मिला।

निष्कर्षतः, अनुवाद में वाक्यांशों की पर्याप्त व्याख्या अनुवाद अभ्यास के सबसे जटिल और साथ ही बहुत जिम्मेदार मुद्दों में से एक है। क्योंकि वे, भाषण के कलात्मक और वर्णनात्मक साधनों के रूप में, विचार के एक सरल, तटस्थ कथन से अधिक विभिन्न पद्धतिगत कार्यों की अभिव्यक्ति में भाग लेते हैं।

कई शोधकर्ताओं के शोध से यह ज्ञात हुआ कि भाषा की एकल शाब्दिक इकाई के रूप में वाक्यांशों का व्याकरणिक, शब्दार्थ, कार्यात्मक और यहां तक कि समाजशास्त्रीय रूप से भी अध्ययन किया जा सकता है। इसके अलावा, कई अभिव्यक्तियों का एक राष्ट्रीय चरित्र होता है, जो अनुवादकों के लिए कठिनाइयाँ पैदा करता है। प्रत्येक भाषा की पदावली की संरचना में सामाजिक घटनाएँ, नैतिक और आध्यात्मिक-सांस्कृतिक मानदंड, मानसिक स्थिति, धार्मिक कल्पना, राष्ट्रीय परंपराएँ और रीति-रिवाज परिलक्षित होते हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अनुवाद में समतुल्यता प्राप्त करने के लिए प्रारंभिक अर्थों का आधा हिस्सा देना भी वांछनीय है। अनुवाद में मूल अर्थों की वृद्धि होती है। यदि अनुवाद में मूल पाठ की स्थिति बदल जाती है या उसे दूसरे में बदल दिया जाता है, तो विषय की मूल पाठ्य स्थिति के आधार पर अर्थ योग भी बदल जाता है। जानकारी की सामग्री और संरचना से संबंधित अर्थ और वाक्य-विन्यास स्तरों, यानी पाठ श्रेणियों के लिए, हमने उदाहरणों के माध्यम से दिखाया है कि वे भाषण कार्यों की समानता निर्धारित करते हैं। अनुवादक द्वारा पाठ के अंतर्गत राष्ट्रीय विशिष्ट शब्दों को लिप्यंतरण की विधि से समझाया जाता है। लिप्यंतरण विधि की एक शर्त यह है कि मूल से कॉपी किए गए शब्दों पर टिप्पणी करना न भूलें, अन्यथा पाठक में गलतफहमी पैदा हो सकती है।

अनुवाद में, अनुवादक उन शब्दों को बदलकर अनुवाद की समतुल्यता प्राप्त करता है जो सामग्री और अर्थ के बिल्कुल अनुरूप होते हैं। अनुवादक का आध्यात्मिक ज्ञान

हम आश्वस्त थे कि अनुवाद पाठ जितना गहरा और व्यापक होगा, तुल्यता का स्तर उतना ही अधिक होगा।

संदर्भ सूची

1. आमिर फैज़ुल्लाI. बसंती. – ताशकंत, "Turon-Iqbol", 2010.

2. भीष्मी साहनी. बसंती. नवीन शाहदरा, नाइ मदल्ली १९८३

3. Lions John., Linguistic semantics // Languages of Slavic culture. –U.,2003. – C.8-15.

4.Kommissarov, V. N. Linguistics of translation. – M.: International relations, 1980.

5. Khodjaeva, N. (2019). SEMANTICS OF KINSHIP TERMS AS A FORM OF ADDRESS IN UZBEK TRANSLATIONS OF PREMCHAND. Theoretical & Applied Science, (8), 107-110

6. Fatkhutdinova I. MEANS OF EXPRESSING THE COMMUNICATIVE PURPOSE OF EKVIVALENCE IN TRANSLATION. Oriental Renaissance: Innovative, educational, natural and social sciences". Scientific journal. Uzbekistan: www.oriens.uz. 2021. VOLUME 1 | SPECIAL ISSUE 2. – B.140-149.

7 .Fatkhutdinova I.THE ISSUE OF EKVIVALENCE IN THE TRANSLATION OF WORKS WITH PSYCHOLOGICAL CONTENT (as an example of works in Hindi). FORUM OF TRANSLATORS–2022. - B.69-77. VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 29 / https://doi.org/10.5281/zenodo.7455113/

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

मध्य एशिया की संस्कृत विद्वान : खंज़ारीफा बेगीज़ोवा

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765709

नेमातोव मुरातील्लो
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

मालूम है कि उज्बेकिस्तान और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध काफी पुराने हैं। अब भी विभिन्न क्षेत्रों में मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित हो रहे हैं। ऐसे संबंधों में दोनों देशों की भाषाएं सीखना जरूरी है। उज्बेकिस्तान में 1947 से हिंदी पढ़ाई जाती है। आजकल उज्बेकिस्तान में हिन्दी भाषा के शिक्षक बहुत हैं। इनमें खंजारीफा बेगीज़ोवा का नाम प्रमुख है।

उनका जन्म सन 1942 में हुआ था । प्रसिद्ध भारतविद्।

दिसंबर 1965 से जनवरी 1967 तक, उन्होंने भारत के गुजरात राज्य में एक तेल शोधन संयंत्र के निर्माण में अनुवादक के रूप में कार्य किया । उसी समय उन्होंने इस राज्य के बागवा नामक छोटे से नगर के स्कूल में भारतीयों के सुझाव पर खोले गए विशेष पाठ्यक्रम "रूसी भाषा" में शिक्षक के रूप में काम किया।

1969-1973 में, उन्होंने मॉस्को में यूएसएसआर एकेडमी ऑफ साइंसेज के इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज के स्नातक स्कूल में अध्ययन किया। अपने स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान उन्होंने अपने विषय से इंडोलॉजिस्ट के प्रथम अखिल-संघ सम्मेलन में भाग लिया। बाद में भी अपने करियर के दौरान, उन्होंने अपने विषय के साथ भारतीय अध्ययन को समर्पित कई सम्मेलनों में भाग लिया।

सन् 1974 में उन्होंने “हिंदी में अंग्रेजी से आयातित शब्दों की शाब्दिक और व्याकरणिक विशेषताएं” विषय पर पी.एच.डी की डिग्री प्राप्त की।

सन 1974 से उन्होंने नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ उज़्बेकिस्तान के ओरिएंटल फैकल्टी के भारतीय भाषाशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में काम करना शुरू कियाकांची उसके बाद उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति तक एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में काम किया।

उन्होंने भारत के दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में छात्रों, हिंदी भाषा विशेषज्ञों, स्नातक छात्रों के एक समूह के साथ एक शैक्षणिक वर्ष के लिए प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के दौरान पूरे भारत से छात्रों को भारतीय संस्कृति, नृवंशविज्ञान, रीति-रिवाजों और परंपराओं से परिचित कराने के लिए दिसंबर-जनवरी में हैदराबाद, मद्रास, महाबलीपुरम, कांचीपुरम, बैंगलोर, मैसूर, मुंबई, औरंगाबाद, बनारस, जयपुर, उदयपुर, अजमेर और आगरा जैसे प्रमुख शहरों की यात्रा का दौरा किया।

वैज्ञानिक दिशा हिंदी भाषा की शब्दावली की समस्याओं और भारत की भाषाओं और मध्य एशिया की भाषाओं के बीच परस्पर क्रिया के परिणामों की समस्याओं से संबंधित है। उन्होंने रूसी, उज़्बेकी, हिंदी और अंग्रेजी में नृवंशविज्ञान और समाजभाषाविज्ञान से संबंधित 30 से अधिक वैज्ञानिक लेख प्रकाशित किए हैं, साथ ही कई शैक्षिक मैनुअल भी प्रकाशित किए हैं।

ह. बेगिज़ोवा पाठ्यपुस्तक "हिंदी पाठ्य पुस्तक" और "एथनोलिंग्विस्टिक्स का परिचय", " हिंदी पॉलीओग्राफ़ी", "हिंदी में संस्कृत तत्व" जैसे नए वैकल्पिक विषयों के पाठ्यक्रम के लेखक हैं।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

ह. बेगिज़ोवा ने मॉस्को में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान ओ. एफ. वोल्कोवा से संस्कृत सीखी। इसके अलावा, भारत में अपने प्रशिक्षण के दौरान उनकी मुलाकात दिल्ली में केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक डी.चतुर्वेदी से हुई और उन्होंने संस्कृत भाषा के बारे में अपना ज्ञान मजबूत किया।

फिलहाल, हालांकि वह सेवानिवृत्त हैं, लेकिन वह कई भारतीय शोधकर्ताओं को वैज्ञानिक और व्यावहारिक सलाह देकर मदद कर रही हैं।

संदर्भ सूची

1. Ўзбек ҳиндшунослигининг 60 йиллик тўйига махсус тўплам, Тошкент давлат шарқшунослик институти Жанубий Осиё тиллари кафедраси, 2007 (उज़्बेक इंडोलॉजी की 60वीं वर्षगांठ के लिए विशेष संग्रह, दक्षिण एशियाई भाषा विभाग, ताशकंद स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, 2007)
2. https://uza.uz
3. https://tsuos.uz

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765734

हिदायेव मिरवाहीद
अनुवाद अध्ययन और अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता विभाग,
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास भारतीय राज्य के इतिहास से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। इसे चार मुख्य कालों में विभाजित किया जा सकता है । भारत में प्रकाशित होने वाला पहला हिंदी भाषा का अखबार, उदंत मार्तंड (द राइजिंग सन), 30 मई 1826 को शुरू हुआ। इस दिन को "हिंदी पत्रकारिता दिवस" के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि इसने हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत को चिह्नित किया था।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता ने अंग्रेजी पत्रकारिता के दबदबे को खत्म कर दिया है। पहले देश-विदेश में अंग्रेजी पत्रकारिता का दबदबा था लेकिन आज हिन्दी भाषा का झण्डा चहुंदिश लहरा रहा है। ३० मई को 'हिन्दी पत्रकारिता दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारतवर्ष में आधुनिक ढंग की पत्रकारिता का जन्म अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में कलकत्ता, बंबई और मद्रास में हुआ। 1780 ई. में प्रकाशित हिके (Hickey) का "कलकत्ता गज़ट" कदाचित् इस ओर पहला प्रयत्न था। हिंदी के पहले पत्र उदंत मार्तण्ड (1826) के प्रकाशित होने तक इन नगरों की ऐंग्लोइंडियन अंग्रेजी पत्रकारिता काफी विकसित हो गई थी।

इन अंतिम वर्षों में फारसी भाषा में भी पत्रकारिता का जन्म हो चुका था। 18वीं शताब्दी के फारसी पत्र कदाचित् हस्तलिखित पत्र थे। 1801 में 'हिंदुस्थान इंटेलिजेंस ओरिऐंटल ऐंथॉलॉजी' (Hindusthan Intelligence Oriental Anthology) नाम का जो संकलन प्रकाशित हुआ उसमें उत्तर भारत के कितने ही "अखबारों" के उद्धरण थे। 1810 में मौलवी इकराम अली ने कलकत्ता से लीथो पत्र "हिंदोस्तानी" प्रकाशित करना आरंभ किया। 1816 में गंगाकिशोर भट्टाचार्य ने "बंगाल गजट" का प्रवर्तन किया। यह पहला बंगला पत्र था। बाद में श्रीरामपुर के पादरियों ने प्रसिद्ध प्रचारपत्र "समाचार दर्पण" को (27 मई 1818) जन्म दिया। इन प्रारंभिक पत्रों के बाद 1823 में हमें बँगला भाषा के 'समाचारचंद्रिका' और "संवाद कौमुदी", फारसी उर्दू के "जामे जहाँनुमा" और "शमसुल अखबार" तथा गुजराती के "मुंबई समाचार" के दर्शन होते हैं।

यह स्पष्ट है कि हिंदी पत्रकारिता बहुत बाद की चीज नहीं है। दिल्ली का "उर्दू अखबार" (1833) और मराठी का "दिग्दर्शन" (1837) हिंदी के पहले पत्र "उदंत मार्तंड" (1826) के बाद ही आए। "उदंत मार्तंड" के संपादक पंडित जुगलकिशोर थे। यह साप्ताहिक पत्र था। पत्र की भाषा पछाँही हिंदी रहती थी, जिसे पत्र के संपादकों ने "मध्यदेशीय भाषा" कहा है।

1826 ई. से 1873 ई. तक को हम हिंदी पत्रकारिता का पहला चरण कह सकते हैं। 1873 ई. में भारतेन्दु ने "हरिश्चंद्र मैगजीन" की स्थापना की। एक वर्ष बाद यह पत्र "हरिश्चंद्र चंद्रिका" नाम से प्रसिद्ध हुआ। वैसे भारतेन्दु का "कविवचन सुधा" पत्र 1867 में ही सामने आ गया था और उसने पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण भाग लिया था; परंतु नई भाषाशैली का प्रवर्तन 1873 में "हरिश्चंद्र मैगजीन" से ही हुआ। इस बीच के अधिकांश पत्र प्रयोग मात्र कहे जा सकते हैं और उनके पीछे पत्रकला का ज्ञान अथवा नए विचारों के प्रचार की भावना नहीं है। "उदन्त मार्तण्ड" के बाद प्रमुख पत्र हैं :

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

अधिकांश पत्र आगरा से प्रकाशित होते थे जो उन दिनों एक बड़ा शिक्षाकेंद्र था और विद्यार्थी समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे।

हिंदी पत्रकारिता का दूसरा युग 1873 से 1900 तक चलता है। इस युग के एक छोर पर भारतेन्दु का "हरिश्चंद्र मैगजीन" था ओर नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदनप्राप्त "सरस्वती"। इन 27 वर्षों में प्रकाशित पत्रों की संख्या 300-350 से ऊपर है और ये नागपुर तक फैले हुए हैं। अधिकांश पत्र मासिक या साप्ताहिक थे। मासिक पत्रों में निबंध, नवल कथा (उपन्यास), वार्ता आदि के रूप में कुछ अधिक स्थायी संपत्ति रहती थी, परन्तु अधिकांश पत्र 10-15 पृष्ठों से अधिक नहीं जाते थे और उन्हें हम आज के शब्दों में "विचारपत्र" ही कह सकते हैं। साप्ताहिक पत्रों में समाचारों और उनपर टिप्पणियों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। वास्तव में दैनिक समाचार के प्रति उस समय विशेष आग्रह नहीं था और कदाचित् इसीलिए उन दिनों साप्ताहिक और मासिक पत्र कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। उन्होंने जनजागरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भाग लिया था।

उन्नीसवीं शताब्दी के इन 25 वर्षों का आदर्श भारतेन्दु की पत्रकारिता थी। "कविवचनसुधा" (1867), "हरिश्चंद्र मैगजीन" (1874), श्री हरिश्चंद्र चंद्रिका" (1874), बालबोधिनी (स्त्रीजन की पत्रिका, 1874) के रूप में भारतेन्दु ने इस दिशा में पथप्रदर्शन किया था। उनकी टीकाटिप्पणियों से अधिकरी तक घबराते थे और "कविवचनसुधा" के "पंच" पर रुष्ट होकर काशी के मजिस्ट्रेट ने भारतेन्दु के पत्रों को शिक्षा विभाग के लिए लेना भी बंद करा दिया था। इसमें संदेह नहीं कि पत्रकारिता के क्षेत्र भी भारतेन्दु पूर्णतया निर्भीक थे और उन्होंने नए नए पत्रों के लिए प्रोत्साहन दिया। "हिंदी प्रदीप", "भारतजीवन" आदि अनेक पत्रों का नामकरण भी उन्होंने ही किया था। उनके युग के सभी पत्रकार उन्हें अग्रणी मानते थे।

इन 25 वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता अनेक दिशाओं में विकसित हुई। प्रारंभिक पत्र शिक्षाप्रसार और धर्मप्रचार तक सीमित थे। भारतेन्दु ने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक दिशाएँ भी विकसित कीं। उन्होंने ही "बालाबोधिनी" (1874) नाम से पहला स्त्री-मासिक-पत्र चलाया। कुछ वर्ष बाद महिलाओं को स्वयं इस क्षेत्र में उतरते देखते हैं - "भारतभगिनी" (हरदेवी, 1888), "सुगृहिणी" (हेमंतकुमारी, 1889)। इन वर्षों में धर्म के क्षेत्र में आर्यसमाज और सनातन धर्म के प्रचारक विशेष सक्रिय थे। ब्रह्मसमाज और राधास्वामी मत से संबंधित कुछ पत्र और मिर्जापुर जैसे ईसाई केंद्रों से कुछ ईसाई धर्म संबंधी पत्र भी सामने आते हैं, परंतु युग की धार्मिक प्रतिक्रियाओं को हम आर्यसमाज के और पौराणिकों के पत्रों में ही पाते हैं। आज ये पत्र कदाचित् उतने महत्वपूर्ण नहीं जान पड़ते, परंतु इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने हिन्दी की गद्यशैली को पुष्ट किया और जनता में नए विचारों की ज्योति भी। इन धार्मिक वादविवादों के फलस्वरूप समाज के विभिन्न वर्ग और संप्रदाय सुधार की ओर अग्रसर हुए और बहुत शीघ्र ही सांप्रदायिक पत्रों की बाढ़ आ गई। सैकड़ों की संख्या में विभिन्न जातीय और वर्गीय पत्र प्रकाशित हुए और उन्होंने असंख्य जनों को वाणी दी।

बीसवीं शताब्दी की पत्रकारिता हमारे लिए अपेक्षाकृत निकट है और उसमें बहुत कुछ पिछले युग की पत्रकारिता की ही विविधता और बहुरूपता मिलती है। 19वीं शती के पत्रकारों को भाषा-शैली क्षेत्र में अव्यवस्था का सामना करना पड़ा था। उन्हें एक ओर अंग्रेजी और दूसरी ओर उर्दू के पत्रों के सामने अपनी वस्तु रखनी थी। अभी हिंदी में रुचि रखनेवाली जनता बहुत छोटी थी। धीरे-धीरे परिस्थिति बदली और हम हिंदी पत्रों को साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व करते पाते हैं। इस शताब्दी से धर्म और समाजसुधार के आंदोलन कुछ पीछे पड़ गए और जातीय चेतना ने धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना का रूप ग्रहण कर लिया। फलत: अधिकांश पत्र, साहित्य और राजनीति को ही लेकर चले। साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में पहले दो दशकों में आचार्य द्विवेदी द्वारा संपादित "सरस्वती" (1903-1918) का नेतृत्व रहा। वस्तुत: इन बीस वर्षों में हिंदी के मासिक पत्र एक महान साहित्यिक शक्ति के रूप में सामने आए। शृंखलित उपन्यास कहानी के रूप में कई पत्र प्रकाशित हुए - जैसे उपन्यास 1901, हिंदी नाविल 1901, उपन्यास लहरी 1902, उपन्याससागर 1903, उपन्यास

कुसुमांजलि 1904, उपन्यासबहार 1907, उपन्यास प्रचार 1912। केवल कविता अथवा समस्यापूर्ति लेकर अनेक पत्र उन्नीसवीं शतब्दी के अंतिम वर्षों में निकलने लगे थे। वे चले रहे। समालोचना के क्षेत्र में "समालोचक" (1902) और ऐतिहासिक शोध से संबंधित "इतिहास" (1905) का प्रकाशन भी महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। परंतु सरस्वती ने "मिस्लेनी" () के रूप में जो आदर्श रखा था, वह अधिक लोकप्रिय रहा और इस श्रेणी के पत्रों में उसके साथ कुछ थोड़े ही पत्रों का नाम लिया जा सकता है, जैसे "भारतेन्दु" (1905), नागरी हितैषिणी पत्रिका, बाँकीपुर (1905), नागरीप्रचारक (1906), मिथिलामिहिर (1910) और इंदु (1909)। "सरस्वती" और "इंदु" दोनों हिन्दी की साहित्यचेतना के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं और एक तरह से हम उन्हें उस युग की साहित्यिक पत्रकारिता का शीर्षमणि कह सकते हैं। "सरस्वती" के माध्यम से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और "इंदु" के माध्यम से पंडित रूपनारायण पांडेय ने जिस संपादकीय सतर्कता, अध्यवसाय और ईमानदारी का आदर्श हमारे सामने रखा वह हिन्दी पत्रकारिता को एक नई दिशा देने में समर्थ हुआ।

परंतु राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता को नेतृत्व प्राप्त नहीं हो सका। पिछले युग की राजनीतिक पत्रकारिता का केंद्र कलकत्ता था। परंतु कलकत्ता हिंदी प्रदेश से दूर पड़ता था और स्वयं हिंदी प्रदेश को राजनीतिक दिशा में जागरूक नेतृत्व कुछ देर में मिला। हिंदी प्रदेश का पहला दैनिक राजा रामपालसिंह का द्विभाषीय "हिंदुस्तान" (1883) है जो अंग्रेजी और हिंदी में कालाकाँकर से प्रकाशित होता था। दो वर्ष बाद (1885 में), बाबू सीताराम ने "भारतोदय" नाम से एक दैनिक पत्र कानपुर से निकालना शुरू किया। परंतु ये दोनों पत्र दीर्घजीवी नहीं हो सके और साप्ताहिक पत्रों को ही राजनीतिक विचारधारा का वाहन बनना पड़ा। वास्तव में उन्नीसवीं शतब्दी में कलकत्ता के भारत मित्र, वंगवासी, सारसुधानिधि और उचित वक्ता ही हिंदी प्रदेश की रानीतिक भावना का प्रतिनिधित्व करते थे। इनमें कदाचित् "भारतमित्र" ही सबसे अधिक स्थायी और शक्तिशाली था। उन्नीसवीं शताब्दी में बंगाल और महाराष्ट्र लोक जाग्रति के केंद्र थे और उग्र राष्ट्रीय पत्रकारिता में भी ये ही प्रांत अग्रणी थे। हिंदी प्रदेश के पत्रकारों ने इन प्रांतों के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया और बहुत दिनों तक उनका स्वतंत्र राजनीतिक व्यक्तित्व विकसित नहीं हो सका। फिर भी हम "अभ्युदय" (1905), "प्रताप" (1913), "कर्मयोगी", "हिंदी केसरी" (1904-1908) आदि के रूप में हिंदी राजनीतिक पत्रकारिता को कई डग आगे बढ़ाते पाते हैं। प्रथम महायुद्ध की उत्तेजना ने एक बार फिर कई दैनिक पत्रों को जन्म दिया। कलकत्ता से "कलकत्ता समाचार", "स्वतंत्र" और "विश्वमित्र" प्रकाशित हुए, बंबई से "वेंकटेश्वर समाचार" ने अपना दैनिक संस्करण प्रकाशित करना आरंभ किया और दिल्ली से "विजय" निकला। 1921 में काशी से "आज" और कानपुर से "वर्तमान" प्रकाशित हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि 1921 में हिंदी पत्रकारिता फिर एक बार करवटें लेती है और राजनीतिक क्षेत्र में अपना नया जीवन आरंभ करती है। हमारे साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियों का आरंभ इसी समय से होता है। फलत: बीसवीं शती के पहले बीस वर्षों को हम हिंदी पत्रकारिता का तीसरा चरण कह सकते हैं।

1921 के बाद हिंदी पत्रकारिता का समसामयिक युग आरंभ होता है। इस युग में हम राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को साथ साथ पल्लवित पाते हैं। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृती संपादक सामने आए जो अंग्रेजी की पत्रकारिता से पूर्णत: परिचित थे और जो हिंदी पत्रों को अंग्रेजी, मराठी और बँगला के पत्रों के समकक्ष लाना चाहते थे। 1921 के बाद साहित्यक्षेत्र में जो पत्र आए उनमें प्रमुख हैं- स्वार्थ (1922), माधुरी (1923), मर्यादा, चाँद (1923), मनोरमा (1924), समालोचक (1924), चित्रपट (1925), कल्याण (1926), सुधा (1927), विशालभारत (1928), त्यागभूमि (1928), हंस (1930), गंगा (1930), विश्वमित्र (1933), रूपाभ (1938), साहित्य संदेश (1938), कमला (1939), मधुकर (1940), जीवनसाहित्य (1940), विश्वभारती (1942), संगम (1942), कुमार (1944), नया साहित्य (1945), पारिजात (1945), हिमालय (1946) आदि।

आधुनिक साहित्य के अनेक अंगों की भाँति हिन्दी पत्रकारिता भी नई कोटि की है और उसमें भी मुख्यत: हमारे मध्यवित्त वर्ग की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक औ राजनीतिक हलचलों का प्रतिबिंब भास्वर है। वास्तव में पिछले २०० वर्षों का सच्चा इतिहास हमारी पत्रपत्रिकाओं से ही संकलित हो सकता है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

बँगला के "कलेर कथा" ग्रंथ में पत्रों के अवतरणों के आधार पर बंगाल के उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यवित्तीय जीवन के आकलन का प्रयत्न हुआ है। हिंदी में भी ऐसा प्रयत्न वांछनीय है। एक तरह से उन्नीसवीं शती में साहित्य कही जा सकनेवाली चीज बहुत कम है और जो है भी, वह पत्रों के पृष्ठों में ही पहले-पहल सामने आई है। भाषाशैली के निर्माण और जातीय शैली के विकास में पत्रों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, परंतु बीसवीं शती के पहले दो दशकों के अंत तक मासिक पत्र और साप्ताहिक पत्र ही हमारी साहित्यिक प्रवृत्तियों को जन्म देते और विकसित करते रहे हैं। द्विवेदी युग के साहित्य को हम "सरस्वती" और "इंदु" में जिस प्रयोगात्मक रूप में देखते हैं, वही उस साहित्य का असली रूप है। 1921 ई. के बाद साहित्य बहुत कुछ पत्रपत्रिकाओं से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा होने लगा, परंतु फिर भी विशिष्ट साहित्यिक आंदोलनों के लिए हमें मासिक पत्रों के पृष्ठ ही उलटने पड़ते हैं। राजनीतिक चेतना के लिए तो पत्रपत्रिकाएँ हैं ही। वस्तुत: पत्रपत्रिकाएँ जितनी बड़ी जनसंख्या को छूती हैं, विशुद्ध साहित्य का उतनी बड़ी जनसंख्या तक पहुँचना असंभव है।

90 के दशक में भारतीय भाषाओं के अखबारों, हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अमर उजाला, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण आदि के नगरों-कस्बों से कई संस्करण निकलने शुरू हुए। जहां पहले महानगरों से अखबार छपते थे, भूमंडलीकरण के बाद आयी नई तकनीक, बेहतर सड़क और यातायात के संसाधनों की सुलभता की वजह से छोटे शहरों, कस्बों से भी नगर संस्करण का छपना आसान हो गया। साथ ही इन दशकों में ग्रामीण इलाकों, कस्बों में फैलते बाजार में नई वस्तुओं के लिए नये उपभोक्ताओं की तलाश भी शुरू हुई। हिंदी के अखबार इन वस्तुओं के प्रचार-प्रसार का एक जरिया बन कर उभरा है। साथ ही साथ अखबारों के इन संस्करणों में स्थानीय खबरों को प्रमुखता से छापा जाता है। इससे अखबारों के पाठकों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है। मीडिया विशेषज्ञ सेवंती निनान ने इसे 'हिंदी की सार्वजनिक दुनिया का पुनर्विष्कार' कहा है। वे लिखती हैं, "प्रिंट मीडिया ने स्थानीय घटनाओं के कवरेज द्वारा जिला स्तर पर हिंदी की मौजूद सार्वजनिक दुनिया का विस्तार किया है और साथ ही अखबारों के स्थानीय संस्करणों के द्वारा अनजाने में इसका पुनर्विष्कार किया है।

1990 में राष्ट्रीय पाठक सर्वेक्षण की रिपोर्ट बताती थी कि पांच अगुवा अखबारों में हिन्दी का केवल एक समाचार पत्र हुआ करता था। पिछले (सर्वे) ने साबित कर दिया कि हम कितनी तेजी से बढ़ रहे हैं। इस बार (२०१०) सबसे अधिक पढ़े जाने वाले पांच अखबारों में शुरू के चार हिंदी के हैं।

एक उत्साहजनक बात और भी है कि आईआरएस सर्वे में जिन 42 शहरों को सबसे तेजी से उभरता माना गया है, उनमें से ज्यादातर हिन्दी हृदय प्रदेश के हैं। मतलब साफ है कि अगर पिछले तीन दशक में दक्षिण के राज्यों ने विकास की जबरदस्त पींगें बढ़ाईं तो आने वाले दशक हम हिन्दी वालों के हैं। ऐसा नहीं है कि अखबार के अध्ययन के मामले में ही यह प्रदेश अगुवा साबित हो रहे हैं। आईटी इंडस्ट्री का एक आंकड़ा बताता है कि हिन्दी और भारतीय भाषाओं में नेट पर पढ़ने-लिखने वालों की तादाद लगातार बढ़ रही है।

भारतीय पत्रकारिता का दिन-ब-दिन विस्तार हो रहा है। हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से हिंदी भाषा का मान भी बढ़ा है।

संदर्भ सूची

1. Chatterjee,Mrinal."History of Hindi". Press Institute of India. मूल से 16 October 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि https://hi.wikipedia.org/wiki

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

देशी छात्रों के हिंदी अध्ययन का केंद्र: केंद्रीय हिंदी संस्थान

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765739

हुररामोव शुक्रुल्लो
ताशकंद राज्य प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज़्बेकिस्तान

केंद्रीय हिंदी संस्थान भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन उच्चतर शैक्षणिक एवं शोध संस्थान है। इसका मुख्यालय आगरा में है। इसके आठ केंद्र- दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान की स्थापना सन् 1960 में भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में की गई।

संस्थान का मुख्य कार्य हिंदी भाषा से संबंधित क्षैक्षणिक कार्यक्रम चलाना, शोध कार्य संपन्न करना एवं हिन्दी के प्रचार प्रसार में अग्रणी भूमिका निभाना है। प्रारंभ में संस्थान का प्रमुख कार्य अहिंदी भाषी क्षेत्रों के लिए योग्य, सक्षम एवं प्रभावकारी हिंदी अध्यापकों को ट्रेनिंग कॉलेज और स्कूली स्तरों पर पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना था। परंतु बाद में हिंदी के शैक्षिक प्रचार-प्रसार और विकास को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने अपने कार्य क्षेत्रों और प्रकार्यों को विस्तृत किया, जिसके अंतर्गत हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण, हिंदी भाषा-परक शोध, भाषाविज्ञान तथा तुलनात्मक साहित्य आदि विषयों से संबंधित मूलभूत वैज्ञानिक अनुसंधान कार्यक्रमों को संचालित करना प्रारंभ किया तथा विविध स्तरीय पाठ्यक्रमों, शैक्षिक सामग्री, अध्यापक निर्देशिकाएँ इत्यादि तैयार करने का कार्य भी प्रारंभ किया।

संस्थान हिंदी अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। संस्थान को उच्च स्तरीय शैक्षिक संस्थान के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है। हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहिका के रूप में अपनी सार्थक भूमिका निभा सके, इस उद्देश्य एवं संकल्प के साथ संस्थान निरंतर कार्यरत है। अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए भी संस्थान अथक प्रयास कर रहा है। संस्थान का मूलभूत उद्देश्य है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे के निकट आएँ और सामान्य बोधगम्यता की दृष्टि से हिंदी इनके बीच सेतु का कार्य करे तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय चेतना, संस्कृति एवं उससे संबद्ध मूल तत्त्व हिंदी के माध्यम से प्रसारित ही न हों, बल्कि सुग्राह्य भी बनें।[1]

15 मार्च, 1951 को हिन्दी के प्रचार-प्रसार को व्यापक बनाने के उद्देश्य से भाषायी तथा सांस्कृतिक समस्याओं पर विस्तृत चर्चा के लिए भारत के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद के मार्गदर्शन में दिल्ली के लालकिले में अखिल भारतीय संस्कृति सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि संविधान में निर्दिष्ट हिंदी को प्रशासनिक-माध्यम तथा सामाजिक-संस्कृति की वाहिका के रूप में विकसित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर की एक संस्था स्थापित की जाए। तदनुसार मोटूरि सत्यनारायण तथा अन्य हिंदी सेवियों के प्रयत्न से सन् 1952 में 'अखिल भारतीय हिंदी परिषद्' की स्थापना आगरा में की गयी। पं. देवदूत विद्यार्थी संस्था के संचालक और श्री एम. सुब्रह्मण्यम् उनके सहायक थे।[2]

परिषद् ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अखिल भारतीय हिंदी महाविद्यालय की स्थापना की। महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में प्रो. सत्येन्द्र की नियुक्ति की गई। महाविद्यालय में हिंदीतर राज्यों के सेवारत

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

हिंदी प्रचारकों को हिंदी वातावरण में रखकर उन्हें हिंदी शिक्षण का विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए हिंदी पारंगत पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया। भवन न होने के कारण प्रारम्भ में शिक्षण कार्य नागरी प्रचारिणी सभा के भवन में शुरू हुआ और छात्रों के रहने का प्रबन्ध भी वहीं किया गया। आगरा विश्वविद्यालय के प्राध्यापक सेवाभाव से महाविद्यालय में अध्यापन करते थे। बाद में तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के सचिव श्री रमाप्रसन्न नायक द्वारा महाविद्यालय का अनुदान स्वीकृत कराया। इसके बाद परिषद् और महाविद्यालय विजय नगर कॉलोनी में किराए के भवन में कार्यरत हुए।

1959 में महाविद्यालय के वार्षिक समारोह में राज्यसभा के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री एस.वी. कृष्णमूर्ति ने अपने अध्यक्षीय भाषण में परिषद् के कार्यो की प्रशंसा की और उसे राष्ट्रीय शिक्षा का गुरूकुल बताते हुए कहा कि इस संस्थान को देश की शिक्षा व्यवस्था में महत्त्व मिलना चाहिए। उन्होंने ही तत्कालीन केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्री के.एल. श्रीमाली को इस संस्था के विकास की सलाह दी।

19 मार्च, 1960 को शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी शिक्षण महाविद्यालय की स्थापना की और उसके संचालन के लिए 'केंद्रीय शिक्षण मंडल' नाम से एक स्वायत्त संस्था का गठन किया। केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल का पंजीकरण लखनऊ में 1 नवम्बर, 1960 को हुआ। केंद्रीय हिंदी मंडल के प्रथम अध्यक्ष श्री मो. सत्यनारायण मनोनीत किए गए।

मंडल के प्रमुख कार्य इस प्रकार निर्धारित किए गए-

1. हिंदी शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।
2. हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
3. उच्चतर हिंदी भाषा एवं साहित्य और भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी के तुलनात्मक भाषाशास्त्रीय अध्ययन के लिए सुविधाएँ उपलब्ध करवाना।
4. हिंदीतर प्रदेशो के हिंदी अध्येताओं की समस्याओं को सुलझाना।
5. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में उल्लिखित हिंदी भाषा के अखिल भारतीय स्वरूप के विकास के लिए प्रदत्त निर्देशों के अनुसार हिंदी को अखिल भारतीय भाषा के रूप में विकसित करने के लिए समुचित कार्यवाही करना।

संदर्भ सूची

1. https://hi.wikipedia.org/wiki
2. https://web.archive.org/web/

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

21वीं सदी में महात्मा गांधी के दर्शन का महत्व

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765746

डॉ. शेरदार पुलातोव नेमतजोनोविच
एसोसिएट प्रोफेसर
अल्फ्रागनस विश्वविद्यालय,
ताशकंद, उज्बेकिस्तान,

यह ध्यान देने योग्य है कि जब आप भारत के बारे में सुनते हैं, तो सबसे पहले महात्मा गांधी का नाम दिमाग में आता है। उनका नाम भारत के नाम के साथ इस तरह जुड़ा हुआ है कि कोई भी इसे अलग नहीं कर सकता। गांधी जी ने अपने साहस और विचारों से भारत और विश्व इतिहास में अपनी छाप छोड़ी।

गांधी के सामाजिक-राजनीतिक विश्वदृष्टि और दर्शन का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। आज कल दुनिया में इसका महत्व और भी अधिक है। उदाहरण के लिए हम देख सकते हैं कि दुनिया और राजनीतिक हलकों में अहिंसा की अवधारणा कितनी आवश्यक है। क्योंकि आधुनिक युग अपनी ध्रुवीयता के कारण बहुत खास है। उनके दर्शन में, प्राथमिक कारक के रूप में मनुष्य का उदय इसकी प्रासंगिकता को साबित करता है। इसलिए महात्मा गांधी के दर्शन का अध्ययन प्रासंगिक है। दार्शनिक विचारों की ओर मुड़ते हुए, यह इंगित किया जाना चाहिए कि उनके लिए मूल सिद्धांत ईश्वर की प्राथमिक वास्तविकता के रूप में धारणा है जो वस्तुनिष्ठ रूप से विद्यमान है और व्यक्ति की इच्छा और चेतना से जुड़ा नहीं है। मुख्य मुद्दे के संबंध में, गांधी का दर्शन पूर्ण अर्थों में वस्तुनिष्ठ आदर्शवाद का समर्थक था। इस प्रकार बशर्ते कि एम.के. गांधी के दिव्य सार को उनके दार्शनिक और सामाजिक-राजनीतिक विचारों के लिए संदर्भ के मुख्य बिंदु के रूप में पर्याप्त विमान में माना जाता है। और यह अवधारणा अनिवार्य रूप से एम.के. गांधी के कई कार्यों के माध्यम से एक लाल धागा चलाती है। अहिंसा के सिद्धांत को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किए जाने का प्रमाण यह है कि 15 जून, 2007 के संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव के अनुसार, महात्मा गांधी के जन्मदिन को सर्वसम्मति से हिंसा के उन्मूलन के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में अनुमोदित किया गया था। महात्मा गांधी के सामाजिक-दार्शनिक विश्वदृष्टि ने निश्चित रूप से मध्य एशिया को प्रभावित किया। बीसवीं सदी में, मध्य एशिया एशिया में औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ एक राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन था, खासकर उज्बेकिस्तान (जिसे तब तुर्किस्तान कहा जाता था)। इस आंदोलन के प्रतिनिधियों को जदीद (अरबी में नया जदीद) कहा जाता था। हम महात्मा गांधी का अध्ययन क्यों कर रहे हैं? क्योंकि गांधी भारतीय इतिहास के एक पूरे कालखंड में महत्वपूर्ण व्यक्ति रहे हैं। वे बुराई, क्रोध, घृणा, दया और प्रेम का जवाब देने वाले पहले व्यक्ति थे। मानव जाति के इतिहास में, उन्होंने व्यावहारिक रूप से इस प्रक्रिया को चित्रित किया। मोहनदास करमचंद गांधी का दार्शनिक और वैचारिक आधार क्या है? बेशक, यह मुख्य रूप से उनका परिवार और माँ है। नन के भतीजे, जो गांधी के परिवार के मित्र थे, ने भी उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचारों पर महाकाव्य रामायण और महाभारत का प्रभाव महत्वपूर्ण था। गांधी के दर्शन का केंद्र जैन धर्म में अहिंसा है, जो निश्चित रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन का एक अभिन्न अंग है। अहिंसा किसी भी प्राणी को नुकसान नहीं पहुँचाती है। गांधी ने सत्याग्रह ("सत्य की दृढ़ता"), यानी "अहिंसक संघर्ष" के विचार को आगे बढ़ाया। सत्याग्रह के निर्माण में, नैतिक आदर्शवाद और राजनीतिक व्यावहारिकता आपस में जुड़ी हुई हैं। गांधी अपने पूरे जीवन में

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

नैतिकता और राजनीति में शामिल रहे हैं। यद्यपि हिंसा के प्रति सहिष्णुता उसकी सहिष्णुता को मान्यता नहीं देती, फिर भी उसके विरुद्ध किसी भी साधन का प्रयोग गांधी के नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के विपरीत, गांधी ने लोगों के बीच अपनी शिक्षा का प्रसार करना शुरू किया। जनता उन कार्यों के बारे में अच्छी तरह से जानती है जो कुछ भी गलत नहीं करते हैं, उनकी अंतरात्मा का विरोध नहीं करते हैं, अन्याय में भाग नहीं लेते हैं, या अधिनायकवादी अत्याचार का पालन नहीं करते हैं। सत्याग्रह ने सभी को राजनीतिक मामलों में एक आम भागीदार बनने की अनुमति दी। एक ऐसे देश में जिसकी आबादी को राजनीतिक संघर्ष का बहुत कम अनुभव है, समुदाय व्यंग्य की दुनिया में एक मूल्यवान उपकरण बन गया है, जहां इसे काफी हद तक अलग-थलग कर दिया गया है। महात्मा गांधी की गतिविधियाँ और दार्शनिक शिक्षाएँ भारतीय स्वतंत्रता की आधारशिला थीं। महात्मा गांधी के विचारों में शांति और देशभक्ति का बहुत महत्व है, क्योंकि शांति ही प्रगति की कुंजी है।

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

मध्य एशिया में पञ्चतन्त्र का प्रसार

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765762

डॉ. ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य
वरिष्ठ सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग, कला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत

भारतीय साहित्य में प्राचीनकाल में दो कथा-चक्र उपलब्ध होते हैं- बृहत्कथा एवं पञ्चतन्त्र । कथासाहित्य-परम्परा में पञ्चतन्त्र अन्यतम एवं सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ है । इस ग्रन्थ के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य उल्लेखनीय हैं- पञ्चतन्त्र की रचना के विषय में इस ग्रन्थ में ही उल्लेख प्राप्त होता है कि इसकी रचना आचार्य विष्णु शर्मा ने महिलारोप्य के राजा अमरशक्ति के तीन मूर्ख पुत्रों बहुशक्ति, उग्रशक्ति एवं अनन्तशक्ति को सहज एवं सरस पद्धति से सुशिक्षित करने के लिये की थी । आचार्य विष्णु शर्मा इस ग्रन्थ की मौलिकता सिद्ध करते हुये कहते हैं कि इस संसार में उपलब्ध सम्पूर्ण अर्थशास्त्र के निष्कर्ष की समालोचना करके पाँच तन्त्रों से युक्त इस मनोहर शास्त्र को बनाया गया है-

सकलार्थशास्त्रसारं जगति समालोक्य विष्णुशर्मेदम् ।
तन्त्रैः पञ्चभिरेतच्चकार सुमनोहरं शास्त्रम् । । [i]

इसके 'कथामुख' भाग में ग्रन्थकार की वह प्रतिज्ञा प्राप्त होती है, जिसमें वह राजा से कहते है कि यदि छः महीनों में आपके पुत्रों को नीतिशास्त्र पटु न कर दिया तो अपना नाम त्याग कर दूंगा-"**पुनरेतांस्तव पुत्रान् मास-षट्केन यदि नीतिशास्त्रज्ञान् न करोमि ततः स्वनामत्यागं करोमि**" [ii] ग्रन्थ की फलश्रुति में भी यह संकेत प्राप्त होता है, कि जो भी प्रतिदिन इसका श्रवण एवं पाठ करता है वह स्वयं इन्द्र से भी पराभव को नहीं प्राप्त होता है-

अधीते य इदं नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति च ।
न पराभवमाप्नोति शक्रादपि कदाचन ॥[iii]

पञ्चतन्त्र के संस्करण हितोपदेश में कहा गया है कि इसमें कहानी के बहाने से बच्चों को नीति शिक्षा दी जा रही है-- **कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते ।** [iv]

सरस एवं आकर्षक पशुकथाओं के माध्यम से वर्णित इस कथाग्रन्थ की वैश्विक ख्याति अभूतपूर्व रही है । पंचतन्त्र भारतीय मेधा के सांस्कृतिक विश्वविजय का प्रतीक है जिसने अपने अनूदित संस्करणों के माध्यम से मध्य एशिया में अपनी विजयध्वजा फहराई है । इस कथाग्रन्थ की जनप्रियता आज भी बनी हुयी है । पञ्चतन्त्र की इस यात्रा के सन्दर्भ में महाकवि राजशेखर की अधोलिखित पंक्ति विचारणीय है जिसमें वह कहते हैं एक कवि की रचना घर में ही रह जाती है, दूसरे के काव्य मित्रों के घर तक पहुंचते हैं । किन्तु कुछ कवियों की रचनायें सहृदयों के मुख पर चरण रखकर मानो कुतूहल से विश्व को देखने के लिये चल पड़ती हैं-

एकस्य तिष्ठति कवेर्गृह एव काव्य-
मन्यस्य गच्छति सुहृद्भवनानि यावत् ।
न्यस्याविदग्धवदनेषु पदानि शश्वत्
कस्याऽपि सञ्चरति विश्वकुतूहलीव । ।[v]

वैश्विक स्तर पर पञ्चतन्त्र के गम्भीर तथा विशद अनुसन्धान का श्रेय जर्मनी के दो विद्वानों डॉ. थियोडोर बेनफी एवं डॉ. जोहान्स हर्टल को है । डॉ. जोहान्स हर्टल ने तो पञ्चतन्त्र के साहित्यिक रूप, उसकी विविध वाचनाओं तथा उससे उद्भूत कथा-साहित्य के विषय में बड़ा ही विस्तृत, विशद तथा गम्भीर अनुशीलन किया है । दोनों विद्वानों ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि पञ्चतन्त्र केवल भारतीय – साहित्य का ही अंग न होकर विश्व-

साहित्य का समादृत अंग है । पञ्चतन्त्र के पचास भाषाओं में अनुवाद के लगभग 200 संस्करण उपलब्ध होते हैं । इस क्रम में पञ्चतन्त्र के मुख्य संस्करण इस प्रकार है-

(क) तन्त्राख्यायिका (मूलस्थान कश्मीर)-जैनकथा से सम्बन्धित, शारदा लिपि में डॉ. जोहान्स हर्टल को प्राप्त हुआ।

(ख) पञ्चतन्त्र का पहलवी अनुवाद - जो तदनन्तर सीरियाई एवं अरबी भाषाओं में अनूदित किया गया।

(ग) बृहत्कथा में निहित- जिसकी दो कश्मीरी संस्कृत वाचनायें प्राप्त होती है - कथासरित्सागर तथा बृहत्कथामञ्जरी ।

(घ) दक्षिणी पञ्चतन्त्र- नेपाली एवं हितोपदेश इस संस्करण के प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं ।

पञ्चतन्त्र की विश्वयात्रा विशेष रूप से मध्य एशिया में प्रसार उसके पहलवी अनुवाद के साथ प्रारम्भ होती है । सन् 570 ई. में ईरान के सासानी वंश के सम्राट् अनूशेरवां (540-600 ई.) के मन्त्री बुजुर्ग मेहर ने इसका अनुवाद हकीम बरजवै द्वारा पहलवी भाषा में कराया। सम्प्रति यह ग्रन्थ अनुपलब्ध है ।[vi]

सन्तराम बी.ए. द्वारा अनूदित पुस्तक 'अल्बीरूनी का भारत' के अनुसार यह उल्लेख प्राप्त होता है कि अबू रेहान मुहम्मद इब्न अहमद अल्बीरूनी ने अपनी भारतविषयक पुस्तक "किताब अल् बीरूनी फी तहकीक माली अल् हिन्द" (किताब अल् हिन्द) के चौदहवें अध्याय में बरजवै और उसके पहलवी अनुवाद का उल्लेख किया है । अल्बीरूनी लिखते हैं- "मैं चाहता हूँ कि मैं पञ्चतन्त्र नामक पुस्तक, जो कि हम लोगों में कलीला और दिमना नाम से प्रसिद्ध है, का भाषान्तर कर सकूँ । यह फारसी , हिन्दी और अरबी प्रभृति अनेक भाषाओं में दूर-दूर तक फैल गयी है । परन्तु जिन लोगों नें इसके अनुवाद किये हैं , वे इसके पाठ को बदल डालने के सन्देह से ख़ाली नहीं ।[vii] किन्तु दुर्भाग्य से कराल काल के प्रवाह में यह अनूदित कृति अब उपलब्ध नहीं होती है । अनुमानतया यह संस्कृत की प्रथम कृति है, जिसका किसी वैदेशिक भाषा में रूपान्तरण किया गया । यह अनूदित कृति परवर्ती सीरियाई भाषा (सुरियानी), अरबी इत्यादि भाषाओं में हुये अनुवादों का आधार बनी ।

अनुवाद की इस शृंखला में सबसे प्रख्यात अनुवाद अब्दुल्ला इब्न अल मोकफ़्फ़ा द्वारा 750 ई. में 'कलील: दिम्नः' के नाम से किया गया अरबी अनुवाद है । पञ्चतन्त्र का यह अरबी अनुवाद इसके यूरोपीय भाषाओं में हुये अनुवाद का आधार बना । सर्वप्रथम यह अरबी कलीलः दिम्नः 1816 ई. में सिलवस्तर द सासी (Sylvestre de sasi) ने पेरिस से प्रकाशित किया । इसी क्रम में मध्य एशिया में इसके अनेक अनुवाद फारसी भाषा में किये गये । समरकन्द और बुखारा पर आधिपत्य करने वाले सामानी वंश के शासक अबुल हसन नसर बिन अहमद सामानी (913-942ई.) के आदेश से उस समय के प्रसिद्ध विद्वान् एवं शायर रूदकी समरकन्दी ने इसका फारसी पद्यानुवाद किया । रूदकी समरक़न्दी समरक़न्द (वर्तमान उज्बेकिस्तान) का रहने वाला था । इसे फारसी का प्रथम कवि (साहिब ए दीवान) माना जाता है । इस्लाम में जीवित प्राणियों के चित्र बनाने का धार्मिक निषेध होने पर भी अबुल हसन नसर बिन अहमद ने चीन- राजदरबार से चित्रकारों को बुलवाकर इसे चित्रित भी कराया । यह चित्रित प्रति आज भी उपलब्ध होती है ।[viii]

इसी प्रकार गजनी प्रान्त (अफगानिस्तान) के सुल्तान महमूद गाजी के उत्तराधिकारियों में से एक सुल्तान अबुल मुजफ्फर बहराम शाह बिल सुल्तान मसऊद ने पञ्चतन्त्र के पुनरनुवाद की इच्छा प्रकट की और अपने राज्य के प्रसिद्ध विचारक एवं साहित्यकार अबुल मआली नसरुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अल हमीद को इस कार्य पर लगाया । अबुल मआली नसरुल्लाह ने मोकफ्फा के अरबी अनुवाद को आधार बनाकर कलील: दिम्नः के नाम से इसका फारसी रूपान्तरण किया । इसने यह अनुवाद सुल्तान बहराम शाह को समर्पित किया । यह सन् 1143 से 1146 ई. तक उसके दरबार का प्रमुख कवि भी रहा ।[ix] यह अनुवाद अब्दुल अजीज करीब द्वारा सम्पादित होकर महल्ले फरूशे प्रकाशन, तेहरान (ईरान) से प्रकाशित है ।

जैसा कि हर युग में होता है कि 'कलीलःदिम्नः' का यह फारसी अनुवाद कालान्तर में फारसीभाषी लोगों के लिये कठिन होने लगा । इसकी महत्ता को ध्यान में रखते हुये तत्कालीन तुर्किस्तान के शासक, सम्राट् अबुल ग़ाज़ी सुल्तान हुसैन, जो कि तैमूरलंग की चतुर्थ पीढ़ी में था, के आदेश से प्रकाण्ड फारसी-वेत्ता हुसैन बिन अल्फ अल्वायज हुसैन काशिफ़ी ने 'कलीलः दिम्नः' का 'अनवार ए सुहेली' के नाम से अत्यन्त ललित फारसी में अनुवाद किया । चूंकि अबुल गाज़ी सुल्तान हुसैन की मृत्यु 1505 ई. में हुयी इसलिये अनुवाद का समय 1480 ई. से 1500 ई. के बीच मानना उचित है । सम्राट् अकबर ने इस `अनवार ए सुहेली` ग्रन्थ को तत्कालीन प्रसिद्ध

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

चित्रकारों से सुसज्जित कराया । इससे विदित होता है कि मध्य एशिया में हुये इस अनुवाद की विपुल कीर्ति मुग़ल-भारत में भी हो चुकी थी । इसकी एक पाण्डुलिपि जो ब्रिटेन से भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर सर अल्मा लतीफी ने 1938 ई. में खरीदी थी, उनके परिजन ने इसे छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय मुम्बई को 1973 ई. में उपहार में दिया था । ब्रिटेन जाने पूर्व यह पुणे के मॉउण्ट स्टुअर्ट एलफिस्टन पुस्तकालय में उपलब्ध थी । इन उपर्युक्त अनुवादों के अतिरिक्त मध्य एशिया में अनेक अनुवाद हुये जो या तो पाण्डुलिपि के रूप में हैं, अथवा प्रकाशित होकर भी अल्पख्यात हैं ।

मूसल (वर्तमान इराक) के अताबिक वंश के शासक सैफुद्दीन गाज़ी के राजदरबार से सम्बन्धित मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बुखारी ने 'दास्तान ए बिदापाये' नाम से 541-544 हि. (1146/47-1149/50ई.) में फारसी मे अनूदित किया I यह तुर्की के Topkapy Sarai Library Turkey Yazmalar Ist Rajjab (544 हि.1149 ई.) में मौजूद हैं I इसका प्रकाशन P.N. Khanlary Khawrazmi Tehran Iran से हुआ I अहमद बिन महमूद तूसी 658हि.(1259-60ई.) ने इज्जुद्दीन कैकस जो कैंखुसरू का ज्येष्ठ पुत्र था, के लिये 'कलीलः वा दिम्नः' लिखा । यह 'महाकाव्य - छन्द' में फारसी पद्यानुवाद है । यह उस समय की घटना है जब 642 हिजरी में (1244 / 1245 ई.) एशिया माइनर में मंगोलों के आक्रमण हो रहे थे I यह पाण्डुलिपि इण्डिया ऑफिस लाईब्रेरी लण्डन में है I[x]

फजलुल्लाह बिन उस्मान बिन मुहम्मद इस्तफ़जारी ने 'तर्जुमा ए अबियात ए कलीलः व दिम्नः' के नाम से अनूदित किया । इसने इसे वजीर मज्दुद्दौलाह अब्दुल हसन अतीउल मुस्तौफी को समर्पित किया । यह पाण्डुलिपि ब्रिटिश म्यूजियम लण्डन में संरक्षित है ।[xi] डॉ. इन्दुशेखर जो कि साठ के दशक में तेहरान विश्वविद्यालय (ईरान) के संस्कृत विभाग में अतिथि – प्राध्यापक थे, ने F.Edgrtion के बम्बई से प्रकाशित अंग्रेजी अनुवाद को आधार बनाकर पञ्चतन्त्र का फारसी अनुवाद किया I यह अनुवाद 1961 ई. में तेहरान विश्वविद्यालय से प्रकाशित हुआ । डॉ. इन्दुशेखर ने जोहान्स हर्टल के अंग्रेजी अनुवाद पर भी चर्चा की है; उन्होंने लिखा है कि यह अनुवाद तन्त्राख्यायिका संस्करण पर आधारित है तथा पहलवी अनुवाद भी इसी संस्करण पर आधारित है I किन्तु आधुनिक अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है पहलवी संस्करण मूल संस्कृत पाठ से अनूदित किया गया I डॉ. इन्दुशेखर कहते हैं कि तन्त्राख्यायिका पञ्चतन्त्र का सबसे प्राचीन संस्करण है जो कि कश्मीर में प्रसिद्ध रहा और वह क्षेत्र कश्मीर के निकट है अतः बरजवै का पहलवी अनुवाद तन्त्राख्यायिका पर आधारित कहा जा सकता है ।

मध्य एशिया में हुये पञ्चतन्त्र के विभिन्न महत्त्वपूर्ण अनुवादों पर निम्नलिखित सारणी ध्यातव्य है-

क्र.	अनूदित ग्रन्थ	अनुवादक	भाषा	समय
1	कलीलःदिम्नः	हकीम बरजवै	पहलवी (मध्यकालीन फ़ारसी)	570 ई.पूर्व
2	कलीलः व दिम्नः	अब्दुल्ला इब्न अल मोकफ़्फ़ा	अरबी	750ई. (लगभग)
3	कलिलग व दिम्नग	बूद अब्दुल ईनू	सीरियाई	770ई. (लगभग)
4	कलील व दिम्नः	रूदकी समरकन्दी*[xii]	फारसी (पद्यात्मक)	970ई.
5		रब्बी जोयेल	हिब्रू	1100 ई. (लगभग)
6	कलील व दिम्नः	अबुल मआली नसरुल्लाह मुंशी	फारसी (आधुनिक फ़ारसी)	1143-1146 ई.
7	दास्तान ए विदपाये	मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बुखारी	फ़ारसी	1146/47-149/50ई.
8	कलीलः व दिम्नः	अहमद बिन महमूद तूसी	फ़ारसी	1256-60ई.
9	अनवार ए सुहैली	हुसैन वायज़ काशिफी	फ़ारसी	1480-1500ई.
10	तर्जुमा ए अब्यात ए कलीलः व दिम्नः	फजलुल्लाह बिन उस्मान बिन मुहम्मद इस्फजारी	फ़ारसी	626 / 1814 ई.
11	पञ्चतन्त्र	डॉ. इन्दुशेखर	फ़ारसी	1961 ई.

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

मध्य एशिया में हुये अरबी-फारसी अनुवाद के अतिरिक्त अन्य प्रचलित भाषाओं में भी इसके अनुवाद, अथवा स्वतन्त्र पुस्तकें रची गयी जिनमें सीरियाई, हिब्रू, तुर्की इत्यादि में हुये अनुवाद महत्त्वपूर्ण हैं । लगभग 770 ई. में बूद पादरी द्वारा 'कलिलग व दमनग' के नाम से किया गया सीरियाई अनुवाद उल्लेखनीय है । कुछ लोग यह मानते हैं कि यह साक्षात् संस्कृत से अनूदित हुआ था । सम्प्रति यह अनुवाद अनुपलब्ध है, और सीरियाई भाषा भी अस्तित्व में नहीं है ।

मध्य एशिया के वर्तमान ताजिकिस्तान में सोगदिया सभ्यता के लोगों द्वारा निर्मित पञ्चतन्त्र की कथाओं से सम्बन्धित भित्तिचित्र आज भी प्राप्त होते हैं जिस पर यूनेस्को ने अपनी रिपोर्ट भी प्रस्तुत की है । यह मध्य एशिया में पञ्चतन्त्र के प्रभाव को अभिव्यक्त करने वाला पुरातात्विक साक्ष्य है । बारहवीं शताब्दी में रब्बी जोयेल नामक यहूदी धर्मगुरु ने पञ्चतन्त्र का हिब्रू में अनुवाद किया । पञ्चतन्त्र के उपर्युक्त हिब्रू अनुवाद के आधार पर 1270 ई. में इसका लैटिन अनुवाद हुआ जो 1480 ई. में प्रकाशित हुआ । ध्यातव्य है कि 1483 से 1485 ई. तक जर्मन में इसके चार संस्करण प्रकाशित हुये । सन् 1485 ई. में ही जर्मन में यह तेरह बार प्रकाशित हो चुका है. इसी से ग्रन्थ की लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है ।

अंकारा विश्वविद्यालय तुर्की के भारतविद्या विभाग (Deptt. of Indology) के आचार्य प्रो. कोरहान काया के द्वारा भी भारतीय कथा-साहित्य (पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, जातक) से चयनित कथाओं को तुर्की में अनूदित कर पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया हैं, जिनके विवरण इस प्रकार हैं-

1. Hint Masllari (Indian Tales) - Publication Okyanus Yajlnalari Istambul 1995 Ikimci Baski: Imge Ankara 1998 AD

2. Hint-Turk Avrupa Masllari (India-Turkish European Tales) Publication Imge Kitabevi 2001 AD

सम्राट् अकबर के आदेश से अबुल फ़ज्ल ने 'अयार ए दानिश' के नाम से 'अनवार सुहैली' की कठिन, मुहावरेदार लच्छेदार भाषा के स्थान पर सरल भाषा में अनुवाद किया । इस अनुवाद की पाण्डुलिपि की प्रतियां देश-विदेश सह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 'भारत कला भवन' में भी मौजूद हैं । अकबर ने फज़्ल के इस अनुवाद को चित्रों से सुसज्जित भी कराया । वस्तुतः फज़्ल का यह अनुवाद प्रतिज्ञा के अनुसार सरल न रह सका और कालान्तर में इसके सरलीकृत रूप की आवश्यकता हो उठी । मुस्तफ़ा खालिकदाद अब्बासी ने अकबर के आदेश से 'पञ्चाख्यान' नाम से इसे पुनः अनूदित किया । इस अनुवाद को प्रथम बार जनसामान्य के बीच प्रस्तुत करने को श्रेय डॉ. ताराचन्द एवं डॉ. एस. ए.एच. आबिदी को है । उन्होंने दिल्ली म्यूजियम से अचानक प्राप्त इस अनुवाद की पाण्डुलिपि से सम्बन्धित सूचनाओं को अपने परिचायत्मक अंग्रेजी लेख 'Panchakhayana: A unique and unknown Persian translation of the Panchatantra" by Tarachand & SAH Abidi, Islamic Culure Vol 39 no.1 Jauuary 1965, pp. 29-39 में प्रस्तुत किया । इसके अतिरिक्त भी भारत में पञ्चतन्त्र के अनेक फारसी अनुवाद व्याख्यायें संकलित पुस्तकों की पाण्डुलिपियां प्राप्त होती है जिनके विवरण इस प्रकार हैं-

1. "नूर उल अनवारः इन्तखाब अनवार ए सुहैली" अबुल 'अला शेख नूरुद्दीन मोहम्मद सिद्दीकी हसनी (हैदराबाद) उपलब्ध- अंजुमन ए तरक्की ए उर्दू, कराची (पाकिस्तान) 1805 ई.

2. इन्तखाब ए अनवार ए सुहेली- लाला बसन्त राय (सोधी) नस्तालीक़ लिपि, उपलब्ध-रामपुर रजा लाईब्रेरी (उ.प्र.) 1822 ई.

3. "निगार ए दानिश मुन्तखब अयार ए दानिश-अज्ञात, (क) उपलब्ध-मौलाना कुदरतुल्लाह, भलवाल, सरगोधा (पाकिस्तान) 1885 ई.

(ख) उपलब्ध-गुलजार अहमद लाईब्रेरी, अकबरपुर, खुशाब सरगोधा (पाकिस्तान)

(ग) उपलब्ध- हाशमी लाईब्रेरी, नौशेरा शेखपुरा (पाकिस्तान)

4. शरह ए अयार ए दानिश (अयार ए दानिश की व्याख्या) – मीर मुहम्मद जमान, उपलब्ध- राजा महमूदाबाद पुस्तकालय लखनऊ

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

5. मुफर्रिह उल कुलूब : गीतक दमनिक- यह हितोपदेश की संक्षिप्त फारसी व्याख्या है जो हुमायूँ के शासन काल में ताजुद्दीन मुफ्ती अलमालिकी के द्वारा अनूदित की गयी इसकी पाण्डुलिपि की प्रतियां देश-विदेश के विभिन्न ग्रन्थागारों में उपलब्ध होती हैं ।

इन अनुवादों ने भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व में पंचतन्त्र को कालजयी रचना के रूप में स्थापित कर दिया । इस प्रकार हम देखते हैं कि शताब्दियों तक अखिल विश्व विशेषरूप से मध्य एशिया में पञ्चतन्त्र की कथाओं को स्थानीय श्रोताओं के अनुकूल बनाने के लिये भूगोल, संस्कृति-सभ्यता, धर्म-सम्प्रदाय के अनुसार परिवर्तन होते रहे । अपनी इस वैश्विक यात्रा में पञ्चतन्त्र ने साहित्यिक समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है ।

सहायक ग्रन्थसूची-

1. अब्दुल्ला इब्न अल मोकफ़्फ़ाः फन और शख्सियत, लेखक डॉ. रफीक अहमद खान नदवी, लखनऊ 1987 ई. (उर्दू)
2. अल्बेरूनी का भारत (दो भाग) , अनुवादक- सन्तराम बी.ए. ,इण्डियन प्रेस प्रयाग 1936 ई. (द्वितीय संस्करण)
3. कथासरित्सागर अनुवादक-स्व. पं. केदारनाथ शर्मा सारस्वत, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना बिहार 1968 ई.
4. पंचतन्त्र-सरला हिन्दी टीकोपेतम्, सम्पादक-पं. रामचन्द्र झा (व्याकरणाचार्य), टीकाकार-स्व. गोकुलदास गुप्त बी.ए. , चौखम्बा विद्याभवन 2011 ई.
5. पंचतन्त्र की विश्वयात्रा के कुछ मुख्य पड़ाव (लेख)-डॉ. बलराम शुक्ल, शोधप्रभा वर्ष-42 चतुर्थोऽङ्कः
6. मध्य एशिया का इतिहास, महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना (द्वितीय संस्करण 1985 ई.)
7. हितोपदेश, सम्पादक डॉ. बालशास्त्री, संस्कृत टीकाकार-श्री गुरु प्रसाद शास्त्री, हिन्दी टीकाकार-श्री सीताराम शास्त्री,चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी वर्ष -2016 ई.

---

[i] पञ्चतन्त्र कथामुख, श्लोक.3

[ii] वही, पृष्ठ.5

[iii] वही, श्लोक.10

[iv] हितोपदेश कथामुख श्लोक.8

[v]. काव्यमीमांसा (राजशेखर) अध्याय चतुर्थ, सम्पादक व्याख्याकार-डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर राजस्थान 2016 ई.

[vi]. अनवार ए सुहेली Edward B. Eastwick, पृ.६ पाटटिप्पणी ४. अंग्रेजी अनुवाद १८५४ ई.

[vii]- अल्बेरूनी का भारत (भाग-2), परिच्छेद 14, पृ.73, अनु. सन्तराम बी.ए. इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रयाग 1920 ई.

[viii]- op. cit. pp. 25-26 by Arnold Muslaman Painting by E Blochet 1929 AD pp.45, 56

[ix]- Cambridge History of Iran Vol 5: The Saljuq & Mongol Periods. (ISBN 0-521- 06936X) Encyclopaedia Iranica, Vol X Fasc 6 London et all pp.578-583

[x]- 'A Catalogue of Persian Mss in the Library of India office Vol 1 II Herman Ethe, Oxford 1903 & 1937

[xi]- (Cata. Of Persian Mss. In British Museum, Charles Riev Vol I-II-III London 1978-83)

[xii] - अबू अब्दुल्ला जाफर इब्न मुहम्मद रूदकी (858-941ई.)

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

पत्थर पर नक्काशी

https://doi.org/10.5281/zenodo.13765774

श्रीमती मकतूबा मुर्तजाखोदजाएवा
दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई भाषा विभाग की वरिष्ठ अध्यापिका,
ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, ताशकंद, उजबेकिस्तान,

संस्मरण एक अवधारणा है जो कभी भी, कहीं भी आ-जा सकता है। अचानक एक बिन बुलाए मेहमान की तरह दरवाजा खटखटाता है। हम इसके बारे में लंबे समय तक खूब बात कर सकते हैं। लेकिन, मैं बीच में एक पहेली पेश करना चाहती हूँ : पहले वह चार पैरों पर चलता है, फिर वह 2 पैरों पर चलता है, और फिर 3 पैरों पर चलता है। आपका उत्तर? आपने ठीक जवाब दिया है, मानव का जीवन। एक बच्चे के रूप में, वह चारों पैरों से रेंगता है, फिर वह दो पैरों पर चलता है, और जब वह बूढ़ा हो जाता है, तो वह एक बेंत का सहारा लेता है।

मानव का जीवन अजीब है। जीवन के रास्ते में एक व्यक्ति विभिन्न कारनामों, विभिन्न लोगों से मिलता है। आप जिन लोगों से मिलते हैं, उनमें से कुछ क्षणभंगुर होते हैं या उन्हें हम जल्दी ही भूल जाते हैं और कुछ हमारे मानस पटल पर गहरी छाप छोड़ते हैं। हमारे गुरू आज़ाद शामातोव एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने न केवल मेरे जीवन में एक छाप छोड़ी, बल्कि मेरे जीवन को एक नई दिशा भी दी। उनके द्वारा मेरे जीवन पर कई गहरे प्रभाव पड़े जिसे किसी तरह से मिटाया नहीं जा सकता। आइए, मैं आपको शुरू से उस विराट व्यक्तित्व के असर से परिचित कराती हूँ।

10 साल अरबी पढ़ने के बाद हिंदी में पढ़ना मेरे लिए एक अप्रत्याशित घटना थी। पहली मुलाकात में प्रोफेसर आज़ाद शामातोव से मैंने कहा कि मैं एक अरबी विद्वान बनना चाहती हूँ, तो उन्होंने संयम के साथ कहा :

- बेटी, अगर आप 5 नंबर पाकर हिंदी पढ़ती हैं, तो हम आपको आपकी पसंद की अरबी भाषा में स्थानांतरित कर देंगे, लेकिन आपको उत्कृष्ट नंबर के साथ पहला कोर्स पूरा करना होगा।

मेरी स्थिति की कल्पना कीजिए: 'दिन दूनी रात चौगुनी' होकर पढ़ने लगी (मतलब है, मन लगाकर पढ़ना पड़ा)। हमारे ग्रुप में ऐसे लोग थे जो पहले से हिंदी जानते थे। हमारी हिंदी की अध्यापिका तमारा खादजायेवा जी अधिकांशतः रूसी की सहायता से हिंदी पढ़ाती थीं। उच्चतम लक्ष्य के रास्ते में रूसी भाषा मेरे लिए कोई समस्या नहीं बनी। मैंने निष्ठापूर्वक विज्ञान का अध्ययन किया। सर्दियों के महीने थे। अचानक एक दिन, विभाग के प्रमुख प्रोफेसर आज़ाद शामातोव ने मुझे बुलाया। किसी खुशखबरी की तलाश में मैं उनके कमरे में चलकर नहीं, बल्कि उड़कर गयी। उन्होंने बड़े शांत भाव से बोला :

- बेटी, मुझे पता चला कि आपकी भाषा सीखने की कुशलता उच्चतम् है। मैं आपको शोध कार्य करने की सलाह देता हूँ। आपकी बोलने की गति भी तेज है। दक्षिण भारत में रहने वाले तमिल लोग भी बहुत तेजी से बोलते हैं। स्वाध्याय करने का प्रयास क्यों नहीं करती हो? आपको अपनी क्षमता दिखाने का एक और मौका मिलेगा। आप सेमिनार में वैज्ञानिक व्याख्यान देंगी। मैंने आपके लिए एक बहुत ही रोचक विषय तैयार किया

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

है। आप तमिल लोगों के राष्ट्रीय अवकाश के बारे में एक व्याख्यान देंगी। हमारे भारत विद्या अध्ययन में एक नये क्षेत्र का उद्घाटन होगा ...

प्रक्रिया लंबा नहीं चला। मैं तुरंत सहमत हुई। मैंने अपने गुरू जी के मार्गदर्शन में नया शोध कार्य करने का फैसला किया। उस वक़्त बना हुआ "गुरु-शिष्य" का रिश्ता अभी तक मौजूद है।

जब मैंने प्रथम कोर्स समाप्त किया, तो गुरु जी ने मुझे फिर से बुलाया और उन्होंने बड़े ही आत्मीयता से बात की। विषय यह है कि मेरा हिंदी में रहना। मेरी योजनाओं और इरादों को हमेशा की तरह गौर से सुनने के बाद, वे एक पिता की तरह वात्सल्य भाव से बात करने लगे :

- बेटी, आपने एक बड़ा काम शुरू किया है। अधूरा मत छोड़ना।

मैंने गहरी सांस ली ...

- ठीक है, मान लीजिए कि आपने अरबी का अध्ययन किया और स्नातक की उपाधि प्राप्त की, आप आगे क्या करना चाहती हैं? अरब देश लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते ... आपका भविष्य हिंदी में है। आप भारत जाएँगी ...

- मेरी अरबी भाषा का क्या होगा?

- वह हमेशा आपके साथ है। 10 साल से सीखी गई भाषा को भुलाया नहीं जाता। इसकी स्थिरता आपके हाथों में है ...

ऐसे प्रेरक वचनों से मेरे हृदय में फिर से एक नए उत्साह का संचार हो गया। मेरे हृदय में एक चिंगारी जल उठी। जब मैं घर लौटी तो मेरे आँसू भी उस आग को नहीं शांत कर सके।

घंटों के बाद दिन, दिन के बाद साल बीते। स्थिति के अनुसार, मैंने तमिल भाषा और साहित्य का थोड़ा बहुत स्वयं से अध्ययन करने की कोशिश की। मैंने हर पाठ्यक्रम में तमिल भाषा की संस्कृति और कला पर टर्म पेपर लिखे। मेरे डिप्लोमा का कार्य भी इस क्षेत्र में गुरू जी के मार्गदर्शन में लिखा गया। वे भारत-विद्या के अध्ययन के साथ-साथ तमिल अध्ययन का विकास करना चाहते थे। वे भारतीय अध्ययन के उज़्बेक स्कूल को मास्को और सेंट पीटर्सबर्ग स्कूलों के स्तर पर पहुँचाना चाहते थे।

भाग्य से, 1993-1994 में, मैंने आगरा में "केंद्रीय हिंदी संस्थान" के 400 वें पाठ्यक्रम में अध्ययन किया। जनवरी 1994 में, उज्बेकिस्तान गणराज्य के पहले राष्ट्रपति स्वर्गीय इसलाम करीमोव राजकीय यात्रा पर दिल्ली पहुँचे। प्रतिनिधिमंडल में गुरू जी प्रोफेसर आज़ाद शामातोव भी शामिल थे। हम, उज्बेकिस्तान की 3 लड़कियों को आगरा से दिल्ली बुलाया गया था। प्रभाव और भावनाएँ अलग थीं। हम एक फाइव स्टार होटल में थे, शाही खाने...

गुरु जी बहुत संवेदनशील आदमी थे। दिन भर दुभाषिया रहने के बाद, जब रात बिताने के लिए जगह खोजने की समस्या का समाधान नहीं हुआ तो हमारे लिए गुरुजी ने अपना कमरा खाली कर दिया और वे दूसरे मेहमान के कमरे में चले गए। उस समय हम से खुशनसीब और कोई न था। छात्र के लिए फाइव स्टार होटल में रहना अकल्पनीय घटना थी। अगले दिन प्रोफेसर आज़ाद शामातोव ने कहा, अगर अपने घरवालों के लिए कुछ देना हो तो आज ही तैयार करना। मैंने जल्दबाज़ी में कुछ दिया। मेरी स्वर्गीय माँ बहुत ही सादी और शर्मीली महिला थीं। वे प्रोफेसर आज़ाद शामातोव से मिलने और जो कुछ वे लाए थे, उन चीज़ों से बड़ी खुश हुईं।

मेरे गुरू जी ने मुझे न केवल अक्षर ज्ञान दिया, बल्कि मुझे जीवन का सबक़ भी सिखाया। वे समय-समय पर मेरी निजी जिंदगी में भी दिलचस्पी लेते थे। अप्रैल 2006 में, मेरा एक गंभीर ऑपरेशन हुआ। मेरा तीसरा बच्चा, जो समय से पहले पैदा हुआ था, वह भी तीन दिन जीवित रहने के बाद चल बसा। जब मैं अपने ही आग में जल रही थी तो गुरु जी ने मुझे बुलाया और मेरी हालत देखकर मुझे सलाह दी। उनके तसल्ली देने

(E)ISSN: 2181-1784
4(22), Sep., 2024
www.oriens.uz

के बाद वे फिर से सामान्य संयम से बात करने लगी। मुझे पता था कि हर चीज के पीछे कोई प्रस्ताव या छुपा काम होता है।

- बेटी, अप्रत्याशित रूप से, हाई स्कूल की हिंदी शिक्षिका मरहाबा जी की भी अचानक मृत्यु हो गई। शैक्षणिक सत्र समाप्त होने में 2 माह शेष हैं। उनके स्थान पर आप काम करें।

जब मैंने बहाना बनाया कि मैं तनाव की स्थिति में हूँ, कि मेरा दर्द मेरे लिए काफी था, और कुछ अन्य बहाने, गुरू जी ने कठोर स्वर में कहा :

- यह विभाग का आदेश है, जाना ही पड़ेगा !

मुझे बाद में पता चला कि इस कठोरता के पीछे मुझे अपने दर्द से बाहर निकालना उद्देश्य था। मेरे गुरू जी अच्छी तरह से जानते थे कि अगर मैं घर पर रहूँ तो मेरे लिए इस परीक्षा को सुरक्षित रूप से पास करना मुश्किल होगा।

गुरू जी ने मेरे जीवन में ऐसे कई अमिट छाप छोड़े। मैं उनमें से कुछ का ही जिक्र केवल कागज पर करने में सक्षम हूँ। गुरू जी ने हमें पढ़ाई में ज्ञान, नम्रता, शील, निष्पक्षता और ईमानदारी के महत्व को बताया। गुरु जी ने मेरे लिए एक अरमान भी छोड़ दिया। 2015 के बसंत में, जब मैंने उनसे कहा कि हम आपके बारे में एक टीवी प्रोग्राम बनाना चाहते हैं, तो उन्होंने कहा कि बेटी, थोड़ा ठीक हो जाऊँ, मुझे दो महीने दे दें। मैंने कहा- "ठीक है"। और यह "ठीक है" मेरे लिए महंगा पड़ा, एक अरमान छोड़ के गया। 15 अगस्त 2015 की सुबह हमारे गुरु जी का निधन हो गया। यह तारीख भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तारीख है, यानी आजादी का दिन है।

जैसा कि भाग्य में होता है, हर बार जब भी हम भारत आते हैं, तो उन मंडलियों में हमारे प्रति रवैया अलग होता है जहाँ प्रोफेसर आज़ाद शामातोव का नाम आता है। तब मुझे प्रोफेसर आज़ाद शामातोव पर गर्व होता है। इन दिनों में प्रोफेसर आज़ाद शामातोव की याद बहुत आती है क्योंकि 8 अक्टूबर 2022 में हमारे दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई भाषा विभाग की 75वीं सालगिरह मनायी गयी। 40 साल से अधिक समय तक इसी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आज़ाद शामातोव रहे। 2014 में उनको भारत सरकार की तरफ़ से "जॉर्ज ग्रिर्सन" नामक पुरस्कार मिला था।

मैंने इस लेख में हिंदी भाषा और उसके प्रचार-प्रसार के बारे में नहीं, बल्कि हिंदी भाषा के भक्त, प्रचारक के बारे में लिखा है। जैसा कि एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा कि मैं अपने सबक़ों में हमेशा जीवित रहता हूँ। शिक्षक, महान शिक्षाविद्, प्रोफेसर आज़ाद शामातोव हम छात्रों की गतिविधियों में, यादों में हमेशा जीवित रहेंगे। जो निशान वे छोड़ कर गए हैं, वे पत्थर पर उकेरी गई नक्काशी की तरह हैं।

उज़्बेकिस्तान में हिन्दी: दशा और दिशा

संपादक

डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

डॉ. नीलूफ़र खोजाएवा